2BEDT11

लिंग, स्कूल और समाज

DR. C.V. RAMAN UNIVERSITY
Chhattisgarh, Bilaspur AN AISECT GROUP UNIVERSITY
Approved by : PCI | AICTE | NCTE | BCI | Member of : AIU | Joint Committee : (UGC | DEB | AICTE) | Recognized by : UGC | A NAAC Accredited University

डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय

करगी रोड, कोटा, बिलासपुर, छत्तीसगढ़

फोन: 07753-253801, 07753-253872

ई-मेल: info@cvru.ac.in, वेबसाइट: www.cvru.ac.in

2BEDT11

लिंग स्कूल और समाज

Credit- 4

Subject Expert Team

Prof. Raina Tiwari HEAD , Department of Education, Vijayashree Educational Institute, Rani Durgavati Vishwavidhyalaya Jabalpur (M.P.)

Prof. Jubraj Khamari Department of Education , Sambalpur University Jyoti Vihar , Burla, Sambalpur , Odisha

Dr. Dheerendra Singh Assistant Professor,Department of Education , Guru Ghasidas Vishwavidhyalaya, Bilaspur (C.G.)

Dr. Renu Shukla Assistant Professor, Department of (Sanskrit), Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. Ravi Prakash Choudhary Dean , Department of Law Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr.Krishna Kumar Pandey, Assistant Professor , Dr.C.V.Raman Universtiy Kota, Bilaspur (C.G.)

Mrs. Meenakshi Chandravanshi, Assistant Professor, Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. Parvati Yadav, Assistant Professor, Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Dr. Smriti Kiran Saimons, Associate Professor, Dr. C.V.Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Course Edited By:

Dr. Dushyant Chaturvedi
Assistant Professor, Institute Of Advance Studies In Education Bilaspur C.G.

Unit Written By:

Mr. Sushil Kumar Shriwas
Assistant Professor, Dr. C.V. Raman University, Kota, Bilaspur, Chhattisgarh

Warning: All rights reserved, No part of this publication may be reproduced or transmitted or utilized or stored in any form or by any means now known or hereinafter invented, electronic, digital or mechanical, including photocopying, scanning, recording or by any information storage or retrieval system, without prior written permission from the publisher.

Edition: 2026

Published by: Dr. C.V. Raman University Kargi Road, Kota, Bilaspur, (C. G.), Ph. +07753- 253801,07753-253872 E-mail: info@cvru.ac.in, Website: www.cvru.ac.in

कार्यक्रम की संरचना

कार्यक्रम का शीर्षक	**:**	**बेचलर ऑफ एजुकेशन (B.Ed.)**
कार्यक्रम का प्रकार	**:**	**स्नातकोत्तर**
कार्यक्रम क्रेडिट	**:**	**80**
कार्यक्रम का समय	**:**	**2 साल**
पात्रता माप दंड	**:**	**किसी भी विषय में स्नातक की डिग्री**

कार्यक्रम के उद्देश्य-

- शिक्षक-प्रशिक्षुओं में प्रभावी शिक्षण कौशल का विकास करना।
- शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय आधारों का ज्ञान प्रदान करना
- विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने की क्षमता विकसित करना।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी, रोचक एवं छात्र-केंद्रित बनाना।
- मूल्यांकन की विभिन्न विधियों का ज्ञान एवं उनका उचित उपयोग सिखाना।
- नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक आचार-संहिता का विकास करना।
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) तथा आधुनिक शिक्षण तकनीकों का उपयोग करना सिखाना।

कार्यक्रम के परिणाम-

- शिक्षक-प्रशिक्षुओं में प्रभावी शिक्षण कौशल का विकास करना।
- शिक्षा के दार्शनिक, मनोवैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय आधारों का ज्ञान प्रदान करना।
- विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, रुचियों एवं व्यक्तिगत भिन्नताओं को समझने की क्षमता विकसित करना।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी, रोचक एवं छात्र-केंद्रित बनाना।
- मूल्यांकन की विभिन्न विधियों का ज्ञान एवं उनका उचित उपयोग सिखाना।
- नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक आचार-संहिता का विकास करना।
- सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (ICT) तथा आधुनिक शिक्षण तकनीकों का उपयोग करना सिखाना।

पाठ्यक्रम की संरचना

कोर्स का शीर्षक	**:**	**लिंग स्कूल और समाज**
कोर्स का प्रकार	**:**	**मूल पाठ्यक्रम**
कोर्स कोड	**:**	**2BEDT11**
कोर्स क्रेडिट	**:**	**4**
समसत्र	**:**	**2**

पाठ्यक्रम सीखने का उद्देश्य-

- लिंग (Gender) की अवधारणा को समझना तथा लिंग (Gender) और जैविक लिंग (Sex) के बीच अंतर स्पष्ट करना।
- समाज में व्याप्त लैंगिक असमानताओं तथा उनके कारणों और प्रभावों का अध्ययन करना।
- विद्यालय, परिवार और समाज की लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण में भूमिका को समझना।
- शिक्षा में समान अवसर तथा लैंगिक न्याय के महत्व को समझना।
- पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण प्रक्रियाओं में मौजूद लैंगिक पूर्वाग्रहों की पहचान करना।
- लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण पद्धतियों का विकास करना तथा कक्षा में समान एवं समावेशी वातावरण बनाना।

पाठ्यक्रम सीखने के परिणाम-

- लिंग (Gender) की अवधारणा तथा लिंग और जैविक लिंग (Sex) के बीच अंतर को समझता है।
- समाज और विद्यालय में लिंग आधारित असमानताओं एवं भेदभाव की पहचान कर उनका विश्लेषण कर सकता है।
- लैंगिक समानता (Gender Equality) और महिला सशक्तिकरण के महत्व को समझता है।
- विद्यालय में समावेशी (Inclusive) और लैंगिक-संवेदनशील (Gender Sensitive) वातावरण विकसित करने की क्षमता प्राप्त करता है।
- पाठ्यपुस्तकों, पाठ्यचर्या और शिक्षण प्रक्रियाओं में मौजूद लैंगिक पूर्वाग्रहों की पहचान कर उन्हें दूर करने के उपाय सुझा सकता है।

2BEDT11

लिंग स्कूल और समाज

खंड / इकाई क्र.	खंड / इकाईकानाम	प्र. क्र.
खंड 1	**लिंग : बालक अथवा बालिका होने का विकास**	**1-86**
इकाई1	लिंग और जैविक यौन की अवधारणा	1
इकाई2	समाजीकरण की प्रक्रिया	17
इकाई 3	लैंगिक रूढ़ियाँ एवं पूर्वाग्रह	33
इकाई 4	लिंग, पहचान एवं विकास	61
खंड 2	**लिंग की अवधारणा एवं सामाजिक निर्माण**	**87-153**
इकाई 5	विद्यालय में लैंगिक समानता	87
इकाई 6	लिंग निर्माण की सामाजिक प्रक्रिया	108
इकाई 7	लिंग की समझ एवं व्यक्तित्व विकास	131
खंड 3	**लिंग एवं विद्यालय**	**154-228**
इकाई 8	विद्यालयी शिक्षा में लैंगिक असमानता	154
इकाई 9	शिक्षक सहपाठी एवं विद्यालयी वातावरण की भूमिका	195
खंड 4	**लिंग एवं समाज**	**229-332**
इकाई 10	परिवार एवं समाज का लैंगिक समाजीकरण में योगदान	229
इकाई 11	परिवार एवं समाज का लैंगिक समाजीकरण में योगदान	264
इकाई 12	लिंग और सामाजिक संरचना	281
इकाई 13	लैंगिक समानता, सशक्तिकरण एवं सामाजिक परिवर्तन	297
इकाई 14	समावेशी एवं समान अवसर आधारित विद्यालयी वातावरण	318

खंड 1	**लिंग : बालक अथवा बालिका होने का विकास**	
इकाई1	लिंग और जैविक यौन की अवधारणा	
इकाई2	समाजीकरण की प्रक्रिया	
इकाई 3	लैंगिक रूढ़ियाँ एवं पूर्वाग्रह	
इकाई 4	लिंग, पहचान एवं विकास	

NOTE

इकाई 1
लिंग : बालक अथवा बालिका होने का विकास

इकाई की रूपरेखा

1.1 – प्रस्तावना
1.2 - उद्देश्य
1.3 - यौन **(Sex)** और लिंग **(Gender)** में अंतर
1.4 - लिंग, संस्कृति एवं सामाजिक संस्थाएँ
1.4.1- परिवार की भूमिका
1.4.2- विद्यालय की भूमिका
1.4.3- समाज एवं संस्कृति की भूमिका
1.4.4- मीडिया की भूमिका
1.4.5- साथियों **(Peer Group)** की भूमिका
1.4.6- आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ
1.4.7- धर्म और परंपराओं की भूमिका
1.5 - सारांश
1.6 - शब्दावली
1.7 - अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
1.8 - सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
1.9 - संदर्भ
1.10 - अभ्यास

1.1 प्रस्तावना

जेंडर एवं यौन के अन्तर्गत दोनो के अर्थ एवं अन्तर के बारे में अध्ययन किया जाता है। प्रस्तुत इकाई में आप जेंडर एवं यौन का अर्थ एवं दोनो के मध्य अन्तर का अध्ययन करेगें एवं विभिन्न सामाजिक समूहो में, क्षेत्रो और समय अवधियो में एक पुरुष या स्त्री होने का अर्थ एवं अनुभव का अध्ययन करेगें।

जैविक लिंग (Biological Sex) एक प्राकृतिक और शारीरिक अवधारणा है। यह जन्म के समय व्यक्ति के शारीरिक अंगों (जैसे जननांगों) और आनुवंशिक विशेषताओं (गुणसूत्रों या क्रोमोजोम) के आधार पर तय

नोट

किया जाता है, इसके मुख्य रूप 'नर' (Male) या 'मादा' (Female) होते हैं । यह प्रकृति द्वारा प्रदत्त है और चिकित्सा विज्ञान के आधार पर निर्धारित होता है

लिंग (Gender) एक सामाजिक और सांस्कृतिक अवधारणा है। यह उन भूमिकाओं, दृष्टिकोणों, और व्यवहारों से संबंधित है जो समाज यह तय करता है कि पुरुषों और महिलाओं के लिए क्या "उपयुक्त" हैं, इसे अक्सर "सामाजिक संरचना" (Social Construct) कहा जाता है, जो समय और संस्कृति के साथ बदलती रहती है, इसमें 'मर्दानगी' (Masculinity) और 'स्त्रीत्व' (Femininity) जैसे गुण शामिल हैं, जो जैविक न होकर समाज द्वारा सिखाए जाते हैं

लिंग शब्द अंग्रेजी के शब्द जेंडर का हिंदी रूपांतरण है। सामान्यतः लिंग शब्द का प्रयोग पुरुष एवं स्त्रियों के गुणों के कुलक तथा उनके समाज द्वारा उनसे अपेक्षित ब्यवहारो के लिए किया जाता है। फेमिनिस्ट के अनुसार- ''सामाजिक लिंग को स्त्री-पुरुष विभेद के सामाजिक संगठन अथवा स्त्री-पुरुष के मध्य असमान सम्बन्धों की ब्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।''

1.2 उद्देश्य

- लिंग, जेंडर और लैंगिकता के अर्थ और अवधारणाओं को समझ सकेंगे,
- जेंडर और लैंगिकता से सम्बन्धित विद्यमान असमानताओं और भेदभाव की पहचान कर सकेंगे,
- पुरुष और स्त्री के गुणों की रूढ़िवादिता आधारित जेंडर भेदभाव

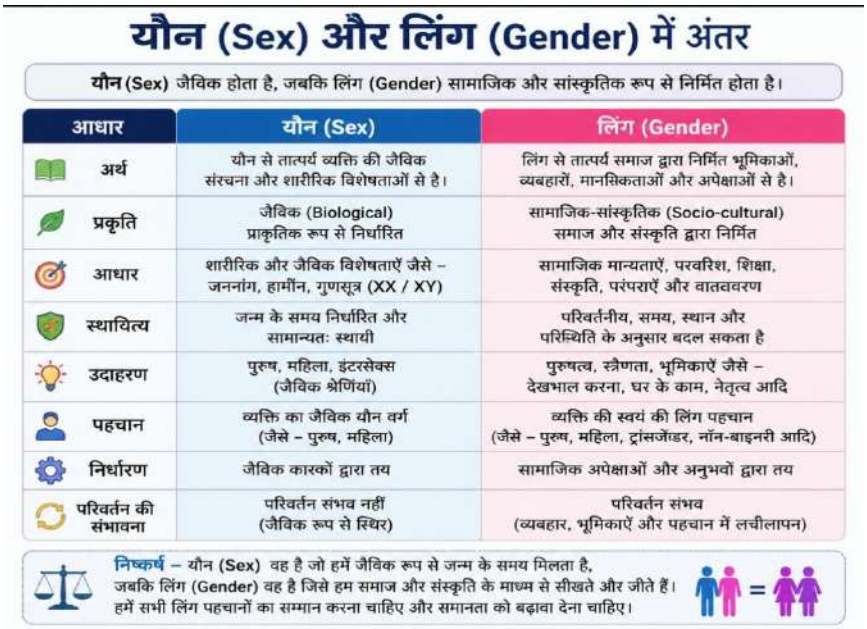
को समझ सकेंगे

- जेंडर और लैंगिकता से सम्बन्धित रूढ़ियों का वर्णन कर सकेंगे,
- जेंडर भूमिकाओं और जेंडर सामाजीकरण की व्याख्या कर सकेंगे;
- जेंडर भूमिकाएँ किस प्रकार जेंडर आधारित श्रम विभाजन को जन्म देती हैं, को समझ सकेंगें
- लैंगिक पहचान का जेंडर पहचान से अन्तर कर सकेंगे

NOTE

1.3 यौन (SEX) और लिंग (GENDER) में अंतर

के बावजूद 'यौन' और 'लिंग' में स्पष्ट अन्तर है। जिसका विवरण निम्नलिखित सामान्यतः 'यौन' और 'लिंग' में कोई विशेष अन्तर प्रतीत नहीं होता है, क्योंकि व्यक्ति के जैविक या सामाजिक निर्धारण इन दोनों के आधार पर ही होता है। इतनी समानता है-



यौन (Sex) और लिंग (Gender) में अंतर

यौन (Sex) जैविक होता है, जबकि लिंग (Gender) सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से निर्मित होता है।

आधार	यौन (Sex)	लिंग (Gender)
अर्थ	यौन से तात्पर्य व्यक्ति की जैविक संरचना और शारीरिक विशेषताओं से है।	लिंग से तात्पर्य समाज द्वारा निर्मित भूमिकाओं, व्यवहारों, मानसिकताओं और अपेक्षाओं से है।
प्रकृति	जैविक (Biological) प्राकृतिक रूप से निर्धारित	सामाजिक-सांस्कृतिक (Socio-cultural) समाज और संस्कृति द्वारा निर्मित
आधार	शारीरिक और जैविक विशेषताएँ जैसे – जननांग, हार्मोन, गुणसूत्र (XX / XY)	सामाजिक मान्यताएँ, परवरिश, शिक्षा, संस्कृति, परंपराएँ और वातावरण
स्थायित्व	जन्म के समय निर्धारित और सामान्यतः स्थायी	परिवर्तनीय, समय, स्थान और परिस्थिति के अनुसार बदल सकता है
उदाहरण	पुरुष, महिला, इंटरसेक्स (जैविक श्रेणियाँ)	पुरुषत्व, स्त्रैणता, भूमिकाएँ जैसे – देखभाल करना, घर के काम, नेतृत्व आदि
पहचान	व्यक्ति का जैविक यौन वर्ग (जैसे – पुरुष, महिला)	व्यक्ति की स्वयं की लिंग पहचान (जैसे – पुरुष, महिला, ट्रांसजेंडर, नॉन-बाइनरी आदि)
निर्धारण	जैविक कारकों द्वारा तय	सामाजिक अपेक्षाओं और अनुभवों द्वारा तय
परिवर्तन की संभावना	परिवर्तन संभव नहीं (जैविक रूप से स्थिर)	परिवर्तन संभव (व्यवहार, भूमिकाएँ और पहचान में लचीलापन)

निष्कर्ष – यौन (Sex) वह है जो हमें जैविक रूप से जन्म के समय मिलता है, जबकि लिंग (Gender) वह है जिसे हम समाज और संस्कृति के माध्म से सीखते और जीते हैं। हमें सभी लिंग पहचानों का सम्मान करना चाहिए और समानता को बढ़ावा देना चाहिए।

यौन (Sex)-

नोट

1. ' यौन' जैविक या शारीरिक होता है।

2. 'यौन' का सम्बन्ध पुरुष व स्त्री के जननांगो तथा उनसे जुड़े प्रजनन कार्यों से है।

3. 'यौन' प्राकृतिक है अर्थात् इसका निर्धारण प्रकृति द्वारा होता है।

4. 'यौन' स्थाई होता है। यह सभी स्थानों पर, प्रत्येक समय, प्रत्येक संस्कृति में सदैव एक ही रहता है।

5. यह सार्वभौमिक होता है।

6. यह शारीरिक होता है।

7. इसमें व्यक्ति का निर्धारण नर व मादा के रूप में होता है।

लिंग (Gender)-

1.'जेण्डर' सांस्कृतिक व सामाजिक है।

2. 'जेण्डर' का सम्बन्ध पुरुष व स्त्री के (Masculinity) या स्त्रियोचित (Femininity) गुणों, व्यवहार के तरीकों, भूमिकाओं, जिम्मेंदारियों आदि से है।

3. 'जेण्डर' मानवीकृत है अर्थात् इसका निर्धारण मनुष्यों द्वारा होता है।

4. 'जेण्डर' परिवर्तनशील होता है। यह स्थान, समय, संस्कृति यहाँ तक कि एक परिवार से दूसरे परिवार में परिवर्तित हो सकता है।

5. यह स्थानीय होता है।

6. यह व्यवहारिक होता है।

7. इसमें व्यक्ति का निर्धारण पुरूषोचित व स्त्रियोचित गुणों के रूप में होता

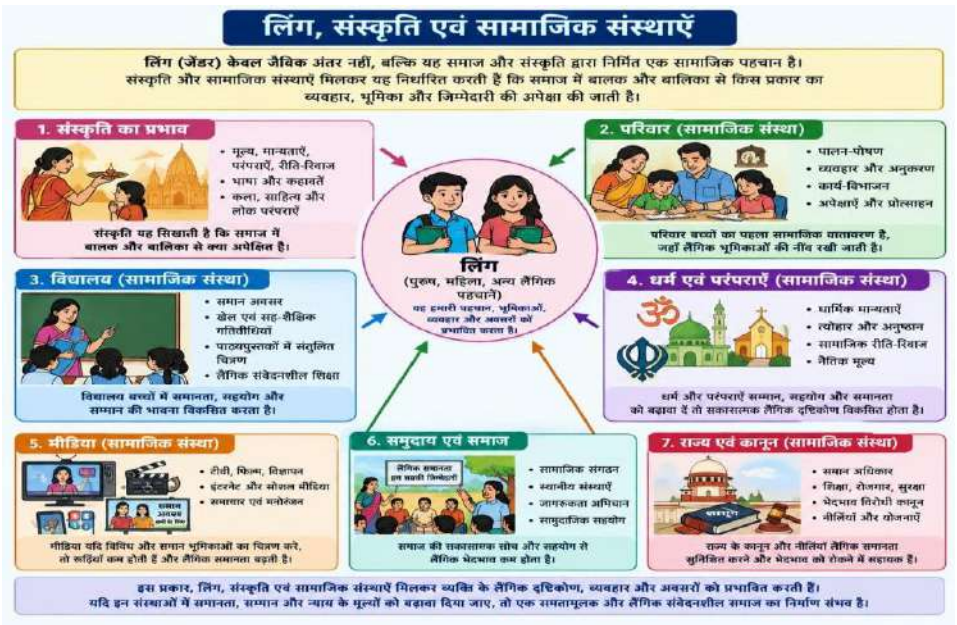
है।

NOTE

इस प्रकार हम देखते है कि 'यौन' और 'लिंग' दोनों अलग-अलग शब्द है तथा दोनों में स्पष्ट रूप से अन्तर है। एक ओर जहाँ यौन शब्द का प्रयोग स्त्री व पुरुषों में जैविक भिन्नता को दर्शाने के लिए प्रयुक्त होता है, जबकि दूसरी ओर लिंग शब्द का प्रयोग स्त्री व पुरूषों के सामाजिक व सांस्कृतिक असमानता को प्रदर्शित करने के लिए प्रयुक्त होता है।

1.4 लिंग संस्कृति एवं सामाजिक संस्थाएँ

लिंग, संस्कृति एवं सामाजिक संस्थाएँ एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। समाज में स्त्री, पुरुष तथा अन्य लैंगिक पहचानों से संबंधित भूमिकाएँ केवल जैविक आधार पर निर्धारित नहीं होतीं, बल्कि संस्कृति, परंपराओं, सामाजिक मान्यताओं और विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से भी निर्मित होती हैं। परिवार, विद्यालय, धर्म, मीडिया, समुदाय और राज्य जैसी संस्थाएँ व्यक्ति के लैंगिक विचारों और व्यवहार को प्रभावित करती हैं।



नोट

चित्र :- 1.4 लिंग संस्कृति एवं सामाजिक संस्थाएँ

लिंग और संस्कृति-

संस्कृति में समाज के मूल्य, मान्यताएँ, परंपराएँ, रीति-रिवाज, भाषा और व्यवहार के तरीके शामिल होते हैं। ये बच्चों को यह सिखाने में भूमिका निभाते हैं कि समाज बालक और बालिका से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करता है।

उदाहरण के लिए, यदि किसी संस्कृति में घरेलू कार्यों को मुख्यतः महिलाओं से जोड़ा जाता है, तो बच्चों में भी ऐसी लैंगिक धारणा विकसित हो सकती है। इसके विपरीत, समानता और सहयोग पर आधारित संस्कृति लैंगिक समानता को बढ़ावा देती है।

1.4.1- परिवार की भूमिका (Role of Family)-

- परिवार बच्चे का पहला सामाजिक वातावरण होता है, जहाँ वह लिंग संबंधी व्यवहार सीखता है।
- लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग अपेक्षाएँ रखी जाती हैं।
- खिलौने, कपड़े और खेल लिंग के आधार पर दिए जाते हैं।
- घर के कार्यों का विभाजन भी लिंग के अनुसार होता है।
- माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य अपने व्यवहार से बच्चों के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हैं।
- परिवार में समान अवसर मिलने से लैंगिक समानता विकसित होती है।

1.4.2 विद्यालय की भूमिका (Role of School)

- विद्यालय बच्चों के व्यक्तित्व और सामाजिक व्यवहार के विकास का

NOTE

महत्वपूर्ण केंद्र है।

- शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों की सोच को प्रभावित करता है।
- पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक समानता का चित्रण होना चाहिए।
- खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और नेतृत्व के अवसर सभी को समान रूप से मिलने चाहिए।
- विद्यालय का वातावरण भेदभाव रहित और सुरक्षित होना चाहिए।
- लैंगिक संवेदनशील शिक्षा समानता की भावना विकसित करती है।

1.4.3 समाज एवं संस्कृति की भूमिका (Role of Society and Culture)

- समाज और संस्कृति व्यक्ति के विचारों, मूल्यों और व्यवहार को प्रभावित करते हैं।
- समाज लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग भूमिकाएँ निर्धारित करता है।
- परंपराएँ और रीति-रिवाज लैंगिक धारणाओं को मजबूत करते हैं।
- सामाजिक मान्यताएँ बच्चों के आत्मविश्वास और अवसरों को प्रभावित करती हैं।
- आधुनिक समाज समानता और समान अवसरों पर बल देता है।
- सकारात्मक सांस्कृतिक परिवर्तन से लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलता है।

1.4.4 मीडिया की भूमिका (Role of Media)

- मीडिया समाज में विचारों और धारणाओं के निर्माण का प्रभावी माध्यम है।

नोट

- टीवी, फिल्में, समाचार, सोशल मीडिया और विज्ञापन बच्चों की सोच को प्रभावित करते हैं।
- सकारात्मक चित्रण से समानता और सम्मान की भावना बढ़ती है।
- रूढ़िवादी चित्रण लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा दे सकता है।
- जागरूकता अभियान समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाते हैं।
- डिजिटल मीडिया नई सोच और समान अवसरों को प्रोत्साहित करता है।

1.4.5 साथियों (Peer Group) की भूमिका

- साथियों का समूह बच्चों और किशोरों के व्यवहार पर गहरा प्रभाव डालता है।
- बच्चे अपने मित्रों से व्यवहार और सामाजिक नियम सीखते हैं।
- मित्र समूह लिंग आधारित धारणाओं को मजबूत या कमजोर कर सकता है।
- सकारात्मक मित्रता आत्मविश्वास और समानता को बढ़ाती है।
- साथियों का दबाव (Peer Pressure) कई बार रूढ़िवादी व्यवहार अपनाने के लिए प्रेरित करता है।
- सहयोग और सम्मान की भावना स्वस्थ सामाजिक विकास में सहायक होती है।

1.4.6 आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ (Economic and Social Conditions)

- आर्थिक और सामाजिक स्थिति भी लिंग निर्माण को प्रभावित करती

NOTE

है।

- आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में लड़कियों की शिक्षा प्रभावित हो सकती है।
- रोजगार और संसाधनों की उपलब्धता लैंगिक अवसरों को निर्धारित करती है।
- गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी लैंगिक असमानता बढ़ा सकती है।
- शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण समानता को बढ़ावा देते हैं।
- सरकारी योजनाएँ और सामाजिक कल्याण कार्यक्रम लैंगिक न्याय को मजबूत करते हैं।

1.4.7 धर्म और परंपराओं की भूमिका (Role of Religion and Traditions)

- धर्म और परंपराएँ समाज के नैतिक मूल्यों और जीवनशैली को प्रभावित करती हैं।
- धार्मिक शिक्षाएँ समानता, सम्मान और नैतिकता का संदेश देती हैं।
- कुछ परंपराएँ लैंगिक असमानता को बढ़ावा देती हैं, जबकि कई परंपराएँ समानता का समर्थन करती हैं।
- समय के साथ सामाजिक सुधारों से अनेक रूढ़ियाँ समाप्त हुई हैं।
- धर्म का सही और मानवीय दृष्टिकोण समान अवसरों को प्रोत्साहित करता है।
- संविधान और शिक्षा सभी नागरिकों के लिए समान अधिकारों पर बल देते हैं।

1.5 अपनी प्रगति जाँचे

नोट

1 . जैविक यौन (Sex) से आप क्या समझते हैं?

.....

.....

2.लिंग (Gender) की अवधारणा क्या है?

.....

.....

3.लिंग निर्माण में परिवार की क्या भूमिका है?

.....

.....

4.लैंगिक समानता (Gender Equality) का क्या अर्थ है?

.....

.....

1.6 सारांश

- Sex (जैविक यौन) व्यक्ति की जन्मजात जैविक पहचान है।
- Gender (लिंग) समाज द्वारा निर्मित भूमिकाओं, अपेक्षाओं और व्यवहारों की अवधारणा है।

एक समतामूलक समाज के निर्माण के लिए यह समझना आवश्यक है कि जैविक अंतर (Sex) और सामाजिक भूमिकाएँ (Gender) अलग-अलग अवधारणाएँ हैं तथा सभी व्यक्तियों को समान अवसर और सम्मान मिलना चाहिए।

1.7 शब्दावली

NOTE

- लिंग (Gender): सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहचान।
- जैविक यौन (Sex): जैविक एवं शारीरिक पहचान।
- लैंगिक समानता (Gender Equality): सभी को समान अधिकार, अवसर और सम्मान मिलना।
- लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination): लिंग के आधार पर असमान व्यवहार करना।
- लैंगिक रूढ़ियाँ (Gender Stereotypes): पुरुषों और महिलाओं के बारे में बनी पूर्वधारणाएँ।
- लैंगिक भूमिकाएँ (Gender Roles): समाज द्वारा निर्धारित कार्य और जिम्मेदारियाँ।

लैंगिक संवेदनशीलता (Gender Sensitivity): सभी लिंगों के प्रति सम्मान, समानता और संवेदनशील व्यवहार।

1.8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

अपनी प्रगति जांचें –

प्रश्न 1. विद्यालय लैंगिक समानता को कैसे बढ़ावा दे सकता है?

उत्तर: - समान अवसर, भेदभाव-मुक्त वातावरण, लैंगिक संवेदनशील शिक्षा, समान भागीदारी और सम्मानपूर्ण व्यवहार के माध्यम से विद्यालय लैंगिक समानता को बढ़ावा दे सकता है।

प्रश्न 2. लैंगिक रूढ़िवादिता (Gender Stereotype) क्या है?

नोट

उत्तर: - किसी लिंग के बारे में पहले से बनी हुई निश्चित और सीमित धारणाएँ, जैसे "लड़के नहीं रोते" या "घर का काम केवल लड़कियाँ करती हैं", लैंगिक रूढ़िवादिता कहलाती हैं।

प्रश्न 3. Gender निर्माण में परिवार की क्या भूमिका होती है?

उत्तर: - परिवार बच्चों को सामाजिक भूमिकाएँ, व्यवहार, मूल्य और अपेक्षाएँ सिखाता है, जिससे उनकी लैंगिक पहचान और सोच का विकास होता है।

प्रश्न 4. लिंग (Gender) से क्या अभिप्राय है?

उत्तर: - लिंग (Gender) समाज द्वारा निर्मित भूमिकाओं, व्यवहारों, जिम्मेदारियों और अपेक्षाओं का समूह है, जिसे व्यक्ति परिवार, विद्यालय और समाज से सीखता है।

1.9 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

C.R. प्रकाशन - LAXMI PVT

पुस्तक - लिंग, विद्यालय तथा समाज

(GENDER, SCHOOL AND SOCIETY)

S.U./M.D.U./I.G.U./G.J.U.

1.10 संदर्भ

NOTE

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2006). लिंग, विद्यालय एवं समाज। नई दिल्ली: एन.सी.ई.आर.टी.
- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020)। नई दिल्ली।
- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (NCERT). (2005). राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (NCF-2005)। नई दिल्ली।
- पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर। बी.एड. पाठ्यक्रम: लिंग, विद्यालय एवं समाज।
- NCERT. (2006). Gender, School and Society. New Delhi: National Council of Educational Research and Training

1.11 अभ्यास

भाग 1

अ.बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)-

1. 'लिंग' (SEX) का निर्धारण मुख्यतः किस आधार पर होता है?

(अ) सामाजिक भूमिकाओं के आधार पर
(ब) जैविक एवं शारीरिक विशेषताओं के आधार पर
(स) व्यक्ति की रुचियों के आधार पर
(द) परिवार की अपेक्षाओं के आधार पर

नोट

2. मानव में बच्चे के लिंग निर्धारण में पिता की भूमिका क्यों महत्वपूर्ण मानी जाती है?

(अ) क्योंकि पिता केवल X गुणसूत्र देता है

(ब) क्योंकि पिता X या Y में से कोई एक गुणसूत्र दे सकता है

(स) क्योंकि माता Y गुणसूत्र देती है

(द) क्योंकि लिंग का निर्धारण जन्म के बाद होता है

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन लिंग विकास के संबंध में सही है?

(अ) लिंग विकास केवल जन्म के समय ही पूरा हो जाता है।

(ब) लिंग संबंधी समझ और पहचान समय के साथ विकसित होती है।

(स) लिंग विकास पर वातावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(द) लिंग विकास केवल विद्यालय में होता है।

4. बालक और बालिका के प्रति अलग-अलग सामाजिक अपेक्षाएँ किसका उदाहरण हैं?

(अ) आनुवंशिकता

(ब) जैविक परिपक्वता

(स) लैंगिक रूढ़ियाँ (Gender Stereotypes)

(द) शारीरिक वृद्धि

5. बालक अथवा बालिका के विकास में परिवार और विद्यालय की उचित भूमिका क्या होनी चाहिए?

(अ) दोनों को अलग-अलग अवसर देना

(ब) बालकों को अधिक स्वतंत्रता देना

(स) बालिकाओं को केवल घरेलू कार्य सिखाना

(द) दोनों को समान अवसर और सम्मान प्रदान करना

NOTE

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1.उत्तर — (ब) जैविक एवं शारीरिक विशेषताओं के आधार पर।

स्पष्टीकरण:

लिंग (Sex) मुख्यतः जैविक विशेषताओं, जैसे गुणसूत्र, प्रजनन अंग तथा हार्मोनल विशेषताओं से संबंधित होता है। जबकि **जेंडर (Gender)** सामाजिक एवं सांस्कृतिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं से अधिक संबंधित है।

2.उत्तर — (ब) क्योंकि पिता X या Y में से कोई एक गुणसूत्र दे सकता है।

स्पष्टीकरण:

माता का अंडाणु सामान्यतः **X गुणसूत्र** देता है, जबकि पिता का शुक्राणु **X या Y** गुणसूत्र लेकर आ सकता है।

- X + X = XX → सामान्यतः बालिका
- X + Y = XY → सामान्यतः बालक

3.उत्तर — (ब) लिंग संबंधी समझ और पहचान समय के साथ विकसित होती है।

स्पष्टीकरण:

बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं, वे अपने तथा दूसरों के लिंग से संबंधित

नोट

सामाजिक भूमिकाओं, व्यवहारों और अपेक्षाओं को समझने लगते हैं। इसमें परिवार, विद्यालय, मित्र तथा समाज की भूमिका होती है।

4.उत्तर — (स) लैंगिक रूढ़ियाँ (Gender Stereotypes)।

स्पष्टीकरण:

जब समाज यह मानता है कि कुछ कार्य या व्यवहार केवल लड़कों या केवल लड़कियों के लिए उपयुक्त हैं, तो इसे **लैंगिक रूढ़ि** कहा जाता है। उदाहरण के लिए, "लड़के गणित में अच्छे होते हैं" या "लड़कियाँ केवल घरेलू कार्यों के लिए होती हैं"—ऐसी धारणाएँ लैंगिक रूढ़ियाँ हैं।

5.उत्तर — (द) दोनों को समान अवसर और सम्मान प्रदान करना।

स्पष्टीकरण:

बालक और बालिका दोनों को शिक्षा, खेल, निर्णय लेने, अपनी रुचि विकसित करने और आगे बढ़ने के **समान अवसर** मिलने चाहिए। इससे लैंगिक भेदभाव और रूढ़ियों को कम करने में सहायता मिलती है।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. बालक अथवा बालिका के लिंग-सम्बन्धी विकास पर परिवार एवं सामाजिक वातावरण का क्या प्रभाव पड़ता है?
2. जैविक लिंग और सामाजिक लिंग (Gender) में अंतर स्पष्ट कीजिए।

भाग 2

स. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

NOTE

1. बालक अथवा बालिका के जैविक लिंग के निर्धारण एवं विकास की प्रक्रिया का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। इसमें गुणसूत्र, निषेचन तथा SRY जीन की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
2. बालक अथवा बालिका के लिंग-सम्बन्धी विकास को प्रभावित करने वाले जैविक एवं सामाजिक कारकों की विस्तारपूर्वक विवेचना कीजिए। परिवार, विद्यालय, समाज एवं संस्कृति की भूमिका को उदाहरण सहित समझाइए।

इकाई 2
समाजीकरण की प्रक्रिया

इकाई की रूपरेखा

2.1 – प्रस्तावना
2.2 - उद्देश्य
2.3 - परिवार**,** विद्यालय**,** समुदाय और मीडिया की भूमिका
2.3.1 -परिवार की प्रमुख भूमिकाए
2.3.2 - विद्यालय **(School)** की भूमिका
2.3.3 - समुदाय **(Community)** की भूमिका
2.4 - लड़का-लड़की की भूमिकाओं का निर्माण
2.4.1 - परिवार की भूमिका
2.4.2 - विद्यालय की भूमिका
2.4.3 - समाज और संस्कृति की भूमिका
2.4.4 - मीडिया की भूमिका
2.4.5 - मित्र समूह **(Peer Group)** की भूमिका
2.4.6 - लड़का–लड़की की भूमिकाओं के निर्माण के प्रभाव
2.5सारांश
2.6 शब्दावली
2.7 अपनी प्रगति जांचें **–** संभावित उत्तर
2.8 सहायक पाठ्य सामग्री **–** मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
2.9 संदर्भ

नोट

2.1 प्रस्तावना

समाजीकरण (Socialization) वह सतत एवं आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के मूल्य (Values), मानदंड (Norms), संस्कृति (Culture), परंपराएँ (Traditions), भाषा (Language), विश्वास (Beliefs), व्यवहार (Behavior) तथा सामाजिक भूमिकाएँ (Social Roles) सीखता है। यह प्रक्रिया जन्म से प्रारंभ होकर जीवन के अंतिम समय तक चलती रहती है। समाजीकरण के माध्यम से व्यक्ति केवल समाज का सदस्य ही नहीं बनता, बल्कि वह अपने अधिकारों, कर्तव्यों तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों को भी समझता है।

समाजीकरण का पहला और सबसे महत्वपूर्ण माध्यम परिवार है, जहाँ बालक भाषा, व्यवहार, प्रेम, अनुशासन तथा सामाजिक संबंधों का ज्ञान प्राप्त करता है। इसके बाद विद्यालय बालक के व्यक्तित्व, नैतिकता, नेतृत्व क्षमता, सहयोग, अनुशासन तथा लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करता है। इसके अतिरिक्त मित्र समूह, समुदाय, धार्मिक संस्थाएँ तथा जनसंचार माध्यम भी समाजीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

लिंग समाजीकरण (Gender Socialization) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज बालक एवं बालिका को उनके लिंग के आधार पर विभिन्न भूमिकाएँ, अपेक्षाएँ एवं व्यवहार सिखाता है। कई बार समाज में रूढ़िवादी धारणाओं के कारण लड़कों और लड़कियों के साथ अलग-अलग व्यवहार किया जाता है, जिससे लैंगिक असमानता उत्पन्न होती है।

विद्यालय इस असमानता को समाप्त करने का सबसे प्रभावी

NOTE

माध्यम है। विद्यालय में समान अवसर, समान शिक्षा, समान सहभागिता तथा लैंगिक संवेदनशील वातावरण प्रदान करके बालकों एवं बालिकाओं में समानता, सम्मान और सहयोग की भावना विकसित की जा सकती है। शिक्षक भी अपने निष्पक्ष व्यवहार एवं समावेशी शिक्षण पद्धति द्वारा लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं।

इस प्रकार समाजीकरण की प्रक्रिया व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ एक न्यायपूर्ण, समानतामूलक एवं लोकतांत्रिक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2.2 उद्देश्य

- समाज के मूल्यों, आदर्शों एवं संस्कृति का विकास करना।
- बालकों में सामाजिक व्यवहार एवं अनुशासन की भावना विकसित करना।
- लैंगिक समानता (Gender Equality) एवं पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा देना।
- बालक एवं बालिका में समान अधिकार एवं अवसर की भावना विकसित करना।
- सहयोग, सहिष्णुता, जिम्मेदारी एवं नैतिक मूल्यों का विकास करना।
- विद्यालय एवं समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करना।
- लोकतांत्रिक मूल्यों एवं नागरिक उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करना।
- सामाजिक समायोजन एवं व्यक्तित्व विकास में सहायता करना।

नोट

रूढ़िवादी लैंगिक धारणाओं को समाप्त कर समानता आधारित समाज का निर्माण करना।

- सामाजिक न्याय, समावेशन एवं मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता विकसित करना।

2.3 परिवार, विद्यालय, समुदाय और मीडिया की भूमिका



चित्र :- परिवार विद्यालय समुदाय और मीडिया की भूमिका

2.3.1 - परिवार की प्रमुख भूमिकाए-

क) प्रथम शिक्षा का केंद्र- परिवार बच्चे को बोलना, चलना, रहन-सहन और सामाजिक व्यवहार सिखाता है।

ख) संस्कारों का विकास - ईमानदारी, सत्य, अनुशासन, प्रेम, सहयोग और सम्मान जैसे गुण विकसित करता है।

ग) लैंगिक समानता का विकास – लड़का और लड़की दोनों को समान

NOTE

अवसर एवं जिम्मेदारियाँ देकर समानता की भावना विकसित की जा सकती है।

घ) सामाजिक व्यवहार का निर्माण – परिवार से ही बच्चे में सहयोग, सहानुभूति और जिम्मेदारी का विकास होता है।

2.3.2 - विद्यालय (School) की भूमिका-

क) समान शिक्षा प्रदान करना - सभी विद्यार्थियों को समान अवसर देना।

ख) अनुशासन एवं जिम्मेदारी – समयानुकुल अनुशासन, नियमों का पालन और उत्तरदायित्व सिखाना।

ग) सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ – खेल, वाद-विवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से नेतृत्व और सहयोग विकसित करना।

घ) समावेशी शिक्षा – सभी विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा प्रदान करना।

2.3.3 - समुदाय (Community) की भूमिका-

क) सामाजिक मूल्यों का विकास - सहयोग, सेवा और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना।

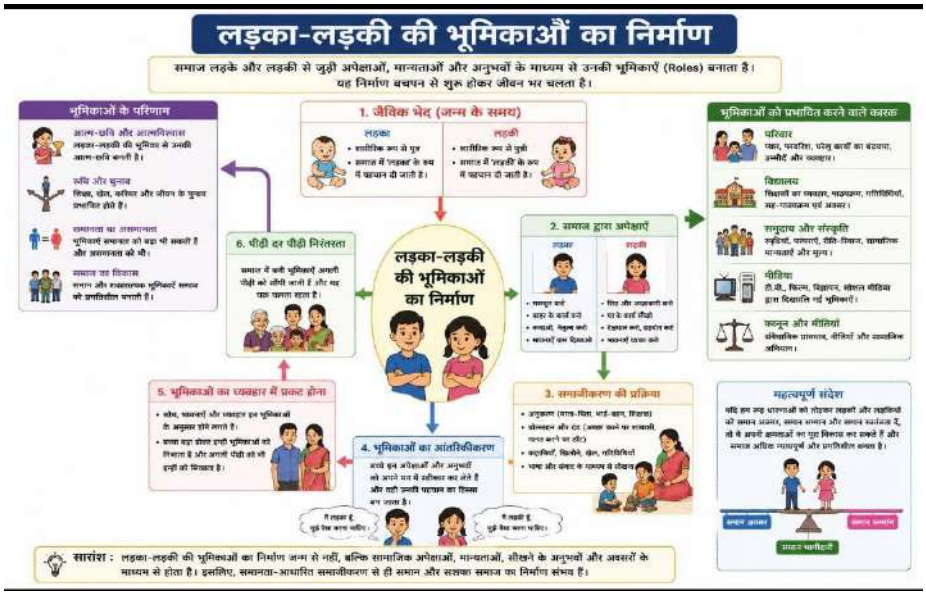
ख) सांस्कृतिक संरक्षण - स्थानीय परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक विरासत का ज्ञान देना।

ग) लैंगिक समानता को बढ़ावा - बाल विवाह, दहेज और लैंगिक भेदभाव जैसी कुरीतियों के विरुद्ध जागरूकता फैलाना।

घ) सुरक्षित वातावरण - बच्चों के विकास के लिए सकारात्मक एवं सुरक्षित सामाजिक वातावरण उपलब्ध कराना।

नोट

2.4 लड़का – लड़की की भूमिकाओं का निर्माण



चित्र:- लड़का - लड़की की भूमिकाओं का निर्माण

2.4.1 - परिवार की भूमिका - A) परिवार समाजीकरण का पहला माध्यम है।

B) लड़कों और लड़कियों को अलग-अलग खिलौने, कपड़े और जिम्मेदारियाँ दी जाती हैं।

C) परिवार का व्यवहार बच्चों की सोच और व्यक्तित्व को प्रभावित करता है।

2.4.2 - विद्यालय की भूमिका - A) विद्यालय बच्चों में समानता, सहयोग और सम्मान की भावना विकसित करता है।

B) शिक्षक यदि सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करें, तो लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलता है।

C) पाठ्यपुस्तकों और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में समान अवसर

NOTE

महत्वपूर्ण हैं।

2.4.3 - समाज और संस्कृति की भूमिका - A) समाज की परंपराएँ, रीति-रिवाज और मान्यताएँ लड़का-लड़की की भूमिकाओं को प्रभावित करती हैं।

B) कई समाजों में लड़कों को निर्णय लेने वाला और लड़कियों को घरेलू कार्यों तक सीमित माना जाता है।

2.4.4 - मीडिया की भूमिका- A) टीवी, फिल्में, विज्ञापन और सोशल मीडिया बच्चों की सोच को प्रभावित करते हैं।

B) सकारात्मक मीडिया लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है, जबकि रूढ़िवादी चित्रण भेदभाव को बढ़ा सकता है।

2.4.5 - मित्र समूह (Peer Group) की भूमिका -A) बच्चे अपने मित्रों से भी व्यवहार और सामाजिक भूमिकाएँ सीखते हैं।

B) मित्र समूह सकारात्मक या नकारात्मक दोनों प्रकार से लैंगिक सोच को प्रभावित कर सकता है।

2.4.6 - लड़का–लड़की की भूमिकाओं के निर्माण के प्रभाव -

- व्यक्तित्व और आत्मविश्वास का विकास।
- करियर और शिक्षा के अवसरों पर प्रभाव।
- सामाजिक व्यवहार और निर्णय क्षमता का विकास।
- लैंगिक समानता या असमानता का निर्माण।
- परिवार और समाज में जिम्मेदारियों का विभाजन।

अपनी प्रगति जाँचे –

नोट

प्रश्न 1. समाजीकरण (Socialization) क्या है?

.....

.....

प्रश्न 2. समाजीकरण का प्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण अभिकरण कौन-सा है?

.....

.....

प्रश्न 3. विद्यालय समाजीकरण में क्या भूमिका निभाता है?

.....

.....

2.5 सारांश

समाजीकरण (Socialization) वह सतत एवं आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के मूल्य, मानदंड, संस्कृति, परंपराएँ, भाषा, व्यवहार तथा सामाजिक भूमिकाओं को सीखता है। जन्म के समय शिशु केवल एक जैविक प्राणी होता है, परंतु परिवार, विद्यालय, समुदाय, मित्र समूह और मीडिया के संपर्क में आकर वह सामाजिक प्राणी बनता है।

लिंग (Gender), विद्यालय एवं समाज के संदर्भ में समाजीकरण का विशेष महत्व है, क्योंकि इसी प्रक्रिया के माध्यम से बालक एवं बालिका अपने अधिकार, कर्तव्य, जिम्मेदारियाँ, सामाजिक अपेक्षाएँ तथा लैंगिक भूमिकाएँ

NOTE

सीखते हैं। यदि समाजीकरण सकारात्मक एवं समानतापूर्ण हो, तो लड़के और लड़कियों के बीच समानता, सम्मान, सहयोग और न्याय की भावना विकसित होती है। इसके विपरीत, यदि समाजीकरण रूढ़िवादी एवं भेदभावपूर्ण हो, तो लैंगिक असमानता, भेदभाव तथा सामाजिक विषमताएँ बढ़ती हैं।

परिवार समाजीकरण का प्रथम माध्यम है, जहाँ बालक भाषा, संस्कार, नैतिक मूल्य एवं व्यवहार सीखता है। विद्यालय बालक में अनुशासन, लोकतांत्रिक मूल्य, नेतृत्व, सहयोग तथा लैंगिक समानता की भावना विकसित करता है।

समुदाय सामाजिक सहभागिता एवं सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ावा देता है, जबकि मीडिया आधुनिक विचारों, शिक्षा, जागरूकता तथा सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनता है।

समाजीकरण का उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास, सामाजिक समायोजन, नैतिक एवं चारित्रिक विकास, लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना तथा समानता पर आधारित समाज का निर्माण करना है। वर्तमान समय में शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य ऐसा समाजीकरण करना है जो लैंगिक न्याय, समावेशिता और मानवाधिकारों पर आधारित हो।

इस प्रकार समाजीकरण केवल सामाजिक नियमों को सिखाने की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक विकास तथा राष्ट्र निर्माण का आधार भी है।

2.6 शब्दावली

समाजीकरण (Socialization)-

नोट

समाज के मूल्य, मानदंड, संस्कृति एवं व्यवहार सीखने की प्रक्रिया।

लिंग (Gender)-

समाज द्वारा निर्धारित स्त्री एवं पुरुष की सामाजिक भूमिकाएँ और अपेक्षाएँ।

जैविक यौन (Sex)-

जन्म के समय शरीर की जैविक एवं शारीरिक विशेषताओं के आधार पर निर्धारित स्त्री या पुरुष की पहचान।

समाज (Society)-

व्यक्तियों का ऐसा संगठित समूह जो सामाजिक नियमों एवं संबंधों के आधार पर जीवन व्यतीत करता है।

परिवार (Family)-

समाजीकरण का प्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण अभिकरण।

विद्यालय (School) औपचारिक शिक्षा एवं समाजीकरण का प्रमुख संस्थान।

समुदाय (Community)-

समान क्षेत्र या उद्देश्य से जुड़े लोगों का सामाजिक समूह।

मीडिया (Media)-

सूचना एवं संचार का माध्यम, जैसे टीवी, रेडियो, समाचार पत्र, इंटरनेट एवं सोशल मीडिया।

संस्कृति (Culture)-

समाज के रीति-रिवाज, परंपराएँ, भाषा, कला, विश्वास एवं जीवन शैली।

NOTE

मानदंड (Norms)-

समाज द्वारा स्वीकार किए गए व्यवहार के नियम।

मूल्य (Values)-

समाज द्वारा महत्वपूर्ण माने जाने वाले आदर्श एवं सिद्धांत।

लैंगिक समानता (Gender Equality)-

स्त्री एवं पुरुष को समान अधिकार, अवसर एवं सम्मान प्राप्त होना।

लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination)-

लिंग के आधार पर असमान व्यवहार करना।

लैंगिक रूढ़ियाँ (Gender Stereotypes)-

लड़का एवं लड़की के बारे में बनी पारंपरिक एवं पूर्वाग्रहपूर्ण धारणाएँ।

समावेशन (Inclusion)-

सभी व्यक्तियों को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर प्रदान करना।

लोकतांत्रिक मूल्य (Democratic Values)-

समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुत्व एवं सहयोग जैसे मूल्य।

सामाजिक भूमिका (Social Role)-

समाज द्वारा व्यक्ति से अपेक्षित कार्य एवं व्यवहार।

सामाजिक समायोजन (Social Adjustment)-

समाज एवं विभिन्न परिस्थितियों के साथ सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता।

नोट

समाजीकरण के अभिकरण (Agents of Socialization)-

परिवार, विद्यालय, समुदाय, मित्र समूह एवं मीडिया जैसे माध्यम जो समाजीकरण में सहायता करते हैं।

लैंगिक संवेदनशीलता (Gender Sensitivity)-

सभी लिंगों के प्रति सम्मान, समानता एवं निष्पक्ष व्यवहार की भावना।

2.7 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. समाजीकरण (Socialization) क्या है?

उत्तर: - समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के मूल्य, मानदंड, संस्कृति, भाषा और सामाजिक व्यवहार सीखता है तथा एक जिम्मेदार सामाजिक सदस्य बनता है।

प्रश्न 2. समाजीकरण का प्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण अभिकरण कौन-सा है?

उत्तर: - परिवार समाजीकरण का प्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण अभिकरण है। परिवार ही बालक को भाषा, संस्कार, अनुशासन, नैतिक मूल्य तथा सामाजिक व्यवहार की प्रारंभिक शिक्षा देता है।

प्रश्न 3. विद्यालय समाजीकरण में क्या भूमिका निभाता है?

उत्तर: - विद्यालय बच्चों में अनुशासन, सहयोग, नेतृत्व, लोकतांत्रिक मूल्य, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा लैंगिक समानता की भावना विकसित करता है और उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार करता है।

2.8 सुझाई गई पठन सामग्री - OER

NOTE

NCERT : -समाजशास्त्र, शिक्षा एवं लिंग अध्ययन से संबंधित ई-पुस्तकें और अध्ययन सामग्री।

NROER: – समाजीकरण, विद्यालय एवं समाज, तथा लिंग समानता पर डिजिटल शिक्षण सामग्री।

DIKSHA : – शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए निःशुल्क ई-कंटेंट, वीडियो और मॉड्यूल।

2.9 संदर्भ

- NCERT (2006). लिंग, विद्यालय और समाज (Gender, School and Society). नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)।
- Mangal, S. K. (2019). शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology). नई दिल्ली: PHI Learning Pvt. Ltd.
- Sharma, R. A. (2018). शिक्षा का समाजशास्त्र (Sociology of Education). मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
- Bhatnagar, R. P. एवं Saxena, A. B. (2017). शिक्षा का समाजशास्त्र (Sociology of Education). आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

2.10 अभ्यास

भाग 1

नोट

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)-

प्रश्न 1. समाजीकरण का प्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण अभिकरण कौन-सा है?

(अ) विद्यालय

(ब) परिवार

(स) मीडिया

(द) समुदाय

प्रश्न 2. समाजीकरण का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(अ) केवल रोजगार प्राप्त करना

(ब) केवल परीक्षा में सफलता प्राप्त करना

(स) व्यक्ति को समाज के अनुरूप व्यवहार सिखाना *

(द) केवल आर्थिक विकास करना

प्रश्न 3. निम्नलिखित में से समाजीकरण का आधुनिक अभिकरण कौन-सा है?

अ) मीडिया

(ब) विद्यालय

(स) परिवार

(द) उपर्युक्त सभी

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

NOTE

1.सही उत्तर: (ब) परिवार

स्पष्टीकरण: परिवार समाजीकरण का प्रथम एवं सबसे महत्वपूर्ण अभिकरण है। बालक का जन्म के बाद सबसे पहले संपर्क परिवार के सदस्यों से होता है। परिवार में ही वह भाषा, व्यवहार, नैतिक मूल्य, संस्कार, अनुशासन तथा सामाजिक परंपराएँ सीखता है। परिवार बालक के व्यक्तित्व एवं सामाजिक विकास की नींव रखता है।

2.सही उत्तर: (स) व्यक्ति को समाज के अनुरूप व्यवहार सिखाना

स्पष्टीकरण: समाजीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के नियमों, मूल्यों, परंपराओं, रीति-रिवाजों तथा व्यवहारों को सीखता है। इसका मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को समाज का एक जिम्मेदार एवं सक्रिय सदस्य बनाना है, ताकि वह सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार कर सके।

3.सही उत्तर: (अ) मीडिया — यदि प्रश्न में आधुनिक अभिकरण पूछा गया है।

स्पष्टीकरण: मीडिया, जैसे टेलीविजन, इंटरनेट, सोशल मीडिया और डिजिटल मंच, समाजीकरण के आधुनिक अभिकरण हैं। इनके माध्यम से व्यक्ति विभिन्न विचारों, संस्कृतियों, सामाजिक मूल्यों तथा व्यवहारों से परिचित होता है।

विद्यालय, परिवार और समुदाय भी समाजीकरण के महत्वपूर्ण अभिकरण हैं, लेकिन मीडिया को विशेष रूप से आधुनिक अभिकरण माना जाता है।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

नोट

प्रश्न 1. समाजीकरण (Socialization) से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2. समाजीकरण में विद्यालय की दो प्रमुख भूमिकाएँ लिखिए।

प्रश्न 3. लिंग (Gender) और जैविक यौन (Sex) में क्या अंतर है?

भाग 2

स. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. समाजीकरण (Socialization) की अवधारणा, उद्देश्य तथा प्रमुख अभिकरणों की भूमिका का विस्तार से वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2. परिवार, विद्यालय, समुदाय एवं मीडिया समाजीकरण की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करते हैं? लिंग, विद्यालय एवं समाज के संदर्भ में उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

NOTE

इकाई 3
लैंगिक रूढ़ियाँ एवं पूर्वाग्रह

इकाई की रूपरेखा

3.1- प्रस्तावना
3.2- उद्देश्य
3.3- पारंपरिक धारणाएँ -
- **3.3.1-** लिंग आधारित रूढ़िवादी धारणाएँ **(Gender Stereotypes)**
- **3.3.2-** परिवार एवं समाज की पारंपरिक सोच
- **3.3.3-** शिक्षा एवं व्यवसाय से जुड़ी पारंपरिक धारणाएँ

3.4 - भेदभाव और उसके प्रभाव -
- **3.4.1-** शिक्षा में लैंगिक भेदभाव
- **3.4.2-** सामाजिक एवं आर्थिक भेदभाव
- **3.4.3-** भेदभाव के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रभाव

3.5 - सारांश
3.6 - शब्दावली
3.7 - अपनी प्रगति जांचें - संभावित उत्तर
3.8 - सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
3.9 - संदर्भ
3.10 - अभ्यास

3.1 प्रस्तावना

लैंगिक रूढ़ियाँ (Gender Stereotypes) और लैंगिक पूर्वाग्रह (Gender Bias) समाज में लंबे समय से प्रचलित ऐसी धारणाएँ और व्यवहार हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति की क्षमताओं, भूमिकाओं, रुचियों और व्यवहार को उसके लिंग के आधार पर निर्धारित या सीमित किया जाता है। उदाहरण के लिए, "लड़कियाँ स्वभाव से देखभाल करने वाली होती हैं", "लड़के गणित और विज्ञान में अधिक अच्छे होते हैं" या "घर की जिम्मेदारी मुख्यतः महिलाओं की होती है"—इस प्रकार की सामान्यीकृत धारणाएँ लैंगिक रूढ़ियों को दर्शाती हैं।

नोट

लैंगिक रूढ़ियाँ परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति, मीडिया, साथियों तथा परंपराओं के माध्यम से बचपन से ही विकसित हो सकती हैं। जब इन धारणाओं के आधार पर किसी व्यक्ति के साथ असमान व्यवहार, अवसरों में कमी या अनुचित मूल्यांकन किया जाता है, तो यह लैंगिक पूर्वाग्रह का रूप ले लेता है। उदाहरण के लिए, किसी छात्रा को केवल लड़की होने के कारण तकनीकी गतिविधियों में कम सक्षम मानना या किसी छात्र को कला एवं नृत्य में रुचि रखने पर हतोत्साहित करना लैंगिक पूर्वाग्रह के उदाहरण हो सकते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक रूढ़ियाँ एवं पूर्वाग्रह विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि विद्यालय और महाविद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, दृष्टिकोण और सामाजिक व्यवहार के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं और पुरुषों की पारंपरिक भूमिकाओं का असंतुलित चित्रण, कक्षा में विद्यार्थियों से अलग-अलग अपेक्षाएँ रखना, विषय चयन में लैंगिक धारणाएँ तथा खेल एवं नेतृत्व के अवसरों में असमानता विद्यार्थियों के विकास को प्रभावित कर सकती है।

इसलिए लैंगिक समानता, समान अवसर, सम्मान, स्वतंत्र अभिव्यक्ति और समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए लैंगिक रूढ़ियों एवं पूर्वाग्रहों को पहचानना और उनका आलोचनात्मक विश्लेषण करना आवश्यक है। शिक्षक इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। वे कक्षा में सभी विद्यार्थियों को समान अवसर देकर, रूढ़िबद्ध धारणाओं को चुनौती देकर तथा सहयोगात्मक एवं संवेदनशील वातावरण बनाकर लैंगिक समानता को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

3.2 उद्देश्य

NOTE

- लैंगिक रूढ़ियों की अवधारणा को समझना
- लैंगिक पूर्वाग्रह की पहचान करना
- रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों के कारणों को समझना
- लैंगिक असमानता के प्रभावों को समझना
- आलोचनात्मक चिंतन विकसित करना
- समान अवसर की भावना विकसित करना
- लैंगिक संवेदनशीलता विकसित करना
- शिक्षक की भूमिका को समझना
- मीडिया एवं पाठ्यपुस्तकों का आलोचनात्मक अध्ययन करना

लैंगिक समानता आधारित समाज के निर्माण में योगदान देना

3.3 पारंपरिक धारणाएँ

3.3.1- लिंग आधारित रूढ़िवादी धारणाएँ (Gender Stereotypes) –

लिंग आधारित रूढ़िवादी धारणाएँ (Gender Stereotypes) ऐसी सामाजिक मान्यताएँ हैं, जिनमें व्यक्ति के लिंग के आधार पर उसकी भूमिका, व्यवहार, क्षमता, रुचि और जिम्मेदारियों के बारे में पहले से ही एक निश्चित धारणा बना ली जाती है। इन धारणाओं में व्यक्ति की वास्तविक योग्यता और व्यक्तिगत पसंद की अपेक्षा उसके लिंग को अधिक महत्व दिया जाता है।

प्रमुख उदाहरण -

- **व्यवहार संबंधी धारणा-**

लड़कों को साहसी, मजबूत और आत्मनिर्भर तथा लड़कियों को शांत,

नोट

संवेदनशील और विनम्र माना जाना।

- **घरेलू कार्य संबंधी धारणा-**

खाना बनाना, सफाई और बच्चों की देखभाल को मुख्य रूप से महिलाओं का कार्य मानना तथा पुरुषों को इन कार्यों से अलग रखना।

- **शिक्षा संबंधी धारणा-**

गणित, विज्ञान और तकनीकी विषयों को लड़कों के लिए तथा कला, भाषा आदि को लड़कियों के लिए अधिक उपयुक्त मानना।

- **करियर संबंधी धारणा-**

इंजीनियर, सैनिक, पायलट आदि व्यवसायों को पुरुषों से और शिक्षिका, नर्स आदि कार्यों को महिलाओं से जोड़कर देखना।

- **खेल संबंधी धारणा-**

क्रिकेट, फुटबॉल जैसे खेलों को लड़कों के लिए तथा कुछ अन्य गतिविधियों को लड़कियों के लिए अधिक उपयुक्त समझना।

3.3.2- परिवार एवं समाज की पारंपरिक सोच –

परिवार एवं समाज की पारंपरिक सोच से आशय उन पुराने सामाजिक विचारों, मान्यताओं, रीति-रिवाजों और व्यवहारों से है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलते आ रहे हैं और यह निर्धारित करते हैं कि लड़के और लड़कियों से किस प्रकार का व्यवहार, भूमिका और जिम्मेदारी अपेक्षित है।

परंपराएँ समाज की पहचान और सांस्कृतिक निरंतरता के लिए महत्वपूर्ण हो सकती हैं, लेकिन जब पारंपरिक धारणाएँ व्यक्ति की स्वतंत्रता, समान अवसर और क्षमता को केवल उसके लिंग के आधार पर सीमित करने लगती हैं, तब वे लैंगिक असमानता और रूढ़िवादिता को बढ़ावा दे सकती हैं।

NOTE

परिवार की पारंपरिक सोच -

परिवार बच्चे के सामाजिक और लैंगिक व्यवहार के निर्माण का पहला प्रमुख स्थान है। बचपन से ही बच्चों को अलग-अलग भूमिकाएँ और जिम्मेदारियाँ दी जा सकती हैं।

उदाहरण:-

- लड़कियों को घर के काम में अधिक लगाया जाना।
- लड़कों को आर्थिक जिम्मेदारियों से जोड़ना।
- लड़कियों को "घर संभालने" की शिक्षा देना।
- लड़कों से मजबूत और आत्मनिर्भर बनने की अपेक्षा करना।
- लड़कियों के लिए कुछ करियर को कम उपयुक्त मानना।
- लड़कों और लड़कियों के लिए खेल, कपड़े और व्यवहार के अलग-अलग मानदंड रखना।

इस प्रकार बच्चों में यह धारणा विकसित हो सकती है कि कुछ कार्य केवल लड़कों या केवल लड़कियों के लिए हैं।

समाज की पारंपरिक सोच- समाज में प्रचलित मान्यताएँ और सामाजिक अपेक्षाएँ भी व्यक्ति की भूमिका को प्रभावित करती हैं। कई बार समाज पुरुषों को परिवार का मुख्य आर्थिक सहारा और निर्णयकर्ता तथा महिलाओं को मुख्य रूप से घरेलू एवं देखभाल की भूमिका से जोड़कर देखता है।

उदाहरण के लिए, किसी लड़की द्वारा तकनीकी या नेतृत्व क्षेत्र चुनने पर आश्चर्य व्यक्त करना अथवा किसी लड़के के कला, नृत्य या देखभाल से जुड़े क्षेत्र में जाने पर उसे हतोत्साहित करना सामाजिक रूढ़िवादी सोच को दर्शाता है।

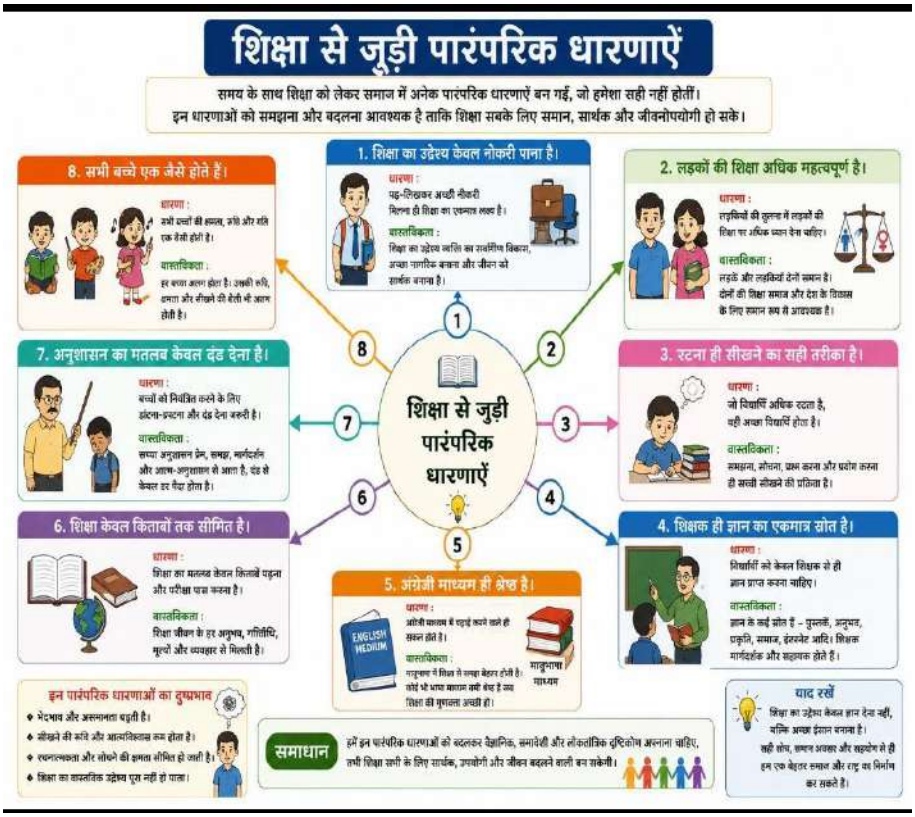
3.3.3- शिक्षा एवं व्यवसाय से जुड़ी पारंपरिक धारणाएँ -

नोट

शिक्षा एवं व्यवसाय से जुड़ी पारंपरिक धारणाएँ वे सामाजिक मान्यताएँ हैं जिनके आधार पर यह तय करने का प्रयास किया जाता है कि लड़कों और लड़कियों के लिए कौन-से विषय, शिक्षा के क्षेत्र, कार्य और व्यवसाय अधिक उपयुक्त हैं। ऐसी धारणाएँ प्रायः व्यक्ति की रुचि, योग्यता और क्षमता के बजाय उसके लिंग को आधार बनाती हैं।

हालाँकि आज शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में काफी परिवर्तन आया है, फिर भी कुछ पारंपरिक लैंगिक धारणाएँ परिवार, समाज और कभी-कभी शैक्षिक संस्थानों में दिखाई देती हैं।

1. शिक्षा से जुड़ी पारंपरिक धारणाएँ –



चित्र 3.3 :- शिक्षा से जुड़ी पारंपरिक धारणाएँ

(क) विषय चयन में भेद -

NOTE

पारंपरिक सोच में विज्ञान, गणित, तकनीकी और कंप्यूटर जैसे विषयों को अक्सर लड़कों के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता है, जबकि भाषा, कला, संगीत या गृह-विज्ञान जैसे विषयों को लड़कियों से अधिक जोड़ा जाता है।

उदाहरण:-

किसी छात्रा को यह कहना कि "गणित और इंजीनियरिंग लड़कों के लिए ज्यादा अच्छे हैं" एक लैंगिक रूढ़िवादी धारणा है।

(ख) उच्च शिक्षा को लेकर भिन्न अपेक्षाएँ -

कुछ परिवारों में लड़कों की उच्च शिक्षा को भविष्य के रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता से जोड़ा जाता है, जबकि लड़कियों की शिक्षा को केवल विवाह या पारिवारिक जीवन की तैयारी के रूप में देखा जा सकता है।

(ग) नेतृत्व एवं सहभागिता में अंतर -

कभी-कभी लड़कों को कक्षा-नेता, समूह-प्रमुख या तकनीकी गतिविधियों का नेतृत्व करने के लिए अधिक प्रोत्साहित किया जाता है, जबकि लड़कियों से अपेक्षा की जाती है कि वे सहयोगी या सहायक भूमिका निभाएँ।

(घ) खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ -

कुछ खेलों और गतिविधियों को लड़कों या लड़कियों के लिए अलग-अलग निर्धारित करने की सोच भी पारंपरिक धारणा का उदाहरण है। इससे विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार गतिविधि चुनने का अवसर कम मिल सकता है।

2. व्यवसाय से जुड़ी पारंपरिक धारणाएँ -

नोट

(क) व्यवसायों का लैंगिक विभाजन -

समाज में लंबे समय से कुछ व्यवसायों को "पुरुषों के व्यवसाय" और कुछ को "महिलाओं के व्यवसाय" माना जाता रहा है।

उदाहरण: -

पुरुषों से जोड़े जाने वाले व्यवसाय:-

- इंजीनियर
- सैनिक
- पुलिस अधिकारी
- पायलट
- मैकेनिक
- निर्माण कार्य

महिलाओं से जोड़े जाने वाले व्यवसाय:

- शिक्षिका
- नर्स
- देखभालकर्ता
- गृह-आधारित कार्य

वास्तव में किसी व्यवसाय के लिए उपयुक्तता व्यक्ति की योग्यता, रुचि, प्रशिक्षण और क्षमता पर निर्भर करती है, न कि केवल उसके लिंग पर।

(ख) नेतृत्व एवं प्रशासन संबंधी धारणा-

पारंपरिक सोच में नेतृत्व, प्रशासन और निर्णय लेने की भूमिकाओं को पुरुषों से अधिक जोड़कर देखा जा सकता है। इसके कारण महिलाओं को

NOTE

नेतृत्व के अवसर प्राप्त करने में सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है।

(ग) आर्थिक जिम्मेदारी की धारणा-

परंपरागत रूप से पुरुष को परिवार का मुख्य आर्थिक सहारा और महिला को मुख्य रूप से घरेलू जिम्मेदारियों से जोड़कर देखा जाता रहा है। आधुनिक समाज में यह भूमिका बदल रही है और महिलाएँ भी विभिन्न क्षेत्रों में आर्थिक रूप से सक्रिय एवं स्वतंत्र भूमिका निभा रही हैं।

(घ) कार्य और परिवार के बीच भूमिका-

महिलाओं से अक्सर यह अपेक्षा की जाती है कि वे नौकरी के साथ-साथ घरेलू जिम्मेदारियों को भी मुख्य रूप से निभाएँ, जबकि पुरुषों से आर्थिक जिम्मेदारी निभाने की अपेक्षा अधिक की जाती है। ऐसी अपेक्षाएँ करियर के चुनाव और कार्यक्षेत्र में अवसरों को प्रभावित कर सकती हैं।

3.4. भेदभाव और उसके प्रभाव

लैंगिक रूढ़ियाँ (Gender Stereotypes) वे पूर्वनिर्धारित सामाजिक धारणाएँ हैं, जिनमें व्यक्ति की क्षमता, भूमिका, व्यवहार या जिम्मेदारी को उसके लिंग के आधार पर तय किया जाता है। जब इन धारणाओं के आधार पर किसी व्यक्ति को कम अवसर, अलग व्यवहार, कम सम्मान या अनुचित मूल्यांकन मिलता है, तो यह लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination) का रूप ले सकता है।

उदाहरण के लिए, यह मानना कि लड़के गणित और तकनीकी विषयों में स्वाभाविक रूप से बेहतर होते हैं या लड़कियाँ केवल देखभाल और घरेलू कार्यों के लिए अधिक उपयुक्त होती हैं—ऐसी धारणाएँ विद्यार्थियों के

नोट

अवसरों को प्रभावित कर सकती हैं।

1. लैंगिक रूढ़ियों से होने वाला भेदभाव -

(क) अवसरों में भेदभाव -

विद्यालय में खेल, नेतृत्व, प्रतियोगिता, समूह कार्य या अन्य गतिविधियों में समान अवसर न देना भी लैंगिक भेदभाव का रूप है।

(ख) परिवार में भेदभाव -

परिवार में लड़के और लड़कियों से अलग-अलग अपेक्षाएँ रखना, जैसे घरेलू कार्य केवल लड़कियों से करवाना या निर्णय लेने की स्वतंत्रता में अंतर करना, लैंगिक असमानता को बढ़ा सकता है।

(ग) व्यवसाय एवं रोजगार में भेदभाव -

किसी कार्य को केवल पुरुषों या महिलाओं के लिए उपयुक्त मानना व्यक्ति के करियर विकल्पों को सीमित कर सकता है।

(घ) व्यवहार संबंधी भेदभाव -

लड़कों से हमेशा मजबूत और निर्भीक रहने की तथा लड़कियों से शांत और विनम्र रहने की अपेक्षा करना भी उनके व्यक्तित्व और अभिव्यक्ति को प्रभावित कर सकता है।

2. लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव के प्रभाव -

1. आत्मविश्वास पर प्रभाव -

जब किसी विद्यार्थी को बार-बार यह संदेश मिलता है कि कोई क्षेत्र उसके लिंग के लिए उपयुक्त नहीं है, तो उसके आत्मविश्वास और आत्म-विश्वास में कमी आ सकती है।

NOTE

2. शिक्षा एवं विषय चयन पर प्रभाव -

रूढ़िवादी धारणाएँ विद्यार्थियों को अपनी वास्तविक रुचि के बजाय सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार विषय चुनने के लिए प्रभावित कर सकती हैं।

3. करियर विकल्प सीमित होना -

लैंगिक रूढ़ियाँ कुछ व्यवसायों को "पुरुषों" या "महिलाओं" के लिए निर्धारित कर देती हैं। इससे विद्यार्थी अपनी क्षमता के अनुरूप करियर चुनने से पीछे हट सकते हैं।

4. नेतृत्व के अवसरों पर प्रभाव -

यदि नेतृत्व को किसी एक लिंग से अधिक जोड़कर देखा जाए, तो दूसरे लिंग के विद्यार्थियों को नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ कम मिल सकती हैं।

5. व्यक्तित्व विकास में बाधा -

रूढ़ियाँ बच्चों को यह संदेश दे सकती हैं कि उन्हें किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए। इससे उनकी रुचि, रचनात्मकता और स्वतंत्र अभिव्यक्ति प्रभावित हो सकती है।

6. सामाजिक असमानता -

लगातार बनी रहने वाली लैंगिक रूढ़ियाँ शिक्षा, रोजगार, निर्णय लेने और सामाजिक सहभागिता में असमानता को मजबूत कर सकती हैं।

7. मानसिक एवं भावनात्मक दबाव -

लड़के और लड़कियाँ दोनों सामाजिक अपेक्षाओं के दबाव का अनुभव कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, लड़कों से अपनी भावनाएँ व्यक्त न करने

नोट

और लड़कियों से हमेशा विनम्र एवं सहनशील रहने की अपेक्षा की जा सकती है।

8. समावेशी शिक्षा में बाधा -

विद्यालय में यदि विद्यार्थियों को लिंग के आधार पर अलग-अलग अवसर मिलते हैं, तो समानता और समावेशिता का उद्देश्य कमजोर होता है।

3.4.1 शिक्षा में लैंगिक भेदभाव - शिक्षा में लैंगिक भेदभाव का अर्थ है— विद्यार्थियों के साथ उनके लिंग के आधार पर अवसर, व्यवहार, संसाधन, अपेक्षाओं या मूल्यांकन में असमानता करना। यह भेदभाव प्रत्यक्ष भी हो सकता है और कई बार परिवार, विद्यालय, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण-पद्धति तथा सामाजिक धारणाओं के माध्यम से अप्रत्यक्ष रूप से भी दिखाई देता है।

शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी रुचि, क्षमता और योग्यता के अनुसार समान अवसर प्रदान करना है। इसलिए लैंगिक आधार पर किसी विद्यार्थी को कम या अधिक अवसर देना शिक्षा की समानता और समावेशिता के सिद्धांत के विपरीत है।

शिक्षा में लैंगिक भेदभाव के प्रमुख रूप

1. शिक्षा के अवसरों में असमानता -

कुछ परिवारों या समुदायों में लड़कों की शिक्षा को लड़कियों की शिक्षा की तुलना में अधिक प्राथमिकता दी जा सकती है। इससे लड़कियों को उच्च शिक्षा या अन्य शैक्षिक अवसरों से वंचित होने का जोखिम बढ़ता है।

2. विषय चयन में भेदभाव-

NOTE

कुछ विषयों को लड़कों या लड़कियों के लिए उपयुक्त मानना भी लैंगिक भेदभाव का एक रूप है।

उदाहरण:-

- विज्ञान, गणित और तकनीकी विषयों को लड़कों से जोड़ना।
- कला, भाषा या देखभाल से संबंधित विषयों को लड़कियों के लिए अधिक उपयुक्त मानना।

वास्तव में विषय का चुनाव विद्यार्थी की रुचि और योग्यता के आधार पर होना चाहिए।

3. कक्षा में सहभागिता में अंतर-

यदि शिक्षक अनजाने में लड़कों से अधिक प्रश्न पूछते हैं या उन्हें अधिक नेतृत्व के अवसर देते हैं, तो कक्षा में लैंगिक असमानता उत्पन्न हो सकती है।

4. खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में असमानता-

लड़कों को कुछ खेलों में अधिक अवसर और लड़कियों को कम अवसर देना या किसी गतिविधि को केवल एक लिंग के लिए उपयुक्त मानना भी भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण हो सकता है।

5. नेतृत्व के अवसरों में भेदभाव-

कक्षा-प्रतिनिधि, समूह-नेता, कार्यक्रम-संचालन आदि में लड़कों या लड़कियों को लिंग के आधार पर प्राथमिकता देना समान अवसर के सिद्धांत को प्रभावित करता है।

पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक रूढ़ियाँ-

नोट

यदि पाठ्यपुस्तकों में पुरुषों को मुख्य रूप से वैज्ञानिक, नेता या कमाने वाले और महिलाओं को केवल घरेलू भूमिकाओं में दिखाया जाता है, तो इससे विद्यार्थियों में पारंपरिक लैंगिक धारणाएँ मजबूत हो सकती हैं।

7. शिक्षक की अपेक्षाओं में अंतर-

कभी-कभी शिक्षक अनजाने में लड़कों को गणित या विज्ञान में अधिक सक्षम और लड़कियों को भाषा या कला में अधिक सक्षम मान सकते हैं। ऐसी अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और उपलब्धि को प्रभावित कर सकती हैं।

3.4.2- सामाजिक एवं आर्थिक भेदभाव - सामाजिक एवं आर्थिक भेदभाव का अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह के साथ उसकी सामाजिक स्थिति, आर्थिक परिस्थिति, परिवार की पृष्ठभूमि, जाति, लिंग, निवास, व्यवसाय या उपलब्ध संसाधनों के आधार पर असमान व्यवहार या असमान अवसर करना। यह भेदभाव शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, सामाजिक सहभागिता और जीवन के अन्य क्षेत्रों में दिखाई दे सकता है।

शिक्षा के संदर्भ में सामाजिक एवं आर्थिक भेदभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि विद्यार्थियों की पारिवारिक और सामाजिक परिस्थितियाँ उनके शैक्षिक अवसर, संसाधनों की उपलब्धता और सीखने के अनुभव को प्रभावित कर सकती हैं।

1. सामाजिक भेदभाव-

सामाजिक भेदभाव तब होता है जब व्यक्ति को उसकी सामाजिक पहचान या पृष्ठभूमि के आधार पर समान अवसर और सम्मान नहीं दिया जाता।

प्रमुख उदाहरण -

NOTE

(क) सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर भेदभाव-

किसी विद्यार्थी के परिवार या सामाजिक समुदाय के आधार पर उसके साथ अलग व्यवहार करना।

(ख) लिंग आधारित भेदभाव-

लड़के और लड़कियों को शिक्षा, खेल, विषय चयन या नेतृत्व में अलग-अलग अवसर देना।

(ग) ग्रामीण एवं शहरी अंतर-

ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के विद्यार्थियों को कभी-कभी शैक्षिक संसाधनों एवं सुविधाओं की कम उपलब्धता का सामना करना पड़ता है।

(घ) भाषा एवं सांस्कृतिक आधार पर भेदभाव-

किसी विद्यार्थी की मातृभाषा, बोली या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण उसे कम सक्षम समझना भी सामाजिक भेदभाव का रूप हो सकता है।

2. आर्थिक भेदभाव-

आर्थिक भेदभाव से आशय आर्थिक स्थिति या संसाधनों की असमानता के कारण अवसरों में अंतर से है।

उदाहरण के लिए, आर्थिक रूप से सक्षम परिवार अपने बच्चों को बेहतर डिजिटल उपकरण, अतिरिक्त शैक्षिक सामग्री, निजी मार्गदर्शन या अन्य सीखने के संसाधन उपलब्ध करा सकते हैं, जबकि आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों के पास इन सुविधाओं की सीमित उपलब्धता हो सकती है।

शिक्षा में आर्थिक असमानता के उदाहरण-

नोट

- डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता में अंतर।
- इंटरनेट सुविधा में अंतर।
- अतिरिक्त अध्ययन सामग्री खरीदने की क्षमता में अंतर।
- निजी कोचिंग या मार्गदर्शन की सुविधा में अंतर।
- उच्च शिक्षा की लागत वहन करने की क्षमता में अंतर।
- घर में पढ़ाई के लिए उपयुक्त वातावरण में अंतर।

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आर्थिक स्थिति किसी विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता का निर्धारण नहीं करती।

3.4.3- भेदभाव के मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक प्रभाव - भेदभाव (Discrimination) का अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह के साथ उसकी पहचान, लिंग, सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि आदि के आधार पर असमान या अनुचित व्यवहार करना। भेदभाव केवल व्यक्ति को मिलने वाले अवसरों को ही प्रभावित नहीं करता, बल्कि उसके मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, आत्मविश्वास, सामाजिक संबंधों और व्यक्तित्व विकास पर भी गहरा प्रभाव डाल सकता है।

विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में भेदभाव विद्यार्थियों के सीखने, सहभागिता और सामाजिक विकास को प्रभावित कर सकता है।

NOTE



चित्र 3.4.3 :- भेदभाव एवं मनोवैज्ञानिक प्रभाव

1. भेदभाव के मनोवैज्ञानिक प्रभाव-

(क) आत्मसम्मान में कमी-

लगातार भेदभाव का अनुभव करने से व्यक्ति को यह महसूस हो सकता है कि उसे दूसरों की तुलना में कम महत्व दिया जा रहा है। इससे उसके आत्मसम्मान और आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।

(ख) हीन भावना-

जब किसी विद्यार्थी को बार-बार उसकी सामाजिक, आर्थिक या लैंगिक पहचान के आधार पर कमतर समझा जाता है, तो उसमें हीनता की भावना विकसित हो सकती है।

(ग) तनाव एवं चिंता-

भेदभावपूर्ण व्यवहार का सामना करने से व्यक्ति को तनाव, चिंता और असुरक्षा महसूस हो सकती है। विद्यालय में ऐसा वातावरण विद्यार्थी के

नोट

सीखने और कक्षा में सक्रिय सहभागिता को प्रभावित कर सकता है।

(घ) प्रेरणा में कमी-

यदि विद्यार्थी को लगता है कि उसके प्रयासों को समान रूप से मान्यता नहीं मिलती, तो पढ़ाई या अन्य गतिविधियों के प्रति उसकी प्रेरणा और रुचि कम हो सकती है।

(ङ) आत्म-अभिव्यक्ति में संकोच-

भेदभाव का अनुभव करने वाला विद्यार्थी अपने विचार व्यक्त करने, प्रश्न पूछने या समूह गतिविधियों में भाग लेने से संकोच कर सकता है।

(च) नकारात्मक आत्म-धारणा-

लगातार नकारात्मक संदेश मिलने पर व्यक्ति अपने बारे में भी नकारात्मक धारणा बना सकता है और अपनी क्षमताओं को कम आँक सकता है।

2. भेदभाव के सामाजिक प्रभाव-

(क) सामाजिक दूरी-

भेदभाव के कारण व्यक्ति स्वयं को समूह से अलग महसूस कर सकता है। इससे विद्यार्थियों के बीच सामाजिक दूरी और अलगाव बढ़ सकता है।

(ख) समूहों के बीच असमानता-

जब किसी समूह को लगातार अधिक या कम अवसर मिलते हैं, तो समाज में विभिन्न समूहों के बीच असमानता मजबूत हो सकती है।

(ग) सामाजिक एकता में कमी-

भेदभाव समाज में अविश्वास और असंतोष को बढ़ा सकता है, जिससे

सामाजिक एकता और सहयोग प्रभावित होते हैं।

NOTE

(घ) रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को बढ़ावा-

यदि भेदभावपूर्ण व्यवहार को सामान्य मान लिया जाए, तो समाज में पहले से मौजूद रूढ़िवादी धारणाएँ और पूर्वाग्रह और मजबूत हो सकते हैं।

(ङ) शैक्षिक अवसरों में असमानता-

विद्यालय में सामाजिक, आर्थिक या लैंगिक भेदभाव विद्यार्थियों की शिक्षा, सहभागिता और नेतृत्व के अवसरों में अंतर पैदा कर सकता है।

(च) सामाजिक गतिशीलता में बाधा-

शिक्षा और रोजगार के समान अवसर न मिलने पर वंचित समूहों के लिए सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के अवसर सीमित हो सकते हैं।

अपनी प्रगति जाँचे –

प्रश्न1. लैंगिक रूढ़ियाँ क्या हैं?

.....

.....

प्रश्न2. लैंगिक पूर्वाग्रह क्या है?

.....

.....

प्रश्न3. लैंगिक रूढ़ियों का शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है?

.....

.....

नोट

3.5 सारांश

लैंगिक रूढ़ियाँ एवं पूर्वाग्रह समाज में प्रचलित ऐसी धारणाएँ और दृष्टिकोण हैं, जिनके आधार पर व्यक्ति की क्षमता, व्यवहार, भूमिका, रुचि और जिम्मेदारियों को उसके लिंग के आधार पर निर्धारित किया जाता है। उदाहरण के लिए, लड़कों को साहसी, मजबूत और तकनीकी विषयों में सक्षम तथा लड़कियों को संवेदनशील, विनम्र और घरेलू कार्यों के लिए अधिक उपयुक्त मानना लैंगिक रूढ़ियों के उदाहरण हैं।

परिवार, समाज, विद्यालय, पाठ्यपुस्तकें, मीडिया और साथियों का समूह इन धारणाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब इन रूढ़िवादी धारणाओं के आधार पर किसी व्यक्ति को कम अवसर, अलग व्यवहार या अनुचित मूल्यांकन मिलता है, तो यह लैंगिक भेदभाव का रूप ले सकता है।

शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक पूर्वाग्रह विषय चयन, कक्षा सहभागिता, खेल, नेतृत्व और करियर के अवसरों को प्रभावित कर सकता है। इसके कारण विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, प्रेरणा और व्यक्तित्व विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

लैंगिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को कम करने के लिए परिवार और विद्यालय में लड़के एवं लड़कियों को समान अवसर देना, उनकी रुचि एवं क्षमता को महत्व देना तथा लैंगिक संवेदनशीलता विकसित करना आवश्यक है। शिक्षक निष्पक्ष शिक्षण, समान सहभागिता और समावेशी वातावरण के माध्यम से महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

3.6 शब्दावली

NOTE

1. लिंग (Gender) - समाज द्वारा निर्धारित स्त्री-पुरुष से जुड़ी भूमिकाएँ एवं अपेक्षाएँ

2. जैविक यौन (Sex) - व्यक्ति की जैविक विशेषताओं से संबंधित पहचान

3. लैंगिक रूढ़ियाँ (Gender Stereotypes)- लिंग के आधार पर बनी सामान्यीकृत धारणाएँ

4. लैंगिक पूर्वाग्रह (Gender Bias) - किसी लिंग के प्रति पहले से बनी पक्षपातपूर्ण सोच

5. लैंगिक भेदभाव(Gender Discrimination)-लिंग के आधार पर असमान या अनुचित व्यवहार

6. लैंगिक समानता (Gender Equality) - सभी लिंगों को समान अधिकार और अवसर मिलना

7. लैंगिक संवेदनशीलता(Gender Sensitivity)- लैंगिक असमानता एवं भेदभाव को समझने और उचित व्यवहार करने की क्षमता

8. लैंगिक भूमिका(Gender Role)- समाज द्वारा किसी लिंग से अपेक्षित व्यवहार और जिम्मेदारियाँ

9. सामाजिक मान्यता(Social Norm)- समाज में स्वीकार की गई सामान्य धारणा या व्यवहार

10. सामाजिकरण(Socialization)- समाज के मूल्यों, नियमों और व्यवहारों को सीखने की प्रक्रिया

11. समान अवसर(Equal Opportunity)- सभी व्यक्तियों को आगे

नोट

बढ़ने के समान अवसर मिलना

12. समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)- सभी विद्यार्थियों को साथ लेकर समान एवं सम्मानजनक शिक्षा देना

13. आत्मसम्मान(Self-Esteem)- व्यक्ति का अपने प्रति सम्मान और मूल्य-बोध

14. आत्मविश्वास(Self-Confidence)-अपनी क्षमता और योग्यता पर विश्वास

15. लैंगिक समानता आधारित शिक्षा(Gender-Responsive Education)- ऐसी शिक्षा जो लैंगिक असमानताओं को पहचानकर समान अवसर सुनिश्चित करे

16. सामाजिक असमानता(Social Inequality)- समाज में विभिन्न समूहों के बीच अधिकारों एवं अवसरों की असमानता

17. रूढ़िवादी सोच(Stereotypical Thinking)-बिना पर्याप्त आधार के किसी समूह के बारे में निश्चित धारणा बना लेना

18. लैंगिक न्याय(Gender Justice)-सभी लिंगों के लिए समान अधिकार, अवसर और निष्पक्षता सुनिश्चित करना

19. सशक्तिकरण(Empowerment)- व्यक्ति को निर्णय लेने और अपनी क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाना

20.भेदभाव-मुक्तवातावरण(Discrimination-Free Environment)-ऐसा वातावरण जहाँ किसी व्यक्ति के साथ उसकी पहचान के आधार पर अनुचित व्यवहार न हो ।

NOTE

3.7 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न1. लैंगिक रूढ़ियाँ क्या हैं?

उत्तर: लैंगिक रूढ़ियाँ वे पारंपरिक धारणाएँ हैं जिनमें लड़के और लड़कियों के लिए कुछ निश्चित गुण, भूमिकाएँ या व्यवहार निर्धारित माने जाते हैं।

जैसे- लड़के गणित में अच्छे होते हैं और लड़कियाँ घर के काम में।

प्रश्न2. लैंगिक पूर्वाग्रह क्या है?

उत्तर: किसी व्यक्ति के साथ उसके लिंग के आधार पर पहले से बनी नकारात्मक या पक्षपातपूर्ण धारणा रखना लैंगिक पूर्वाग्रह कहलाता है।

जैसे- किसी लड़की को केवल लड़की होने के कारण नेतृत्व के योग्य न मानना।

प्रश्न3. लैंगिक रूढ़ियों का शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: लैंगिक रूढ़ियाँ विद्यार्थियों की विषय-चयन, आत्मविश्वास और शैक्षिक अवसरों को प्रभावित कर सकती हैं। इससे लड़कियाँ विज्ञान या तकनीकी विषयों और लड़के कला या गृह-विज्ञान जैसे विषयों से दूर हो सकते हैं।

3.8 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- UNESCO – Gender Equality in Education

लैंगिक समानता, शिक्षा में भेदभाव और लड़कियों की शिक्षा से संबंधित अध्ययन सामग्री।

- UN Women – Gender Equality

लैंगिक रूढ़ियों, पूर्वाग्रह, समानता और महिलाओं के अधिकारों से संबंधित शैक्षिक संसाधन।

नोट

- UNICEF – Gender Equality

बच्चों एवं किशोरों के संदर्भ में लैंगिक समानता, रूढ़ियों और भेदभाव की जानकारी।

- NCERT – Gender, School and Society

भारतीय विद्यालयी संदर्भ में लिंग, लैंगिक भूमिकाएँ, रूढ़ियाँ एवं भेदभाव से संबंधित अध्ययन सामग्री।

- SWAYAM – Gender and Education Courses

उच्च शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के विद्यार्थियों के लिए लिंग, शिक्षा और सामाजिक समानता से संबंधित ऑनलाइन पाठ्यक्रम एवं सामग्री।

3.9 संदर्भ

- UNICEF India. Education for All. इसमें भारतीय शिक्षा व्यवस्था में लैंगिक असमानता, सामाजिक पूर्वाग्रह और लैंगिक रूढ़ियों पर सामग्री उपलब्ध है।
- UNICEF India. Gender Equality. भारत में लैंगिक असमानता, सामाजिक मान्यताओं और शिक्षा में लैंगिक-संवेदनशीलता से संबंधित संदर्भ।
- UNICEF. Solving the Equation: Helping Girls and Boys Learn Mathematics. UNICEF, 2022. इसमें गणित सीखने में लैंगिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों के प्रभाव पर चर्चा है।
- UN Women. Positive Social Norms including by Engaging Men and Boys. लैंगिक भूमिकाओं, भेदभावपूर्ण सामाजिक मानदंडों और रूढ़ियों को बदलने पर केंद्रित सामग्री।

- UNESCO. From Access to Agency: UNESCO Strategy for Gender Equality in and through Education 2026–2029. UNESCO, 2026.

NOTE

3.10 अभ्यास

भाग 1

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)-

1. लैंगिक रूढ़ि (Gender Stereotype) का अर्थ क्या है?

A. सभी व्यक्तियों को समान अवसर देना

B. लिंग के आधार पर निश्चित गुणों या भूमिकाओं की धारणा बनाना *

C. विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचि समझना

D. लैंगिक समानता को बढ़ावा देना

2. निम्न में से कौन-सा लैंगिक पूर्वाग्रह का उदाहरण है?

A. लड़के और लड़कियों को समान अवसर देना

B. विद्यार्थियों की योग्यता के आधार पर कार्य देना

C. केवल लड़का होने के कारण उसे नेतृत्व के लिए अधिक योग्य मानना

D. सभी विद्यार्थियों को समान रूप से प्रोत्साहित करना

3. लैंगिक रूढ़ियों का विद्यार्थियों पर प्रमुख प्रभाव क्या हो सकता है?

A. आत्मविश्वास और अवसरों में कमी

B. सभी विषयों में समान रुचि

नोट

C. रचनात्मकता में स्वतः वृद्धि

D. भेदभाव का पूर्ण अंत

4. विद्यालय में लैंगिक रूढ़ियों को कम करने का सबसे प्रभावी उपाय कौन-सा है?

A. लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग अवसर देना

B. केवल लड़कों को नेतृत्व के अवसर देना

C. सभी विद्यार्थियों को समान अवसर और प्रोत्साहन देना *

D. पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को बढ़ावा देना

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1.सही उत्तर: B. लिंग के आधार पर निश्चित गुणों या भूमिकाओं की धारणा बनाना।

स्पष्टीकरण: लैंगिक रूढ़ि से तात्पर्य ऐसी पूर्वनिर्धारित धारणाओं से है, जिनमें किसी व्यक्ति के लिंग के आधार पर उसके गुणों, क्षमताओं, व्यवहारों या भूमिकाओं को निश्चित मान लिया जाता है। उदाहरण के लिए, यह मानना कि लड़के गणित में अच्छे होते हैं और लड़कियाँ घरेलू कार्यों में अधिक कुशल होती हैं। ऐसी धारणाएँ व्यक्तियों की स्वतंत्रता और विकास के अवसरों को सीमित कर सकती हैं।

2.सही उत्तर: C. केवल लड़का होने के कारण उसे नेतृत्व के लिए अधिक योग्य मानना।

NOTE

स्पष्टीकरण: लैंगिक पूर्वाग्रह का अर्थ किसी व्यक्ति के प्रति उसके लिंग के आधार पर पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण रखना है। जब किसी लड़के को केवल लड़का होने के कारण लड़की से अधिक योग्य नेता मान लिया जाता है, तो यह लैंगिक पूर्वाग्रह का उदाहरण है। नेतृत्व की योग्यता का निर्धारण व्यक्ति की क्षमता, अनुभव और कौशल के आधार पर होना चाहिए, न कि उसके लिंग के आधार पर।

3.सही उत्तर: A. आत्मविश्वास और अवसरों में कमी।

स्पष्टीकरण: लैंगिक रूढ़ियाँ विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, रुचियों और शैक्षिक अवसरों को प्रभावित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी लड़की को यह कहा जाए कि वह विज्ञान या तकनीकी विषयों में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सकती, तो उसका आत्मविश्वास कम हो सकता है। इसी प्रकार, लड़कों को केवल लिंग के आधार पर कुछ गतिविधियों से दूर रखना भी उनके विकास को सीमित कर सकता है। इससे विद्यार्थियों की प्रतिभा के पूर्ण विकास में बाधा आती है।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग आधारित रूढ़िवादी धारणाओं (Gender Stereotypes) से क्या तात्पर्य है? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

2. परिवार एवं समाज की पारंपरिक सोच शिक्षा और व्यवसाय के चयन को किस प्रकार प्रभावित करती है?

3. शिक्षा में लैंगिक भेदभाव के प्रमुख कारणों तथा विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन कीजिए।

नोट

भाग 2

स. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. पारंपरिक लैंगिक धारणाओं से क्या तात्पर्य है?

2. लैंगिक भेदभाव से क्या तात्पर्य है?

NOTE

इकाई 4
पाठ 20 एवं 24 की व्याख्या

इकाई की रूपरेखा

4.1 - प्रस्तावना
4.2 - उद्देश्य
4.3 - बालक और बालिका के व्यक्तित्व एवं आत्म-पहचान का विकास **-**
4.3.1 - आत्म-अवधारणा एवं आत्म-सम्मान का विकास
4.3.2 - लिंग-पहचान एवं लैंगिक भूमिकाओं का विकास
4.3.3 - परिवार**,** विद्यालय एवं साथियों की भूमिका
4.3.4 - मीडिया एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव
4.4 - सामाजिक अपेक्षाओं का प्रभाव **-**
4.4.1 - लैंगिक भूमिकाओं एवं रूढ़ियों का प्रभाव
4.4.2 - परिवार एवं समाज की अपेक्षाओं का व्यक्तित्व पर प्रभाव
4.4.3 - शिक्षा**,** करियर एवं जीवन-निर्णयों पर सामाजिक अपेक्षाओं का प्रभाव
4.5 - सारांश
4.6 - शब्दावली
4.7 - अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
4.8 - सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
4.9 - संदर्भ
4.10 - अभ्यास

4.1 प्रस्तावना

लिंग, पहचान एवं विकास बालक और बालिका के व्यक्तित्व निर्माण को समझने का एक महत्वपूर्ण विषय है। लिंग (Gender) केवल जैविक अंतर को नहीं दर्शाता, बल्कि समाज द्वारा बालक और बालिका के लिए निर्धारित भूमिकाओं, व्यवहारों, अपेक्षाओं, जिम्मेदारियों और अवसरों को भी प्रभावित करता है। जन्म के बाद परिवार, विद्यालय, समुदाय, संस्कृति, मीडिया और साथियों के माध्यम से बच्चे यह सीखते हैं कि समाज उनसे किस प्रकार के

नोट

व्यवहार की अपेक्षा करता है।

पहचान (Identity) से आशय व्यक्ति की उस समझ से है जिसके माध्यम से वह स्वयं को पहचानता और अपने बारे में धारणा विकसित करता है। बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में आत्म-पहचान का विकास तेजी से होता है। इस दौरान बालक-बालिका अपने गुणों, रुचियों, क्षमताओं, भावनाओं, सामाजिक संबंधों तथा भविष्य की आकांक्षाओं के आधार पर अपनी पहचान निर्मित करते हैं।

लिंग संबंधी सामाजिक धारणाएँ कभी-कभी बच्चों के विकास को सीमित भी कर सकती हैं। जैसे—"लड़के भावनाएँ व्यक्त नहीं करते" या "लड़कियाँ कुछ विशेष कार्यों के लिए ही उपयुक्त हैं।" ऐसी रूढ़ धारणाएँ बच्चों के आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान, शैक्षिक रुचि, करियर विकल्प और सामाजिक सहभागिता को प्रभावित कर सकती हैं।

अतः आवश्यक है कि बालक और बालिका दोनों को समान अवसर, स्वतंत्र अभिव्यक्ति, सम्मान और अपनी क्षमताओं के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान किया जाए। शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि बच्चों में सकारात्मक आत्म-पहचान, लैंगिक समानता, आत्मसम्मान और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना भी होना चाहिए।

4.2 उद्देश्य

1. लिंग की अवधारणा को समझना-

विद्यार्थियों को Sex और Gender के बीच अंतर तथा लिंग की सामाजिक एवं सांस्कृतिक अवधारणा से परिचित कराना।

2. आत्म-पहचान के विकास को समझना-

NOTE

बालक और बालिका में आत्म-अवधारणा, आत्मसम्मान एवं आत्म-पहचान के विकास की प्रक्रिया को समझाना।

3.लैंगिक पहचान को समझना-

बच्चों में लैंगिक पहचान के विकास तथा परिवार, विद्यालय और समाज द्वारा उस पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना।

4. सामाजिक अपेक्षाओं के प्रभाव का अध्ययन-

समाज द्वारा बालक और बालिका के लिए निर्धारित अपेक्षाओं, भूमिकाओं और व्यवहारों का उनके व्यक्तित्व एवं विकास पर पड़ने वाले प्रभाव को पहचानना।

5. लैंगिक रूढ़ियों की पहचान करना-

"लड़के ऐसे होते हैं" और "लड़कियाँ ऐसा करती हैं" जैसी लैंगिक रूढ़ियों एवं पूर्वाग्रहों को पहचानना और उनके नकारात्मक प्रभावों को समझना।

6. समान अवसर की भावना विकसित करना-

बालक एवं बालिका को शिक्षा, खेल, नेतृत्व, करियर और निर्णय लेने के क्षेत्रों में समान अवसर प्रदान करने की आवश्यकता को समझना।

7. सकारात्मक व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देना-

बच्चों में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, स्वतंत्र सोच, सहयोग, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी जैसे गुणों के विकास के लिए अनुकूल वातावरण तैयार करना।

8. परिवार एवं विद्यालय की भूमिका समझना-

बालक-बालिका की पहचान एवं व्यक्तित्व निर्माण में परिवार, शिक्षक,

नोट

विद्यालय, सहपाठी और समुदाय की भूमिका को समझना।

9. भेदभाव रहित दृष्टिकोण विकसित करना-

विद्यार्थियों में लैंगिक भेदभाव से मुक्त, समानता, सम्मान और समावेशिता पर आधारित दृष्टिकोण विकसित करना।

4.3 बालक और बालिका के व्यक्तित्व एवं आत्म-पहचान का विकास

बालक और बालिका के व्यक्तित्व एवं आत्म-पहचान का विकास परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति, साथियों और व्यक्तिगत अनुभवों से प्रभावित होता है। बच्चों में अपनी क्षमताओं, रुचियों, भावनाओं और सामाजिक भूमिकाओं के प्रति समझ धीरे-धीरे विकसित होती है।

आत्म-अवधारणा एवं आत्म-सम्मान का विकास -

(क) आत्म-अवधारणा-

आत्म-अवधारणा से आशय बच्चे की अपने बारे में बनी हुई धारणा से है। बच्चा धीरे-धीरे यह समझने लगता है कि वह कौन है, उसकी रुचियाँ और क्षमताएँ क्या हैं तथा दूसरे लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि किसी बालिका को लगातार यह प्रोत्साहन मिलता है कि वह विज्ञान, खेल या नेतृत्व में अच्छा कर सकती है, तो उसके मन में अपनी क्षमताओं के प्रति सकारात्मक धारणा विकसित हो सकती है।

(ख) आत्म-सम्मान-

आत्म-सम्मान का अर्थ है व्यक्ति द्वारा स्वयं को महत्व और सम्मान

NOTE

देने की भावना। परिवार एवं शिक्षक द्वारा बच्चे की उपलब्धियों और प्रयासों की सराहना करने से आत्म-सम्मान बढ़ता है।

(ग) प्रभाव डालने वाले कारक-

- माता-पिता का व्यवहार एवं प्रोत्साहन
- शिक्षक की सकारात्मक प्रतिक्रिया
- मित्रों का सहयोग
- सफलता एवं असफलता के अनुभव
- सामाजिक अपेक्षाएँ
- बच्चे को मिलने वाले अवसर

महत्व: सकारात्मक आत्म-अवधारणा और आत्म-सम्मान बच्चों में आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता तथा सकारात्मक व्यक्तित्व के विकास में सहायता करते हैं।

2. लिंग-पहचान एवं लैंगिक भूमिकाओं का विकास-

(क) लिंग-पहचान-

लिंग-पहचान से आशय व्यक्ति की अपने लिंग के संबंध में विकसित समझ से है। बच्चे अपने परिवार, विद्यालय और सामाजिक वातावरण से यह सीखते हैं कि समाज विभिन्न लिंगों से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करता है।

(ख) लैंगिक भूमिकाएँ-

लैंगिक भूमिकाएँ वे सामाजिक अपेक्षाएँ हैं जिनके आधार पर समाज बालक और बालिका के व्यवहार, कार्यों और जिम्मेदारियों को निर्धारित करता है।

नोट

उदाहरण के लिए, यदि घर में केवल बालिका से घरेलू कार्य करवाए जाएँ और बालक को उन कार्यों से दूर रखा जाए, तो बच्चों में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं की धारणा मजबूत हो सकती है।

(ग) लैंगिक रूढ़ियों का प्रभाव-

"लड़के रोते नहीं" या "लड़कियाँ नेतृत्व नहीं कर सकतीं" जैसी धारणाएँ बच्चों की स्वतंत्र सोच और अवसरों को सीमित कर सकती हैं।

(घ) सकारात्मक दृष्टिकोण-

बालक और बालिका दोनों को खेल, शिक्षा, विज्ञान, कला, नेतृत्व, घरेलू कार्य और निर्णय लेने में समान अवसर मिलने चाहिए। इससे बच्चों में समानता, सम्मान और स्वतंत्र पहचान विकसित होती है।

3. परिवार, विद्यालय एवं साथियों की भूमिका-

(क) परिवार की भूमिका-

परिवार बच्चे के व्यक्तित्व एवं आत्म-पहचान का पहला सामाजिक वातावरण है। माता-पिता के व्यवहार से बच्चा सीखता है कि समाज में विभिन्न भूमिकाओं को किस प्रकार देखा जाता है।

परिवार को चाहिए कि:

- बालक और बालिका के साथ समान व्यवहार करे।
- दोनों को समान शिक्षा एवं अवसर दे।
- बच्चों की रुचियों का सम्मान करे।
- घरेलू जिम्मेदारियों में समान सहभागिता को बढ़ावा दे।
- बच्चों की उपलब्धियों की तुलना एक-दूसरे से न करे।

(ख) विद्यालय की भूमिका-

NOTE

विद्यालय बच्चों के सामाजिक और व्यक्तिगत विकास का महत्वपूर्ण केंद्र है। शिक्षक अपने व्यवहार और शिक्षण-पद्धति के माध्यम से लैंगिक समानता को बढ़ावा दे सकते हैं।

विद्यालय में:

- समान सहभागिता के अवसर दिए जाएँ।
- पाठ्यपुस्तकों में सकारात्मक एवं संतुलित लैंगिक चित्रण हो।
- खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में समान अवसर मिले।
- लैंगिक भेदभाव और रूढ़ियों पर चर्चा की जाए।
- विद्यार्थियों की क्षमताओं के अनुसार प्रोत्साहित किया जाए।

(ग) साथियों की भूमिका-

मित्र एवं सहपाठी बच्चे के व्यवहार और आत्म-पहचान को प्रभावित करते हैं। सकारात्मक मित्रता से सहयोग, आत्मविश्वास और सामाजिक कौशल विकसित होते हैं। वहीं, उपहास, बहिष्कार या रूढ़ धारणाओं का दबाव बच्चे के आत्मविश्वास को प्रभावित कर सकता है।

4. मीडिया एवं सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश का प्रभाव

(क) मीडिया का प्रभाव-

टेलीविजन, फिल्में, विज्ञापन, सोशल मीडिया और इंटरनेट बच्चों की सोच एवं सामाजिक धारणाओं को प्रभावित कर सकते हैं। मीडिया में यदि पुरुषों और महिलाओं को समान, विविध एवं सकारात्मक भूमिकाओं में प्रस्तुत किया जाता है, तो बच्चों में लैंगिक समानता की समझ विकसित हो सकती है।

इसके विपरीत, यदि मीडिया बार-बार महिलाओं और पुरुषों को केवल

नोट

पारंपरिक भूमिकाओं में दिखाता है, तो बच्चों में लैंगिक रूढ़ियाँ मजबूत हो सकती हैं।

(ख) सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश-

समाज की परंपराएँ, रीति-रिवाज, मूल्य और मान्यताएँ बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण को प्रभावित करते हैं। अलग-अलग सामाजिक परिवेश में बालक और बालिका से अलग-अलग अपेक्षाएँ की जा सकती हैं।

उदाहरण के लिए, कुछ परिवारों में बालिकाओं को घरेलू जिम्मेदारियों से अधिक जोड़ा जाता है, जबकि बालकों को आर्थिक एवं बाहरी कार्यों के लिए तैयार किया जाता है। ऐसी धारणाओं को समान अवसर और शिक्षा के माध्यम से संतुलित किया जा सकता है।

(ग) सकारात्मक सामाजिक वातावरण-

एक सकारात्मक सामाजिक वातावरण में बच्चों को अपनी रुचि, क्षमता और आकांक्षा के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिलता है। इससे उनमें आत्मनिर्भरता, आत्मविश्वास और सकारात्मक आत्म-पहचान का विकास होता है।

4.4 सामाजिक अपेक्षाओं का प्रभाव

सामाजिक अपेक्षाएँ उन मान्यताओं, नियमों और धारणाओं को कहा जाता है, जिनके आधार पर परिवार और समाज यह तय करते हैं कि बालक और बालिका से किस प्रकार के व्यवहार, कार्य, शिक्षा, करियर और जीवन-शैली की अपेक्षा की जाती है। ये अपेक्षाएँ बच्चे के व्यक्तित्व, आत्म-पहचान, आत्मविश्वास और भविष्य के निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं।

4.4.1 - लैंगिक भूमिकाओं एवं रूढ़ियों का प्रभाव - लैंगिक भूमिकाएँ वे

NOTE

सामाजिक अपेक्षाएँ हैं जिनके आधार पर समाज यह निर्धारित करता है कि बालक और बालिका से किस प्रकार के व्यवहार, कार्य और जिम्मेदारियों की अपेक्षा की जाती है। लैंगिक रूढ़ियाँ किसी लिंग के बारे में बनी सामान्यीकृत धारणाएँ हैं, जैसे "लड़के गणित में अच्छे होते हैं" या "लड़कियाँ केवल घरेलू कार्यों के लिए उपयुक्त होती हैं।"

व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव -

लैंगिक भूमिकाएँ बच्चों के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं। यदि बालकों को हमेशा कठोर और साहसी तथा बालिकाओं को शांत और संवेदनशील रहने के लिए कहा जाए, तो दोनों अपने व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों को स्वतंत्र रूप से विकसित करने में संकोच कर सकते हैं।

2. आत्मविश्वास एवं आत्म-सम्मान पर प्रभाव -

लगातार किसी बच्चे को यह बताना कि कोई कार्य उसके लिंग के लिए उपयुक्त नहीं है, उसके आत्मविश्वास को कम कर सकता है। इसके विपरीत, प्रोत्साहन और समान अवसर बच्चों में आत्मविश्वास एवं सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित करते हैं।

3. शिक्षा पर प्रभाव -

लैंगिक रूढ़ियाँ विषयों के चयन को प्रभावित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, यदि विज्ञान और गणित को केवल बालकों के लिए तथा कला या भाषा को केवल बालिकाओं के लिए उपयुक्त माना जाए, तो बच्चे अपनी वास्तविक रुचि और क्षमता के अनुसार विषय चुनने से वंचित हो सकते हैं।

करियर पर प्रभाव -

लैंगिक रूढ़ियाँ भविष्य के व्यवसाय एवं करियर विकल्पों को सीमित

नोट

कर सकती हैं। बच्चों को यह स्वतंत्रता मिलनी चाहिए कि वे अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के आधार पर किसी भी क्षेत्र को चुन सकें।

5. सामाजिक संबंधों पर प्रभाव -

रूढ़ धारणाएँ बालक और बालिका के बीच सहयोग एवं समानता को प्रभावित कर सकती हैं। समान अवसर और पारस्परिक सम्मान का वातावरण बच्चों में सहयोग, संवेदनशीलता और सामाजिक कौशल को बढ़ावा देता है।

6. घरेलू एवं सामाजिक जिम्मेदारियों पर प्रभाव -

यदि घरेलू कार्यों को केवल बालिकाओं और आर्थिक जिम्मेदारियों को केवल बालकों से जोड़ दिया जाए, तो बच्चों में असमान भूमिकाओं की धारणा विकसित हो सकती है। घरेलू एवं सामाजिक जिम्मेदारियों में समान सहभागिता लैंगिक समानता की भावना को मजबूत करती है।

7. भावनात्मक विकास पर प्रभाव -

"लड़के रोते नहीं" जैसी रूढ़ियाँ बालकों को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने से रोक सकती हैं। इसी प्रकार, बालिकाओं से हमेशा सहनशील और भावुक होने की अपेक्षा करना उनके व्यवहार को सीमित कर सकता है। बच्चों को सभी भावनाओं को स्वस्थ तरीके से व्यक्त करने का अवसर मिलना चाहिए।

8. विद्यालय की भूमिका -

शिक्षक लैंगिक रूढ़ियों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसके लिए:

- बालक और बालिका को समान अवसर दिए जाएँ।

NOTE

- कक्षा में सभी विद्यार्थियों को समान रूप से प्रोत्साहित किया जाए।
- पाठ्यसामग्री में पुरुषों और महिलाओं की विविध एवं सकारात्मक भूमिकाएँ प्रस्तुत की जाएँ।
- खेल, नेतृत्व और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में समान सहभागिता हो।
- विद्यार्थियों को रूढ़ धारणाओं पर विचार करने के अवसर दिए जाएँ।

4.4.2 - परिवार एवं समाज की अपेक्षाओं का व्यक्तित्व पर प्रभाव - परिवार और समाज बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण आधार हैं। परिवार एवं समाज की अपेक्षाएँ यह निर्धारित करने में प्रभाव डालती हैं कि बालक और बालिका अपने व्यवहार, शिक्षा, रुचियों, भावनाओं, जिम्मेदारियों और भविष्य के बारे में किस प्रकार सोचते हैं। सकारात्मक अपेक्षाएँ व्यक्तित्व को मजबूत कर सकती हैं, जबकि अत्यधिक या भेदभावपूर्ण अपेक्षाएँ व्यक्तित्व के विकास को सीमित कर सकती हैं।

1. आत्मविश्वास का विकास -

परिवार द्वारा बच्चे की क्षमताओं और प्रयासों की सराहना करने से उसमें आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान विकसित होता है। यदि माता-पिता बालक और बालिका दोनों को समान रूप से प्रोत्साहित करते हैं, तो बच्चे अपनी क्षमताओं पर विश्वास करना सीखते हैं।

उदाहरण: बालिका को विज्ञान प्रदर्शनी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना उसके आत्मविश्वास को बढ़ा सकता है।

2. व्यवहार एवं व्यक्तित्व पर प्रभाव -

परिवार और समाज बच्चों से अपेक्षित व्यवहार के माध्यम से उनके

नोट

व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। यदि बालक से हमेशा कठोर और साहसी रहने तथा बालिका से शांत और आज्ञाकारी रहने की अपेक्षा की जाए, तो बच्चे अपने व्यवहार को इन्हीं अपेक्षाओं के अनुसार ढाल सकते हैं।

3. शिक्षा एवं उपलब्धियों पर प्रभाव -

माता-पिता की शैक्षिक अपेक्षाएँ बच्चों की सीखने की प्रेरणा को प्रभावित कर सकती हैं। जब परिवार बच्चे की शिक्षा को महत्व देता है और उसकी रुचि के अनुसार विषय चुनने के लिए प्रोत्साहित करता है, तो शैक्षिक उपलब्धि की संभावना बढ़ती है।

इसके विपरीत, केवल लिंग के आधार पर शिक्षा के अवसरों में अंतर करना बच्चे के विकास को सीमित कर सकता है।

4. करियर चयन पर प्रभाव -

परिवार और समाज बच्चों के करियर विकल्पों को प्रभावित करते हैं। कभी-कभी बच्चों से परिवार की सामाजिक प्रतिष्ठा या पारंपरिक धारणाओं के अनुसार करियर चुनने की अपेक्षा की जाती है।

उचित दृष्टिकोण यह है कि बच्चों को अपनी रुचि, योग्यता और क्षमता के अनुसार भविष्य का क्षेत्र चुनने के लिए मार्गदर्शन दिया जाए।

5. लैंगिक भूमिकाओं का निर्माण -

परिवार में किए जाने वाले कार्य बच्चों में लैंगिक भूमिकाओं की समझ विकसित करते हैं। यदि केवल बालिकाओं को घरेलू कार्य और केवल बालकों को बाहरी कार्यों से जोड़ा जाए, तो पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ मजबूत हो सकती हैं।

इसके विपरीत, घरेलू एवं सामाजिक जिम्मेदारियों में बालक और बालिका

दोनों की सहभागिता समानता की भावना विकसित करती है।

NOTE

6. भावनात्मक विकास -

परिवार की अपेक्षाएँ बच्चों की भावनात्मक अभिव्यक्ति को भी प्रभावित करती हैं। यदि बालक को "रोना कमजोरी है" जैसी बातें कही जाती हैं, तो वह अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में संकोच कर सकता है। बच्चों को अपनी भावनाएँ व्यक्त करने और उन्हें समझने का सुरक्षित अवसर मिलना आवश्यक है।

7. सामाजिक व्यवहार एवं संबंध -

समाज में स्वीकार्यता पाने की इच्छा बच्चों को सामाजिक नियमों का पालन करने के लिए प्रेरित करती है। सकारात्मक सामाजिक अपेक्षाएँ बच्चों में सहयोग, सम्मान, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित करती हैं।

8. अत्यधिक अपेक्षाओं का नकारात्मक प्रभाव -

यदि माता-पिता या समाज बच्चों से उनकी क्षमता से अधिक अपेक्षाएँ रखते हैं, तो उनमें असफलता का डर, दबाव और निराशा उत्पन्न हो सकती है। लगातार तुलना करने से बच्चे के आत्म-सम्मान पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

इसलिए अपेक्षाएँ बच्चे की आयु, क्षमता, रुचि और व्यक्तिगत परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए।

9. सकारात्मक वातावरण का निर्माण -

परिवार एवं समाज को चाहिए कि:

- बालक और बालिका को समान अवसर दें।

नोट

- बच्चों की रुचि एवं क्षमताओं का सम्मान करें।
- अनावश्यक तुलना से बचें।
- लैंगिक रूढ़ियों को बढ़ावा न दें।
- बच्चों को अपनी बात व्यक्त करने का अवसर दें।
- प्रयास और प्रगति की सराहना करें।
- शिक्षा एवं करियर के निर्णयों में सहयोग और मार्गदर्शन दें।

4.4.3 - शिक्षा, करियर एवं जीवन-निर्णयों पर सामाजिक अपेक्षाओं का प्रभाव - सामाजिक अपेक्षाएँ वे मान्यताएँ और धारणाएँ हैं, जिनके आधार पर परिवार और समाज यह तय करते हैं कि बालक और बालिका को क्या पढ़ना चाहिए, कौन-सा व्यवसाय चुनना चाहिए तथा जीवन में किस प्रकार के निर्णय लेने चाहिए। ये अपेक्षाएँ बच्चों के निर्णयों को सकारात्मक रूप से मार्गदर्शित भी कर सकती हैं और कभी-कभी उनकी स्वतंत्र पसंद को सीमित भी कर सकती हैं।

1. शिक्षा पर सामाजिक अपेक्षाओं का प्रभाव -

समाज की धारणाएँ बच्चों के विषय चयन, पढ़ाई के अवसर और शैक्षिक आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

- कुछ समाजों में कुछ विषयों को बालकों या बालिकाओं के लिए अधिक उपयुक्त माना जाता है।
- परिवार की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति भी शिक्षा के अवसरों को प्रभावित कर सकती है।
- बालिकाओं से कभी-कभी घरेलू जिम्मेदारियों को प्राथमिकता देने की अपेक्षा की जाती है।
- बालकों से उच्च शैक्षिक उपलब्धि और आर्थिक रूप से सफल होने की अधिक अपेक्षा की जा सकती है।

NOTE

- सकारात्मक सामाजिक वातावरण बच्चों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार शिक्षा चुनने के लिए प्रोत्साहित करता है।

उदाहरण: यदि किसी बालिका की विज्ञान में रुचि है, लेकिन परिवार यह मानता है कि विज्ञान केवल बालकों के लिए उपयुक्त है, तो उसकी शैक्षिक संभावनाएँ सीमित हो सकती हैं।

2. करियर चयन पर प्रभाव -

करियर का चुनाव व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण निर्णय है। परिवार और समाज की अपेक्षाएँ इस निर्णय को काफी प्रभावित कर सकती हैं।

सकारात्मक प्रभाव

परिवार द्वारा उचित मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और जानकारी उपलब्ध कराने से बच्चे अपनी क्षमताओं को पहचानकर बेहतर करियर का चुनाव कर सकते हैं।

नकारात्मक प्रभाव

यदि समाज किसी व्यवसाय को केवल पुरुषों या महिलाओं से जोड़ता है, तो बच्चे अपनी रुचि के बजाय सामाजिक अपेक्षाओं के अनुसार करियर चुन सकते हैं।

उदाहरण: किसी बालक की रुचि अध्यापन या कला में और किसी बालिका की रुचि तकनीकी क्षेत्र में हो सकती है। केवल लैंगिक रूढ़ियों के आधार पर उनके विकल्प सीमित करना उचित नहीं है।

3. जीवन-निर्णयों पर प्रभाव -

सामाजिक अपेक्षाएँ केवल शिक्षा और करियर तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि मित्रता, जीवनशैली, जिम्मेदारियों और भविष्य की योजनाओं जैसे

नोट

अनेक निर्णयों को भी प्रभावित करती हैं।

परिवार और समाज बच्चों को यह बताते हैं कि उनसे किस प्रकार के व्यवहार और जिम्मेदारियों की अपेक्षा की जाती है। यदि बच्चों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार सोचने का अवसर मिलता है, तो वे अधिक आत्मविश्वास के साथ निर्णय लेना सीखते हैं।

4. आत्मविश्वास एवं आत्म-पहचान पर प्रभाव -

जब समाज बच्चे के निर्णयों का सम्मान करता है, तो उसमें आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और सकारात्मक आत्म-पहचान विकसित होती है।

इसके विपरीत, लगातार दूसरों से तुलना या सामाजिक मानकों के अनुरूप चलने का दबाव बच्चे को अपने निर्णयों पर संदेह करने के लिए प्रेरित कर सकता है।

5. लैंगिक रूढ़ियों का प्रभाव -

लैंगिक रूढ़ियाँ शिक्षा, करियर और जीवन-निर्णयों में महत्वपूर्ण बाधा बन सकती हैं। जैसे—

- "लड़के गणित और तकनीकी विषयों में बेहतर होते हैं।"
- "लड़कियाँ केवल कुछ पारंपरिक व्यवसायों के लिए उपयुक्त हैं।"
- "घर की जिम्मेदारी मुख्यतः महिलाओं की है।"
- "पुरुषों को ही परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी उठानी चाहिए।"

ऐसी धारणाएँ बच्चों की वास्तविक क्षमताओं और रुचियों की बजाय उनके लिंग को निर्णय का आधार बना सकती हैं।

6. सामाजिक अपेक्षाओं के सकारात्मक प्रभाव के लिए उपाय -

NOTE

परिवार, विद्यालय और समाज को:

- बालक और बालिका को समान शैक्षिक अवसर देने चाहिए।
- विषय और करियर का चुनाव रुचि एवं योग्यता के आधार पर करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- लैंगिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को कम करना चाहिए।
- बच्चों को स्वतंत्र रूप से अपनी बात रखने का अवसर देना चाहिए।
- निर्णय लेने में बच्चों को उचित मार्गदर्शन और सहयोग देना चाहिए।
- सफलता को केवल सामाजिक प्रतिष्ठा या आर्थिक उपलब्धि से नहीं जोड़ना चाहिए।

अपनी प्रगति जाँचे –

प्रश्न 1. लिंग-पहचान (Gender Identity) से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

प्रश्न 2. व्यक्तित्व विकास में लिंग की क्या भूमिका है?

.....

.....

प्रश्न 3. पहचान के विकास में विद्यालय की क्या भूमिका है?

.....

.....

नोट

4.5 सारांश

लिंग (Gender), पहचान (Identity) एवं विकास (Development) व्यक्ति के व्यक्तित्व और सामाजिक जीवन से जुड़े महत्वपूर्ण पहलू हैं। Sex (यौन) मुख्यतः जैविक विशेषताओं को दर्शाता है, जबकि Gender (लिंग) समाज और संस्कृति द्वारा निर्धारित भूमिकाओं, व्यवहारों, अपेक्षाओं और मान्यताओं से संबंधित है।

बालक और बालिका की आत्म-पहचान का विकास परिवार, विद्यालय, समुदाय, सहपाठी समूह और मीडिया जैसे सामाजिक वातावरण से प्रभावित होता है। परिवार में मिलने वाला व्यवहार, विद्यालय में समान अवसर, समाज की मान्यताएँ तथा मीडिया में प्रस्तुत छवियाँ बच्चों की सोच, आत्म-सम्मान और अपनी पहचान को समझने के तरीके को प्रभावित कर सकती हैं।

लैंगिक भूमिकाएँ और रूढ़ियाँ - यदि कठोर हों, तो वे शिक्षा, करियर, रुचियों, आत्मविश्वास और सामाजिक सहभागिता के अवसरों को सीमित कर सकती हैं। इसके विपरीत, समान अवसर, सकारात्मक प्रोत्साहन, स्वतंत्र विचार, सम्मान और भेदभाव-मुक्त वातावरण बच्चों के संतुलित व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और सकारात्मक पहचान के विकास में सहायक होते हैं।

4.6 शब्दावली

1 लिंग Gender- समाज द्वारा निर्मित भूमिकाएँ, व्यवहार और अपेक्षाएँ।

2 यौन Sex- व्यक्ति की जैविक विशेषताओं से संबंधित अवधारणा।

3 लिंग पहचान Gender Identity- व्यक्ति की स्वयं के लिंग के बारे में आंतरिक समझ और पहचान।

4 आत्म-पहचान Self-Identity- व्यक्ति की अपने बारे में समझ और

स्वयं को पहचानने की प्रक्रिया।

NOTE

5 आत्म-अवधारणा Self-Concept - व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, क्षमताओं और विशेषताओं के बारे में जो धारणा बनाता है।

6 आत्म-सम्मान Self-Esteem- व्यक्ति द्वारा अपने मूल्य और क्षमताओं के प्रति विकसित सम्मान एवं विश्वास।

7 लैंगिक भूमिका Gender Role- समाज द्वारा स्त्री, पुरुष या अन्य लैंगिक पहचानों से जुड़ी अपेक्षित भूमिकाएँ।

8 लैंगिक रूढ़ि Gender Stereotype- किसी लिंग के लोगों के बारे में बनी सामान्यीकृत और स्थिर धारणा।

9 समाजीकरण Socialization- समाज के मूल्यों, मानदंडों और व्यवहारों को सीखने की प्रक्रिया।

10 लिंग समाजीकरण Gender Socialization- समाज से लैंगिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं को सीखने की प्रक्रिया।

11 व्यक्तित्व विकास Personality Development-व्यक्ति के व्यवहार, भावनाओं, दृष्टिकोण और क्षमताओं के क्रमिक विकास की प्रक्रिया।

12 भावनात्मक विकास Emotional Development-अपनी भावनाओं को पहचानने, व्यक्त करने और नियंत्रित करने की क्षमता का विकास।

13 सामाजिक विकास Social Development-दूसरों के साथ संबंध बनाने और सामाजिक व्यवहार सीखने की प्रक्रिया।

14 समानता Equality-सभी व्यक्तियों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान प्राप्त होना।

नोट

15 लैंगिक समानता Gender Equality-सभी लिंगों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान मिलना।

16 भेदभाव Discrimination-

लिंग या अन्य आधार पर किसी व्यक्ति के साथ असमान व्यवहार करना।

17 समावेशन Inclusion-सभी व्यक्तियों को बिना भेदभाव के समान रूप से शामिल करना।

18 सशक्तीकरण Empowerment-व्यक्ति को अपने निर्णय लेने और अपनी क्षमताओं का उपयोग करने के लिए सक्षम बनाना।

19 सामाजिक अपेक्षाएँ Social Expectations-समाज द्वारा व्यक्ति के व्यवहार और भूमिकाओं के संबंध में रखी गई अपेक्षाएँ।

20 लैंगिक संवेदनशीलता Gender Sensitivity-विभिन्न लिंगों से जुड़े अनुभवों, असमानताओं और आवश्यकताओं को समझने की संवेदनशील दृष्टि।

4.7 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. लिंग-पहचान (Gender Identity) से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: लिंग-पहचान से तात्पर्य व्यक्ति की अपनी लैंगिक पहचान के बारे में आंतरिक समझ और अनुभूति से है।इसका विकास परिवार, समाज, संस्कृति, शिक्षा तथा व्यक्तिगत अनुभवों से प्रभावित हो सकता है।

प्रश्न 2. व्यक्तित्व विकास में लिंग की क्या भूमिका है?

उत्तर: लिंग से जुड़ी सामाजिक अपेक्षाएँ व्यक्ति के व्यवहार, आत्मविश्वास, रुचियों और निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं। समान अवसर और

NOTE

सकारात्मक वातावरण मिलने पर बालक-बालिका दोनों अपनी क्षमताओं का स्वतंत्र रूप से विकास कर सकते हैं।

प्रश्न 3. पहचान के विकास में विद्यालय की क्या भूमिका है?

उत्तर: विद्यालय विद्यार्थियों को समान अवसर, सम्मान और सुरक्षित वातावरण प्रदान करके सकारात्मक पहचान के विकास में सहायता करता है। शिक्षक को लैंगिक रूढ़ियों और भेदभाव से बचते हुए सभी विद्यार्थियों की प्रतिभा एवं क्षमताओं को प्रोत्साहित करना चाहिए।

4.8 सुझाई गई पठन सामग्री - OER

1. NCERT – Gender, School and Society

लिंग, लैंगिक भूमिकाओं, विद्यालयी वातावरण और सामाजिक अपेक्षाओं को समझने के लिए उपयोगी।

2. e-PG Pathshala – Gender Studies

लिंग, पहचान, सामाजिक निर्माण और विकास से संबंधित उच्च शिक्षा स्तर की अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

3. SWAYAM – Gender and Education से संबंधित पाठ्यक्रम

लिंग समानता, शिक्षा और सामाजिक विकास से जुड़े ऑनलाइन पाठ्यक्रम एवं वीडियो व्याख्यान।

4. DIKSHA – Gender & Inclusive Education Resources

शिक्षक एवं विद्यार्थियों के लिए लैंगिक समानता, समावेशी शिक्षा और संवेदनशीलता से संबंधित डिजिटल सामग्री।

5. UNESCO – Gender Equality in Education

शिक्षा में लैंगिक समानता, भेदभाव और समान अवसर से संबंधित रिपोर्ट,

नोट

गाइड एवं शिक्षण संसाधन।

6. UNICEF – Gender Equality Resources

बच्चों एवं किशोरों के विकास, लैंगिक समानता, पहचान और सामाजिक अपेक्षाओं से संबंधित अध्ययन सामग्री एवं संसाधन।

4.9 संदर्भ

1. भारत सरकार. National Education Policy 2020. नई दिल्ली: Ministry of Education, Government of India.
2. NCF. National Curriculum Framework for School Education. नई दिल्ली: Ministry of Education, Government of India.
3. Bem, S. L. (1981). Gender Schema Theory: A Cognitive Account of Sex Typing. Psychological Review, 88(4), 354–364.
4. Bandura, A. (1977). Social Learning Theory. Englewood Cliffs, NJ: Prentice-Hall.
5. Erikson, E. H. (1968). Identity: Youth and Crisis. New York: W. W. Norton & Company.
6. Kohlberg, L. (1966). A Cognitive-Developmental Analysis of Children's Sex-Role Concepts and Attitudes. In E. E. Maccoby (Ed.), The Development of Sex Differences. Stanford University Press.
7. Santrock, J. W. (2018). Educational Psychology. New York: McGraw-Hill Education.

4.10 अभ्यास

NOTE

भाग 1

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)-

प्रश्न 1. आत्म-अवधारणा (SELF-CONCEPT) से क्या तात्पर्य है?

(अ) दूसरों के विचारों को स्वीकार करना

(ब) स्वयं के बारे में व्यक्ति की धारणा

(स) केवल अपनी शारीरिक बनावट को समझना

(द) दूसरों के व्यवहार का अनुकरण करना

प्रश्न 2. बालक एवं बालिका की लिंग-पहचान के विकास में कौन-सा कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?

(अ) केवल शारीरिक विकास

(ब) केवल आनुवंशिकता

(स) परिवार, विद्यालय एवं सामाजिक परिवेश

(द) केवल परीक्षा में प्राप्त अंक

प्रश्न 3. लैंगिक रूढ़ियों का बालक एवं बालिका के व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

(अ) उनकी सभी क्षमताओं का समान विकास सुनिश्चित होता है। (ब) उनकी रुचियों एवं अवसरों पर अनावश्यक सीमाएँ लग सकती हैं। (स) उनके व्यक्तित्व पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। (द) उनकी सभी समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाती हैं।

नोट

प्रश्न 4. सामाजिक अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के करियर चयन को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

(अ) वे हमेशा विद्यार्थियों को स्वतंत्र निर्णय लेने देती हैं। (ब) उनका करियर चयन से कोई संबंध नहीं होता। (स) वे विद्यार्थियों की रुचियों और निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं। (द) वे सभी विद्यार्थियों के लिए एक ही व्यवसाय अनिवार्य बनाती हैं।

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1.सही उत्तर: (ब) स्वयं के बारे में व्यक्ति की धारणा।

स्पष्टीकरण: आत्म-अवधारणा से तात्पर्य व्यक्ति के स्वयं के बारे में विचारों, विश्वासों और धारणाओं से है। इसमें व्यक्ति अपनी क्षमताओं, विशेषताओं, रुचियों तथा कमजोरियों को किस प्रकार देखता है, यह शामिल होता है। परिवार, विद्यालय और सामाजिक परिवेश आत्म-अवधारणा के विकास को प्रभावित करते हैं।

2.सही उत्तर: (स) परिवार, विद्यालय एवं सामाजिक परिवेश।

स्पष्टीकरण: लिंग-पहचान के विकास में परिवार, विद्यालय, मित्रों तथा व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन माध्यमों से बच्चे समाज में प्रचलित लैंगिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं से परिचित होते हैं। हालांकि, लिंग-पहचान का विकास एक जटिल प्रक्रिया है और इसे केवल किसी एक कारक से नहीं समझा जा सकता।

3.सही उत्तर: (ब) उनकी रुचियों एवं अवसरों पर अनावश्यक सीमाएँ लग सकती हैं।

NOTE

स्पष्टीकरण: लैंगिक रूढ़ियाँ बच्चों को कुछ विशेष भूमिकाओं तक सीमित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, यदि लड़कों को केवल तकनीकी कार्यों और लड़कियों को केवल घरेलू कार्यों के योग्य माना जाए, तो उनकी वास्तविक रुचियों एवं क्षमताओं के विकास में बाधा आ सकती है। इसलिए प्रत्येक बच्चे को अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिलना चाहिए।

4.सही उत्तर: (स) वे विद्यार्थियों की रुचियों और निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं।

स्पष्टीकरण: परिवार और समाज की अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के विषय चयन, उच्च शिक्षा तथा व्यवसाय संबंधी निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं। कभी-कभी सामाजिक दबाव के कारण विद्यार्थी अपनी रुचि के विपरीत विषय या करियर चुन लेते हैं। इसलिए करियर चयन में विद्यार्थी की रुचि, योग्यता, क्षमता और व्यक्तिगत लक्ष्य को महत्व देना चाहिए।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

- आत्म-सम्मान के विकास में परिवार एवं विद्यालय की भूमिका स्पष्ट कीजिए।
- मीडिया तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश बालक एवं बालिका की लैंगिक भूमिकाओं को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?
- परिवार एवं समाज की अपेक्षाएँ बच्चों के जीवन-निर्णयों और व्यक्तित्व विकास को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

भाग 2

स. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

नोट

- लिंग-पहचान के विकास में परिवार की क्या भूमिका है?
- लैंगिक भूमिकाएँ व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं आत्म-पहचान को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?
- विद्यालय में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक कौन-कौन से उपाय कर सकता है?

NOTE

इकाई 5
विद्यालय में लैंगिक समानता

इकाई की रूपरेखा

5.1- प्रस्तावना
5.2- उद्देश्य
5.3- समान अवसर एवं समावेशी शिक्षा
5.4- शिक्षक की भूमिका
5.5- लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण का निर्माण
5..6- सारांश
5.7- शब्दावली
5.8- अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
5.9- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
5.10- संदर्भ
5.11- अभ्यास

5.1 प्रस्तावना

विद्यालय समाज की एक महत्वपूर्ण संस्था है, जहाँ विद्यार्थियों के ज्ञान, व्यक्तित्व, व्यवहार और सामाजिक दृष्टिकोण का विकास होता है। लैंगिक समानता (Gender Equality) का अर्थ है कि बालक, बालिका तथा सभी लैंगिक पहचानों वाले विद्यार्थियों को शिक्षा, अवसर, संसाधन, सम्मान और सहभागिता में समान अधिकार प्राप्त हों। विद्यालय में किसी विद्यार्थी के साथ उसके लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं होना चाहिए।

विद्यालय में लैंगिक समानता केवल समान प्रवेश तक सीमित नहीं है, बल्कि कक्षा में समान सहभागिता, विषय एवं करियर चयन की स्वतंत्रता, खेल-कूद में समान अवसर, नेतृत्व के अवसर, सुरक्षित वातावरण तथा लैंगिक रूढ़ियों से मुक्त शिक्षा को भी शामिल करती है। शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों में समानता, सम्मान, संवेदनशीलता और सहयोग की भावना विकसित करने

नोट

में महत्वपूर्ण होती है। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने से विद्यालय अधिक समावेशी, न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक वातावरण का निर्माण कर सकता है।

5.2 उद्देश्य

- समान शैक्षिक अवसर प्रदान करना – बालक एवं बालिकाओं को शिक्षा में समान अवसर उपलब्ध कराना।
- लैंगिक भेदभाव को कम करना – लिंग के आधार पर होने वाले भेदभाव और असमान व्यवहार को समाप्त करना।
- समान सहभागिता सुनिश्चित करना – कक्षा, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों एवं अन्य विद्यालयीन कार्यों में सभी विद्यार्थियों की समान भागीदारी सुनिश्चित करना।
- लैंगिक रूढ़ियों को समाप्त करना – "यह काम लड़कों या लड़कियों के लिए है" जैसी पारंपरिक धारणाओं को चुनौती देना।
- समान नेतृत्व के अवसर देना – विद्यार्थियों को नेतृत्व, निर्णय लेने और जिम्मेदारी निभाने के समान अवसर प्रदान करना।
- सम्मान एवं संवेदनशीलता विकसित करना – विद्यार्थियों में एक-दूसरे के प्रति सम्मान, सहयोग और लैंगिक संवेदनशीलता की भावना विकसित करना।
- सुरक्षित विद्यालयी वातावरण बनाना – सभी विद्यार्थियों के लिए भेदभाव, उत्पीड़न और असमानता से मुक्त सुरक्षित वातावरण तैयार करना।

समान भविष्य के लिए तैयार करना – विद्यार्थियों को शिक्षा, रोजगार, करियर और जीवन के निर्णयों में समान अवसर एवं स्वतंत्रता के लिए सक्षम बनाना।

5.3 समान अवसर एवं समावेशी शिक्षा

NOTE

समान अवसर का अर्थ - समान अवसर (Equal Opportunity) का अर्थ है कि विद्यालय में प्रत्येक विद्यार्थी को लिंग, जाति, धर्म, भाषा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, दिव्यांगता या अन्य व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर भेदभाव किए बिना शिक्षा प्राप्त करने और अपनी क्षमता विकसित करने के समान अवसर मिलें।

समान अवसर का मतलब यह नहीं है कि सभी विद्यार्थियों को बिल्कुल एक जैसी सहायता दी जाए, बल्कि जिस विद्यार्थी को जिस प्रकार की आवश्यकता हो, उसके अनुसार सहायता और सुविधाएँ उपलब्ध कराना भी समानता का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

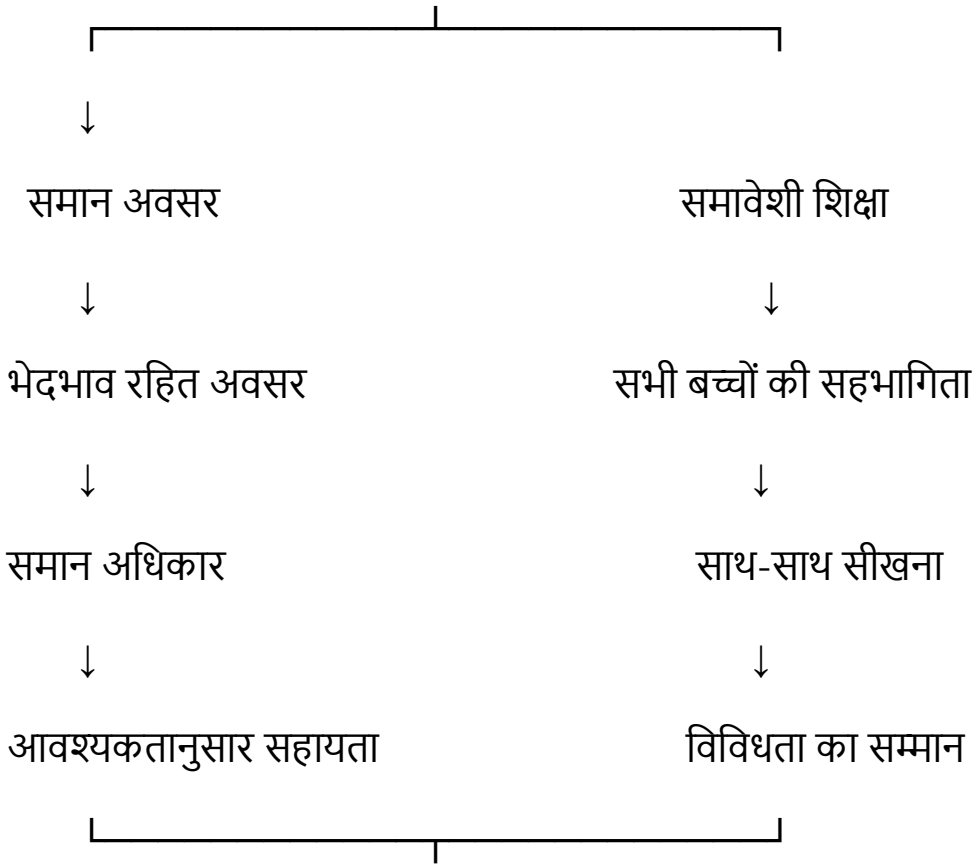
उदाहरण: -

यदि किसी विद्यार्थी को सीखने के लिए अतिरिक्त समय या सहायक सामग्री की आवश्यकता है, तो उसे वह सुविधा उपलब्ध कराना समान अवसर सुनिश्चित करने का एक तरीका है।

2. समावेशी शिक्षा का अर्थ - समावेशी शिक्षा (Inclusive Education) ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जिसमें विभिन्न क्षमताओं, पृष्ठभूमियों और आवश्यकताओं वाले विद्यार्थी एक साथ सीखते हैं, सहभागिता करते हैं और विद्यालयी जीवन का हिस्सा बनते हैं। इसमें विद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थी को अलग करना नहीं, बल्कि विद्यालय के वातावरण, शिक्षण विधियों और संसाधनों में आवश्यक अनुकूलन करके सभी को साथ लेकर चलना होता है। सरल शब्दों में- "हर बच्चा विद्यालय में आए, साथ सीखे, समान सम्मान पाए और अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़े।"

नोट

समान अवसर एवं समावेशी शिक्षा



3. विद्यालय में समान अवसर के प्रमुख क्षेत्र -

① प्रवेश एवं शिक्षा -

बालक और बालिका सहित सभी विद्यार्थियों को विद्यालय में प्रवेश

और शिक्षा प्राप्त करने का समान अवसर मिलना चाहिए।

NOTE

② कक्षा में सहभागिता -

शिक्षक को प्रश्न पूछने, उत्तर देने, चर्चा करने और गतिविधियों में भाग लेने के अवसर सभी विद्यार्थियों को समान रूप से देने चाहिए।

③ खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ -

खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, कला, संगीत, वाद-विवाद आदि में विद्यार्थियों की भागीदारी को उनके लिंग के आधार पर सीमित नहीं करना चाहिए।

④ विषय एवं करियर चयन -

विद्यार्थियों को अपनी रुचि और क्षमता के आधार पर विषय एवं भविष्य के करियर का चयन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

⑤ नेतृत्व के अवसर -

कक्षा मॉनिटर, टीम लीडर, क्लब प्रभारी आदि जिम्मेदारियों में सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिलना चाहिए।

4. लैंगिक समानता के संदर्भ में महत्व -

विद्यालय में समावेशी शिक्षा लैंगिक समानता को मजबूत करती है। उदाहरण के लिए—

परंपरागत सोच:- "विज्ञान और गणित लड़कों के लिए अधिक उपयुक्त हैं।"

समावेशी दृष्टिकोण:- "हर विद्यार्थी अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार किसी भी विषय का चयन कर सकता है।"

नोट

इसी प्रकार लड़के और लड़कियों को खेल, नेतृत्व, विज्ञान, कला, तकनीक, साहित्य और अन्य गतिविधियों में समान अवसर देना लैंगिक रूढ़ियों को कम करता है।

5.4 शिक्षक की भूमिका

विद्यालय में शिक्षक केवल विषय-वस्तु का ज्ञान देने वाला व्यक्ति नहीं होता, बल्कि वह विद्यार्थियों के दृष्टिकोण, व्यवहार, सामाजिक मूल्यों और लैंगिक संवेदनशीलता के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक का व्यवहार विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता करता है कि प्रत्येक व्यक्ति को समान सम्मान, अवसर और गरिमा मिलनी चाहिए।

शिक्षक की प्रमुख भूमिकाएँ -

1. लैंगिक समानता को बढ़ावा देना

शिक्षक को बालक और बालिका के साथ समान व्यवहार करना चाहिए तथा दोनों को सीखने, प्रश्न पूछने और अपनी बात रखने के समान अवसर देने चाहिए।

2. लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती देना

"लड़कियाँ गणित में कमजोर होती हैं" या "लड़के भावनाएँ व्यक्त नहीं करते" जैसी रूढ़ धारणाओं को शिक्षक को प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए। विद्यार्थियों को उनकी रुचि और क्षमता के आधार पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

3. कक्षा में समान सहभागिता सुनिश्चित करना

चर्चा, समूह कार्य, खेल, प्रयोग, सांस्कृतिक कार्यक्रम और नेतृत्व गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों की समान भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

NOTE

4. सम्मानजनक व्यवहार विकसित करना

शिक्षक को विद्यार्थियों में एक-दूसरे के प्रति सम्मान, सहयोग, संवेदनशीलता और गरिमा की भावना विकसित करनी चाहिए।

5. सुरक्षित एवं समावेशी वातावरण बनाना

कक्षा में ऐसा वातावरण बनाया जाना चाहिए जहाँ विद्यार्थी बिना डर या उपहास के अपनी शैक्षिक एवं व्यक्तिगत चिंताओं को उचित रूप से व्यक्त कर सकें।

6. पाठ्यक्रम और शिक्षण सामग्री में संतुलित दृष्टिकोण

शिक्षक को ऐसे उदाहरण, कहानियाँ, चित्र और गतिविधियाँ चुननी चाहिए जो विभिन्न भूमिकाओं में सभी लिंगों की सकारात्मक एवं समान भागीदारी दिखाएँ।

7. भेदभाव और उत्पीड़न के प्रति संवेदनशीलता

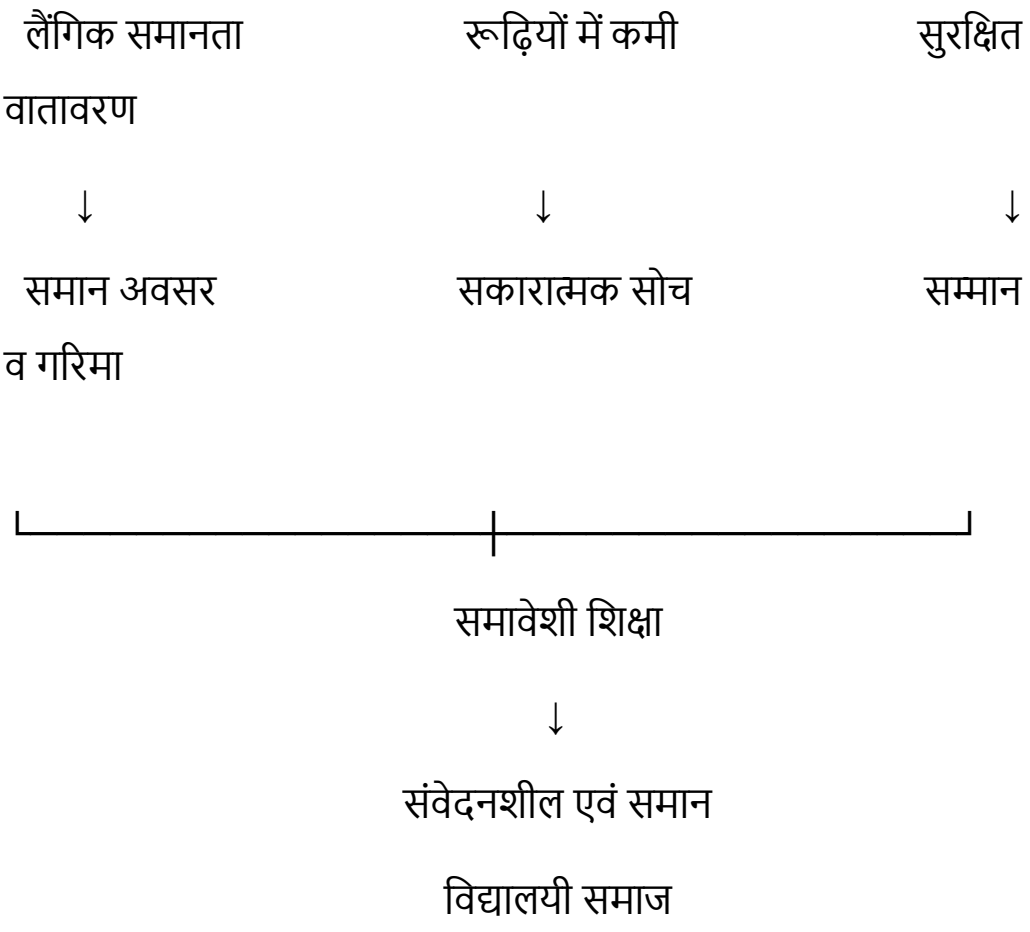
लिंग के आधार पर होने वाले मजाक, बहिष्कार, अपमान या भेदभाव को सामान्य न मानते हुए विद्यालय की निर्धारित प्रक्रियाओं के अनुसार उसका समाधान करना चाहिए।

8. अभिभावकों एवं समुदाय के साथ सहयोग

शिक्षक अभिभावकों और समुदाय को लैंगिक समानता, बाल अधिकार और समान शैक्षिक अवसरों के महत्व के प्रति जागरूक कर सकता है।

लैंगिकता में शिक्षक की भूमिक

नोट



5.5 लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण का निर्माण

लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण वह वातावरण है जिसमें बालक, बालिका तथा सभी विद्यार्थियों को उनके लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना समान अवसर, सम्मान, सुरक्षा और सहभागिता प्राप्त होती है। इसमें शिक्षक की भाषा, शिक्षण-पद्धति, पाठ्य-सामग्री, कक्षा की गतिविधियाँ और विद्यालय की नीतियाँ लैंगिक समानता को बढ़ावा देती हैं।

इसका मुख्य उद्देश्य ऐसी विद्यालयी संस्कृति विकसित करना है जिसमें विद्यार्थी स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित, स्वीकार्य और सक्षम महसूस करें।

NOTE



चित्र 5.5:- लैंगिक संवेदनशीलता शिक्षण वातावरण का निर्माण

1. समान अवसर सुनिश्चित करना -

विद्यालय में सभी विद्यार्थियों को शिक्षा, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, नेतृत्व और अन्य गतिविधियों में समान अवसर मिलना चाहिए।

उदाहरण: -

लड़कियों को केवल सांस्कृतिक कार्यक्रमों तक और लड़कों को केवल खेलों तक सीमित न रखकर सभी विद्यार्थियों को अपनी रुचि के अनुसार गतिविधि चुनने का अवसर देना।

2. लैंगिक रूढ़ियों को समाप्त करना -

समाज में प्रचलित धारणाएँ जैसे "लड़कियाँ विज्ञान में कमजोर होती हैं", "लड़के रोते नहीं" या "घर का काम केवल लड़कियों का है" लैंगिक रूढ़ियाँ हैं। शिक्षक को ऐसी धारणाओं को बढ़ावा देने के बजाय विद्यार्थियों को यह समझाना चाहिए कि क्षमता का निर्धारण लिंग से नहीं, बल्कि रुचि,

नोट

प्रयास और योग्यता से होता है।

3. कक्षा में समान सहभागिता-

शिक्षक को प्रश्न पूछने, उत्तर देने, समूह चर्चा, प्रस्तुतीकरण और गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों को समान अवसर देना चाहिए।

- केवल लड़कों को नेतृत्व की जिम्मेदारी न देना।
- लड़कियों को भी प्रश्न पूछने और अपनी राय व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- समूह कार्य में सभी की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करना।

4. लैंगिक-संवेदनशील भाषा का प्रयोग-

शिक्षक की भाषा विद्यार्थियों की सोच को प्रभावित करती है। इसलिए ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहिए जो किसी लिंग को कमतर न दिखाए।

उदाहरण: -

"लड़के मजबूत होते हैं" कहने के बजाय—

"हर व्यक्ति अपनी अलग क्षमता और विशेषता रखता है।"

5. पाठ्यक्रम एवं शिक्षण सामग्री में संतुलन -

पाठ्यपुस्तकों, कहानियों, चित्रों और उदाहरणों में महिलाओं और पुरुषों को केवल पारंपरिक भूमिकाओं में प्रस्तुत नहीं किया जाना चाहिए।

उदाहरण के लिए—

- महिला वैज्ञानिक
- महिला खिलाड़ी

NOTE

- महिला शिक्षक एवं प्रशासक
- पुरुष शिक्षक
- पुरुष नर्स
- पुरुष कलाकार

जैसे उदाहरण विद्यार्थियों को यह समझने में मदद करते हैं कि व्यवसाय और भूमिकाएँ लिंग से निर्धारित नहीं होतीं।

6. सुरक्षित एवं सम्मानजनक वातावरण -

विद्यालय में ऐसा वातावरण होना चाहिए जहाँ विद्यार्थी उपहास, भेदभाव, डर और लैंगिक उत्पीड़न से सुरक्षित महसूस करें।

इसके लिए विद्यालय में—

- स्पष्ट आचार-संहिता,
- शिकायत एवं सहायता व्यवस्था,
- परामर्श सुविधा,
- संवेदनशील शिक्षक,
- और विद्यार्थियों की समस्याओं को सुनने की व्यवस्था होनी चाहिए।

7. शिक्षक का निष्पक्ष व्यवहार -

शिक्षक को विद्यार्थियों के साथ व्यवहार करते समय लैंगिक पक्षपात से बचना चाहिए।

उदाहरण के लिए, कक्षा की सफाई, सामग्री व्यवस्थित करना या नेतृत्व जैसे कार्य केवल किसी एक लिंग को नहीं सौंपने चाहिए। जिम्मेदारियाँ समान रूप से बाँटी जानी चाहिए।

8. अभिभावकों एवं समुदाय की सहभागिता -

नोट

लैंगिक समानता केवल विद्यालय की जिम्मेदारी नहीं है। शिक्षक को अभिभावकों और समुदाय के साथ मिलकर—

- बालिकाओं की शिक्षा,
- समान अवसर,
- बाल अधिकार,
- करियर संबंधी स्वतंत्रता,
- तथा लैंगिक सम्मान के प्रति जागरूकता बढ़ानी चाहिए।

9. विद्यार्थियों में संवेदनशीलता विकसित करना -

कहानी, चर्चा, भूमिका-अभिनय, समूह गतिविधि और परियोजना कार्य के माध्यम से विद्यार्थियों को समानता, सम्मान, सहयोग और विविधता का सम्मान करना सिखाया जा सकता है।

सरल प्रक्रिया

जागरूकता → संवेदनशीलता → समान व्यवहार → समान सहभागिता → समावेशी वातावरण → लैंगिक समानता

अपनी प्रगति जाँचे –

प्रश्न 1. विद्यालय में लैंगिक समानता से क्या आशय है?

.....

.....

प्रश्न 2. विद्यालय में लैंगिक समानता स्थापित करने में शिक्षक की क्या भूमिका है?

.....

NOTE

.....

प्रश्न 3. लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण क्यों आवश्यक है?

.....

.....

5.6 सारांश

विद्यालय में लैंगिक समानता (Gender Equality) का अर्थ है कि सभी विद्यार्थियों को उनके लिंग के आधार पर किसी भी प्रकार का भेदभाव किए बिना समान अधिकार, अवसर, सम्मान, सुरक्षा और सहभागिता प्रदान की जाए। विद्यालय विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं सामाजिक दृष्टिकोण के विकास का महत्वपूर्ण केंद्र है, इसलिए यहाँ लैंगिक समानता का वातावरण बनाना आवश्यक है।

विद्यालय में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के लिए समान शैक्षिक अवसर, कक्षा में समान सहभागिता, खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में समान अवसर, विषय एवं करियर चयन की स्वतंत्रता तथा नेतृत्व के अवसर उपलब्ध कराए जाने चाहिए। साथ ही, "लड़कियाँ यह काम नहीं कर सकतीं" या "लड़के भावनाएँ व्यक्त नहीं करते" जैसी लैंगिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को समाप्त करने का प्रयास किया जाना चाहिए।

शिक्षक की भूमिका इसमें अत्यंत महत्वपूर्ण है। शिक्षक को निष्पक्ष व्यवहार, लैंगिक-संवेदनशील भाषा, समावेशी शिक्षण-पद्धतियों और सकारात्मक उदाहरणों के माध्यम से विद्यार्थियों में समानता एवं सम्मान की भावना विकसित करनी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण सामग्री में भी महिलाओं और पुरुषों को विविध एवं सकारात्मक भूमिकाओं में प्रस्तुत करना चाहिए।

नोट

5.7 शब्दावली

1. लिंग (Gender) समाज द्वारा स्त्री, पुरुष आदि से जुड़ी भूमिकाओं और अपेक्षाओं की अवधारणा।

2.लैंगिक समानता (Gender Equality)सभी लिंगों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान देना।

3.लैंगिक न्याय (Gender Equity)आवश्यकता के अनुसार उचित सहायता देकर समान परिणाम के अवसर सुनिश्चित करना।

4.लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination) लिंग के आधार पर किसी व्यक्ति के साथ असमान व्यवहार करना।

5.लैंगिक रूढ़ि (Gender Stereotype) किसी लिंग के बारे में बनी निश्चित और सामान्यीकृत धारणा।

6.लैंगिक पूर्वाग्रह (Gender Bias) किसी लिंग के पक्ष या विपक्ष में पहले से बनी पक्षपातपूर्ण सोच।

7.लैंगिक भूमिका (Gender Role) समाज द्वारा अलग-अलग लिंगों के लिए निर्धारित अपेक्षित कार्य एवं व्यवहार।

8.लैंगिक संवेदनशीलता (Gender Sensitivity) लैंगिक असमानता और भेदभाव को समझकर समान एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार करना।

9.समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)सभी विद्यार्थियों को साथ लेकर उनकी विविध आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करना।

10.समान अवसर (Equal Opportunity)सभी विद्यार्थियों को शिक्षा एवं विकास के समान अवसर उपलब्ध कराना।

NOTE

11.समान सहभागिता (Equal Participation) सभी विद्यार्थियों को कक्षा, खेल, सांस्कृतिक एवं नेतृत्व गतिविधियों में समान रूप से शामिल करना।

12.लैंगिक पहचान (Gender Identity) व्यक्ति द्वारा अपनी लैंगिक पहचान की आंतरिक अनुभूति और समझ।

13.सशक्तिकरण (Empowerment) व्यक्ति को निर्णय लेने, अधिकारों का उपयोग करने और अपनी क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाना।

14.सुरक्षित वातावरण (Safe Environment) ऐसा विद्यालयी वातावरण जहाँ विद्यार्थी भेदभाव, डर और उत्पीड़न से सुरक्षित महसूस करें।

15.लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण ऐसी शिक्षण प्रक्रिया जिसमें सभी लिंगों की आवश्यकताओं और अनुभवों का सम्मान किया जाता है।

16.समानता की संस्कृति विद्यालय में समान अधिकार, सम्मान, सहयोग और न्याय को बढ़ावा देने वाली संस्कृति।

17.भेदभाव-मुक्त शिक्षा ऐसी शिक्षा जिसमें लिंग या अन्य आधारों पर किसी विद्यार्थी के साथ भेदभाव न हो।

18.सामाजिक समावेशन सभी विद्यार्थियों को विद्यालय और समाज की गतिविधियों में समान रूप से शामिल करना।

19.समान अधिकार सभी विद्यार्थियों को बिना लैंगिक भेदभाव के समान अधिकार प्राप्त होना।

20.लैंगिक मुख्यधारा (Gender Mainstreaming) शिक्षा और विद्यालयी नीतियों एवं गतिविधियों में लैंगिक समानता को लगातार शामिल करना।

नोट

5.8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. विद्यालय में लैंगिक समानता से क्या आशय है?

उत्तर: विद्यालय में लैंगिक समानता का अर्थ है कि बालक, बालिका तथा सभी विद्यार्थियों को शिक्षा, संसाधन, सहभागिता, नेतृत्व और विकास के समान अवसर प्राप्त हों तथा लिंग के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव न किया जाए।

प्रश्न 2. विद्यालय में लैंगिक समानता स्थापित करने में शिक्षक की क्या भूमिका है?

उत्तर: शिक्षक को सभी विद्यार्थियों के साथ निष्पक्ष एवं समान व्यवहार करना चाहिए। उन्हें कक्षा, खेल, समूह कार्य और नेतृत्व गतिविधियों में समान अवसर देना चाहिए तथा लैंगिक रूढ़ियों और भेदभावपूर्ण धारणाओं को दूर करने के लिए विद्यार्थियों को जागरूक करना चाहिए।

प्रश्न 3. लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण क्यों आवश्यक है?

उत्तर: लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण विद्यार्थियों में समानता, सम्मान, आत्मविश्वास और सहयोग की भावना विकसित करता है। इससे लैंगिक भेदभाव और रूढ़ियों में कमी आती है तथा सभी विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित और समावेशी विद्यालयी वातावरण तैयार होता है।

5.9 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- DIKSHA – लैंगिक समानता, समावेशी शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण से संबंधित ई-सामग्री, वीडियो एवं पाठ्य-संसाधन।
- e-PG Pathshala – शिक्षा, समाज एवं लैंगिक अध्ययन से संबंधित अध्ययन सामग्री और ई-कंटेंट।

NOTE

- NCERT – लैंगिक समानता, लैंगिक संवेदनशीलता, बाल अधिकार एवं समावेशी शिक्षा से संबंधित पाठ्य-सामग्री और शिक्षक संसाधन।
- UNESCO Digital Library – Gender Equality in Education, Gender-Responsive Education तथा समान एवं समावेशी शिक्षा से संबंधित रिपोर्ट, गाइड और शैक्षिक प्रकाशन।

5.10 संदर्भ सूची

- NCERT. Gender, School and Society — लैंगिकता, विद्यालय और समाज के अंतर्संबंध को समझने के लिए उपयोगी।
- Ministry of Education, Government of India. National Education Policy (NEP) 2020 — समानता, समावेशन और सभी विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर जोर।
- UNESCO. Global Education Monitoring Report — शिक्षा में समानता, समावेशन और लैंगिक असमानता से संबंधित सामग्री
- UNICEF. Gender Equality in Education — बालक-बालिकाओं के समान शैक्षिक अवसर और लैंगिक समानता से संबंधित संसाधन।
- UN Women. Gender Equality — लैंगिक समानता, अधिकार और सशक्तिकरण से संबंधित अध्ययन सामग्री।

5.11 अभ्यास

भाग 1

अ.बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)-

नोट

प्रश्न 1. समान अवसर प्रदान करने का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(अ) सभी विद्यार्थियों को एक ही प्रकार से पढ़ाना

(ब) केवल मेधावी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना

(स) सभी विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सीखने के समान अवसर देना

(द) विद्यार्थियों के बीच प्रतिस्पर्धा समाप्त करना

प्रश्न 2. समावेशी शिक्षा (INCLUSIVE EDUCATION) का प्रमुख सिद्धांत कौन-सा है?

(अ) विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य विद्यालयों से अलग रखना

(ब) केवल प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को शिक्षा देना

(स) सभी बच्चों को साथ सीखने तथा भागीदारी करने का अवसर देना

(द) सभी विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की उपेक्षा करना

प्रश्न 3. लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(अ) कक्षा में केवल लड़कों को नेतृत्व के अवसर देना

(ब) लड़कियों को कठिन विषयों से दूर रखना

(स) विद्यार्थियों की रुचि एवं योग्यता के अनुसार सभी को समान अवसर देना

(द) लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग शैक्षिक मानक निर्धारित करना

NOTE

प्रश्न 4. लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण के निर्माण के लिए कौन-सा उपाय सबसे उपयुक्त है?

(अ) पाठ्यपुस्तकों में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को ही प्रस्तुत करना
(ब) विद्यार्थियों के साथ लिंग के आधार पर अलग व्यवहार करना
(स) कक्षा में सम्मान, समानता और भेदभाव-मुक्त व्यवहार को बढ़ावा देना
(द) लड़के और लड़कियों की क्षमताओं की तुलना करना

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1. सही उत्तर: (स) सभी विद्यार्थियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सीखने के समान अवसर देना।

स्पष्टीकरण: समान अवसर का अर्थ है कि प्रत्येक विद्यार्थी को लिंग, जाति, धर्म, सामाजिक-आर्थिक स्थिति या अन्य व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर भेदभाव किए बिना शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिले। समावेशी शिक्षा में विद्यार्थियों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर आवश्यक सहयोग एवं सुविधाएँ प्रदान की जाती हैं।

2. सही उत्तर: (स) सभी बच्चों को साथ सीखने तथा भागीदारी करने का अवसर देना।

स्पष्टीकरण: समावेशी शिक्षा का उद्देश्य विविध क्षमताओं, आवश्यकताओं और पृष्ठभूमियों वाले बच्चों को एक साथ शिक्षा प्रदान करना है। इसमें विद्यालय ऐसा वातावरण विकसित करता है, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी को सम्मान, सहभागिता और सीखने के अवसर प्राप्त हों तथा आवश्यकतानुसार सहायता उपलब्ध कराई जाए।

नोट

3. सही उत्तर: (स) विद्यार्थियों की रुचि एवं योग्यता के अनुसार सभी को समान अवसर देना।

स्पष्टीकरण: शिक्षक को कक्षा में लड़के और लड़कियों, दोनों को प्रश्न पूछने, उत्तर देने, नेतृत्व करने, खेलकूद में भाग लेने तथा विभिन्न गतिविधियों में शामिल होने के समान अवसर देने चाहिए। शिक्षक को लैंगिक रूढ़ियों से बचना चाहिए और प्रत्येक विद्यार्थी की क्षमता एवं रुचि का सम्मान करना चाहिए।

4. सही उत्तर: (स) कक्षा में सम्मान, समानता और भेदभाव-मुक्त व्यवहार को बढ़ावा देना।

स्पष्टीकरण: लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण वह है, जिसमें सभी विद्यार्थियों को समान सम्मान और अवसर मिलते हैं। शिक्षक को भेदभावपूर्ण भाषा एवं व्यवहार से बचना चाहिए, पाठ्यसामग्री में महिला और पुरुष की विविध भूमिकाओं को स्थान देना चाहिए तथा विद्यार्थियों को सहयोग, समानता और पारस्परिक सम्मान के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे सुरक्षित, समावेशी और सकारात्मक शैक्षिक वातावरण विकसित होता है।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

- विद्यालय में लैंगिक समानता से क्या आशय है?
- विद्यालय में लैंगिक भेदभाव के दो उदाहरण बताइए।
- लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में शिक्षक की क्या भूमिका है?

भाग 2

स. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

- लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण वातावरण क्या है?
- लैंगिक रूढ़ियाँ विद्यार्थियों को किस प्रकार प्रभावित करती हैं?

NOTE

नोट

इकाई -6

लिंग निर्माण की सामाजिक प्रक्रिया

इकाई की रूपरेखा

6.1- प्रस्तावना
6.2- उद्देश्य
6.3- परिवार एवं समाज की भूमिका
6.4- विद्यालय एवं सहपाठी समूह की भूमिका
6.5- मीडिया**,** संस्कृति एवं परंपराओं का प्रभाव
6.6- सारांश
6.7- शब्दावली
6.8- अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
6.9- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
6.10- संदर्भ
6.11- अभ्यास

6.1 प्रस्तावना

लिंग (Gender) केवल व्यक्ति के जैविक रूप से स्त्री या पुरुष होने का निर्धारण नहीं करता, बल्कि समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं, व्यवहारों, अपेक्षाओं, मान्यताओं और जिम्मेदारियों से भी संबंधित होता है। बालक या बालिका जन्म के साथ कुछ जैविक विशेषताएँ लेकर आते हैं, लेकिन समाज उन्हें यह सिखाता है कि उन्हें किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, कौन-से कार्य करने चाहिए और किन भूमिकाओं को अपनाना चाहिए।

लिंग का निर्माण एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रक्रिया है, जो परिवार, विद्यालय, मित्र समूह, समुदाय, धर्म, परंपराओं, मीडिया तथा सामाजिक वातावरण के माध्यम से धीरे-धीरे विकसित होती है। उदाहरण के लिए, यदि

NOTE

बच्चों को यह बताया जाता है कि कुछ कार्य केवल लड़कों या केवल लड़कियों के लिए हैं, तो ऐसी धारणाएँ उनके व्यवहार और व्यक्तित्व को प्रभावित कर सकती हैं।

विद्यालय भी लिंग निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पाठ्यपुस्तकों, शिक्षक के व्यवहार, कक्षा में अवसरों के वितरण, खेल-कूद और विषयों के चयन आदि के माध्यम से विद्यार्थियों की लैंगिक धारणाएँ विकसित हो सकती हैं। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य ऐसी रूढ़ियों को कम करना और समान अवसर, सम्मान तथा स्वतंत्रता का वातावरण प्रदान करना होना चाहिए

6.2 उद्देश्य

- लिंग की अवधारणा को समझना – विद्यार्थियों को Sex और Gender के बीच अंतर समझाना।
- सामाजिक प्रभावों की पहचान करना – परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति और मीडिया की लिंग निर्माण में भूमिका को समझना।
- लैंगिक रूढ़ियों को पहचानना – लड़के और लड़कियों से जुड़ी पारंपरिक धारणाओं एवं रूढ़ियों को समझना।
- लैंगिक समानता को बढ़ावा देना – सभी विद्यार्थियों को समान अवसर, अधिकार और सम्मान प्रदान करने की भावना विकसित करना।
- भेदभाव के प्रति जागरूकता – लैंगिक आधार पर होने वाले भेदभाव के कारणों और प्रभावों को समझना।
- सकारात्मक व्यक्तित्व विकास – विद्यार्थियों को अपनी रुचि और

नोट

क्षमता के अनुसार निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना, न कि केवल सामाजिक लैंगिक अपेक्षाओं के आधार पर।

- समावेशी दृष्टिकोण विकसित करना – विद्यालय और समाज में सभी लिंगों के प्रति सम्मान, संवेदनशीलता और सहयोग की भावना विकसित करना।
- शिक्षकों की भूमिका स्पष्ट करना – शिक्षक किस प्रकार कक्षा में लैंगिक समानता और निष्पक्षता का वातावरण बना सकते हैं, इसे समझना।

6.3 परिवार और समाज की भूमिका

लिंग निर्माण की प्रक्रिया में परिवार और समाज का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बच्चे जन्म के बाद अपने आसपास के लोगों के व्यवहार, विचार, अपेक्षाओं और सामाजिक मान्यताओं को देखकर यह सीखते हैं कि समाज लड़के और लड़कियों से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा करता है।

1. परिवार की भूमिका -

परिवार बच्चे का पहला सामाजिक वातावरण होता है। लिंग संबंधी धारणाएँ विकसित करने में परिवार की भूमिका निम्न प्रकार है—

1. **व्यवहार एवं संस्कार –** माता-पिता बच्चों को उनके लिंग के आधार पर अलग-अलग व्यवहार और जिम्मेदारियाँ सिखा सकते हैं।
2. **खेल एवं खिलौने –** पारंपरिक रूप से लड़कों को वाहन या खेल-कूद से जुड़े खिलौने और लड़कियों को गुड़िया या घरेलू कार्यों से जुड़े खिलौने देने से लैंगिक भूमिकाएँ मजबूत हो सकती हैं।

NOTE

3. **घरेलू कार्यों का विभाजन –** यदि घर में खाना बनाना, सफाई आदि कार्य केवल लड़कियों और बाहरी कार्य केवल लड़कों को दिए जाएँ, तो इससे रूढ़िगत धारणाएँ विकसित हो सकती हैं।
4. **शिक्षा एवं करियर की अपेक्षाएँ –** परिवार बच्चों की शिक्षा, विषय चयन और करियर के संबंध में लैंगिक अपेक्षाएँ रख सकता है।
5. **समान अवसर –** यदि परिवार दोनों बच्चों को समान शिक्षा, स्वतंत्रता, निर्णय लेने के अवसर और प्रोत्साहन देता है, तो लैंगिक समानता की भावना विकसित होती है।

2. समाज की भूमिका -

समाज में प्रचलित परंपराएँ, संस्कृति, रीति-रिवाज, मीडिया, धर्म, समुदाय और सामाजिक संस्थाएँ बच्चों की लैंगिक समझ को प्रभावित करती हैं।

1. **सामाजिक मान्यताएँ –** समाज में प्रचलित धारणाएँ यह निर्धारित कर सकती हैं कि लड़के और लड़कियों से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा की जाती है।
2. **परंपराएँ एवं संस्कृति –** पारंपरिक भूमिकाएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ सकती हैं।
3. **मीडिया का प्रभाव –** विज्ञापन, फिल्में और सोशल मीडिया पुरुषों एवं महिलाओं की भूमिकाओं की विशेष छवियाँ प्रस्तुत कर सकते हैं।
4. **शिक्षा संस्थाएँ –** विद्यालय में शिक्षक का व्यवहार, पाठ्यपुस्तकें, खेल और विद्यार्थियों को दिए जाने वाले अवसर लैंगिक धारणाओं को प्रभावित करते हैं।
5. **सामाजिक समूह एवं मित्र –** मित्रों और साथियों के विचार तथा

नोट

व्यवहार भी बच्चों की लैंगिक पहचान और भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं।

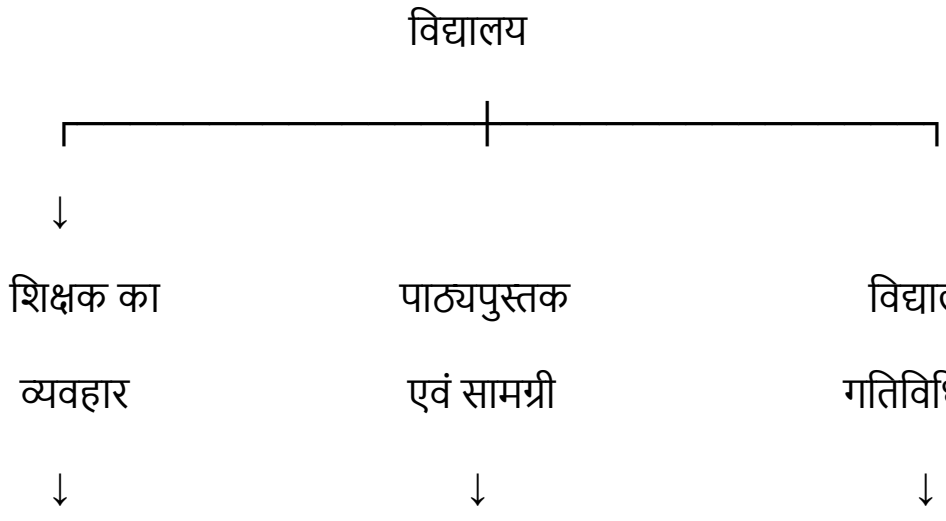
6. **समानता का वातावरण –** जब समाज सभी लिंगों को समान सम्मान और अवसर देता है, तो भेदभाव कम होता है और सकारात्मक लैंगिक दृष्टिकोण विकसित होता है।

6.4 विद्यालय एवं सहपाठी समूह की भूमिका

लिंग निर्माण केवल परिवार से नहीं होता, बल्कि विद्यालय और सहपाठी समूह (Peer Group) भी बच्चों और किशोरों के विचारों, व्यवहार, आत्म-पहचान तथा लैंगिक भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं। विद्यालय एक औपचारिक सामाजिक संस्था है, जबकि सहपाठी समूह बच्चों के अनौपचारिक सामाजिक अनुभवों का महत्वपूर्ण माध्यम है।

1. विद्यालय की भूमिका

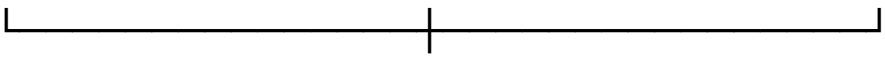
विद्यालय में विद्यार्थी प्रतिदिन शिक्षकों, पाठ्यपुस्तकों, सहपाठियों, खेलों, गतिविधियों और विद्यालयी नियमों के संपर्क में रहते हैं। इन अनुभवों से उनकी लैंगिक धारणाएँ विकसित होती हैं।



NOTE

समान/असमान लैंगिक चित्रण खेल, समूह

व्यवहार एवं भूमिकाएँ कार्य



विद्यार्थियों की

लैंगिक धारणाएँ

↓

व्यवहार एवं पहचान

विद्यालय की प्रमुख भूमिकाएँ -

1. शिक्षक का व्यवहार -

शिक्षक यदि लड़के और लड़कियों को समान अवसर देते हैं तथा प्रश्न पूछने, नेतृत्व करने और गतिविधियों में भाग लेने के समान अवसर प्रदान करते हैं, तो विद्यार्थियों में समानता की भावना विकसित होती है।

2. पाठ्यपुस्तकों की भूमिका -

पाठ्यपुस्तकों में यदि महिलाओं और पुरुषों को विविध एवं समान भूमिकाओं में दिखाया जाता है, तो विद्यार्थियों की पारंपरिक लैंगिक धारणाएँ कम हो सकती हैं।

खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ – विद्यालय को खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान गतिविधि, नेतृत्व और अन्य कार्यों में सभी विद्यार्थियों की समान भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए।

4. कक्षा में समान सहभागिता -

नोट

शिक्षक को यह ध्यान रखना चाहिए कि चर्चा, प्रश्नोत्तर, समूह-कार्य और नेतृत्व के अवसर किसी एक लिंग तक सीमित न रहें।

5. विषय एवं करियर चयन -

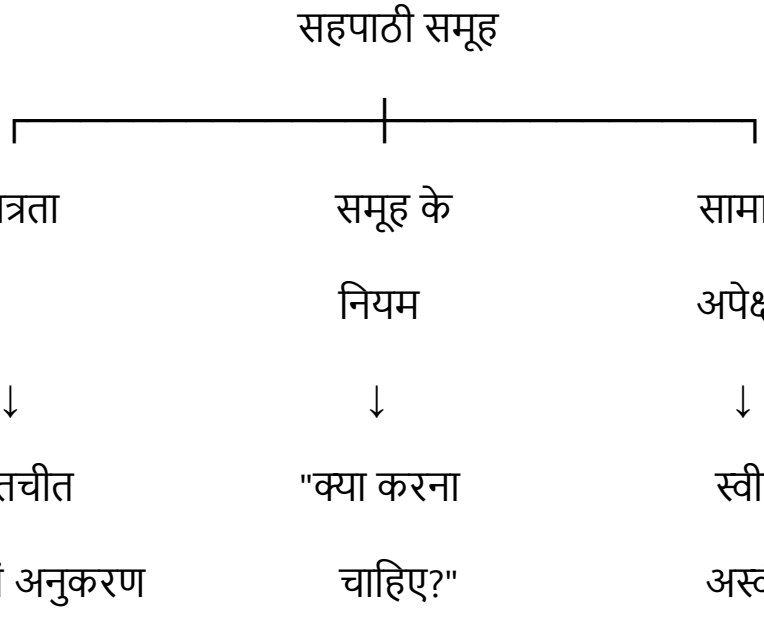
विद्यार्थियों को यह स्वतंत्रता मिलनी चाहिए कि वे अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार विषय एवं करियर चुनें। किसी विषय को केवल लड़कों या लड़कियों का विषय मानना उचित नहीं है।

6. लैंगिक संवेदनशील वातावरण -

विद्यालय में ऐसी भाषा और व्यवहार को प्रोत्साहित करना चाहिए जो सभी विद्यार्थियों के सम्मान और गरिमा को बनाए रखे।

2. सहपाठी समूह की भूमिका (Role of Peer Group) -

सहपाठी समूह से आशय उन मित्रों और समान आयु के विद्यार्थियों से है जिनके साथ बच्चे विद्यालय में या विद्यालय के बाहर समय बिताते हैं। सहपाठी समूह बच्चों के व्यवहार, पसंद, भाषा और सामाजिक मान्यताओं को प्रभावित कर सकता है।



NOTE

व्यवहार एवं दृष्टिकोण

↓

लैंगिक पहचान

सहपाठी समूह की प्रमुख भूमिकाएँ -

1.अनुकरण (Imitation)- बच्चे अपने मित्रों के व्यवहार, भाषा और गतिविधियों को देखकर उन्हें अपनाने का प्रयास कर सकते हैं।

2. सामाजिक स्वीकृति- बच्चे अपने समूह में स्वीकार किए जाने की इच्छा रखते हैं। इसलिए वे कभी-कभी समूह में प्रचलित व्यवहार और विचारों को अपनाते हैं।

3. लैंगिक भूमिकाओं की समझ- सहपाठी समूह यह प्रभावित कर सकता है कि बच्चे किन खेलों, गतिविधियों या व्यवहारों को लड़कों या लड़कियों से जोड़ते हैं।

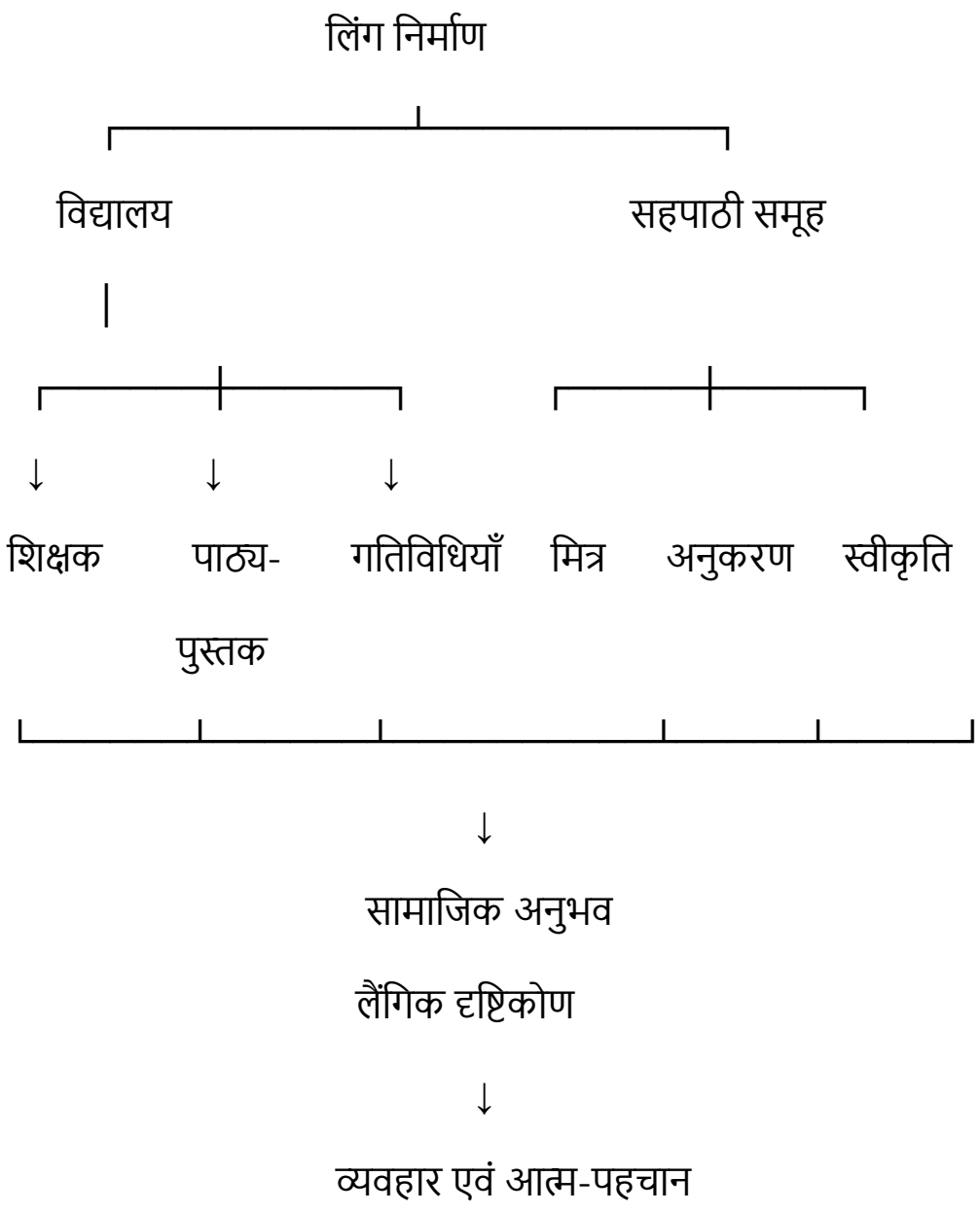
4. सकारात्मक प्रभाव- यदि मित्र समूह सभी विद्यार्थियों को समान अवसर और सम्मान देता है, तो सहयोग, समानता और समावेशिता की भावना मजबूत हो सकती है।

5. नकारात्मक रूढ़ियों का प्रभाव- यदि समूह किसी गतिविधि को केवल लड़कों या केवल लड़कियों के लिए उचित मानता है, तो इससे लैंगिक रूढ़ियाँ मजबूत हो सकती हैं।

6. सहयोग एवं आत्मविश्वास- सकारात्मक मित्रता विद्यार्थियों को अपनी बात व्यक्त करने, नई गतिविधियों में भाग लेने और अपनी क्षमताओं पर विश्वास करने में सहायता कर सकती है।

नोट

3. विद्यालय एवं सहपाठी समूह का संयुक्त प्रभाव -



4. सकारात्मक लिंग निर्माण के लिए विद्यालय क्या कर सकता है?

- लड़के और लड़कियों को समान अवसर प्रदान करना।
- कक्षा में सभी विद्यार्थियों की समान सहभागिता सुनिश्चित करना।
- लैंगिक रूढ़ियों से मुक्त पाठ्य-सामग्री का प्रयोग करना।
- सभी प्रकार के खेलों और गतिविधियों में विद्यार्थियों को भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना।

NOTE

- नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ सभी विद्यार्थियों को देना।
- लैंगिक भेदभावपूर्ण भाषा और व्यवहार के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।
- सहपाठी समूहों में सहयोग, सम्मान और समावेशिता को बढ़ावा देना।
- विद्यार्थियों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार विषय एवं गतिविधियाँ चुनने के लिए प्रोत्साहित करना।

6.5 मीडिया, संस्कृति और परम्पराओं का प्रभाव

लिंग निर्माण में मीडिया, संस्कृति और परंपराएँ महत्वपूर्ण सामाजिक कारक हैं। बच्चे और किशोर अपने आसपास के वातावरण से यह सीखते हैं कि समाज में लड़के और लड़कियों से किस प्रकार के व्यवहार, भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की अपेक्षा की जाती है। ये प्रभाव सकारात्मक भी हो सकते हैं और लैंगिक रूढ़ियों को मजबूत भी कर सकते हैं।



नोट

चित्र 6.5 :- मीडिया, संस्कृति एवं परंपराओं का प्रभाव

क. मीडिया का प्रभाव (Impact of Media) -

मीडिया में टेलीविजन, फिल्में, विज्ञापन, समाचार, इंटरनेट और सोशल मीडिया आदि शामिल हैं।

प्रमुख प्रभाव -

1. लैंगिक भूमिकाओं का प्रदर्शन -

फिल्मों, धारावाहिकों और विज्ञापनों में महिलाओं को अक्सर घरेलू कार्यों तथा पुरुषों को कमाने या नेतृत्व करने वाली भूमिकाओं में दिखाया जाता रहा है। ऐसे चित्रण बच्चों में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं की धारणा बना सकते हैं।

2. आदर्श छवि का निर्माण -

मीडिया पुरुषों और महिलाओं के व्यवहार, पहनावे, व्यक्तित्व और सफलता की कुछ विशेष छवियाँ प्रस्तुत कर सकता है। बच्चे इन छवियों को देखकर अपने बारे में धारणाएँ बना सकते हैं।

3. भाषा एवं व्यवहार पर प्रभाव -

सोशल मीडिया और मनोरंजन सामग्री में प्रयुक्त भाषा तथा टिप्पणियाँ बच्चों के लैंगिक दृष्टिकोण को प्रभावित कर सकती हैं।

4. सकारात्मक परिवर्तन का माध्यम -

मीडिया लैंगिक समानता, महिला शिक्षा, समान अवसर और भेदभाव के विरुद्ध जागरूकता फैलाने का प्रभावी माध्यम भी है।

उदाहरण: यदि किसी विज्ञापन में पिता और माता दोनों को घर के कार्य तथा

NOTE

बच्चों की देखभाल करते हुए दिखाया जाए, तो यह समान जिम्मेदारी का सकारात्मक संदेश देता है।

ख. संस्कृति का प्रभाव (Impact of Culture)-

संस्कृति में समाज के मूल्य, विश्वास, रीति-रिवाज, भाषा, कला, साहित्य, लोककथाएँ और जीवन-शैली शामिल होते हैं।

प्रमुख प्रभाव-

1. सामाजिक मूल्यों का निर्माण -

संस्कृति बच्चों को यह समझने में सहायता करती है कि समाज में कौन-से व्यवहार उचित या अनुचित माने जाते हैं।

2. लैंगिक भूमिकाओं का निर्धारण -

कुछ सांस्कृतिक मान्यताएँ लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग भूमिकाएँ निर्धारित कर सकती हैं।

3. लोककथाओं और साहित्य का प्रभाव -

कहानियों और लोककथाओं में प्रस्तुत पात्रों की भूमिकाएँ बच्चों की लैंगिक धारणाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

4. बदलती संस्कृति का सकारात्मक प्रभाव -

आधुनिक सामाजिक परिवर्तन के साथ शिक्षा, रोजगार, खेल, विज्ञान और नेतृत्व में महिलाओं एवं पुरुषों की समान भागीदारी को स्वीकार्यता बढ़ रही है।

ग. परंपराओं का प्रभाव (Impact of Traditions) -

परंपराएँ वे सामाजिक प्रथाएँ और व्यवहार हैं जो लंबे समय से एक

नोट

पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलते आते हैं।

प्रमुख प्रभाव-

1. कार्यों का पारंपरिक विभाजन

कई परिवारों और समुदायों में घरेलू कार्यों को मुख्यतः लड़कियों/महिलाओं तथा बाहरी कार्यों को लड़कों/पुरुषों से जोड़ने की परंपरा रही है।

2. शिक्षा संबंधी अपेक्षाएँ

कुछ सामाजिक परिस्थितियों में लड़कों की शिक्षा या करियर को अधिक प्राथमिकता देने जैसी परंपराएँ लड़कियों के अवसरों को सीमित कर सकती हैं।

3. विवाह एवं पारिवारिक भूमिकाएँ

विवाह और परिवार से जुड़ी कुछ परंपराएँ पुरुष और महिला की अलग-अलग भूमिकाओं की अपेक्षा कर सकती हैं।

4. सकारात्मक परंपराएँ

सभी परंपराएँ नकारात्मक नहीं होतीं। परिवार और समुदाय में सहयोग, सम्मान, जिम्मेदारी तथा सभी बच्चों की शिक्षा जैसी परंपराएँ सकारात्मक सामाजिक मूल्यों को बढ़ावा देती हैं।

घ. तीनों का संयुक्त प्रभाव

मीडिया + संस्कृति + परंपराएँ

↓

सामाजिक संदेश

↓

NOTE

विचार एवं मान्यताएँ

↓

लैंगिक धारणाएँ

↓

व्यवहार एवं भूमिकाएँ

↓

लिंग निर्माण

इन तीनों माध्यमों के प्रभाव से बच्चे यह धारणा बना सकते हैं कि "लड़कों और लड़कियों को क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए।" इसलिए इनके संदेशों में समानता और विविधता का होना महत्वपूर्ण है।

सकारात्मक दिशा -

समानता + सम्मान + विविधता

↓

सकारात्मक संदेश

↓

रूढ़ियों में कमी

↓

समान अवसरों की भावना

↓

लैंगिक समानता

नोट

6.6 सारांश

लिंग निर्माण की सामाजिक प्रक्रिया से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज में प्रचलित लैंगिक भूमिकाओं, मान्यताओं, अपेक्षाओं, व्यवहारों और मूल्यों को सीखता और समझता है। जैविक लिंग (Sex) जन्मजात शारीरिक विशेषताओं से संबंधित होता है, जबकि लिंग (Gender) मुख्य रूप से सामाजिक और सांस्कृतिक अनुभवों से प्रभावित होता है।

लिंग निर्माण में परिवार, विद्यालय, सहपाठी समूह, मीडिया, संस्कृति और परंपराएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार बच्चे को प्रारंभिक सामाजिक अनुभव देता है, विद्यालय समानता या असमानता से जुड़े व्यवहारों को प्रभावित करता है और सहपाठी समूह सामाजिक स्वीकृति तथा अनुकरण के माध्यम से दृष्टिकोण विकसित करता है। मीडिया महिलाओं और पुरुषों की विभिन्न छवियाँ प्रस्तुत करके लैंगिक धारणाओं को प्रभावित करता है, जबकि संस्कृति एवं परंपराएँ सामाजिक भूमिकाओं और अपेक्षाओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ा सकती हैं।

यदि बच्चों को समान अवसर, सम्मान, स्वतंत्रता और जिम्मेदारियों में समान भागीदारी मिलती है, तो लैंगिक रूढ़ियों और भेदभाव में कमी आ सकती है। इसलिए शिक्षा और सामाजिक संस्थाओं का उद्देश्य विद्यार्थियों में लैंगिक समानता, संवेदनशीलता और समावेशी दृष्टिकोण विकसित करना होना चाहिए।

6.7 शब्दावली

NOTE

- **लिंग (Gender)** समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाएँ, व्यवहार और अपेक्षाएँ।
- **जैविक यौन (Sex)** व्यक्ति की जैविक एवं शारीरिक विशेषताओं से संबंधित अवधारणा।
- **लिंग निर्माण (Gender Construction)** समाज और संस्कृति के माध्यम से लैंगिक भूमिकाओं एवं धारणाओं का विकास।
- **सामाजिक प्रक्रिया (Social Process)** समाज में व्यक्ति के विचार और व्यवहार के विकसित होने की प्रक्रिया।
- **लैंगिक भूमिका (Gender Role)** समाज द्वारा किसी लिंग से अपेक्षित कार्य और व्यवहार।
- **लैंगिक रूढ़ि (Gender Stereotype)** किसी लिंग के बारे में बनी सामान्यीकृत और स्थिर धारणा।
- **लैंगिक समानता (Gender Equality)** सभी लिंगों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान मिलना।
- **लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination)** लिंग के आधार पर असमान व्यवहार या अवसर देना।
- **समाजीकरण (Socialization)** सामाजिक मूल्यों, मानदंडों और व्यवहारों को सीखने की प्रक्रिया।
- **लैंगिक पहचान (Gender Identity)**व्यक्ति की अपनी लैंगिक पहचान के संबंध में आंतरिक समझ।
- **परिवार (Family)** बच्चे के समाजीकरण और प्रारंभिक लैंगिक सीख का प्रमुख माध्यम।
- **सहपाठी समूह (Peer Group)** समान या निकट आयु के मित्रों

नोट

और साथियों का समूह।

- **मीडिया (Media)** टीवी, फिल्म, समाचार, इंटरनेट और सोशल मीडिया जैसे संचार माध्यम।
- **संस्कृति (Culture)** समाज के मूल्य, विश्वास, भाषा, कला, रीति-रिवाज और जीवन-शैली।
- **परंपरा (Tradition)**
- पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आने वाली सामाजिक प्रथाएँ और मान्यताएँ।
- **लैंगिक संवेदनशीलता** विभिन्न लिंगों की आवश्यकताओं और अनुभवों के प्रति समझ एवं सम्मान।
- **समावेशिता (Inclusiveness)** सभी व्यक्तियों को समान रूप से शामिल करने और अवसर देने की भावना।
- **सशक्तिकरण (Empowerment)** व्यक्ति को निर्णय लेने और अपनी क्षमता विकसित करने के अवसर प्रदान करना।
- **सामाजिक अपेक्षा** समाज द्वारा व्यक्ति के व्यवहार या भूमिका से जुड़ी अपेक्षा।
- **समान अवसर (Equal Opportunity)** सभी विद्यार्थियों को बिना लैंगिक भेदभाव के समान अवसर उपलब्ध कराना।

6.8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. लिंग निर्माण की सामाजिक प्रक्रिया से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: समाज, परिवार, विद्यालय, सहपाठी समूह, मीडिया, संस्कृति और परंपराओं के माध्यम से व्यक्ति में लैंगिक भूमिकाओं, मान्यताओं और व्यवहारों का विकास लिंग निर्माण की सामाजिक प्रक्रिया कहलाता है।

NOTE

प्रश्न 2. लिंग निर्माण में परिवार की क्या भूमिका है?

उत्तर: परिवार बच्चे का पहला सामाजिक वातावरण है। परिवार के व्यवहार, कार्य-विभाजन, शिक्षा, प्रोत्साहन और अपेक्षाओं के माध्यम से बच्चे लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक मान्यताओं को सीखते हैं।

प्रश्न 3. लिंग निर्माण में विद्यालय और सहपाठी समूह किस प्रकार प्रभाव डालते हैं?

उत्तर: विद्यालय शिक्षक के व्यवहार, पाठ्यपुस्तकों, खेलों और गतिविधियों के माध्यम से लैंगिक दृष्टिकोण विकसित करता है। सहपाठी समूह मित्रता, अनुकरण, सामाजिक स्वीकृति और समूह-मानदंडों के माध्यम से बच्चों के व्यवहार एवं धारणाओं को प्रभावित करता है।

प्रश्न 4. मीडिया, संस्कृति और परंपराएँ लिंग निर्माण को कैसे प्रभावित करती हैं?

उत्तर: मीडिया महिलाओं और पुरुषों की विभिन्न भूमिकाओं को प्रस्तुत करता है, जबकि संस्कृति एवं परंपराएँ सामाजिक मूल्यों और लैंगिक भूमिकाओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाती हैं। सकारात्मक प्रस्तुति समानता को बढ़ावा दे सकती है, जबकि रूढ़िगत प्रस्तुति लैंगिक भेदभाव को मजबूत कर सकती है।

6.9 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

लिंग निर्माण की सामाजिक प्रक्रिया के अध्ययन के लिए निम्नलिखित मुक्त/खुले शैक्षिक संसाधन उपयोगी हैं:

- NCERT – Gender, School and Society संबंधित सामग्री
- DIKSHA – Gender एवं Gender Sensitization से संबंधित

नोट

शैक्षिक सामग्री

- e-PG Pathshala – Gender Studies एवं सामाजिक विज्ञान सामग्री
- SWAYAM – Gender Studies एवं शिक्षा से संबंधित ऑनलाइन पाठ्यक्रम
- UNESCO – Gender Equality in Education से संबंधित संसाधन

6.10 संदर्भ

- NCERT. Gender, School and Society से संबंधित अध्ययन सामग्री.
- UNESCO. Gender Equality and Education से संबंधित संसाधन.
- IGNOU. Gender, School and Society / Gender Studies से संबंधित अध्ययन सामग्री.
- NIOS. Gender, Equality and Education से संबंधित अध्ययन सामग्री.
- Ministry of Education, Government of India. National Education Policy 2020.
- UNICEF. Gender Equality एवं बालिकाओं की शिक्षा से संबंधित संसाधन.

6.11 अभ्यास

भाग–1

बहुविकल्पीय प्रश्न

NOTE

प्रश्न 1. बच्चों के लिंग निर्माण में विद्यालय की क्या भूमिका होती है?

(अ) केवल शैक्षणिक ज्ञान प्रदान करना

(ब) लैंगिक भूमिकाओं एवं सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करना

(स) केवल अनुशासन बनाए रखना

(द) बच्चों की रुचियों को सीमित करना

प्रश्न 2. सहपाठी समूह (Peer Group) बच्चों के लैंगिक दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करता है?

(अ) केवल परीक्षा की तैयारी में सहायता करके

(ब) बच्चों को सामाजिक संपर्क से दूर रखकर

(स) अनुकरण, समूह के नियमों और सामाजिक स्वीकृति के माध्यम से

(द) केवल पारिवारिक मूल्यों को दोहराकर

प्रश्न 3. मीडिया लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में किस प्रकार सहायक हो सकता है?

(अ) महिलाओं और पुरुषों को केवल पारंपरिक भूमिकाओं में दिखाकर

(ब) लैंगिक भेदभाव को उचित ठहराकर

(स) समान अवसरों एवं साझा जिम्मेदारियों को प्रस्तुत करके

(द) केवल पुरुषों की उपलब्धियों को प्रदर्शित करके

प्रश्न 4. संस्कृति और परंपराओं का बच्चों की लैंगिक धारणाओं पर क्या प्रभाव पड़ सकता है?

नोट

(अ) उनका बच्चों के व्यवहार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(ब) वे बच्चों की सामाजिक मान्यताओं एवं भूमिकाओं की समझ को प्रभावित कर सकती हैं।

(स) वे सभी बच्चों के लिए समान व्यवहार सुनिश्चित करती हैं।

(द) वे केवल बच्चों के शारीरिक विकास को प्रभावित करती हैं।

प्रश्न 5. विद्यालय में लैंगिक रूढ़ियों को कम करने के लिए कौन-सा उपाय सबसे उपयुक्त है?

(अ) लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग करियर निर्धारित करना

(ब) नेतृत्व के अवसर केवल प्रतिभाशाली लड़कों को देना

(स) खेलों और गतिविधियों में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को अनिवार्य बनाना

(द) सभी विद्यार्थियों को रुचि एवं योग्यता के अनुसार समान अवसर देना

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1. सही उत्तर: (ब) लैंगिक भूमिकाओं एवं सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करना।

स्पष्टीकरण: विद्यालय एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जहाँ बच्चे शिक्षकों, पाठ्यपुस्तकों, खेलों तथा विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से सामाजिक व्यवहार सीखते हैं। यदि विद्यालय लड़के और लड़कियों को समान अवसर प्रदान करता है, तो उनमें समानता, सहयोग और सम्मान की भावना विकसित होती है।

2. सही उत्तर: (स) अनुकरण, समूह के नियमों और सामाजिक स्वीकृति के माध्यम से।

NOTE

स्पष्टीकरण: सहपाठी समूह में बच्चे अपने मित्रों के व्यवहार, भाषा, पसंद और विचारों से प्रभावित होते हैं। समूह में स्वीकार किए जाने की इच्छा के कारण वे उसके प्रचलित व्यवहारों को अपना सकते हैं। सकारात्मक मित्र समूह समानता और सहयोग को बढ़ावा देता है, जबकि नकारात्मक समूह लैंगिक रूढ़ियों को मजबूत कर सकता है।

3. सही उत्तर: (स) समान अवसरों एवं साझा जिम्मेदारियों को प्रस्तुत करके।

स्पष्टीकरण: टेलीविजन, फिल्मों, विज्ञापनों और सोशल मीडिया के माध्यम से लैंगिक समानता का संदेश दिया जा सकता है। उदाहरण के लिए, माता और पिता दोनों को घरेलू कार्यों तथा बच्चों की देखभाल में भाग लेते हुए दिखाना साझा जिम्मेदारी को प्रोत्साहित करता है।

4. सही उत्तर: (ब) वे बच्चों की सामाजिक मान्यताओं एवं भूमिकाओं की समझ को प्रभावित कर सकती हैं।

स्पष्टीकरण: संस्कृति और परंपराएँ बच्चों को सामाजिक मूल्यों, रीति-रिवाजों तथा व्यवहारों से परिचित कराती हैं। कुछ परंपराएँ लैंगिक असमानता को बढ़ा सकती हैं, जबकि शिक्षा, सहयोग, सम्मान और समान अवसरों से जुड़ी परंपराएँ सकारात्मक मूल्यों का विकास करती हैं

5. सही उत्तर: (द) सभी विद्यार्थियों को रुचि एवं योग्यता के अनुसार समान अवसर देना।

स्पष्टीकरण: विद्यालय को सभी विद्यार्थियों को खेलकूद, नेतृत्व, विज्ञान, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और अन्य गतिविधियों में भाग लेने के समान अवसर

नोट

देने चाहिए। इससे बच्चों की व्यक्तिगत क्षमताओं का विकास होता है और लिंग के आधार पर बनी रूढ़िवादी धारणाओं को कम करने में सहायता मिलती है।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

1.लिंग निर्माण की सामाजिक प्रक्रिया से क्या समझते हैं?

2. लिंग निर्माण में परिवार की क्या भूमिका है?

3. विद्यालय लिंग निर्माण की प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करता है?

4. मीडिया एवं परंपराएँ लैंगिक धारणाओं को कैसे प्रभावित करती हैं?

भाग–3: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लिंग निर्माण में विद्यालय एवं सहपाठी समूह की भूमिका का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए। साथ ही, लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए विद्यालय द्वारा किए जाने वाले उपायों की चर्चा कीजिए।

2. मीडिया, संस्कृति एवं परंपराओं का लिंग निर्माण पर पड़ने वाले प्रभावों का विस्तार से विवेचन कीजिए। सकारात्मक लिंग निर्माण एवं लैंगिक समानता को प्रोत्साहित करने के उपाय भी बताइए।

NOTE

इकाई 7

लिंग की समझ एवं व्यक्तित्व विकास

इकाई की रूपरेखा

7.1- प्रस्तावना
7.2- उद्देश्य
7.3- लिंग-पहचान एवं आत्म-अवधारणा का विकास
(क) लिंग-पहचान के निर्माण की प्रक्रिया
(ख) श्रम विभाजन **:** लैंगिक भूमिका
7.4- लैंगिक भूमिकाएँ एवं व्यक्तित्व विकास
7.5- लैंगिक समानता एवं समग्र व्यक्तित्व विकास
7.6- सारांश
7.7- शब्दावली
7.8- अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
7.9- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
7.10- संदर्भ
7.11- अभ्यास

7.1 प्रस्तावना

लिंग (Gender) व्यक्ति की सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक पहचान तथा समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाओं और अपेक्षाओं से संबंधित अवधारणा है। बालक और बालिका के व्यक्तित्व विकास पर परिवार, विद्यालय, मित्र-समूह, मीडिया, संस्कृति और सामाजिक वातावरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। समाज में प्रचलित लैंगिक रूढ़ियाँ और असमान अवसर व्यक्ति के आत्मविश्वास, आत्म-अवधारणा, निर्णय लेने की क्षमता तथा व्यक्तित्व विकास को प्रभावित कर सकते हैं। लिंग की समुचित समझ विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता करती है कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार आगे बढ़ने के समान अवसर मिलने चाहिए।

नोट

शिक्षा के माध्यम से लैंगिक समानता, सम्मान, संवेदनशीलता और सकारात्मक आत्म-पहचान को बढ़ावा देकर विद्यार्थियों के समग्र एवं संतुलित व्यक्तित्व विकास में सहायता की जा सकती है।

7.2 उद्देश्य

- लिंग की अवधारणा एवं उसके महत्व को समझ सकेंगे।
- लिंग-पहचान और आत्म-अवधारणा के विकास को समझ सकेंगे।
- व्यक्तित्व विकास पर परिवार, विद्यालय, समाज एवं संस्कृति के प्रभाव को स्पष्ट कर सकेंगे।
- लैंगिक भूमिकाओं और रूढ़ियों के व्यक्तित्व पर पड़ने वाले प्रभाव की पहचान कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों में आत्म-सम्मान, आत्मविश्वास एवं सकारात्मक आत्म-पहचान विकसित करने के उपाय समझ सकेंगे।
- लैंगिक समानता और समान अवसर के महत्व को समझ सकेंगे।
- विद्यालय में लैंगिक-संवेदनशील एवं समावेशी वातावरण विकसित करने में शिक्षक की भूमिका को समझ सकेंगे।

7.3 लिंग पहचान एवं आत्म विकास की अवधारणा

लिंग-पहचान (Gender Identity) से तात्पर्य व्यक्ति की अपने लिंग के संबंध में स्वयं की समझ और अनुभूति से है। यह व्यक्ति के सामाजिक अनुभवों, परिवार, विद्यालय, मित्र-समूह, संस्कृति और वातावरण से प्रभावित होकर विकसित होती है। बचपन से ही बच्चे अपने आसपास के लोगों के व्यवहार और सामाजिक अपेक्षाओं को देखकर स्वयं तथा दूसरों के बारे में धारणाएँ बनाते हैं।

2. आत्म-अवधारणा का अर्थ -

NOTE

आत्म-अवधारणा (Self-Concept) व्यक्ति की अपने बारे में बनाई गई समग्र धारणा है। इसमें व्यक्ति यह समझता है कि "मैं कौन हूँ?", "मेरी क्षमताएँ क्या हैं?", "मेरी रुचियाँ क्या हैं?" और "मैं अपने बारे में कैसा सोचता/सोचती हूँ?"।

3. लिंग-पहचान और आत्म-अवधारणा का संबंध-

लिंग-पहचान व्यक्ति की आत्म-अवधारणा का एक महत्वपूर्ण पक्ष हो सकती है। यदि बच्चे को परिवार और विद्यालय में सम्मान, समान अवसर और प्रोत्साहन मिलता है, तो उसमें सकारात्मक आत्म-अवधारणा और आत्मविश्वास विकसित होने में सहायता मिलती है। इसके विपरीत, लैंगिक भेदभाव और रूढ़ियाँ बच्चे की स्वयं के प्रति धारणा को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती हैं।

4. विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक-

- परिवार: माता-पिता का व्यवहार, अपेक्षाएँ और प्रोत्साहन।
- विद्यालय: शिक्षक का व्यवहार, पाठ्यक्रम, गतिविधियाँ और समान अवसर।
- सहपाठी समूह: मित्रों की स्वीकृति, सहयोग और सामाजिक अनुभव।
- समाज एवं संस्कृति: परंपराएँ, सामाजिक मान्यताएँ और लैंगिक भूमिकाएँ।
- मीडिया: फिल्मों, विज्ञापनों और सोशल मीडिया में प्रस्तुत लैंगिक छवियाँ।
- व्यक्तिगत अनुभव: सफलता, असफलता, प्रशंसा और आलोचना।

5. शिक्षा की भूमिका-

शिक्षक विद्यार्थियों को उनकी रुचि, क्षमता और योग्यता के आधार पर आगे बढ़ने के समान अवसर देकर सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित कर

नोट

सकते हैं। कक्षा में लैंगिक रूढ़ियों से मुक्त गतिविधियाँ, समान सहभागिता और सम्मानपूर्ण व्यवहार अपनाना आवश्यक है।

(क) लिंग-पहचान के निर्माण की प्रक्रिया -

लिंग-पहचान (Gender Identity) से तात्पर्य व्यक्ति की अपने लिंग के संबंध में स्वयं की समझ और पहचान से है। इसका निर्माण एक निरंतर प्रक्रिया है, जो बचपन से शुरू होकर विकास के विभिन्न चरणों में परिवार, विद्यालय, मित्र-समूह, समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत अनुभवों से प्रभावित होती है।

1. परिवार का प्रभाव-

परिवार बच्चे के लिंग-पहचान निर्माण का पहला महत्वपूर्ण सामाजिक वातावरण है। माता-पिता और परिवार के अन्य सदस्य बच्चों को व्यवहार, जिम्मेदारियों, खेल और अपेक्षाओं के माध्यम से सामाजिक भूमिकाओं से परिचित कराते हैं। समान व्यवहार और अवसर मिलने से सकारात्मक पहचान विकसित होने में सहायता मिलती है।

2. विद्यालय की भूमिका-

विद्यालय में शिक्षक, पाठ्यपुस्तकें, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ और कक्षा का वातावरण लिंग संबंधी धारणाओं को प्रभावित करते हैं। यदि बालक और बालिका को समान अवसर और प्रोत्साहन दिया जाए, तो उनमें आत्मविश्वास और सकारात्मक लिंग-पहचान विकसित होती है।

3. मित्र एवं सहपाठी समूह-

बच्चे अपने मित्रों और सहपाठियों के व्यवहार को देखकर सामाजिक मानदंड सीखते हैं। मित्रों की स्वीकृति, सहयोग और समूह की अपेक्षाएँ

उनके व्यवहार एवं स्वयं के प्रति धारणा को प्रभावित कर सकती हैं।

NOTE

4. समाज एवं संस्कृति-

समाज की परंपराएँ, रीति-रिवाज, मान्यताएँ और सामाजिक अपेक्षाएँ यह प्रभावित करती हैं कि विभिन्न लिंगों से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। इसलिए अलग-अलग सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण में लिंग संबंधी धारणाएँ अलग हो सकती हैं।

5. मीडिया का प्रभाव-

टेलीविजन, फिल्में, विज्ञापन, इंटरनेट और सोशल मीडिया में दिखाई जाने वाली लैंगिक भूमिकाएँ बच्चों और किशोरों की धारणाओं को प्रभावित कर सकती हैं। सकारात्मक और विविध प्रतिनिधित्व रूढ़ियों को कम करने में सहायक हो सकता है।

6. व्यक्तिगत अनुभव एवं आत्म-चिंतन-

व्यक्ति जैसे-जैसे बड़ा होता है, वह अपने अनुभवों, रुचियों, भावनाओं और सामाजिक संबंधों के आधार पर अपने बारे में समझ विकसित करता है। इससे उसकी आत्म-अवधारणा और लिंग-पहचान अधिक स्पष्ट एवं विकसित हो सकती है।

(ख) श्रम विभाजन : लैंगिक भूमिका -

घर में काम करने के कारण स्त्रियों को गैर उत्पादक श्रम करने वाली महिला कहकर पुकारा जाता है। घर में काम करने के इस विभाजन को 'लैंगिक श्रम विभाजन' कहते हैं। एक महिला का कार्य घर के अंदर होता है इसलिए इसे व्यक्तिगत कहकर छोड़ दिया जाता है जबकि पुरुष का कार्य घर से बाहर होता है, उसे सार्वजनिक कार्य कहा जाता है। अधिकांश समाजों

नोट

में महिलाओं के कार्यों को स्पष्ट रूप से अलग करके प्रदर्शित किया जाता है। भारतीय समाज के मध्यम वर्ग में धन कमाकर लाने का उत्तरदायित्व पुरुषों का होता है और स्त्रियां घर का कामकाज करती हैं तथा बच्चों का पालन-पोषण एवं देखभाल करती हैं। स्त्रियों की आर्थिक निर्भरता एवं श्रम में लैंगिक आधार पर विभाजन जैसे मुद्दे परस्पर एक-दूसरे से संबद्ध हैं। पश्चिमी देशों में बड़ी संख्या में जब महिलाओं ने श्रम कार्य करना आरंभ किया तब से श्रम विभाजन की विचारधारा को भारी चुनौती का सामना करना पड़ा है।

श्रम विभाजन के अंतर्गत स्त्री-पुरुष की इस प्रक्रिया को जैविक रचना के आधार पर प्राकृतिक एवं अनुपूरक समझा जाता है। पश्चिम में नारीवादी आंदोलन के उदय ने श्रम विभाजन को लेकर बहुत से प्रश्न खड़े कर दिए और इसके साथ-साथ विभिन्न समाजों एवं संस्कृतियों में महिलाओं की लगभग एक जैसी अधीनता पर भी सवालिया निशान लगा दिया है।

आंकड़े दर्शाते हैं कि विश्व भर में एक समान काम करने के बावजूद महिलाओं को उसी काम के लिए पुरुषों की तुलना में कम पैसे मिलते हैं। लैंगिक असमानता एवं भेदभाव के कारण व्यवसायों में भी परिवर्तन आ गया है। श्रम बल में महिलाओं की सक्रिय सहभागिता, इसके अवमूल्यन एवं निर्णयन की प्रक्रिया महिलाओं को बाहर कर लैंगिकता सामाजिक निर्माण देने से संबद्ध है। महिलाएं पुरुष वर्ग द्वारा उत्पीड़ित एवं उपेक्षित हैं। पितृ सत्तात्मक संरचना भौगोलिक एवं ऐतिहासिक रूप से लगभग सभी जगह एक जैसी है। वर्तमान समाज में भेदभाव का मुख्य केंद्र वर्ग नहीं बल्कि लैंगिकता है। स्त्री-पुरुष श्रम विभाजन पर परा सांस्कृतिक शोध ने जीवन निर्वाह के विविध साधनों से समाज में महिलाओं की उत्पादनशील गतिविधियों की विस्तृत रेंज को स्पष्ट करने का प्रयास किया है लेकिन साथ

NOTE

ही उन्होंने महिलाओं की स्थिति पर इनके निहितार्थों पर भी ध्यान केंद्रित किया है।

आज भारत में अर्थव्यवस्था दो वर्गों में बंटी हुई है- संगठित और असंगठित । संगठित क्षेत्र वे हैं जहां नियमित वेतन मिलता है, श्रम के कानून होते हैं और श्रम से जुड़े लाभ मिलते हैं। असंगठित क्षेत्र वे हैं जहां न तो ये काम पक्के होते हैं और न इनमें नियमित वेतन मिलता है। अधिकांश स्त्रियां जो अपने घर से बाहर काम करती हैं वे असंगठित क्षेत्र हैं और इनमें कई प्रकार के शोषण होते हैं। यद्यपि यह नियम सभी मानते हैं कि समान काम के लिए समान वेतन मिलना चाहिए परंतु ज्यादातर महिलाएं पुरुषों से कम वेतन पाती हैं। कृषि या निर्माण कार्य में जिनमें प्रायः स्त्रियां काम करती हैं, पुरुषों की तुलना में उन्हें कम वेतन मिलता है। स्त्रियां चाहे घर में काम करती हों या बाहर, घर के काम को हमेशा एक स्त्री का ही उत्तरदायित्व समझा जाता है। वे स्त्रियां जो घर और बाहर के काम को करती हैं दोहरे बोझ से पीड़ित होती हैं। इस स्थिति का हम कैसे भी विश्लेषण करें पर निश्चित रूप से स्त्रियां पुरुषों से अधिक काम करती हैं और उसकी तुलना में उनके लाभ बहुत कम हैं

7.4 लैंगिक भूमिकाएं एवं व्यक्तित्व विकास

लैंगिक भूमिकाएँ (Gender Roles) उन सामाजिक अपेक्षाओं, व्यवहारों, जिम्मेदारियों और कार्यों को कहा जाता है जिन्हें समाज किसी व्यक्ति के लिंग के आधार पर उचित या अपेक्षित मानता है। उदाहरण के लिए, यदि समाज यह मानता है कि घर की देखभाल केवल महिलाओं की जिम्मेदारी है या नेतृत्व केवल पुरुषों का कार्य है, तो ये लैंगिक भूमिकाओं से जुड़ी सामाजिक धारणाएँ हैं।

नोट

लैंगिक भूमिकाएँ जैविक रूप से निर्धारित नहीं होतीं, बल्कि परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति, मीडिया और सामाजिक अनुभवों के माध्यम से सीखी और विकसित होती हैं।

1. व्यक्तित्व विकास का अर्थ-

व्यक्तित्व विकास (Personality Development) व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक गुणों के संतुलित विकास की प्रक्रिया है। इसमें आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान, निर्णय लेने की क्षमता, नेतृत्व, संवेदनशीलता, सामाजिक व्यवहार और समस्याओं का सामना करने की क्षमता जैसे गुण शामिल होते हैं।

2. लैंगिक भूमिकाओं का व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव-

(क) आत्म-अवधारणा पर प्रभाव

बच्चे अपने बारे में समाज की अपेक्षाओं के आधार पर धारणाएँ बनाने लगते हैं। यदि किसी बच्चे को उसकी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार अवसर मिलते हैं, तो उसकी सकारात्मक आत्म-अवधारणा विकसित होती है।

(ख) आत्मविश्वास का विकास

समान अवसर और प्रोत्साहन मिलने पर बालक और बालिका दोनों में आत्मविश्वास बढ़ता है। इसके विपरीत, "यह काम तुम्हारे लिए नहीं है" जैसी लैंगिक धारणाएँ आत्मविश्वास को सीमित कर सकती हैं।

(ग) रुचियों एवं क्षमताओं का विकास

रूढ़िगत लैंगिक भूमिकाएँ बच्चों की रुचियों को सीमित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, किसी विद्यार्थी को केवल उसके लिंग के आधार पर

NOTE

विज्ञान, खेल, कला या नेतृत्व गतिविधियों से दूर रखना उसके संभावित विकास को प्रभावित कर सकता है।

(घ) भावनात्मक विकास

समाज में कभी-कभी लड़कों से भावनाएँ व्यक्त न करने और लड़कियों से अत्यधिक संकोची या भावनात्मक व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। ऐसी धारणाओं के बजाय सभी बच्चों को अपनी भावनाओं को स्वस्थ एवं सम्मानजनक तरीके से व्यक्त करने का अवसर मिलना चाहिए।

(ङ) नेतृत्व क्षमता

यदि नेतृत्व, निर्णय लेने और सार्वजनिक गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों को समान अवसर दिए जाएँ, तो उनमें नेतृत्व, संचार और निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

(च) सामाजिक कौशल

समानता और सहयोग पर आधारित वातावरण बच्चों में सहानुभूति, सहयोग, सम्मान और संवाद जैसे सामाजिक गुणों का विकास करता है।

3. परिवार की भूमिका-

परिवार बच्चे का पहला सामाजिक वातावरण है। परिवार में यदि बालक और बालिका को समान शिक्षा, खेल, जिम्मेदारी और निर्णय लेने के अवसर मिलते हैं, तो उनमें स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता विकसित होती है।

उदाहरण: घर के कार्यों को केवल लड़कियों का कार्य न मानकर सभी बच्चों को उनकी क्षमता के अनुसार घरेलू जिम्मेदारियों में शामिल करना।

4. विद्यालय की भूमिका-

नोट

विद्यालय लैंगिक भूमिकाओं को सकारात्मक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक को चाहिए कि—

- सभी विद्यार्थियों को समान अवसर दें।
- कक्षा में सभी की समान सहभागिता सुनिश्चित करें।
- लैंगिक रूढ़ियों वाले उदाहरणों से बचें।
- खेल, विज्ञान, कला और नेतृत्व गतिविधियों में समान अवसर दें।
- विद्यार्थियों के साथ सम्मानपूर्ण एवं भेदभाव-मुक्त व्यवहार करें।

5. समाज और मीडिया का प्रभाव-

समाज और मीडिया बच्चों को यह संदेश दे सकते हैं कि कौन-सा व्यवहार या व्यवसाय किस लिंग के लिए उचित है। इसलिए मीडिया सामग्री का आलोचनात्मक एवं विवेकपूर्ण विश्लेषण करना आवश्यक है। विविध भूमिकाओं और क्षमताओं का सकारात्मक प्रतिनिधित्व रूढ़ियों को कम करने में मदद कर सकता है।

6. लैंगिक समानता और सकारात्मक व्यक्तित्व विकास-

लैंगिक समानता का अर्थ सभी व्यक्तियों को उनकी क्षमताओं और आवश्यकताओं के अनुसार सम्मान, अवसर और सहभागिता प्रदान करना है। समानतापूर्ण वातावरण में विद्यार्थी अपनी रुचियों को स्वतंत्र रूप से विकसित कर सकते हैं और आत्मविश्वास, रचनात्मकता, नेतृत्व तथा जिम्मेदारी जैसे गुणों का विकास कर सकते हैं।

7.5 लैंगिक समानता एवं समग्र व्यक्तित्व विकास

NOTE



चित्र 7.5:- लैंगिक समानता एवं समग्र व्यक्तित्व का विकास

1. लैंगिक समानता का अर्थ-

लैंगिक समानता (Gender Equality) का अर्थ है कि सभी व्यक्तियों को उनके लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना समान अधिकार, अवसर, सम्मान, संसाधन और सहभागिता प्राप्त हो। लैंगिक समानता का उद्देश्य सभी को एक जैसा बनाना नहीं, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को अपनी क्षमता, रुचि और आवश्यकता के अनुसार विकास करने के समान अवसर देना है।

उदाहरण के लिए, बालक और बालिका दोनों को शिक्षा, खेल, विज्ञान, कला, नेतृत्व तथा अपनी रुचि के क्षेत्र में आगे बढ़ने के समान अवसर मिलना लैंगिक समानता का उदाहरण है।

2. समग्र व्यक्तित्व विकास का अर्थ-

समग्र व्यक्तित्व विकास (Holistic Personality Development) से

नोट

तात्पर्य व्यक्ति के विभिन्न पक्षों—शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक और रचनात्मक—के संतुलित विकास से है।

समग्र व्यक्तित्व विकास से व्यक्ति में आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान, संवेदनशीलता, नेतृत्व, निर्णय लेने की क्षमता, सहयोग, रचनात्मकता और जिम्मेदारी जैसे गुण विकसित होते हैं।

3. लैंगिक समानता और व्यक्तित्व विकास का संबंध-

लैंगिक समानता व्यक्ति को अपनी क्षमताओं और रुचियों को स्वतंत्र रूप से विकसित करने का अवसर प्रदान करती है। जब बच्चों को लिंग के आधार पर सीमित नहीं किया जाता, तो वे अपनी वास्तविक क्षमता को पहचान और विकसित कर सकते हैं।

लैंगिक समानता → समान अवसर → आत्मविश्वास → क्षमता का विकास → सकारात्मक व्यवहार → समग्र व्यक्तित्व विकास

4. व्यक्तित्व विकास के विभिन्न पक्षों पर प्रभाव-

(क) मानसिक विकास

समान शैक्षिक अवसर मिलने से विद्यार्थी ज्ञान, तर्क, समस्या-समाधान और आलोचनात्मक चिंतन की क्षमता विकसित कर सकते हैं।

(ख) भावनात्मक विकास

लैंगिक समानता विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को समझने और उचित तरीके से व्यक्त करने के लिए सकारात्मक वातावरण देती है। इससे भावनात्मक संतुलन और आत्म-सम्मान विकसित होता है।

(ग) सामाजिक विकास

NOTE

समानता पर आधारित वातावरण में विद्यार्थी एक-दूसरे के अधिकारों और विचारों का सम्मान करना सीखते हैं। इससे सहयोग, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी का विकास होता है।

(घ) शारीरिक विकास

बालक और बालिका दोनों को खेल, योग, व्यायाम तथा स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों में समान अवसर मिलने से स्वस्थ जीवनशैली और शारीरिक क्षमताओं के विकास में सहायता मिलती है।

(ङ) नैतिक विकास

लैंगिक समानता विद्यार्थियों में न्याय, समानता, सम्मान, सहिष्णुता और मानव गरिमा जैसे नैतिक मूल्यों को विकसित करती है।

(च) रचनात्मक विकास

जब बच्चों को यह सोचने के लिए बाध्य नहीं किया जाता कि कोई गतिविधि केवल लड़कों या केवल लड़कियों के लिए है, तो वे कला, संगीत, विज्ञान, तकनीक और अन्य क्षेत्रों में अपनी रचनात्मकता को स्वतंत्र रूप से विकसित कर सकते हैं।

(छ) नेतृत्व एवं निर्णय क्षमता

समान अवसर मिलने से सभी विद्यार्थियों को नेतृत्व करने, जिम्मेदारी लेने और निर्णय लेने का अनुभव प्राप्त होता है। इससे नेतृत्व क्षमता और आत्मनिर्भरता बढ़ती है।

5. लैंगिक रूढ़ियों का प्रभाव-

समाज में प्रचलित लैंगिक रूढ़ियाँ व्यक्तित्व विकास को सीमित कर सकती हैं। जैसे—

नोट

- "लड़कियाँ गणित या विज्ञान में अच्छी नहीं होतीं।"
- "लड़कों को अपनी भावनाएँ व्यक्त नहीं करनी चाहिए।"
- "कुछ कार्य केवल पुरुषों या महिलाओं के लिए हैं।"

ऐसी धारणाएँ विद्यार्थियों की रुचि, आत्मविश्वास और अवसरों को सीमित कर सकती हैं। इसलिए शिक्षा में लैंगिक रूढ़ियों से मुक्त वातावरण आवश्यक है।

6. परिवार की भूमिका-

परिवार लैंगिक समानता की भावना विकसित करने का पहला स्थान है। परिवार को चाहिए कि—

- बच्चों के साथ समान और सम्मानपूर्ण व्यवहार करे।
- शिक्षा एवं करियर के लिए समान अवसर दे।
- घरेलू कार्यों में सभी बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित करे।
- बच्चों की रुचि और क्षमता को लिंग के आधार पर सीमित न करे।
- निर्णय लेने में बच्चों की आयु और क्षमता के अनुसार सहभागिता बढ़ाए।

7. विद्यालय की भूमिका-

विद्यालय समग्र व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शिक्षक—

- सभी विद्यार्थियों को समान अवसर दें।
- कक्षा में समान सहभागिता सुनिश्चित करें।
- पाठ्यपुस्तकों और उदाहरणों में विविध एवं सकारात्मक भूमिकाएँ प्रस्तुत करें।

NOTE

- खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम और नेतृत्व गतिविधियों में समान अवसर दें।
- लैंगिक भेदभाव और रूढ़ियों के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता विकसित करें।
- सम्मान, सहयोग और समानता पर आधारित कक्षा वातावरण बनाएँ।

8. समाज और मीडिया की भूमिका-

समाज और मीडिया बच्चों की सोच एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं। इसलिए मीडिया में विभिन्न लिंगों को सम्मानजनक, विविध और सकारात्मक भूमिकाओं में प्रस्तुत करना आवश्यक है। समाज में भी समान अवसर, सम्मान और सहभागिता को बढ़ावा दिया जाना चाहिए।

9. लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के व्यावहारिक उपाय-

- सभी बच्चों को समान शैक्षिक अवसर देना।
- खेल और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में समान सहभागिता।
- लैंगिक रूढ़ियों पर चर्चा एवं जागरूकता कार्यक्रम।
- कक्षा में भेदभाव-मुक्त भाषा का प्रयोग।
- लड़के और लड़कियों दोनों को नेतृत्व के अवसर देना।
- परिवार एवं विद्यालय में समान जिम्मेदारियों को प्रोत्साहित करना।
- विद्यार्थियों की रुचि और क्षमता को प्राथमिकता देना।

7.6 सारांश

लिंग की समझ व्यक्ति के सामाजिक एवं व्यक्तिगत विकास का महत्वपूर्ण हिस्सा है। लिंग-पहचान व्यक्ति को अपनी पहचान और सामाजिक भूमिका को समझने में सहायता करती है, जबकि आत्म-

नोट

अवधारणा व्यक्ति की स्वयं के बारे में बनाई गई धारणा को दर्शाती है। परिवार, विद्यालय, मित्र-समूह, समाज, संस्कृति और मीडिया लिंग-पहचान तथा व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करते हैं।

लैंगिक भूमिकाएँ और रूढ़ियाँ व्यक्ति की रुचियों, आत्मविश्वास, व्यवहार तथा अवसरों को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए बच्चों को लिंग के आधार पर सीमित करने के बजाय उनकी रुचि, क्षमता और योग्यता के अनुसार समान अवसर देना आवश्यक है।

लैंगिक समानता से आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान, सामाजिक कौशल, नेतृत्व क्षमता, निर्णय लेने की क्षमता और रचनात्मकता के विकास को बढ़ावा मिलता है। इस प्रकार, लैंगिक समानता और सकारात्मक सामाजिक वातावरण व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक एवं रचनात्मक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

7.7 शब्दावली

1.लिंग (Gender)समाज द्वारा व्यक्ति के लिंग से संबंधित बनाई गई सामाजिक भूमिकाएँ, अपेक्षाएँ और व्यवहार।

2. लिंग-पहचान (Gender Identity) व्यक्ति की अपने लिंग के संबंध में स्वयं की समझ और पहचान।

3.लैंगिक भूमिका (Gender Role) समाज द्वारा किसी लिंग के व्यक्ति से अपेक्षित व्यवहार एवं जिम्मेदारियाँ।

4.लैंगिक समानता (Gender Equality) सभी व्यक्तियों को लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना समान अधिकार और अवसर मिलना।

5.लैंगिक रूढ़ि (Gender Stereotype) किसी लिंग के लोगों के बारे में

बनी सामान्यीकृत और स्थिर धारणा।

NOTE

6.आत्म-अवधारणा (Self-Concept) व्यक्ति की अपने बारे में बनाई गई समग्र धारणा।

7.आत्म-सम्मान (Self-Esteem) व्यक्ति द्वारा स्वयं के मूल्य और योग्यता के प्रति महसूस किया गया सम्मान।

8.आत्मविश्वास (Self-Confidence) अपनी क्षमताओं और निर्णयों पर व्यक्ति का विश्वास।

9.व्यक्तित्व विकास (Personality Development) व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, सामाजिक, नैतिक एवं रचनात्मक गुणों का संतुलित विकास।

10.सामाजिकरण (Socialization) समाज के मूल्यों, मानदंडों, व्यवहार और भूमिकाओं को सीखने की प्रक्रिया।

11.लैंगिक संवेदनशीलता (Gender Sensitivity) लैंगिक भेदभाव और असमानता को समझते हुए समानता एवं सम्मानपूर्ण व्यवहार करना।

12.समावेशन (Inclusion) सभी व्यक्तियों को बिना भेदभाव के समान रूप से सहभागी बनाना।

13.लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination) लिंग के आधार पर किसी व्यक्ति के साथ असमान या अनुचित व्यवहार करना।

14.समान अवसर (Equal Opportunity) सभी व्यक्तियों को अपनी क्षमता और रुचि विकसित करने के लिए समान अवसर उपलब्ध कराना।

15.समग्र विकास (Holistic Development) व्यक्ति के विभिन्न आयामों का संतुलित एवं सर्वांगीण विकास।

नोट

7.8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

लिंग-पहचान (Gender Identity) से क्या तात्पर्य है?

A. व्यक्ति की शारीरिक संरचना

B. व्यक्ति की अपने लिंग के संबंध में स्वयं की समझ और पहचान *

C. व्यक्ति की आर्थिक स्थिति

D. व्यक्ति की शैक्षिक योग्यता

2. आत्म-अवधारणा (Self-Concept) का अर्थ है—

A. दूसरों के प्रति व्यक्ति की धारणा

B. समाज के नियमों का ज्ञान

C. व्यक्ति की अपने बारे में बनाई गई धारणा

D. केवल शैक्षिक उपलब्धि

3. लैंगिक समानता का व्यक्तित्व विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है?

A. अवसरों को सीमित करती है

B. आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान के विकास में सहायता करती है *

C. सामाजिक सहभागिता कम करती है

D. रूढ़ियों को बढ़ावा देती है

4. निम्न में से कौन-सा लैंगिक पहचान और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है?

A. परिवार और विद्यालय

B. केवल शारीरिक ऊँचाई

C. केवल आर्थिक आय

D. केवल परीक्षा परिणाम

NOTE

7.9 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- NCERT – Gender Concerns in Education
  लिंग, लैंगिक भूमिकाएँ, पाठ्यपुस्तक, कक्षा-प्रक्रिया और लैंगिक समानता से संबंधित उपयोगी
- NCERT – Gender Equality Training Resource Material
  लैंगिक पहचान, लैंगिक रूढ़ियों, समानता और सकारात्मक लैंगिक भूमिकाओं पर गतिविधि-आधारित सामग्री।
- IGNOU eGyanKosh – Gender, School and Society
  इसमें Gender Concepts, Gender Roles, Gender Relations in School तथा Gender Equality जैसी इकाइयाँ उपलब्ध हैं।
- UNESCO – Gender Equality and Education
  शिक्षा में लैंगिक समानता, समान अवसर, शिक्षण-अधिगम तथा व्यक्तित्व/क्षमता विकास से संबंधित वैश्विक संसाधन।
- UNESCO – Gender Equality Tools
  लैंगिक समानता, लैंगिक रूढ़ियों, भेदभाव तथा gender-responsive teaching के लिए विभिन्न टूल और गाइड उपलब्ध हैं।

नोट

7.10 संदर्भ

- NCERT. Gender Concerns in Education. New Delhi: National Council of Educational Research and Training.
- IGNOU. Gender, School and Society (BES-129). New Delhi: Indira Gandhi National Open University.
- UNESCO. Gender Equality and Education. Paris: UNESCO.
- UNESCO-IBE. Promoting Gender Equity in and through Education. International Bureau of Education, UNESCO.
- Government of India, Ministry of Education. National Education Policy 2020. New Delhi.
- MHRD. Gender Issues in Education: Teacher Education and School Education Context. New Delhi.

7.11 अभ्यास

भाग 1

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न)MCQ-(

लिंग-पहचान (Gender Identity) से क्या तात्पर्य है?

A. व्यक्ति की शारीरिक संरचना

B. व्यक्ति की अपने लिंग के संबंध में स्वयं की समझ और पहचान *

C. व्यक्ति की आर्थिक स्थिति

D. व्यक्ति की शैक्षिक योग्यता

NOTE

2. आत्म-अवधारणा (Self-Concept) का अर्थ है—

A. दूसरों के प्रति व्यक्ति की धारणा

B. समाज के नियमों का ज्ञान

C. व्यक्ति की अपने बारे में बनाई गई धारणा

D. केवल शैक्षिक उपलब्धि

3. लैंगिक समानता का व्यक्तित्व विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है?

A. अवसरों को सीमित करती है

B. आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान के विकास में सहायता करती है *

C. सामाजिक सहभागिता कम करती है

D. रूढ़ियों को बढ़ावा देती है

4. निम्न में से कौन-सा लैंगिक पहचान और व्यक्तित्व विकास को प्रभावित करने वाला प्रमुख कारक है?

A. परिवार और विद्यालय

B. केवल शारीरिक ऊँचाई

C. केवल आर्थिक आय

D. केवल परीक्षा परिणाम

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1. सही उत्तर: (ब) व्यक्ति की अपने लिंग के संबंध में स्वयं की समझ और पहचान।

नोट

स्पष्टीकरण: लिंग-पहचान से तात्पर्य व्यक्ति की अपने लिंग के संबंध में आंतरिक अनुभूति और स्वयं की पहचान से है। यह व्यक्ति की शारीरिक संरचना से अलग अवधारणा है। इसका विकास व्यक्तिगत अनुभवों तथा सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश सहित अनेक कारकों से प्रभावित हो सकता है।

2.सही उत्तर: (स) व्यक्ति की अपने बारे में बनाई गई धारणा।

स्पष्टीकरण: आत्म-अवधारणा वह धारणा है, जो व्यक्ति अपने गुणों, क्षमताओं, रुचियों, विशेषताओं और कमजोरियों के बारे में बनाता है। उदाहरण के लिए, किसी विद्यार्थी का स्वयं को मेहनती, रचनात्मक या अच्छा वक्ता समझना उसकी आत्म-अवधारणा का हिस्सा है। परिवार, विद्यालय और मित्रों का व्यवहार इसके विकास को प्रभावित कर सकता है।

3.सही उत्तर: (ब) आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान के विकास में सहायता करती है।

स्पष्टीकरण: लैंगिक समानता से सभी व्यक्तियों को अपनी रुचियों, योग्यताओं और क्षमताओं के अनुसार आगे बढ़ने के अवसर मिलते हैं। जब विद्यार्थियों के साथ लिंग के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाता, तो वे अपनी क्षमताओं पर अधिक विश्वास कर सकते हैं और उनकी सामाजिक सहभागिता तथा व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

4.सही उत्तर: (अ) परिवार और विद्यालय।

NOTE

स्पष्टीकरण: परिवार और विद्यालय बच्चों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। परिवार से बच्चे प्रारंभिक मूल्य, व्यवहार और सामाजिक मान्यताएँ सीखते हैं, जबकि विद्यालय उन्हें सामाजिक सहभागिता, सहयोग, अनुशासन और समानता के अनुभव प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, मित्र समूह, मीडिया और व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश भी लिंग-पहचान एवं व्यक्तित्व विकास को प्रभावित कर सकते हैं।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. लिंग-पहचान से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 2. लैंगिक समानता व्यक्तित्व विकास में किस प्रकार सहायक है?

प्रश्न 3. लैंगिक रूढ़ियाँ व्यक्तित्व विकास को कैसे प्रभावित करती हैं?

नोट

इकाई 8
विद्यालयी शिक्षा में लैंगिक असमानता

इकाई की रूपरेखा

8.1- प्रस्तावना
8.2- उद्देश्य
8.3- विद्यालय में प्रवेश एवं शैक्षिक अवसरों में लैंगिक असमानता
8.3.1- विद्यालयी संसाधनों एवं सुविधाओं में लैंगिक असमानता
8.4- पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लैंगिक भेदभाव
8.4.1- पाठ्यक्रम में लैंगिक मुद्दे
8.4.2- पाठ्यपुस्तक और लैंगिक प्रतिनिधित्व
8.4.3- लड़कियों की स्कूली शिक्षा लड़कियों का नामांकन**,** प्रतिधारण एवं कारण
8.5- शैक्षिक उपलब्धि**,** विषय-चयन एवं भविष्य के अवसरों पर लैंगिक प्रभाव
8.6- सारांश
8.7- शब्दावली
8.8- अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
8.9- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
8.10- संदर्भ
8.11- अभ्यास प्रश्न

8.1 प्रस्तावना

विद्यालयी शिक्षा बच्चों के सर्वांगीण विकास, समान अवसर और सामाजिक न्याय का महत्वपूर्ण माध्यम है। विद्यालय में प्रत्येक बालक और बालिका को बिना किसी भेदभाव के समान शैक्षिक अवसर, संसाधन, सम्मान और सहभागिता मिलना आवश्यक है। इसके बावजूद अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और पारिवारिक परिस्थितियों के कारण विद्यालयी शिक्षा में लैंगिक असमानता दिखाई देती है।

लैंगिक असमानता का अर्थ है कि लिंग के आधार पर विद्यार्थियों के साथ

NOTE

अवसर, व्यवहार, अपेक्षाओं, संसाधनों या अधिकारों में असमानता की जाए। उदाहरण के लिए, बालिकाओं को कुछ विषयों या खेलों से दूर रखना, बालकों को नेतृत्व के लिए अधिक उपयुक्त मानना, पाठ्यपुस्तकों में रूढ़िबद्ध लैंगिक भूमिकाओं को प्रस्तुत करना तथा डिजिटल संसाधनों तक असमान पहुँच इसके उदाहरण हैं।

विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह बच्चों के लिंग-पहचान, आत्मविश्वास, व्यक्तित्व और सामाजिक दृष्टिकोण के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए विद्यालयी वातावरण को लैंगिक रूप से संवेदनशील, समावेशी और समानतापूर्ण बनाना आवश्यक है।

8.2 उद्देश्य

- लैंगिक असमानता की अवधारणा को समझना तथा विद्यालयी शिक्षा में इसके विभिन्न रूपों की पहचान करना।
- समान शैक्षिक अवसर सुनिश्चित करना, ताकि बालक और बालिका दोनों को प्रवेश, सहभागिता और सीखने के समान अवसर प्राप्त हों।
- लैंगिक रूढ़ियों एवं पूर्वाग्रहों की पहचान करना और उन्हें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से कम करने के उपाय समझना।
- पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक प्रतिनिधित्व का अध्ययन करना तथा समानतापूर्ण सामग्री को प्रोत्साहित करना
- विद्यालयी संसाधनों और सुविधाओं में समानता को बढ़ावा देना, जैसे खेल, डिजिटल संसाधन, पुस्तकालय, शौचालय और अन्य सुविधाएँ।
- विद्यार्थियों में समानता, सम्मान, सहयोग और संवेदनशीलता की

नोट

भावना विकसित करना।

- शिक्षकों को लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण पद्धतियों के प्रयोग के लिए प्रेरित करना।
- विद्यालय को ऐसा सुरक्षित एवं समावेशी वातावरण बनाने में सहयोग करना, जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी अपनी क्षमता का स्वतंत्र रूप से विकास कर सके।

8.3 विद्यालय में प्रवेश एवं शैक्षिक अवसरों में लैंगिक असमानता

विद्यालय में प्रवेश एवं शैक्षिक अवसरों में लैंगिक असमानता का अर्थ है कि बालक और बालिकाओं को केवल उनके लिंग के आधार पर विद्यालय में प्रवेश, नियमित उपस्थिति, शिक्षा प्राप्त करने तथा आगे बढ़ने के समान अवसर न मिलना। यह असमानता सामाजिक मान्यताओं, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक सोच, सुरक्षा संबंधी चिंताओं तथा लैंगिक रूढ़ियों के कारण उत्पन्न हो सकती है।

1. विद्यालय में प्रवेश से संबंधित असमानता-

कुछ परिस्थितियों में बालिकाओं की शिक्षा को बालकों की तुलना में कम प्राथमिकता दी जाती है। उदाहरण के लिए—

- आर्थिक कठिनाई में परिवार बालक की शिक्षा को प्राथमिकता दे सकता है।
- घरेलू कार्य एवं देखभाल की जिम्मेदारियाँ बालिकाओं पर अधिक डाली जा सकती हैं।
- विद्यालय की दूरी और सुरक्षा संबंधी चिंताएँ बालिकाओं की शिक्षा में बाधा बन सकती हैं।

NOTE

- कम उम्र में विवाह या पारिवारिक जिम्मेदारियाँ उनकी शिक्षा को प्रभावित कर सकती हैं।

2. शैक्षिक अवसरों में असमानता-

विद्यालय में प्रवेश के बाद भी अवसरों में अंतर दिखाई दे सकता है, जैसे—

- कक्षा में प्रश्न पूछने और उत्तर देने के अवसरों में भेदभाव।
- खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में अलग-अलग अपेक्षाएँ।
- विज्ञान, गणित या तकनीकी विषयों को बालकों के लिए अधिक उपयुक्त मानना।
- नेतृत्व एवं जिम्मेदारी के अवसरों में असमानता।
- डिजिटल उपकरण और इंटरनेट जैसे शैक्षिक संसाधनों तक असमान पहुँच।

3. इसके प्रमुख कारण-

पारिवारिक सोच → सामाजिक रूढ़ियाँ → आर्थिक स्थिति → सुरक्षा संबंधी चिंताएँ → घरेलू जिम्मेदारियाँ → अवसरों में असमानता

4. प्रभाव-

लैंगिक असमानता के कारण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, आत्मविश्वास, सहभागिता, विषय-चयन और भविष्य के करियर अवसर प्रभावित हो सकते हैं। इससे समाज में मौजूद लैंगिक असमानता भी बनी रह सकती है।

5. समाधान-

नोट

- बालक और बालिका दोनों के लिए समान प्रवेश एवं अवसर सुनिश्चित करना।
- विद्यालय में सुरक्षित और समावेशी वातावरण बनाना।
- लैंगिक रूढ़ियों से मुक्त शिक्षण सामग्री का प्रयोग करना।
- सभी विद्यार्थियों को खेल, नेतृत्व और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में समान अवसर देना।
- अभिभावकों और समुदाय में बालिका शिक्षा एवं लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता बढ़ाना।
- शिक्षकों को लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण के लिए प्रशिक्षित करना।

8.3.1- विद्यालयी संसाधनों एवं सुविधाओं में लैंगिक असमानता -

1. परिचय -

विद्यालयी संसाधनों एवं सुविधाओं में लैंगिक असमानता का अर्थ है कि बालक और बालिकाओं को विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों, सुविधाओं और अवसरों का समान रूप से लाभ न मिलना। यह असमानता विद्यालय के भौतिक वातावरण, खेल, डिजिटल संसाधनों, स्वच्छता, सुरक्षा तथा अन्य शैक्षिक सुविधाओं में दिखाई दे सकती है।

2. विद्यालयी संसाधनों में असमानता के प्रमुख क्षेत्र -

(क) स्वच्छता एवं शौचालय सुविधाएँ

बालिकाओं के लिए पर्याप्त, सुरक्षित, स्वच्छ एवं निजी शौचालयों का अभाव उनकी नियमित उपस्थिति और विद्यालय में सहज सहभागिता को प्रभावित कर सकता है। किशोरियों के लिए मासिक धर्म स्वच्छता संबंधी सुविधाएँ भी महत्वपूर्ण हैं।

NOTE

(ख) खेल एवं शारीरिक गतिविधियाँ

कभी-कभी खेलों को लैंगिक आधार पर बाँट दिया जाता है, जैसे कुछ खेलों को केवल बालकों के लिए उपयुक्त मानना। इससे बालिकाओं की खेलों में सहभागिता और नेतृत्व के अवसर सीमित हो सकते हैं।

(ग) डिजिटल संसाधनों तक पहुँच

कंप्यूटर, टैबलेट, इंटरनेट और डिजिटल शिक्षण सामग्री के उपयोग में यदि बालकों को अधिक अवसर मिलें और बालिकाओं को कम, तो डिजिटल लैंगिक अंतर उत्पन्न हो सकता है।

(घ) पुस्तकालय एवं शिक्षण सामग्री

पुस्तकों और शिक्षण सामग्री में यदि महिलाओं और पुरुषों को रूढ़िबद्ध भूमिकाओं में प्रस्तुत किया जाए, तो विद्यार्थियों की सोच प्रभावित हो सकती है। समान एवं विविध प्रतिनिधित्व वाली सामग्री आवश्यक है।

(डं) सुरक्षा एवं विद्यालयी वातावरण

विद्यालय तक आने-जाने और विद्यालय परिसर में सुरक्षित वातावरण का अभाव विशेष रूप से बालिकाओं की उपस्थिति और निरंतरता को प्रभावित कर सकता है।

3. असमानता के प्रमुख कारण-

- सामाजिक एवं पारंपरिक लैंगिक धारणाएँ
- परिवार की आर्थिक स्थिति
- संसाधनों की कमी
- ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में सुविधाओं का अभाव
- बालिकाओं की सुरक्षा संबंधी चिंताएँ

नोट

- डिजिटल उपकरणों तक असमान पहुँच
- विद्यालयों में लैंगिक-संवेदनशील योजना का अभाव

4. प्रभाव -

- विद्यालयी संसाधनों एवं सुविधाओं में लैंगिक असमानता से—
- बालिकाओं की विद्यालय में नियमित उपस्थिति प्रभावित हो सकती है।
- कक्षा एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सहभागिता कम हो सकती है।
- आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता के विकास पर प्रभाव पड़ सकता है।
- विज्ञान, तकनीक, खेल आदि क्षेत्रों में अवसर सीमित हो सकते हैं।
- शिक्षा में निरंतरता और उपलब्धि प्रभावित हो सकती है।

5. समानता स्थापित करने के उपाय -

1. बालक एवं बालिकाओं के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण संसाधन उपलब्ध कराना।
2. विद्यालय में अलग, स्वच्छ एवं सुरक्षित शौचालय तथा आवश्यक स्वच्छता सुविधाएँ सुनिश्चित करना।
3. खेल एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों को समान अवसर देना।
4. बालिकाओं को डिजिटल उपकरणों और ICT संसाधनों के उपयोग के पर्याप्त अवसर देना।
5. पाठ्यपुस्तकों एवं शिक्षण सामग्री में संतुलित और गैर-रूढ़िबद्ध लैंगिक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।

6. विद्यालय को सुरक्षित, समावेशी और लैंगिक-संवेदनशील वातावरण प्रदान करना।

NOTE

8.4 पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लैंगिक भेदभाव

पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लैंगिक भेदभाव का अर्थ है कि विद्यार्थियों के साथ उनके लिंग के आधार पर ज्ञान, अवसर, व्यवहार, अपेक्षाओं या सहभागिता में असमानता की जाए। विद्यालय में पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक का व्यवहार, कक्षा की गतिविधियाँ और मूल्यांकन विद्यार्थियों के लैंगिक दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। इसलिए इन सभी में लैंगिक समानता का होना आवश्यक है।

पाठ्यक्रम में लैंगिक भेदभाव - पाठ्यक्रम में लैंगिक भेदभाव तब दिखाई देता है जब विषय-वस्तु में महिलाओं और पुरुषों को असमान या रूढ़िबद्ध भूमिकाओं में प्रस्तुत किया जाता है।

उदाहरण—

- महिलाओं को मुख्यतः गृहिणी और पुरुषों को कमाने वाले व्यक्ति के रूप में दिखाना।
- विज्ञान, तकनीक, गणित और नेतृत्व के क्षेत्र में पुरुषों को अधिक प्रमुखता देना
- महिलाओं के ऐतिहासिक, वैज्ञानिक और सामाजिक योगदान को पर्याप्त स्थान न देना।
- कुछ विषयों या व्यवसायों को लड़कों अथवा लड़कियों के लिए उपयुक्त मानना।

नोट

- सुधार: पाठ्यक्रम में महिलाओं और पुरुषों की उपलब्धियों, अनुभवों और योगदान को संतुलित रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

2. शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लैंगिक भेदभाव-

कक्षा में शिक्षक के व्यवहार और विद्यार्थियों की सहभागिता में भी लैंगिक भेदभाव हो सकता है।

इसके प्रमुख रूप—

- शिक्षक द्वारा लड़कों से अधिक प्रश्न पूछना या उन्हें अधिक बोलने का अवसर देना।
- लड़कियों को कठिन विषयों, प्रयोगों या तकनीकी गतिविधियों में कम प्रोत्साहित करना।
- लड़कों को नेतृत्व तथा लड़कियों को सहायक भूमिकाएँ देना।
- यह अपेक्षा करना कि लड़के गणित एवं विज्ञान में और लड़कियाँ भाषा एवं कला में बेहतर होंगी।
- कक्षा में लैंगिक आधार पर अलग-अलग कार्य निर्धारित करना।

3. मूल्यांकन में लैंगिक भेदभाव-

मूल्यांकन में भी शिक्षक की अपेक्षाएँ या पूर्वाग्रह विद्यार्थियों के प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। यदि समान प्रदर्शन के बावजूद किसी एक लिंग के विद्यार्थी से अधिक या कम अपेक्षा की जाए, तो यह भेदभावपूर्ण दृष्टिकोण हो सकता है।

इसलिए मूल्यांकन निष्पक्ष, पारदर्शी और समान मानदंडों पर आधारित होना चाहिए।

4. लैंगिक भेदभाव के प्रभाव-

NOTE

पाठ्यक्रम और शिक्षण में लैंगिक भेदभाव से—

- विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में कमी आ सकती है।
- विषय और करियर चयन प्रभावित हो सकता है।
- लैंगिक रूढ़ियाँ मजबूत हो सकती हैं।
- कक्षा में सहभागिता के अवसर असमान हो सकते हैं।
- बालिकाओं एवं बालकों की क्षमताओं के पूर्ण विकास में बाधा आ सकती है।

5. लैंगिक समानता स्थापित करने के उपाय -

1. पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों को लैंगिक-संवेदनशील बनाया जाए।
2. लड़के और लड़कियों को सभी विषयों एवं गतिविधियों में समान अवसर दिए जाएँ।
3. शिक्षक सभी विद्यार्थियों से समान अपेक्षा रखें।
4. समूह कार्य और नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ समान रूप से बाँटी जाएँ।
5. विज्ञान, गणित, खेल, कला, तकनीक और नेतृत्व में सभी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाए।
6. शिक्षकों को Gender Sensitization का प्रशिक्षण दिया जाए।
7. मूल्यांकन में समान और स्पष्ट मानदंड अपनाए जाएँ।

8.4.1- पाठ्यक्रम में लैंगिक मुद्दे -

पाठ्यक्रम के विकास हेतु शिक्षकों के अनुभव व चिंत्य विषय भी सकारात्मक योगदान देते हैं। यद्यपि पाठ्यक्रम रचना में सक्रिय रूप से भाग लेने वाले शिक्षकों की संख्या बहुत थोड़ी है, जबकि पाठ्यक्रम को लागू करने

नोट

वालों में शिक्षकों का योगदान शिक्षा प्रक्रिया में बहुत ही महत्वपूर्ण है। शायद यही वजह है कि शिक्षकों को 'पाठ्यक्रम रचनाकार की बजाय पाठ्यक्रम का वाहक माना जाता है। विद्यालय आधारित पाठ्यक्रम विकास का विचार लोकप्रिय हो रहा है और जैसे-जैसे विकेन्द्रीकरण का विचार विद्यालयों में व्याप्त होगा वैसे-वैसे भविष्य में इस प्रक्रिया में शिक्षकों की भागीदारी बड़े पैमाने पर अपेक्षित होगी। यह तब तक संभव नहीं होगा जब तक शिक्षक इस परिवर्तित भूमिका के लिए वास्तव में सक्षम नहीं बनाए जाते। राष्ट्र के शिक्षकों के अनुभवों पर पाठ्यक्रम निर्माण के समय पूर्ण विश्वास करना चाहिए। सक्षम शिक्षक समुदाय की परिकल्पना ने शिक्षण को पुनर्व्याख्या की ओर प्रवृत्त किया है। इसके अनुसार शिक्षण कार्य अधिक चिंतनशील और विचारशील व्यवसाय के रूप में उभरेगा। शिक्षा के लिए समानता की प्रतिबद्धता पाठ्यक्रम के लिए एक चुनौती है। स्वतंत्र भारत की लगभग हर नीति ने शिक्षा व्यवस्था को इस दृष्टिकोण से बेहतर बनाने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए हैं। माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952) की रिपोर्ट में शिक्षा में ऐसे अवसरों की मांग की जो व्यवहार में सामाजिक न्याय के मनोभाव को परिभाषित कर सकें। इस संदर्भ में कहा गया कि 'इस विश्वास से प्रेरित कि सामाजिक उद्देश्य इस बात के लिए संघर्ष करते हैं कि लोकतन्त्र में जीवन सिर्फ अपने लिए ही नहीं है बल्कि यह आह्वान है एक ऐसे कठिन प्रयास का जिसमें सभी के लिए समान अवसर उपलब्ध हों और एक ऐसी लड़ाई जो कि वंचित समूहों के न्याय के लिए लड़ी जाए।"

पाठ्यक्रम निर्माण की प्रक्रिया में चूंकि शिक्षक प्रभावशाली कार्यकर्ता है। इसलिए उपयुक्त और पर्याप्त शिक्षक प्रशिक्षण ज़रूरी है, जो पूर्व-सेवाकालीन और सेवाकालीन दोनों ही कार्यक्रमों पर लागू होगा। सेवाकालीन प्रशिक्षण को तो पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया का आंतरिक अंग बनना होगा

NOTE

और प्रशिक्षण में अनिवार्य रूप से दोनों तत्त्वों, शिक्षण प्रविधि और मूल्यांकन प्रक्रिया को शामिल करना होगा।

पाठ्यक्रमागत परिवर्तनों के अनुसार पाठ्यक्रमों की रचना और विकास से शिक्षकों को अलग रखने से यदि कोई परिवर्तन की संभावना हुई थी तो वह इस पूरे परिदृश्य में बहुत मामूली किस्म का परिवर्तन होगा। पाठ्यक्रम परिवर्तन के प्रति प्रेरित करेंगे और उनमें पाठ्यक्रम के प्रति 'अपनत्व' पैदा करेंगे जिन्हें कि स्वयं उन्हें ही लागू करके आजमाना है।

पाठ्यक्रम विकास की दृष्टि से 1986 व इससे पूर्व की शिक्षा नीतियों में, शैक्षिक अवसरों की समानता की जो बात कही गई है उसका तात्पर्य लैंगिक भेदभाव को कम करने से है। शिक्षा इस भेदभाव को कम करे और अंततः उसे मिटाने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

लिंग के आधार पर समानता का अधिकार भारतीय संविधान के अनुसार मौलिक अधिकार है। राज्यों को भी इस प्रकार का अधिकार प्राप्त है कि वे सुविधा वंचित जन-समूहों, जिनमें महिलाएं शामिल हैं, को सकारात्मक और संरक्षणात्मक वरीयता देने के लिए इन समूहों के पक्ष में अपने अधिकारों का उपयोग करें। शिक्षा में जिन बातों पर जोर दिया जा रहा है उनमें परिवर्तन हो रहा है और शैक्षिक अवसरों की समानता से 'महिलाओं की समानता और संबलीकरण की शिक्षा' (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986) पर अब जोर दिया गया है। इसके परिणामस्वरूप पाठ्यक्रमागत और प्रशिक्षणगत कार्यनीतियों में बालिकाओं की शिक्षा पर अब अधिक ध्यान देना होगा। अधिक से अधिक बालिकाओं के लिए अतिरिक्त विद्यालयी पाठ्यक्रम, पाठ्य-पुस्तकों और उन्हें पढ़ाने की प्रक्रिया से सभी प्रकार के लैंगिक भेदभाव और लैंगिक पूर्वाग्रह को मिटाना अत्यंत आवश्यक है। इसके अलावा भारत की श्रेष्ठतम परंपरा के अनुसार स्त्री-पुरुष दोनों की श्रेष्ठतम

नोट

विशेषताओं को मानना और उसका पोषण करना अत्यंत उपयुक्त होगा। आखिरकार भारत ही एक ऐसा देश है जहां पश्चिमी देशों के विपरीत बिना किसी संघर्ष के स्त्रियों को शीघ्र मताधिकार दे दिया गया। अब तो इस बात की ज़रूरत है कि समान रूप से बालक-बालिकाओं दोनों को ध्यान में रखकर ऐसी प्रभावशाली पाठ्यक्रम-कार्यनीति विकसित और लागू करें जो ऐसे बालक-बालिकाओं की पीढ़ियों का पोषण करे, जो समान रूप से सक्षम हों, एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील हो और एक-दूसरे के विरुद्ध न हों। इस दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में लैंगिक भेदभाव को खत्म करने के लिए महत्वपूर्ण प्रावधान भी किए गए हैं। परंतु जहां तक पाठ्यक्रम में लैंगिक भेदभाव की बात है तो यह प्रस्तुत विवरण से स्पष्ट हो जाता है।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2005) में निम्नलिखित मुद्दों पर फोकस किया जाता है-

1. उन सभी चीजों के लिए कार्य किया जाए जो बच्चों को स्कूल से बहिष्कृत करते हैं ताकि सभी बच्चों का स्कूल में समावेशन हो सके। जो बच्चे स्कूल छोड़ गए हैं उनको स्कूल वापस लाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और उनको सुविधाएं देनी चाहिए जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके जो बच्चे स्कूल छोड़ गए हैं वे वापस आ सकें। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि हर बच्चा कम से कम दसवीं कक्षा तक की शिक्षा प्राप्त कर सकें।
2. विद्यालयी शिक्षा को बाल केन्द्रित बनाया जाए ताकि बच्चों की क्षमता का पूर्ण विकास हो सके। एनसीएफ 2005 के अनुसार, 'स्कूल के सरोकारों में यह भी शामिल है कि यह समझा जाए कि स्कूल आने से पहले बच्चों के साथ क्या हुआ है और स्कूल छोड़कर जाने के बाद

NOTE

क्या होगा। स्कूल विविधता की अनिवार्य रूप से आदर करें और सभी बच्चों (लड़कियों, कामकाजी बच्चों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों, शोषण और हिंसा के शिकार) के लिए अवसरों में समानता सुनिश्चित करें।"

3. विद्यालयी व्यवस्था में शिक्षकों पर भरोसा करना आवश्यक है। शिक्षकों की स्वायत्तता का भी ध्यान रखना होगा। इसके लिए शिक्षकों को प्रोत्साहित करने और उनको सहयोग दिए जाने की जरूरत है। महिला शिक्षकों को विद्यालयों में रोजगार दिया जाए।
4. पाठ्यक्रम के निर्माण में स्कूलों को भी शामिल किया जाए। 'प्रत्येक स्तर पर मौजूदा शैक्षिक संस्थाओं में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रियाओं को मजबूत करने के लिए व्यवस्थात्मक बदलाव जरूर लाया जाए और इन प्रक्रियाओं की स्थिति को दर्शाने वाले तरीकों को भी जगह मिलनी चाहिए। स्कूल के विद्यार्थी एवं अध्यापक विद्यालय की वास्तविक परिस्थितियों से वाकिफ होते हैं। इसलिए पाठ्यक्रम के निर्माण में उनको भी शामिल किया जाना चाहिए।
5. उच्च प्राथमिक स्तर और माध्यमिक स्तर पर स्कूलों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए। स्कूलों को चाहिए कि वे प्रयोग, सर्वे, अध्ययन और पाठ्यक्रम के ढांचे के भीतर अन्य व्यक्तिगत और सामूहिक कार्यों को करने की संभावनाओं को जरूर मुहैया कराएं। इसके लिए आवश्यक है कि विभिन्न स्कूलों के शिक्षकों के बीच नियमित संवाद स्थापित होना चाहिए। शिक्षकों की पुस्तकालय तक पहुंच बढ़ाई जाए।
6. प्रथम पीढ़ी के विद्यार्थियों के पास सीखने के लिए किसी प्रकार का सहयोग नहीं होता है। ऐसे बच्चों की धीमी गति के कारण उनको विद्यालय से न निकाला जाए, बल्कि इनको समर्थन दिया जाए जिससे

नोट

वे अधिक से अधिक स्कूल आने के लिए प्रेरित हो सकें। राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005 के फोकस समूह पत्र पाठ्यक्रम बदलाव के लिए व्यवस्थागत सुधार में स्पष्ट कहा गया है कि 'सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को ऐसे बनाए जाने की जरूरत है जिससे कि वह ऐसे बच्चों की जरूरतों की पूर्ति कर सकें और उनके साथ सम्मान एवं संवेदनशीलता के साथ बर्ताव कर सकें, ताकि वे हर दिन स्कूल में आने के लिए प्रोत्साहन पा सकें।"

7. परीक्षा बच्चों के लिए एक बोझ की तरह होती है। वर्तमान शिक्षा का स्वरूप ही ऐसा है कि बच्चे के सीखने से अधिक परीक्षा पर ध्यान केन्द्रित है। परीक्षा की गहरी चिंता एवं अंकों का भय उन पर दवाब बनाता है। इस प्रकार की मूल्यांकन प्रणाली जो बच्चों में भय एवं दबाव उत्पन्न करें उस पर हमें पुनर्विचार करने की आवश्यकता है। एनसीएफ (2005) के अनुसार, 'स्कूल की दृष्टि से देखने पर यह पता चलता है कि यह परीक्षा उच्च प्राथमिक तक, नीचे उतरते हुए, स्कूल की विषयवस्तु तथा विधि को निर्धारित करती है। इसलिए अगर हम सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में अर्थपूर्ण सुधार अवकल्पित करते हैं तो यह आवश्यक है कि हम परीक्षा एवं उससे जुड़ी हुई पाठ्यक्रम, पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों पर आलोचनात्मक नजर डालें। अंकों का ये भय भी लैंगिक असमानता को बढ़ावा देता है।
8. अधिगम में सब वर्गों की सहभागिता को सुनिश्चित किया जाना चाहिए। विषयवस्तु में जीवन मूल्यों एवं रोजगार को प्रमुख रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

इस प्रकार के बहुत सारे सुझाव राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005

NOTE

में दिए गए हैं जो एक बेहतरीन शिक्षा व्यवस्था को बनाने पर जोर देते हैं। वास्तव में एक पाठ्यक्रम को बनाने की एक प्रमुख चुनौती यह है कि उसमें वे सभी तत्त्व शामिल हो सभी आधारभूत स्तर की उपलब्धताओं एवं सीमाओं को साथ लेते हुए शिक्षा के व्यापक लक्ष्य को पूर्ण करने का मार्ग प्रशस्त करे।

राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2005 के बाद इसके फोकस समूह शिक्षा में लैंगिकता के मुद्दे पर शिक्षा में लैंगिकता के मुद्दों को संबोधित करने के लिए दी गई सिफारिशें निम्नलिखित हैं-

8.4.2- पाठ्यपुस्तक और लैंगिक प्रतिनिधित्व-

विद्यालयी पाठ्यक्रमों में लैंगिकता आधारित वर्गीकरण मूर्त एवं अमूर्त दोनों ही रूपों में विद्यमान होता है। यह अंतर विद्यालयों द्वारा पढ़ाए जा रहे विषयों एवं उन विषयों के लिए बनाए गए पाठ्यक्रमों की पाठ्यपुस्तकों प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूपेण होता है।

पाठ्यपुस्तकें एवं लैंगिकता -

पाठ्यपुस्तकें हमारी शिक्षा प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था में पाठ्यपुस्तकों के महत्व का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि अक्सर पाठ्यपुस्तकों को ही पाठ्यक्रम मान लिया जाता है। विद्यालयों में पाठ्यक्रम के रूप में सिर्फ और सिर्फ पाठ्यपुस्तकों का ही प्रयोग किया जाता है और ज्ञान को पाठ्यपुस्तकों तक ही सीमित कर दिया जाता है। हम पाठ्यपुस्तकों के ज्ञान को ही अंतिम ज्ञान मान लेते हैं। कक्षा में कुछ नया करने की आवश्यकता महसूस ही नहीं की जाती। चूंकि पाठ्यपुस्तकें ही विद्यालय में एक मात्र ज्ञान का साधन बन कर रह गई हैं इसलिए पाठ्यपुस्तकों के निर्माण पर ध्यान देना और भी अधिक आवश्यक हो जाता है। पाठ्यपुस्तकों का निर्माण करते हुए हमें उसके लैंगिक

नोट

संवेदनशीलता के पहलू को ध्यान में रखना होगा। हमें ये भी ध्यान रखना होगा कि पाठ्यपुस्तकें कहीं समाज में मौजूद लैंगिक रूढ़िबद्धता को बढ़ावा देने में योगदान तो नहीं दे रहीं? इसके लिए समय-समय पर इनकी समीक्षा की जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों पर हुए शोध के परिणाम को पुस्तकों का निर्माण करते समय ज़रूर ध्यान में रखना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों को लैंगिकता मुक्त करना बेहद आवश्यक है। वर्तमान समय में पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में सुधार का कार्य बहुत ही गंभीर रूप से किया जाता है। एनसीईआरटी द्वारा तैयार किया गया National Curriculum Framework 2005 के अनुसार, "सुधरी हुई पाठ्यपुस्तकें जो सावधानीपूर्वक लिखी और नियोजित की गई हों, व्यावसायिक रूप से संपादित और जांची गई हों और जो बच्चों को केवल तथ्यात्मक जानकारी न देकर अंतःक्रिया के मौके दें, महत्वपूर्ण होती हैं।" (पृष्ठ-101) अतः ये कहा जा सकता है कि समानता के लिए हमें पाठ्यपुस्तकों का प्राथमिक उपकरण की तरह उपयोग करना चाहिए, क्योंकि यह शिक्षा हेतु बहुत बड़ी संख्या में विद्यालय जाने वाले विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए प्राप्य संसाधन हैं।

हालांकि पाठ्यपुस्तकों से भी इतर सामग्री का प्रयोग कक्षा में पढ़ते हुए होता है परंतु इनका उपयोग कम ही शिक्षक करते हैं। इस संदर्भ में NCF 2005 कहता है कि "पाठ्यक्रम का सुधार और भी बहुत आगे जा सकता है अगर पाठ्यपुस्तकों के साथ और बहुत सारी अन्य सामग्री विकसित की जाए। उदाहरण के लिए विषय का शब्दकोश तैयार कर किताबों को परिभाषाओं और विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के बोझ से बचाया जा सकता है जिससे शिक्षक को यह मौका मिलेगा कि वह अवधारणाओं की समझ पर बल दे पाए। अगर पाठ्यपुस्तकों के लेखक अवधारणाओं के विस्तार, गतिविधियों, समस्याओं पर अचरज करने के अवसर देने पर,

NOTE

चिंतनात्मक सोच को बढ़ावा देने वाले अभ्यासों पर एवं छोटे समूह में कार्य करने पर ध्यान दें तो कक्षा में जल्दी-जल्दी पढ़ाने, भारी-भरकम गृहकार्य और निजी ट्यूशन के तनाव वाले त्रिकोणीय संबंध को कमजोर किया जा सकता है।"

पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों में भी इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखा जा रहा है कि लैंगिक समानता के दृष्टिकोण का विकास करने वाली विषय सामग्री का समावेश इनमें किया जाए। पाठ्यपुस्तक में बच्चों में लैंगिक समानता का विकास करने वाली सामग्री का समावेश हो तो निश्चित रूप से बच्चों की मानसिकता में लैंगिकता के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा। इसका कारण यह है कि पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र ऐसा साधन हैं, जो विद्यालय जाने वाले प्रत्येक बच्चे को सुलभ होती हैं और पाठ्यपुस्तकें ही एकमात्र ऐसा संसाधन हैं जो कोई भी शिक्षक, शिक्षण प्रक्रिया के दौरान भले ही किसी भी सहायक सामग्री का उपयोग न करे पर पाठ्यपुस्तकों का उपयोग तो करता ही है।

एनसीईआरटी के अनुसार नई पाठ्यपुस्तकें लिखते और तैयार करते समय इस बात को ध्यान में रखना होगा कि बच्चों को कम उम्र से ही लैंगिक संवेदनशील बनाना है तथा उन्हें लैंगिक पक्षपात से दूर रखना है। इसके पीछे सम्पूर्ण भावना है। कि विद्यार्थी यह महसूस कर सकें कि महिलाएं पुरुषों से कम योग्य अथवा समर्थ है, इस सोच का कोई आधार नहीं है। वर्तमान संदर्भ में उठने वाले मुद्दों के आधार पर कहा जा सकता है कि एनसीएफ 2005 में प्रस्तावित सुधार स्वागत के योग्य है और इसके आधार पर जिन पुस्तकों का निर्माण किया गया वह पिछली पाठ्यपुस्तकों से अधिक बेहतर और लैंगिकता के प्रति संवेदनशील नज़र आती है। परंतु लैंगिक दृष्टि से किए गए शोध अभी भी ये बताते हैं कि अभी भी बहुत सारी पाठ्यपुस्तकों में ऐसे अनेक

नोट

उदाहरण मिल जाएंगे जहां लैंगिक रूढ़िबद्धताएं दर्शाई गई हैं। स्त्री एवं पुरुष में से पुरुष को सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। स्त्री एवं पुरुषों की छवियों को पारंपरिक तरीके से दर्शाया गया है।

राज्य और राष्ट्रीय एजेंसी पाठ्य-पुस्तकें निर्मित करते हैं। लिंग आधारित समानता को शामिल करते हुए पहचाने हुए मार्मिक मूल्यों को पाठ्यपुस्तकों में शामिल करने का प्रयास जारी है। कुछ राज्यों ने ऐसी पाठ्यपुस्तकें और अभ्यास पुस्तकें बना ली हैं जो लिंग आधारित भेदभाव से मुक्त तो हैं ही, साथ ही लड़के-लड़कियों, महिला-पुरुषों को साझेदारी से काम करते हुए दर्शाती हैं। ये सामग्री में महिलाओं को गैर-परंपरागत कार्यों में संलग्न दिखाती हैं और उसमें उनका योगदान बताती हैं। फिर भी अधिकांश शिक्षकों को अभी भी उन पुस्तकों का प्रयोग ही करना पड़ेगा जिसमें बालिका का कमजोर और रूढ़िवादी स्थिति में ही लड़के और लड़कियों का चित्रण किया गया है। इनमें महिलाओं की स्थिति दयनीय है जबकि पुरुषों की वर्चस्ववादी। लैंगिक भेदभाव से परिपूर्ण पुस्तकों में कुछ इस प्रकार के चित्रण मिलते हैं-

- पुरुष पात्रों एवं पुरुष लेखकों का बाहुल्य।
- पुरुष प्रायः प्रमुख भूमिका में होते हैं और कुछ महिलाएं जिनका जिक्र भी होता है वे परिचारिका की भूमिका में ही होती हैं जिनसे सहायक कार्य ही अपेक्षित होते हैं।
- निडर, हिम्मत, बहादुरी आदि जैसे गुण पुरुषों के बताए जाते हैं जबकि महिलाओं को भीरु, असंगठित, कमजोर एवं मूर्ख दर्शाया जाता है।
- पुरुषों की कर्मशीलता, शिक्षक, नेता, डॉक्टर, किसान आदि के रूप में दिखाई जाती है और महिलाओं को गृहणी, मां, परिचारिका आदि

NOTE

में अधिक जबकि अन्य भूमिकाओं में बहुत कम दर्शाया जाता है।

नीचे पाठ्यपुस्कों में से कुछ उदाहरण लिए गए हैं। इनको पढ़कर इनमें से लैंगिक रूढ़िबद्धता की पहचान कीजिए।

1. सोना दादाजी, दो दिन बाद हमारे विद्यालय में उत्सव है। मेरी सहेली मोना और मैं नृत्य करेंगे। मोना की मां उत्सव में भाग लेने आएंगी। दादाजी बेटी, मोना की मां ग्राम पंचायत की सरपंच है इसलिए उन्हें मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया होगा।

2. अपूर्वा हां, मैं पिताजी से कहूंगी कि अपने नए मकान में लकड़ी के दरवाजे नहीं, प्लास्टिक के दरवाजे लगाएं।
3. घर का सबसे बड़ा व्यक्ति परिवार का मुखिया होता है। वह परिवार के सभी सदस्यों की देखभाल करता है।
4. पद्मिनी बहुत रूपवती थी। दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन को इसकी जानकारी मिली। खिलजी उसे प्राप्त करना चाहता था।

खिलजी ने रावल रतन सिंह को संदेश भिजवाया कि वह केवल पदिमनी को देखकर ही दिल्ली लौट जाएगा। रानी पदिमनी ने चित्तौड को विनाश से बचाने के लिए खिलजी का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। किले में पदिमनी का प्रतिबिंब दिखाने की व्यवस्था की गई। खिलजी चाह कर भी पद्मिनी को प्रत्यक्ष रूप से नहीं देख सका। खिलजी के मन में पदिमनी को पाने की इच्छा बनी रही। कुछ समय बाद खिलजी ने पुनः चित्तौड़ पर आक्रमण किया।

8.4.3- लड़कियों की स्कूली शिक्षा लड़कियों का नामांकन, प्रतिधारण

नोट

एवं कारण -

स्वतन्त्रता से अब तक देश में महिला साक्षरता दर में निःसंदेह वृद्धि हुई है। सन 1951 में स्त्री साक्षरता मात्र 9 प्रतिशत थी, जबकि 1991 में यह 40 प्रतिशत के लगभग पहुंच गई, किन्तु साक्षरता की तुलना में यह आंकड़े बहुत उत्साहजनक नहीं हैं। सन 1950-51 में प्रति 100 लड़कों की तुलना में प्राथमिक स्तर पर 39 लड़कियां, उच्च माध्यमिक स्तर पर 15 लड़कियां और उच्च शिक्षा में 13 लड़कियां थीं। जो 2013-14 में प्राथमिक स्तर पर 93 एवं उच्च माध्यमिक स्तर पर 89 था। (डाटा स्रोत U-DISE-NUEPA) स्त्री शिक्षा में वृद्धि होने के बावजूद भी इन आंकड़ों का आकलन हम लैंगिकता की दृष्टि से करें तो ये हमारे समाज में व्याप्त असमानता को दर्शाते हैं। इस संदर्भ में विमला रामचंद्रन (2016) लिखती हैं कि 'सर्वविदित है कि शिक्षा में लैंगिक समानता और बालिकाओं को प्राथमिक शिक्षा की उपलब्धता को प्रोत्साहन दिए जाने पर तीन अंतर्संबंधित मुद्दोंः शिक्षा एवं अर्थव्यवस्था, समाज एवं संस्कृति की सर्वांगीणता, सामग्री एवं प्रक्रिया का प्रभाव होता है। 'वास्तव में शिक्षा में इस लैंगिक असमानता को सामाजिक, क्षेत्रीय एवं स्थानीय संदर्भों में देखने की आवश्यकता है। भारत बहु-सांस्कृ तिक एवं विविधताओं वाला देश है। यहां सामाजिक-आर्थिक विषमताओं एवं लैंगिक असमानताओं का जाल बिछा हुआ है। हालांकि सामाजिक एवं आर्थिक विषमताएं बहुत महत्वपूर्ण हैं परंतु फिर भी कुछ शोधकर्ता ये मानते हैं कि भारत में महिला शिक्षा को सांस्कृतिक विश्वास एवं रीतियां आदि अधिक प्रभावित करती हैं।

बालिकाओं की कम भागीदारी एवं विद्यालय छोड़ने की ऊंची दर के कारण-

बालिकाओं के नामांकन व ठहराव को बढ़ाने हेतु किए गए अनेक प्रयासों के बावजूद शैक्षिक संस्थाओं में बालिकाओं के नामांकन की स्थिति

NOTE

पुरुषों के मुकाबले कम है। विद्यालय छोड़ने की दर बालिकाओं में बालकों के मुकाबले सार्थक रूप से अधिक है। ऐसे बहुत सारे कारक हैं जो कि बालिकाओं के नामांकन व ठहराव को प्रभावित करते हैं। इन कारकों को तीन विस्तृत क्षेत्रों के अंतर्गत वर्गीकृत किया जा सकता है-

1. पारिवारिक एवं सामाजिक कारक इसके अंतर्गत चार प्रमुख कारण हैं जो बालिकाओं की शिक्षा को प्रभावित करते हैं-

(अ) पारिवारिक परम्पराएं एवं कम उम्र में शादी

(आ) पर्दा प्रथा

(इ) सामाजिक एवं पारिवारिक अपेक्षाएं

(ई) शिक्षा का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष उच्च व्यय

2. शैक्षणिक सुलभता तथा इसको प्रदान करने वाली व्यवस्थाओं में कमी-

(अ) घर से विद्यालयों की अधिक दूरी

(आ) विद्यालयी समय सारणी में लचीलेपन का अभाव

(इ) महिला अध्यापिकाओं की कमी

(ई) बालिका विद्यालयों की अनुपस्थिति।

1. शिक्षा की विषयवस्तु का बालिकाओं की आवश्यकता के अनुरूप नहीं होना-

(अ) अव्यावहारिक शिक्षण विधियां

(आ) पाठ्यक्रम तथा पाठ्यपुस्तकों में बालिकाओं की उपेक्षा।

बालिकाओं की शिक्षा तक असमान पहुंच को प्रभावित करने वाले

नोट

कारण एक समाज का विकास समाज में प्रचलित शैक्षिक असमानता की सीमा से लगाया जा सकता है। लड़की / लड़के या पुरुष/महिला छात्रों के बीच शैक्षिक साधनों के असंतुलित आवंटन की घटना देश के विकास के हर चरण को भंग करती है। शिक्षा पर विश्व सम्मेलन द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार, सभी बच्चों, विशेष रूप से लड़कियों, को 2015 तक गुणवत्ता की शिक्षा तक पहुंच होनी चाहिए थी। हालांकि, लक्ष्य अपरिहार्य है। राष्ट्र के विकास के लिए, किसी भी असमानता के बिना दोनों लिंगों को शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। यूनेस्को द्वारा प्रदान किए गए आंकड़े बताते हैं कि लड़कों की तुलना में लड़कियों को समान शैक्षणिक अवसरों तक कम पहुंच है। नामांकन दर लगभग तुलनात्मक है लेकिन लड़कों की तुलना में लड़कियों के लिए निरंतरता की दर बहुत कम है। परिणामस्वरूप, पूरी दुनिया में लड़कियों को कम शिक्षा प्राप्त होती है। असमानता के लिए कई कारण जिम्मेदार होते हैं। बेहतर समझने के लिए, इन कारणों पर निम्न शीर्षकों के तहत चर्चा की गई है।

. आर्थिक कारण-

अभिभावकों का रवैया माता-पिता कभी-कभी एक लड़की की शिक्षा पर धन खर्च करने के लिए उत्सुक नहीं होते हैं। यद्यपि उनके पास बच्चों के लिए समान स्नेह होता है, उनके लिंग के बावजूद, उन परिवारों में जहां माता-पिता के धन में बाधाएं होती हैं, शिक्षा में निवेश करते समय माता-पिता लडके के समर्थक होते हैं। बच्चों के कल्याण में माता-पिता का निवेश कभी-कभी लिंगीय पक्षपातपूर्ण हो सकता है। आम धारणा यह है कि वृद्धावस्था में बेटे अपने माता-पिता की देखभाल करते हैं।

विद्यालय का ऊंचा शुल्क उच्च विद्यालय की फीस लड़कियों को पर्याप्त शिक्षा तक पहुंचने से रोकती है, क्योंकि कुछ अवसरों पर माता-पिता

NOTE

अपना धन खर्च करने के लिए तैयार नहीं हैं। नतीजतन, या तो लड़की को शिक्षा से वंचित किया जाता है या स्कूल को बीच में छोड़ने के लिए कहा जाता है। माता-पिता परिवार के लड़के के लिए पर्याप्त शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपने धन का प्रबंध करते हैं। शोवन गोश और सुष्मिता सेनगुप्ता ने एक लड़की की स्कूली शिक्षा की कीमत पर केस स्टडी आयोजित करते हुए महसूस किया कि यह अंतर बड़ा है और ग्रामीण भारत के गरीब परिवार इकाइयों में अधिक दिखाई देता है। इसका कारण यह है कि इन क्षेत्रों में माता-पिता एक बच्चे को एक सुरक्षित भविष्य के लिए एक निवेश के रूप में शिक्षित करने पर विचार करते हैं। अधिकतर परिवारों में, बच्चों को शिक्षा की मात्रा तय करने में कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि वे अपने बच्चों को शिक्षित करने के खर्चों को सहन करते हैं, न कि स्कूल की फीस पर न केवल यात्रा पर भी लेकिन कई अप्रत्यक्ष लागतें और कई अन्य / अतिरिक्त गैर शैक्षणिक गतिविधियों की लागत शामिल हैं। इसके अलावा, लड़कियों के मामले में, माता-पिता को सामाजिक-सांस्कृतिक परंपराओं को बनाए रखने और सुरक्षा की गारंटी देने की अतिरिक्त लागत का सामना करना पड़ता है। इसलिए, एक लड़की की शिक्षा को शिक्षित करने की लागत लड़कों की तुलना में अधिक हो जाती है।

2. घरेलू कारण-

घरेलू कार्य :- ग्रामीण क्षेत्रों में यह देखा गया है कि लड़कियां बहुत ही कम आयु में दैनिक घरेलू गतिविधियों में भाग लेना शुरू कर देती हैं। बड़ी लड़की को कई मामलों में छोटे भाई-बहनों की देखभाल करनी होती है, जबकि माता-पिता अपने खेतों में काम करते हैं या अन्य नियमित कार्य करते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि इस जिम्मेदारी को ज्यादातर बेटियों द्वारा लिया जाता है, न कि परिवार के पुत्रों के द्वारा।

नोट

माता-पिता की इच्छा:- सामाजिक विज्ञान के प्रोफेसर फुलर और लिआंग के अनुसार, यदि घर का नेतृत्व करने वाली महिला होती है तो लड़की के शिक्षित होने की संभावना अधिक होगी क्योंकि महिला प्रमुख को निर्णय लेने का अधिकार होगा। एकल माता-पिता के परिवारों में वित्तीय संकट भी अधिक हो सकता है जिस वजह से बालिकाओं की शिक्षा अवरूद्ध हो सकती है।

3. विद्यालयी कारण-

- गैर-शैक्षणिक गतिविधियों में नगण्य भागीदारी स्कूल में बहुत ही कम लड़कियां गैर-शैक्षणिक गतिविधियों में भाग लेती हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि स्कूलों में लड़कियों को ऐसी गतिविधियों का एक हिस्सा बनने के लिए पर्याप्त सुविधाएं नहीं होती हैं। उदाहरण के लिए, इनमें से अधिकतर गतिविधियां स्कूल के बाद होती हैं और कभी-कभी छात्रों को ऐसी गतिविधियों में भाग लेने के लिए परिवहन प्रदान नहीं किया जाता है। इसलिए, माता-पिता अकसर अपनी परवरिश को ऐसी गतिविधियों में शामिल होने से हतोत्साहित करते हैं। लड़कों की तुलना में खेल में लड़कियों की भागीदारी बहुत कम होती है। मुस्लिम लड़कियों को सांस्कृतिक प्रतिबंधों को भुगतना पड़ता है, जिससे उन्हें शॉर्ट परिधान पहनने से रोक दिया जाता है, उन्हें कपड़े बदलने या अपने घरों के अलावा किसी भी जगह में नहाने से रोका जाता है।
- महिला शिक्षिकाओं की स्कूलों में कमी विकासशील देशों में, लड़कियों को महिला प्रशिक्षक की अनुपस्थिति के कारण लैंगिक असमानता का शिकार होना पड़ता है। माता-पिता प्राथमिक स्कूल के बाद लड़कियों की शिक्षा को बंद करने की प्रवृत्ति रखते हैं। अन्य

NOTE

क्षेत्रों में लिंग की समानता नहीं हो रही है जिससे महिलाओं की आबादी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

- गैर उपस्थिति: लड़कियां स्कूल में अधिक अनियमित होती हैं, जो खराब ग्रेड की ओर ले जाता है। इसके लिए जिम्मेदार कारक कभी-कभी घर के कामकाज, से संबंधित होते हैं, जिससे उन्हें स्कूल छोड़ना पड़ता है। कुछ मामलों में उचित स्वच्छता और शौचालयों की कमी को एक कारक माना जा सकता है क्योंकि मासिक धर्म चक्र के दौरान लड़कियों को शौचालय की सुविधा की आवश्यकता होती है।
- स्कूलों में लड़कियों के लिए सुविधाएं माता-पिता लड़कियों के लिए स्कूल में सुरक्षित वातावरण चाहते हैं और वे सुविधाओं की कमी के बारे में लगातार चिंता करते हैं। कभी-कभी विद्यालय बुनियादी सुविधाएं प्रदान करने में विफल होते हैं, जैसे साफ शौचालय या परिवहन। लड़कियों को कुछ पहलुओं पर अतिरिक्त सहायता और मार्गदर्शन और गोपनीयता की आवश्यकता होती है, जो स्कूल अकसर प्रदान करने में विफल रहते हैं। यह कम उपस्थिति की ओर जाता है। इससे कक्षाओं में छात्राएं पिछड़ती हैं और उनका पढ़ाई में खराब प्रदर्शन दिखाना इसका परिणाम बनता है। यूनिसेफ मानकों के अनुसार, समी छात्रों के लिए अलग-अलग और स्वच्छ शौचालय उपलब्ध कराना स्कूल के लिए अनिवार्य है।
- शिक्षक का व्यवहार छात्रों के प्रति शिक्षक का रवैया एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक के रूप में है। जब छात्र स्कूल में अपने शिक्षकों के साथ सबसे ज्यादा बात करते हैं। यह देखा गया है कि कई अवसरों पर शिक्षक लैंगिक पूर्वाग्रहों का अभ्यास करते हैं। कुछ

नोट

शिक्षक छात्रों के साथ बातचीत करते समय उपयोग की जाने वाली भाषा के प्रति सचेत नहीं होते हैं। शिक्षक कभी-कभी कक्षा में विशेष छात्रों की तरफ ध्यान देते हैं। कुछ कक्षाओं में लड़कियों के प्रति शिक्षकों के रुखे व्यवहार के कारण स्कूल छोड़ दिया जाता है।

- घर के आसपास के क्षेत्र में स्कूलों की कमी एक और पहलू है, जो छात्राओं के लिए शिक्षा तक पहुंच कम कर देता है यह है स्कूल की दूरी। ग्रामीण क्षेत्रों में, माता-पिता स्कूल जाने के लिए दूरदराज के स्थानों की यात्रा करने के इच्छुक नहीं हैं। जब लड़कियों की बात आती है तो विद्यालय छोड़ने के लिए दूरी एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। इस मुद्दे पर किए गए कई अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकला है कि स्कूल की दूरी बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यदि उनकी बेटी को दूर तक यात्रा करना पड़ता है तो माता-पिता अच्छा महसूस नहीं करते हैं। मनोवैज्ञानिक मैरी एन्सवर्थ के अनुसार, आसपास के स्कूलों में लड़कियों के नामांकन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

4. सांस्कृतिक कारण-

- कम उम्र में शादी माता-पिता अकसर अपनी बेटियों की एक बहुत कम उम्र में, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में शादी करते हैं। वे उनकी शिक्षा पूरी करने की अनुमति देने के लिए उत्सुक नहीं होते हैं। वास्तव में, यदि लड़की शिक्षित होती है जो अधिकांश गांवों में माता-पिता असुरक्षित महसूस करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि यह अधिक योग्य होती है, तो इसे एक उपयुक्त लड़का पाने के लिए अधिक मुश्किल का सामना करना होगा। भारत की प्रोबई टीम

NOTE

(1999) ने पाया कि माता-पिता को लगता है कि उनकी बेटी के शिक्षित होने पर शादी की लागत बढ़ जाएगी। उनके अनुसार, गरीब परिवारों की लड़कियों को उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए कोई भी प्रस्ताव प्राप्त करने की संभावना नहीं है। बांग्लादेश जैसे देशों में भी ऐसा ही मामला है।

- किशोर गर्भावस्था कई शोधकर्ताओं ने लडकियों के लिए शिक्षा के कम पहुंच के लिए काफी हद तक किशोर गर्भावस्था को कारण बताया है। अध्ययनों ने यह बताया है कि जो लड़कियां स्कूल में बुरा प्रदर्शन करती है या छोड़ने वाली होती हैं या निचली आर्थिक स्थिति से संबंधित होती हैं, वे किशोर गर्भावस्था के लिए अधिक जिम्मेदार होते हैं।
- सांस्कृतिक विश्वास 2005 में एक गैर सरकारी संगठन सेव द चिल्ड्रन द्वारा किए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार, धार्मिक विश्वासों और पारंपरिक मानदंड अकसर सबसे विकासशील देशों में पर्याप्त शिक्षा प्राप्त करने से लडकियों को रोकने के कारण हैं। कई संस्कृतियों में, यहां तक कि वर्तमान समय में, यह माना जाता है कि महिला की भूमिका घर का ख्याल रखना और बच्चों को संभालना है; और इन कार्यों को करने के लिए स्कूल शिक्षा की आवश्यकता नहीं होती है। प्रोफेसर जेन फाल्किंगहेम और एग्नाला बेस्छेरी के अनुसार, ताजिकिस्तान जैसे देशों में, लड़कियों को आध्यात्मिक कक्षाओं में भाग लेने की अनुमति है, जो उन्हें एक आदर्श पत्नी बनने के लिए कौशल प्रदान करता है। मुस्लिम समुदायों में 'पर्दा या महिलाओं के एकांत की परंपरा, शिक्षा में लिंग असमानता के लिए योगदान करने वाला एक और महत्वपूर्ण कारक होता है। 2010 में

नोट

यूनेस्को द्वारा किए गए शोध के अनुसार, अधिकांश विकासशील देशों के ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक मूल्यों की मजबूत उपस्थिति है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समाज में कई जुड़े कारक होते हैं जिनका महिलाओं की आबादी के लिए शिक्षा की पहुंच पर सीधा प्रभाव पड़ता है। कुछ मामलों में, लिंग दोनों के लिए कारक बनता है। यह अध्ययन इस तथ्य को उजागर करता है कि शहरी आबादी की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में गरीब परिवारों की लड़कियों पर इन कारकों का अधिक प्रभाव पड़ता है।

8.5 विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, विषय-चयन और भविष्य के अवसरों पर लैंगिक प्रभाव

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, विषय-चयन और भविष्य के अवसर केवल उनकी रुचि एवं क्षमता पर निर्भर नहीं करते, बल्कि परिवार, विद्यालय, समाज और सांस्कृतिक अपेक्षाएँ भी उन्हें प्रभावित करती हैं। जब किसी विद्यार्थी से उसके लिंग के आधार पर विशेष प्रकार के व्यवहार या उपलब्धि की अपेक्षा की जाती है, तो उसके शैक्षिक एवं व्यावसायिक निर्णय प्रभावित हो सकते हैं।

1. शैक्षिक उपलब्धि पर लैंगिक प्रभाव -

शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य विद्यार्थी द्वारा शिक्षा के दौरान प्राप्त ज्ञान, कौशल और प्रदर्शन के स्तर से है।

लैंगिक रूढ़ियाँ शैक्षिक उपलब्धि को निम्न प्रकार प्रभावित कर सकती हैं—

- यदि किसी विषय को केवल लड़कों के लिए उपयुक्त माना जाए, तो लड़कियों को उसमें कम प्रोत्साहन मिल सकता है।
- परिवार एवं शिक्षक की अपेक्षाएँ विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और

NOTE

प्रदर्शन को प्रभावित कर सकती हैं।

- घरेलू जिम्मेदारियों के कारण कुछ बालिकाओं को अध्ययन के लिए कम समय मिल सकता है।
- संसाधनों और डिजिटल सुविधाओं तक असमान पहुँच सीखने के अवसरों को प्रभावित कर सकती है।
- प्रोत्साहन और सकारात्मक वातावरण मिलने पर सभी विद्यार्थी अपनी क्षमताओं का बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं।

2. विषय-चयन पर लैंगिक प्रभाव-

विषय-चयन विद्यार्थी के भविष्य की शिक्षा और करियर को प्रभावित करता है। कई बार विद्यार्थी अपनी वास्तविक रुचि के बजाय सामाजिक धारणाओं के आधार पर विषय चुनते हैं।

उदाहरण—

- गणित, विज्ञान और तकनीकी विषयों को लड़कों के लिए अधिक उपयुक्त समझना।
- भाषा, कला या गृह-विज्ञान जैसे विषयों को लड़कियों से जोड़ना।
- परिवार द्वारा बेटी या बेटे के लिए विशेष विषय निर्धारित करना।
- सहपाठियों और समाज के दबाव के कारण विद्यार्थी अपनी पसंद का विषय न चुन पाए।

इसलिए विषय-चयन लिंग के आधार पर नहीं, बल्कि विद्यार्थी की रुचि, क्षमता, योग्यता और भविष्य की आकांक्षाओं के आधार पर होना चाहिए।

3. भविष्य के अवसरों पर लैंगिक प्रभाव-

विद्यालय में विकसित होने वाली लैंगिक धारणाएँ आगे चलकर उच्च शिक्षा, करियर और नेतृत्व के अवसरों को प्रभावित कर सकती हैं।

नोट

लैंगिक असमानता के कारण—

- कुछ विद्यार्थी कुछ व्यावसायिक क्षेत्रों को चुनने से हिचक सकते हैं।
- उच्च शिक्षा में विषय और संस्थान का चुनाव सीमित हो सकता है।
- नेतृत्व एवं निर्णय लेने के अवसरों में असमानता उत्पन्न हो सकती है।
- सामाजिक अपेक्षाएँ विद्यार्थियों की करियर आकांक्षाओं को प्रभावित कर सकती हैं।

इसके विपरीत, समान अवसर और लैंगिक-संवेदनशील शिक्षा विद्यार्थियों को अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार भविष्य का मार्ग चुनने में सहायता करती है।

4. शिक्षक एवं विद्यालय की भूमिका-

विद्यालय लैंगिक प्रभाव को सकारात्मक दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है—

1. सभी विद्यार्थियों से समान अपेक्षाएँ रखी जाएँ।
2. विषय-चयन में विद्यार्थियों को स्वतंत्र एवं उचित मार्गदर्शन दिया जाए।
3. लड़कियों को STEM (विज्ञान, तकनीक, इंजीनियरिंग एवं गणित) सहित सभी क्षेत्रों में प्रोत्साहित किया जाए।
4. लड़कों और लड़कियों दोनों को नेतृत्व एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों के समान अवसर दिए जाएँ।
5. पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न क्षेत्रों की सफल महिलाओं और पुरुषों के उदाहरण शामिल किए जाएँ।
6. अभिभावकों को बच्चों के करियर और विषय-चयन में लिंग-

आधारित अपेक्षाओं से बचने के लिए जागरूक किया जाए।

NOTE

अपनी प्रगति जाँचें –

प्रश्न 1. विद्यालय में शैक्षिक अवसरों की लैंगिक असमानता से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

प्रश्न 2. पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक भेदभाव को दूर करने के दो उपाय बताइए।

.....

.....

प्रश्न 3. लैंगिक भेदभाव लड़कियों के नामांकन एवं प्रतिधारण को कैसे प्रभावित करता है?

.....

.....

8.6 सारांश

विद्यालयी शिक्षा में लैंगिक असमानता का अर्थ है कि विद्यार्थियों को उनके लिंग के आधार पर शिक्षा, संसाधनों, अवसरों, सहभागिता या प्रोत्साहन में असमानता का सामना करना पड़े। लैंगिक असमानता सामाजिक, आर्थिक,

नोट

सांस्कृतिक और पारिवारिक परिस्थितियों के साथ-साथ विद्यालयी वातावरण से भी प्रभावित होती है।

विद्यालय में लैंगिक असमानता के प्रमुख क्षेत्र हैं—प्रवेश एवं शैक्षिक अवसर, विद्यालयी संसाधन एवं सुविधाएँ, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया तथा शैक्षिक उपलब्धि, विषय-चयन एवं भविष्य के अवसर। पाठ्यपुस्तकों में रूढ़िबद्ध लैंगिक भूमिकाओं का चित्रण, कक्षा में असमान सहभागिता तथा खेल एवं नेतृत्व गतिविधियों में अलग-अलग अपेक्षाएँ इसके उदाहरण हैं।

लड़कियों की शिक्षा में नामांकन (Enrollment), प्रतिधारण (Retention) और शिक्षा की पूर्णता विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। आर्थिक कठिनाई, घरेलू जिम्मेदारियाँ, विद्यालय की दूरी, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ, सामाजिक मान्यताएँ तथा आवश्यक सुविधाओं की कमी उनकी शिक्षा को प्रभावित कर सकती हैं।

लैंगिक समानता स्थापित करने के लिए समान अवसर, सुरक्षित एवं समावेशी विद्यालयी वातावरण, लैंगिक-संवेदनशील पाठ्यक्रम, समान संसाधन, निष्पक्ष मूल्यांकन और शिक्षक प्रशिक्षण आवश्यक हैं। विद्यालय को ऐसा वातावरण विकसित करना चाहिए जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी अपनी रुचि, क्षमता और आकांक्षा के अनुसार आगे बढ़ सके।

8.7 शब्दावली

- **लैंगिक असमानता (Gender Inequality)**
  लिंग के आधार पर अवसर, अधिकार, संसाधन या व्यवहार में असमानता।

NOTE

- **लैंगिक समानता (Gender Equality)**
  सभी लिंगों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान प्रदान करना।
- **लैंगिक भेदभाव (Gender Discrimination)**
  किसी व्यक्ति के साथ उसके लिंग के आधार पर अनुचित या असमान व्यवहार करना।
- **लैंगिक रूढ़ि (Gender Stereotype)**
  लड़के और लड़कियों के बारे में बनी निश्चित एवं सामान्यीकृत धारणाएँ।
- **लैंगिक पूर्वाग्रह (Gender Bias)**
  किसी लिंग के प्रति पहले से बनी पक्षपातपूर्ण धारणा या दृष्टिकोण।
- **लैंगिक भूमिका (Gender Role)**
  समाज द्वारा लड़के और लड़कियों के लिए निर्धारित अपेक्षित व्यवहार एवं जिम्मेदारियाँ।
- **लैंगिक संवेदनशीलता (Gender Sensitivity)**
  विभिन्न लिंगों की आवश्यकताओं, अनुभवों और समस्याओं को समझने तथा सम्मान देने की क्षमता।
- **लैंगिक प्रतिनिधित्व (Gender Representation)**
  पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और गतिविधियों में विभिन्न लिंगों का संतुलित एवं उचित चित्रण।
- **नामांकन (Enrollment)**
  विद्यालय में विद्यार्थी का औपचारिक रूप से प्रवेश लेना।
- **प्रतिधारण (Retention)**

नोट

विद्यार्थी का विद्यालय में निरंतर बने रहना और शिक्षा जारी रखना।

- **शैक्षिक अवसर (Educational Opportunity)**
  शिक्षा प्राप्त करने, सीखने और आगे बढ़ने के उपलब्ध समान अवसर।
- **समावेशी शिक्षा (Inclusive Education)**
  सभी विद्यार्थियों को बिना भेदभाव के साथ सीखने का समान अवसर देने वाली शिक्षा।
- **लैंगिक मुख्यधारा (Gender Mainstreaming)**
  शिक्षा की योजना, नीति और गतिविधियों में लैंगिक समानता को व्यवस्थित रूप से शामिल करना।
- **समान अवसर (Equal Opportunity)**
  प्रत्येक विद्यार्थी को उसकी क्षमता और रुचि के अनुसार आगे बढ़ने का समान अवसर मिलना।
- **सशक्तिकरण (Empowerment)**
  विद्यार्थियों, विशेषकर वंचित समूहों, को निर्णय लेने और अपनी क्षमताओं का विकास करने के लिए सक्षम बनाना।
- **लैंगिक समानता आधारित शिक्षा**
  ऐसी शिक्षा जो लैंगिक भेदभाव और रूढ़ियों को कम करके समानता एवं सम्मान को बढ़ावा दे।

8.8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. विद्यालय में शैक्षिक अवसरों की लैंगिक असमानता से क्या तात्पर्य है?

NOTE

उत्तर: जब लड़के और लड़कियों को लिंग के आधार पर प्रवेश, संसाधनों, सुविधाओं तथा शैक्षिक अवसरों में समानता नहीं मिलती, तो इसे शैक्षिक अवसरों की लैंगिक असमानता कहते हैं। इससे विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

प्रश्न 2. पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक भेदभाव को दूर करने के दो उपाय बताइए।

उत्तर: पाठ्यपुस्तकों में महिलाओं और पुरुषों को विविध एवं समान भूमिकाओं में प्रस्तुत करना चाहिए। साथ ही, भाषा, चित्रों और उदाहरणों में लैंगिक रूढ़ियों से बचते हुए दोनों के योगदान को उचित स्थान देना चाहिए।

प्रश्न 3. लैंगिक भेदभाव लड़कियों के नामांकन एवं प्रतिधारण को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर: आर्थिक कठिनाइयाँ, घरेलू जिम्मेदारियाँ, सुरक्षा संबंधी चिंताएँ तथा लड़कियों की शिक्षा को कम महत्व देना उनके नामांकन और विद्यालय में बने रहने को प्रभावित कर सकते हैं। इससे उनकी शिक्षा अधूरी रहने की संभावना बढ़ सकती है।

8.9 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- NCERT – Gender and School Education Resources

  लैंगिक समानता, लैंगिक संवेदनशीलता और विद्यालयी शिक्षा से संबंधित अध्ययन सामग्री।

- NCERT – Textbooks and Educational Resources

  पाठ्यपुस्तकों एवं पाठ्यक्रम में लैंगिक प्रतिनिधित्व को समझने के

नोट

लिए उपयोगी संसाधन।

- UNESCO – Gender Equality in Education

शिक्षा में लैंगिक समानता, समान अवसर और लैंगिक भेदभाव से संबंधित वैश्विक संसाधन।

- UNICEF – Gender Equality in Education

बालिकाओं की शिक्षा, नामांकन, प्रतिधारण तथा शिक्षा में समान अवसर से संबंधित सामग्री।

- UN Women – Education and Gender Equality

लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण और शिक्षा के संबंध में अध्ययन सामग्री।

- DIKSHA – Gender and Inclusive Education Resources

शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए लैंगिक संवेदनशीलता और समावेशी शिक्षा से संबंधित डिजिटल सामग्री।

8.10 संदर्भ

1. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। (2006)। National Focus Group Position Paper on Gender Issues in Education. नई दिल्ली: NCERT।

2. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।

3. UNESCO. (2015). Education for All 2000–2015: Achievements and Challenges. Paris: UNESCO.

NOTE

4. UNESCO. (2019). UNESCO Strategy for Gender Equality in and through Education 2019–2025. Paris: UNESCO.

5. UNESCO. (2020). A New Generation: 25 Years of Efforts for Gender Equality in Education. Paris: UNESCO.

6. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। Gender Concerns in Education. नई दिल्ली: NCERT।

7. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। समग्र शिक्षा: विद्यालयी शिक्षा की प्रमुख योजना। नई दिल्ली: शिक्षा मंत्रालय।

8. UNICEF. Gender Equality in Education. New York: UNICEF.

8.11 अभ्यास

भाग 1

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)-

प्रश्न 1. विद्यालय में प्रवेश एवं शैक्षिक अवसरों में लैंगिक असमानता का प्रमुख उदाहरण कौन-सा है?

(अ) सभी विद्यार्थियों को समान अवसर देना
(ब) लड़कियों की शिक्षा को लड़कों की तुलना में कम महत्व देना
(स) सभी विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति प्रदान करना
(द) विद्यार्थियों की रुचि के अनुसार विषय चुनने देना

नोट

प्रश्न 2. विद्यालयी संसाधनों एवं सुविधाओं में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने के लिए कौन-सा उपाय उचित है?

(अ) खेल सुविधाएँ केवल लड़कों को देना

(ब) लड़कियों के लिए विज्ञान प्रयोगशाला का उपयोग सीमित करना

(स) सभी विद्यार्थियों को सुरक्षित एवं आवश्यक शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना

(द) पुस्तकालय का उपयोग केवल मेधावी विद्यार्थियों तक सीमित रखना

प्रश्न 3. पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक प्रतिनिधित्व का क्या अर्थ है?

(अ) केवल पुरुषों की उपलब्धियों का वर्णन करना

(ब) महिलाओं और पुरुषों को विविध भूमिकाओं में उचित स्थान देना

(स) महिलाओं के योगदान को पाठ्यक्रम से हटाना

(द) लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग पाठ्यपुस्तकें बनाना

प्रश्न 4. लैंगिक भेदभाव विद्यार्थियों के विषय-चयन एवं भविष्य के अवसरों को किस प्रकार प्रभावित कर सकता है?

(अ) सभी विद्यार्थियों को समान करियर चुनने के लिए प्रेरित करके

(ब) विद्यार्थियों की व्यक्तिगत रुचि को हमेशा बढ़ाकर

(स) कुछ विषयों और व्यवसायों को किसी एक लिंग तक सीमित मानकर

(द) शैक्षिक उपलब्धियों पर कोई प्रभाव डाले बिना

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1.सही उत्तर: (ब) लड़कियों की शिक्षा को लड़कों की तुलना में कम महत्व देना।

NOTE

स्पष्टीकरण: जब परिवार या समाज लड़कियों की शिक्षा को कम महत्व देता है और लड़कों की शिक्षा को प्राथमिकता देता है, तब शैक्षिक अवसरों में लैंगिक असमानता उत्पन्न होती है। इससे लड़कियों के नामांकन, नियमित उपस्थिति और शिक्षा पूरी करने की संभावनाएँ प्रभावित हो सकती हैं।

2.सही उत्तर: (स) सभी विद्यार्थियों को सुरक्षित एवं आवश्यक शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध कराना।

स्पष्टीकरण: विद्यालय में स्वच्छ शौचालय, सुरक्षित वातावरण, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल सामग्री तथा अन्य आवश्यक सुविधाएँ सभी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध होनी चाहिए। विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सुविधाएँ उपलब्ध कराना भी समान शैक्षिक अवसर सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

3.सही उत्तर: (ब) महिलाओं और पुरुषों को विविध भूमिकाओं में उचित स्थान देना।

स्पष्टीकरण: पाठ्यपुस्तकों में लैंगिक प्रतिनिधित्व का अर्थ है कि महिलाओं और पुरुषों को विभिन्न सामाजिक, वैज्ञानिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक भूमिकाओं में प्रस्तुत किया जाए। इससे विद्यार्थियों को समानता का संदेश मिलता है और पारंपरिक लैंगिक रूढ़ियों को कम करने में सहायता मिलती है।

4.सही उत्तर: (स) कुछ विषयों और व्यवसायों को किसी एक लिंग तक सीमित मानकर।

नोट

स्पष्टीकरण: यदि समाज विज्ञान, तकनीक, शिक्षा या अन्य व्यवसायों को किसी विशेष लिंग से जोड़ता है, तो विद्यार्थी अपनी रुचि के बावजूद कुछ विषयों को चुनने से हिचक सकते हैं। इससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियों, करियर विकल्पों और भविष्य के अवसरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

1. विद्यालय में प्रवेश एवं शैक्षिक अवसरों में लैंगिक असमानता को समझाइए।
2. विद्यालयी संसाधनों एवं सुविधाओं में लैंगिक असमानता के प्रमुख रूप बताइए।
3. पाठ्यक्रम एवं शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में लैंगिक भेदभाव को समझाइए।
4. लड़कियों के नामांकन एवं प्रतिधारण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारणों की व्याख्या कीजिए।
5. शैक्षिक उपलब्धि एवं विषय-चयन पर लैंगिक प्रभाव को समझाइए।

NOTE

इकाई 9
लैंगिकता : सामाजिक निर्माण

इकाई की रूपरेखा

9.1- प्रस्तावना
9.2- उद्देश्य
9.3- समाजशास्त्रीय निर्माण के रूप में लैंगिकता
9.4- लैंगिक भेदभाव अर्थ, उत्पत्ति एवं विकास
9.5- लैंगिक अध्ययन ऐतिहासिक विकास
9.6- सारांश
9.7- शब्दावली
9.8- अपनी प्रगति जांचें - संभावित उत्तर
9.9- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
9.10- संदर्भ
9.11- अभ्यास प्रश्न

9.1 प्रस्तावना

सेक्स एक जैविकीय अवधारणा है। ऐन ओकली (Ann Oakely) ने अपनी पुस्तक सेक्स, जेंडर एण्ड सोसाइटी 1972 में सेक्स को परिभाषित करते हुए कहा है कि, "सेक्स का तात्पर्य पुरुषों अथवा स्त्रियों के जैविक विभाजन से है।" यहां तक कि संसार में सभी जीवितों को उनके जैविकीय आधार पर दो वर्गों नर तथा मादा में बांटा गया है। लिंग शब्द जेंडर का हिन्दी रूपांतरण है। सामान्यतः लिंग शब्द का प्रयोग पुरुष एवं स्त्रियों के गुणों के कुलक तथा उनके समाज द्वारा उनसे अपेक्षित व्यवहारों के लिए किया जाता है। नारीवादी के अनुसार "सामाजिक लिंग को स्त्री-पुरुष विभेद के सामाजिक संगठन अथवा स्त्री-पुरुष के मध्य असमान सम्बन्धों की व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।" जेंडर एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय रचना है। जिसका सांस्कृतिक एवं पारंपरिक जीवन पर गहरा प्रभाव रहा है, और यह विश्व की लगभग आधी जनसंख्या की बात करता है।

नोट

बच्चों में अपने माता-पिता, भाई बहनों, अध्यापकों तथा पड़ोसियों के व्यवहार को अनुकरण करने की प्रवृत्ति पाई जाती है। समाजीकरण के इन माध्यमों से उन्हें जैसी पाठ्य सामग्री शिक्षा मिलती है, उनमें वैसी ही मनोवृत्ति विकसित होती है। यही कारण है कि यदि माता-पिता लड़के और लड़कियों की भूमिका के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित होते हैं या भेदभाव दिखाते हैं तो उनके बच्चों में भी उसी तरह का पूर्वाग्रह विकसित हो जाता है। किसी जाति या धर्म के प्रति पूर्वाग्रह से ग्रसित होते हैं तो बच्चे आसानी से सीख लेते हैं। अपने देश में भिन्न-भिन्न जातियों के लोग रहते हैं। सबका बालकों को संस्कार व परवरिश करने का अपना तरीका है। कुछ जातियां अपने को ऊंचा व श्रेष्ठ मानती है। धर्म व नैतिकता का व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है। जन्म लेते ही बच्चा मानव निर्मित वातावरण में प्रवेश करता है जहां भौतिक तथा अभौतिक संस्कृति (धर्म, प्रथा, विश्वास) आदि उसे घेरे रहते हैं। बालक को परिवार में जन्म लेते ही उस धर्म का अनुयायी होना होता है। धर्म व नैतिकता मिलकर व्यक्ति के व्यवहारों को नियंत्रित एवं संतुलित करते हैं। संस्कृति विभिन्न प्रकार से जैसे धर्म, भाषा, नैतिकता, परम्पराएं, प्रथाएं आदि से व्यक्तित्व को लगातार प्रभावित कर सिखाती है। बच्चा बचपन से ही अपने आस-पास के परिवेश से सीखने लगता है। संस्कृति प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तरीके से उसके व्यक्तित्व को विकसित करती है और एक जिम्मेदार सामाजिक नागरिक के रूप में उसे जीना सिखाती है। व्यक्ति में उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न करती है। उदाहरण जैसे भारतीय संयुक्त परिवारों में बच्चों को कठोर अनुशासन में रखा जाता है तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा करने के लिए तरह-तरह का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसी के परिणामस्वरूप भारत में अपने माता-पिता, भाई बहनों का पारिवारिक सदस्यों के संदर्भमें उत्तरदायित्व की भावना जितनी अधिक पाई जाती है, वह अन्य देशों के लोगों

NOTE

में देखने को नहीं मिलती है। संस्कृति अपने समूह या समाज के लोगों को दूसरों का सम्मान करना सिखाती है। संस्कृति व्यवहार का निर्धारण करती है। परिवार में, समाज में व्यक्ति की अलग-अलग भूमिका हो सकती है। घर में पिता, पति, बेटा या भाई हो सकता है। कार्यालय में उसकी भूमिका ऑफिसर की हो सकती है। अलग-अलग परिस्थितियों में तरह-तरह का व्यवहार करना संस्कृति ही सिखाती है कि पिता को पुत्र या पुत्री से कैसा व्यवहार करना चाहिए? पति के रूप में कैसा होना चाहिए? ये तमाम तरह की भूमिकाएं व्यक्तित्व व्यवहार का निर्धारण करते हुए उसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

इस इकाई के अंतर्गत सेक्स एवं जेंडर का अर्थ एवं दोनों के मध्य अंतर को समझाया गया है साथ ही घर और समाज की पृष्ठभूमि की विवेचना करते हुए लैंगिकता के पारंपरिक लक्षण को बताया गया है। समाज की विविध संस्थाओं द्वारा लैंगिक भूमिकाओं की भी विस्तृत विवेचना की गई है।

9.2 उद्देश्य

- लैंगिकता का अर्थ एवं समाजशास्त्रीय निर्माण में उसकी भूमिका को समझ पाएंगे;
- लैंगिक भेदभाव, श्रम विभाजन और लैंगिक असमानताओं के बारे में जान पाएंगे,
- लैंगिक अध्ययन की प्रकृति एवं परिवर्तन की विवेचना कर पाएंगे;
- लैंगिक संबंधों में पितृसत्ता एवं मातृसत्ता की भूमिका से अवगत हो पाएंगे;
- भारतीय संस्कृति में लैंगिक अवधारणा को समझ पाएंगे।

नोट

9.3 समाजशास्त्रीय निर्माण के रूप में लैंगिकता

समाजशास्त्र के अनुशासन की स्थापना करने वाले कुछ विचारकों ने महिलाओं से संबंधित मुद्दों को हल करने के लिए लोगों को प्रेरित किया है। यह समय बौद्धिक, राजनीतिक और सामाजिक उथल-पुथल का माना गया था, जिसकी लहर नारीवादियों के अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विरोध के आंदोलनों के साथ दिखाई देती थी। इसके बावजूद, इन विचारकों में से ज्यादातर अपनी व्यापक बहस से इस बात में एकीकृत थे कि परिवार, भावना और कामुकता के विषय में महिलाओं के मुद्दों से संबंधित तर्क सीमित हैं। उनके सिद्धांतों के लिए केंद्रीय ढांचे और प्रक्रियाओं को आकार देने के लिए सांस्कृ तिक रूप से परिभाषित मर्दानगी का प्रभाव काफी हद तक गैर मान्यता प्राप्त था, जबकि वे तर्क अधिकतर पुरुष प्रधान संरचनाओं के महत्व पर केंद्रित थे। उनके सिद्धांत भी पुरुष प्रधान संरचनाओं के तटस्थ और निहित थे। इस प्रकार, क्या समाजशास्त्र के प्रारंभिक विचारकों के बारे में कहा जा सकता है कि लैंगिक मुद्दों पर विचार की प्रक्रिया परिधीय है कि नहीं? सबसे परे वे कहते हैं कि परोक्ष रूप से उचित लिंग असमानता सिद्धांत तैयार किया गया है।

समाजशास्त्र इस बात में रुचि रखता है कि मानवीय समाज में मानव का व्यवहार सामूहिक जीवन से कैसे प्रेरित होता है। यद्यपि, सभी सामूहिक जीवन विभिन्न प्रकारों से नियमित होते हैं, इनमें लिंग नियमितता का एक महत्वपूर्ण घटक है। सैद्धांतिक दृष्टिकोण से, लिंग के प्रति जागरूकता ने वर्तमान सामाजिक सिद्धांत को संशोधित किया है और एक नवीन नारीवाद प्रतिमान का निर्माण किया है। अनुभवजन्य दृष्टिकोण से, लिंग के प्रति जागरूकता ने नवीन अनुसंधान प्रेरणाओं को जन्म दिया है और सामाजिक जांच के लिए नए विषयों को खोला है।

NOTE

लिंग के समाजशास्त्र के लिए मुख्य अवधारणाएंः मानवीय समाज में लगभग हर घर में कुछ गतिविधियां ऐसी हैं, जो निम्न रूप से हैं-

- खाना पकाना
- घर की सफाई
- झाड़ू से सफाई
- धूल की सफाई
- किराने की खरीदारी
- अन्य घरेलू वस्तुओं की खरीद
- कपड़ा धोना, सुखाना और इस्त्री करना
- घर की मरम्मत का काम
- कचरे का निष्कासन
- परिवार के सदस्यों की देखभाल

परिवार के सदस्यों की आवश्यकताएं और बच्चों की निरंतर निगरानी के प्रति विशेष देखभाल करना भारतीय गृहस्थी में पूर्व लिखित क्रियाओं को पूरा करने के लिए कौन जिम्मेदार है? ज्यादातर और निश्चित रूप से भारतीय समाज की गृहस्थियों में महिलाएं हीं इन उपरोक्त कार्य के लिए जिम्मेदार हैं। इन कार्यों को घरेलू काम या घर का कामकाज कहा जाता है। इस बात पर आश्चर्य नहीं होगा कि इन उपरोक्त कार्यों को किसी प्रकार से आर्थिक या सामाजिक परिप्रेक्ष्य के कार्यों की तरह नहीं देखा जाता है। यह मान लिया जाता है कि वे कार्यों का एक ऐसा समूह है, जिसके लिए किसी गृहस्थी की महिलाएं हीं प्राकृतिक रूप से जिम्मेदार हैं। यह देश सकल घरेलू उत्पाद में किसी प्रकार से आंकलित नहीं होता है। भारत में जी.डी.पी. को एक निश्चित अवधि उत्पादित सामान तथा सेवाओं के योग से निकला जाता है।

इस विश्वास के साथ कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की अवस्था तुच्छ

नोट

है, नकारात्मक छवि के कार्यभार लिंगवाद में बदल सकते हैं। पुरुष लैंगिकता के नकारात्मक परिणामों से प्रतिरक्षित नहीं है, परन्तु महिलाएं इसे ज्यादा अनुभव इसलिए करती हैं, क्योंकि वे जिस अवस्था समूह को पाती थीं, पुरुषों की तुलना में वह अधिक कलंकित होता था। उदाहरण के लिए, पुरुषों की तुलना में महिलाएं ज्यादातर उन अवस्थाओं को प्राप्त करती हैं, जिनमें कम शक्तियां, कम इज्जत और कम भुगतान या कोई भुगतान नहीं होता है। जैविक पहलुओं के कारण हीनता से संबंधित मान्यताओं को मानव समाज में मजबूती प्रदान की जा रही है और महिलाओं के प्रति भेदभाव को साबित करने के लिए उसका उपयोग हो रहा है। लैंगिकता, पितृसत्तात्मक प्रणालियों और पुरुषप्रधान सामाजिक संरचनाओं के द्वारा अवतरित है, जो महिलाओं के उत्पीड़न के लिए दोषी है। परिभाषा के द्वारा, पितृसत्ता पुरुष केन्द्रीयता दर्शाता है, जो पुरुषकेंद्रित और मानदंडों को सामाजिक संस्थानों में परंपरागत रूप से चला आ रहा है, जोकि एक ऐसा मानदंड बन गया है, जिसका पालन सभी मनुष्य करते हैं। तद्नुसार, लिंगवाद दृढ़ तब होता है, जब पितृसत्ता और पुरुष केन्द्रीयता को उन अवधारणाओं के अवतरित करने के लिए मिलाया जाता है, जिसमें लिंग भूमिकाओं को जैविक रूप से पता लगाया जाता है और इसीलिए किसी दिए गए ढांचे में यह बदले नहीं जा सकते हैं।

विकासशील दुनिया में, महिलाओं की हीनता तथा जैविक अनुपयुक्तता के लिए शिक्षा, अवसरों तथा अन्य सुविधाओं की कमी जिम्मेदार है। इन प्रतिबंधों ने पुरुषों को मानव समाज में लिंग और उसके प्रतिपादन पर लिखित, प्रचारित और व्याख्यान का संरक्षक बना दिया है। इतिहास भी पुरुषकेंद्रित नजरिये से दर्ज हुआ है, जिनमें नारी जाति को नजर अंदाज किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य ने इस विश्वास को अवतरित किया है कि पितृसत्ता इतिहास का

NOTE

अनिवार्य और अपरिहार्य तथ्य है, इसीलिए लिंग समानता के लिए चलित संघर्ष विफलता की ओर बढ़ रहे हैं। महिला शिक्षा को हम शोध तथा छात्रवृति में सम्मिलित होने की काबिलियत से जोड़ सकते हैं, जोकि वर्तमान पुरुषकेंद्रित धारणाओं के समक्ष एक विकल्प है। बहुत विद्वानों ने यह सुझाव दिया है कि पितृसत्तात्मक प्रणाली भले ही सार्वभौमिक हो सकती है, परन्तु यह अपरिहार्य नहीं है और लिंग समतावाद कुछ संस्कृतियों में जीवन का एक ऐतिहासिक तथ्य परिवार के सदस्यों की आवश्यकताएं और बच्चों की निरंतर निगरानी के प्रति विशेष देखभाल करना भारतीय गृहस्थी में पूर्व लिखित क्रियाओं को पूरा करने के लिए कौन जिम्मेदार है? ज्यादातर और निश्चित रूप से भारतीय समाज की गृहस्थियों में महिलाएं हीं इन उपरोक्त कार्य के लिए जिम्मेदार हैं। इन कार्यों को घरेलू काम या घर का कामकाज कहा जाता है। इस बात पर आश्चर्य नहीं होगा कि इन उपरोक्त कार्यों को किसी प्रकार से आर्थिक या सामाजिक परिप्रेक्ष्य के कार्यों की तरह नहीं देखा जाता है। यह मान लिया जाता है कि वे कार्यों का एक ऐसा समूह है, जिसके लिए किसी गृहस्थी की महिलाएं हीं प्राकृतिक रूप से जिम्मेदार हैं। यह देश सकल घरेलू उत्पाद में किसी प्रकार से आंकलित नहीं होता है। भारत में जी.डी.पी. को एक निश्चित अवधि उत्पादित सामान तथा सेवाओं के योग से निकला जाता है।

इस विश्वास के साथ कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं की अवस्था तुच्छ है, नकारात्मक छवि के कार्यभार लिंगवाद में बदल सकते हैं। पुरुष लैंगिकता के नकारात्मक परिणामों से प्रतिरक्षित नहीं है, परन्तु महिलाएं इसे ज्यादा अनुभव इसलिए करती हैं, क्योंकि वे जिस अवस्था समूह को पाती थीं, पुरुषों की तुलना में वह अधिक कलंकित होता था। उदाहरण के लिए, पुरुषों की तुलना में महिलाएं ज्यादातर उन अवस्थाओं को प्राप्त करती हैं, जिनमें कम

नोट

शक्तियां, कम इज्जत और कम भुगतान या कोई भुगतान नहीं होता है। जैविक पहलुओं के कारण हीनता से संबंधित मान्यताओं को मानव समाज में मजबूती प्रदान की जा रही है और महिलाओं के प्रति भेदभाव को साबित करने के लिए उसका उपयोग हो रहा है। लैंगिकता, पितृसत्तात्मक प्रणालियों और पुरुषप्रधान सामाजिक संरचनाओं के द्वारा अवतरित है, जो महिलाओं के उत्पीड़न के लिए दोषी है। परिभाषा के द्वारा, पितृसत्ता पुरुष केन्द्रीयता दर्शाता है, जो पुरुष केंद्रित और मानदंडों को सामाजिक संस्थानों में परंपरागत रूप से चला आ रहा है, जोकि एक ऐसा मानदंड बन गया है, जिसका पालन सभी मनुष्य करते हैं। तद्नुसार, लिंगवाद दृढ़ तब होता है, जब पितृसत्ता और पुरुष केन्द्रीयता को उन अवधारणाओं के अवतरित करने के लिए मिलाया जाता है, जिसमें लिंग भूमिकाओं को जैविक रूप से पता लगाया जाता है और इसीलिए किसी दिए गए ढांचे में यह बदले नहीं जा सकते हैं।

विकासशील दुनिया में, महिलाओं की हीनता तथा जैविक अनुपयुक्तता के लिए शिक्षा, अवसरों तथा अन्य सुविधाओं की कमी जिम्मेदार है। इन प्रतिबंधों ने पुरुषों को मानव समाज में लिंग और उसके प्रतिपादन पर लिखित, प्रचारित और व्याख्यान का संरक्षक बना दिया है। इतिहास भी पुरुषकेंद्रित नजरिये से दर्ज हुआ है, जिनमें नारी जाति को नजर अंदाज किया गया है। इस परिप्रेक्ष्य ने इस विश्वास को अवतरित किया है कि पितृसत्ता इतिहास का अनिवार्य और अपरिहार्य तथ्य है, इसीलिए लिंग समानता के लिए चलित संघर्ष विफलता की ओर बढ़ रहे हैं। महिला शिक्षा को हम शोध तथा छात्रवृति में सम्मिलित होने की काबिलियत से जोड़ सकते हैं, जोकि वर्तमान पुरुषकेंद्रित धारणाओं के समक्ष एक विकल्प है। बहुत विद्वानों ने यह सुझाव दिया है कि पितृसत्तात्मक प्रणाली भले ही सार्वभौमिक हो सकती है, परन्तु

NOTE

यह अपरिहार्य नहीं है और लिंग समतावाद कुछ संस्कृतियों में जीवन का एक ऐतिहासिक तथ्य था तथा अन्य के जीवन में समकालीन तथ्य है।

जैविक दृष्टिकोण

19वीं सदी के आखिरी और 20वीं सदी के आरंभ में समाजशास्त्र के कई विद्वानों ने माना कि बौद्धिक, भावनात्मक और नैतिक क्षमताओं में पुरुष और महिलाएं स्वाभाविक रूप से अलग और असमान थे। ब्रिटिश समाजशास्त्री हरबर्ट स्पेंसर ने एक उदार नारीवादी के रूप में अपना कार्य शुरू किया और यहां तक अपने प्रारंभिक कार्यों में महिलाओं के अधिकारों पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि पुरुषों और महिलाओं के बीच केवल एक 'तुच्छ मानसिक भिन्नता नहीं थी। हालांकि, बाद में उन्होंने सामाजिक डार्विनवाद को गले लगा लिया और यह मांग की कि जीव-विज्ञान पुरुषों और महिलाओं के बीच महत्वपूर्ण अंतर के बारे में बतलाए। उन्होंने कहा कि न्याय और तर्कक्षमता महिलाओं में कम होती है इसलिए महिलाओं को न्यायाधीशों की तरह तर्क करने की क्षमता अपने पति और बच्चों की देखभाल करने में लगाना हमारे जीवन के लिए जरूरी है। उन्होंने यह भी कहा कि महिलाओं को स्वाभाविक रूप से एक शक्तिशाली आदमी की सुरक्षा के अधीन होना पसंद है। कॉम्टे के अनुसार, महिलाएं अपनी भावनात्मक और आध्यात्मिक श्रेष्ठता की वजह से परिवार और घरेलू जीवन के लिए उपयुक्त हैं। वे "सदा शैशव" में रहती हैं और पुरुषों को बौद्धिक रूप से नीचा कर रही हैं, इसीलिए महिलाएं किसी भी अन्य भूमिका के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

इसी तरह, दुर्खीम, महिलाओं की सामाजिक अधीनता को समझाने के लिए जैविक कारकों की बात भी करते थे। दुर्खीम मानते थे कि शादी जैसी संस्था में आवश्यक सुधार की जरूरत है और विवाहित महिलाओं को नुकसान, अविवाहित पुरुषों की तुलना में कम है। क्योंकि उनकी सामाजिक जरूरतें

नोट

कम हैं। लिंग के बीच श्रम के विभाजन पर सिद्धांत लिखते हुए दुर्खीम ने भी लिंग पर चर्चा की थी। दुर्खीम लिंगो और इस तरह "वैवाहिक एकजुटता के बीच श्रम विभाजन की अधिक विशेषज्ञता में लैंगिकता: सामाजिक निर्माण विश्वास करते थे।

मार्क्सवादी दृष्टिकोण

मार्क्सवादी विश्लेषित तर्क ने सामाजिक जीवन की लैंगिक व्यवस्थाओं से उत्पन्न असमानता पर चर्चा की है। यह तर्क परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति में पहले फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा प्रस्तावित किया गया था। एंगेल्स के तीन चरणों, जिनमें से प्रत्येक का वर्णन हुआ था, शादी के तीसरे चरण के दौरान विकसित लिंगों के बीच असमानता को सुनिश्चित करने के लिए महिलाओं पर जोर डाल दिया गया था, क्योंकि संपत्ति का उत्तराधिकार समुचित पितृत्व के आधार पर था। पूंजीवाद के उन्मूलन के लिए मार्क्सवादियों ने उत्तराधिकार को चिंता का विषय बताया है, तथा इस पर जोर दिया है कि असमानता समाप्त होने पर पूंजीवाद खत्म हो सकता है। मार्शल जनजातियों से संक्रमण का वर्णन कृषि समाज को पितृसत्तात्मक करने के लिए था, जबकि अपने सामान्य आर्थिक इतिहास में जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर, एंगेल्स के सिद्धांत भी सहयोजित थे। वेबर के अनुसार, इस संक्रमण के माध्यम से, महिलाओं की स्थिति में गिरावट आई है और एक परिवार के भीतर श्रम के विभाजन में वृद्धि हुई है। वेबर के लिए, एक मंच से दूसरे में संक्रमण अर्थशास्त्र का केवल एक सवाल नहीं था, बल्कि यह धर्म और 'जादू" का सवाल भी था। वेबर के लिए, समाज में परिवर्तन एक पुरुष संबंधी घटना थी। हालांकि, महिलाओं में ऐतिहासिक परतंत्रता और लैंगिक असमानता मौजूद है, वे इस बारे में किसी प्रकार की जानकारी देने में नाकाम रहे।

NOTE

अमेरिकी समाजशास्त्री टेल्कोट पार्सन्स ने भी परिवार, समाजीकरण और बातचीत की प्रक्रिया पर लिखा था। पादरी महिलाओं को पुरुषों की तुलना मकाफी कम की स्थिति में समान वर्ग की स्थिति में रखते थे। महिलाओं को रोजगार के अवसरों से वंचित किया गया है और यह कहा कि समाज में उन महिलाओं को संकुचित कर दिया गया, जो एक मां, पत्नी और कर्मचारी की भूमिका का गठबंधन करना चाहती थी। पार्सन्स ने, महिलाओं को 'गृह प्रबंधन के लिए स्वयं को प्रतिबंधित करने के लिए मजबूर किया था। हालांकि, पादरी ने यह चर्चा की है कि घर के कामकाज के लिए विकल्प भी समस्या ग्रस्त थे। पादरी के विचार थे कि महिलाएं श्रम बल में पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकती हैं, लेकिन माना जाता है कि ऐसी स्थिति गहराई से परिवार के ढांचे में परिवर्तित होती है।

कुछ विद्वानों ने पादरी के विचार का विरोध किया था, परन्तु इसका मतलब यह नहीं था कि परिवार के ढांचे में व्यापक बदलाव के लिए उन्होंने कुछ नहीं कहा। वह केवल भारी संख्या एवं बाहरी श्रम बल में शामिल होने और विवाहित महिलाओं के परिणाम की ओर इशारा कर रहे थे। इसके अलावा, पादरी महिलाओं के द्वारा समाज में झेले जा रहे विषमताओं से बोधगम्य थे, चाहे उनके किसी भी सिद्धांत की व्याख्या हो। 1950 और 1960 के दशक से, कई समाजशास्त्रियों ने व्यापक संख्या में श्रम में शामिल होने से महिलाओं को परिवार प्रणाली में स्वास्थ्य और बच्चों की उचित समाजीकरण संकट की चेतावनी दी थी।

9.4 लैंगिक भेदभाव अर्थ, उत्पत्ति एवं विकास

लिंग महिला-पुरुष का सामाजिक वर्गीकरण है। यह पुरुष और महिला के बीच समाज द्वारा स्थापित अंतर है। इसलिए समाज की विभिन्न प्रथाओं को,

नोट

जो पुरुष और महिला के बीच अंतर करती हैं, महिला-पुरुष भेदभाव की संज्ञा दी जा सकती है। किसी पितृसत्तात्मक समाज में, जो प्रायः विश्व के सभी भागों में प्रचलित है, महिला-पुरुष भेदभाव एक आम बात है। वह जाति हो या वर्ग, वंश अथवा नृजाति, महिलाएं हर जगह सर्वाधिक उत्पीड़ित प्राणी हैं। महिला-पुरुष भेदभाव मुख्यतः शासक और शासित का संघटन है। प्रचलित विचार है कि कुछ लोग बृहत्तर बुद्धि जैसी कुछ विशेषताओं के साथ जन्म लेते हैं, और उन्हें जन्म से ही श्रेष्ठ माना जाता है, जबकि महिलाएं अधीनस्थ प्राणी हैं।

नारीवादी मानव विज्ञानी सिमोन दे बोउवार की टिप्पणी ठीक ही है कि स्त्री जन्म नहीं लेती बल्कि गढ़ी जाती है। यह पंक्ति पूर्णतः स्पष्ट कर देती है कि यह शिशु पालन की प्रथा है जो एक महिला को निरंतर याद दिलाती रहती है कि उसे कपड़े पहनना, खाना खाना, गाना, हंसना, बात करना और सारे कार्य उसी तरह से करने चाहिए जैसा कि समाज उससे चाहता हो।

यदि महिलाएं कामकाजी हों, तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि उन्हें घर पर काम नहीं करना है। वे घरेलू काम के प्रति उत्तरदायी हैं। इस दोहरे बोझ के बावजूद, महिलाओं को वह प्रतिष्ठा और सम्मान नहीं दिया जाता जिसकी वे हकदार हैं। इस तरह, कहा जा सकता है कि इन समस्याओं का मूल कारण पितृसत्तात्मक समाज है।

महिला-पुरुष भेदभाव तब होता है जब एक को दूसरे से बेहतर माना जाए और जाति, वंश लिंग, रंग और मत जैसे उनके जन्मजात गुणों में अंतर किया जाए। यह भेदभाव शिक्षा दिलाने, संपत्ति के अधिकार, आने-जाने, निर्णय निर्माण, अधिकार आदि के आधार पर हो सकता है। महिला भेदभाव की जड़ लोगों की सोच में है। कई लैंगिकता : सामाजिक निर्माण रूढ़िवादी धार्मिक लोग बालिकाओं को उनके घरों से बाहर जाने की अनुमति नहीं देते।

NOTE

जो लोग सामाजिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं के प्रबल समर्थक होते हैं, वे विधवाओं को पुनर्विवाह की अनुमति नहीं देते।

भारतीय समाज में महिला-पुरुष भेदभाव एक आम बात है। लड़कियों की पसंद महत्वपूर्ण नहीं मानी जाती। भारत के कई हिस्सों में लड़कियां शिक्षा के अधिकार से वंचित हैं और अगर उन्हें स्कूल भेजा भी जाता है, तो लड़कों की शिक्षा और प्रगति को अधिक महत्व दिया जाता है। लड़कियों से घरेलू कामकाज में हाथ बंटाने, छोटे भाई-बहनों की देखभाल करने आदि की आशा की जाती है।

महिला-पुरुष भेदभाव में अब बदलाव आने लगा है। स्कूलों और कॉलेजों में अधिक से अधिक लड़कियों का दाखिला हो रहा है। महिला कामगार संगठित और असंगठित क्षेत्रों में देखी जा सकती हैं।

महिला-पुरुष भेदभाव के कारण-

लैंगिक भेदभाव के कुछ कारण इस प्रकार हैं-

शैक्षिक पिछड़ापन जाने-माने जनसांख्यिकीविद सोनल दे देसाई का मानना था कि बेटियों की पढ़ाई-लिखाई के प्रति माता-पिता की उदासीनता की जड़ें महिलाओं की स्थिति में हैं। माता-पिता अपनी बेटियों को शिक्षा नहीं दिलाने के कई कारण बताते हैं। सबसे पहला विचार यह है कि लड़कियों की शिक्षा से माता-पिता को कोई लाभ नहीं मिलता और दूसरा यह कि उनके भविष्य में कार्यों को, मुख्यतः जनन संबंधी और प्रायः खेती मजदूरी समेत होने के कारण, औपचारिक शिक्षा की कोई जरूरत नहीं है।

जाति व्यवस्था: जाति व्यवस्था एक अति प्राचीन प्रणाली है जिसकी अब कोई प्रासंगिकता नहीं रह गई है। जाति का अदर्शन एक भ्रांति है। जाति व्यवस्था आधुनिक भारतीय समाज और राजनीति का एक हिस्सा है। लिंग,

नोट

धर्म और अन्य विषयों के साथ इसकी पारस्परिक क्रियाएं इसे कई सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं में, और इन प्रक्रियाओं पर इसके प्रभाव में एक निर्णायक कारक बनाती हैं। जाति व्यवस्था के बने रहने में जाति और लिंग के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है। लिंग और जाति दोनों के बीच संबंध है और दोनों एक-दूसरे को आकार देते हैं। क्लॉद लेवी स्त्रास के अनुसार, सच्च्वा और सगोत्र विवाह (जाति के भीतर विवाह) मानव समुदाय की सीमाओं से परे विवाह की संभावना को मान्यता देने से महज इनकार करना है। यहां तक कि एक तरफ उच्च वर्ग की महिलाओं का पुनर्विवाह वर्जित और वहीं इसके विपरीत कभी-कभी निम्न जाति की महिलाओं से सहवास मान्य था। श्रम विनियोग की एक प्रणाली के रूप में जाति व्यवस्था के विशाल तर्काधार ने अन्य ऊंची जातियों के प्रयोजनों को प्रोत्साहित करने के लिए महिला-पुरुष संहिताओं को आकार दिया है।

दलित समुदायों, अनुसूचित जाति (जनसंख्या का 15 प्रतिशत) और अनुसूचित जनजाति (7 प्रतिशत) आज भारत में सबसे बड़े और निम्न जाति के सर्वाधिक जाने-माने समूह हैं। शोधों से पता चलता है कि इन समूहों में गरीबी की दर अभी भी अन्य समूहों के लोगों की तुलना में स्पष्टतः अधिक है। किंतु, इन समूहों में महिलाओं की स्थिति उल्लेखनीय है। दलित समुदायों में राष्ट्रीय जनसंख्या लैंगिकता की तुलना में लड़कियों का सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) नाम मात्र के लिए कम है, और लड़कों और लड़कियों के जीईआर के बीच अंतर नगण्य है, जबकि जनसंख्या के अन्य वर्गों में यह अंतर स्पष्ट है। इन समूहों में श्रम शक्ति में महिलाओं की भागीदारी दर भी उच्चतर है और इस तरह उनके पूरी तरह से घरेलू काम में ही उलझे रहने की संभावना कम है, हालांकि उनका रोजगार नैमित्तिक श्रम में निहित है। इन समुदायों में महिलाओं की स्थिति पर उनकी उच्चतर आर्थिक

NOTE

उत्पादकता के प्रभावों को अच्छी तरह से समझने के लिए, खास कर यह देखने के लिए कि इससे उनकी निर्णय निर्माण की क्षमता में वृद्धि होती है या नहीं, और शोध होना चाहिए। इन समुदायों के अंतः समुदायों और घरेलू प्रक्रियाओं पर शोध का भी अभाव है, जिससे उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति का परिमाण निर्धारण और मूल्यांकन कठिन होता है।

धार्मिक मान्यताएं धर्म भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग है और हाल में यह भारतीय राजनीति का एक वर्धमान हिस्सा बन गया है। धर्म से महिलाएं विशेष रूप से प्रभावित हैं। धार्मिक परंपरा के वाहक के रूप में देखी जाने वाली इन महिलाओं की सार्वजनिक और निजी भूमिकाओं पर अक्सर धर्म के नाम पर प्रतिबंध होते हैं। महिलाओं को अक्सर शिक्षा प्राप्त करने या आर्थिक रूप से उत्पादक होने से हतोत्साहित किया जाता है। युवावस्था की पहली सीढ़ी से ही उन पर विवाह के बहुत अधिक दबाव रहते हैं (खास कर ग्रामीण क्षेत्रों में); और धर्मों के भीतर पुरुषों के प्रति पूर्वाग्रह इस बात के उदाहरण हैं कि धर्म महिलाओं के विकास को कैसे प्रभावित कर सकता है। महिलाओं के धार्मिक समुदायों में उनकी भूमिका को समझना उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति के हेतुक (प्रेरणात्मक) एजेंटों को समझने और उनकी जरूरतों को पूरा करने हेतु प्रयास कार्यक्रम तैयार करने दोनों के लिए जरूरी है।

स्वीडन की सामाजिक प्रजातांत्रिक डेमोक्रेटिक राजनीतिज्ञ अन्ना मारिया लिंद का कहना है कि ग्रामीण क्षेत्रों में भारत की आबादी अभी भी पारंपरिक जीवन व्यतीत करती है। धार्मिक कानून और परंपराएं आज भी कई लोगों के, विशेष रूप से महिलाओं के जीवन का निर्धारण करती हैं। इसके बावजूद कि महिलाओं को पहले से ही जमीन और संसाधनों पर अधिकार है, सामाजिक और धार्मिक कारक परिवार के भीतर गांठ उत्पन्न

नोट

होने से रोकने के लिए कई महिलाओं को इस अधिकार से दूर रहने को विवश करते हैं। भारत में समाज के सभी वर्गों में बेटे के जन्म को प्राथमिकता दी जाती है, जो लड़कियों के लिए उनके जीवन पर्यंत मानदंड तय कर देता है। पुरुषों की तरह, महिलाएं भी परिवार में और राष्ट्र के विकास में एक महती भूमिका निभाती हैं। किंतु उनके योगदान को पुरुष प्रभावी समाज में मान्यता नहीं दी जाती।

भारतीय परिवार में महिलाओं की स्थिति-

विवाह दो पक्षों के बीच एक समझौता है। सामान्यतः, यह समझौता उल्लिखित शर्तों के अधीन होता है और इन शर्तों को दोनों पक्ष राजी-खुशी से स्वीकार करते हैं। विवाह एक समझौता है किंतु एकदिशीय है जहां वर पक्ष अपनी शर्ते रखता है और दूसरे, यानी वधू पक्ष को उन्हें मानना पड़ता है, उनकी पसंद और स्वीकृति के परे। विवाह समझौते की शर्तों को मानने से मना करने की स्थिति में परिवार में महिलाओं को जब-तब प्रताड़ित किया जाता है। ऐसी कोई प्रथा नहीं है कि महिला पक्ष विवाह समझौते में अपनी शर्तें रखे। यह पक्षपात भारतीय परिवारों में निरंतर बना हुआ है और सभी तबकों में महिलाओं के शोषण का पक्षधर है। महिला की शिक्षा और मार्गदर्शन भी इस स्थिति में योगदान करते हैं। खास कर उनका परिधान उनकी कमजोरी में एक अहम भूमिका निभाता है। युगों से चली आ रही महिलाओं की कमजोरियों के कुछ कारणों का संक्षिप्त विवरण यहां प्रस्तुत है:

- महिलाओं को उत्पादन का एक साधन माना जाना
- पुरुष पक्षपात
- उत्तम परिधान एवं पहनावा
- सामाजिक दबाव

NOTE

- जाति आधारित भेदभाव और सामाजिक वर्जनाएं
- फलप्रद संसाधनों की अपर्याप्त सुलभता
- गरीबी
- उन्नति की अपर्याप्त सुविधाएं
- आर्थिक दुर्बलता

9.5 लैंगिक अध्ययन ऐतिहासिक विकास

ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से लैंगिक अध्ययन के अंतर्गत नारीवाद का वैश्विक विचार इस विश्वास को संदर्भित करता है कि पुरुषों और महिलाओं को सभी अवसरों, उपचार, सम्मान और सामाजिक अधिकारों में समान रूप से उन्हें योग्य समझा जाए। साधारणतः नारीवादी ये होते हैं, जो लिंग भेद के आधार पर सामाजिक असमानता को पहचानते हैं और ऐसी घटनाओं को होने से रोकते हैं। नारीवादी यह बताते हैं कि इतिहास की सभी संस्कृतियों में महिलाओं की तुलना में पुरुषों को अधिक अवसर प्राप्त हुआ है। नारीवाद के कुछ प्रकार हैंः सांस्कृतिक नारीवाद कट्टरपंथी नारीवाद, समाजवादी नारीवाद और उदारवादी नारीवाद।

1870 के दशक से यह प्रत्यक्ष है कि बहुत सारे नारीवादी शोधकर्ता एक ऐसे सिद्धांत का विकास करने में लगे थे, जो महिलाओं के उत्पीड़न की व्याख्या करने में सहायता कर सकता था, जोकि सूचित कर सकता था कि उत्पीड़न का विरोध कैसे किया जा सकता था, तथा उसे चुनौती कैसे दी जा सकती थी? 1880 के दशक के उत्तरार्ध के दौरान, कई शोधकर्ता और सिद्धांतकार सदियों से महिलाओं की अधीनता के स्पष्टीकरण से दूर हो गए और प्रासंगिक जैसे कई विशेष मुद्दों के साथ समस्याओं का विश्लेषण करने लगे थे। ऐसे विश्लेषण या तो नीतिकारों के लिए, नहीं तो कार्यकर्ताओं के

नोट

लिए थे, लेकिन कभी-कभी यह मुख्य रूप से शैक्षिक दर्शकों की जरूरतों को भी पूरा करता था, जैसा कि हमने भारतीय मामलों में अधिकांशतः देखा है। नारीवाद से संबंधित अनुसंधान और उसके प्रकाशन का काफी विस्तार हुआ और इसके लिए काफी हद तक विभिन्न महिला अध्ययन कार्यक्रमों का सरकार द्वारा भारत के विभिन्न भागों में वित्तपोषित किया गया था। 1880 के दशक तक भारत में कट्टरपंथी नारीवाद ने इस व्यापक श्रेणी में बहुत विभिन्न दिशाओं में फैलाए गए पुरुषों और महिलाओं के बीच मतभेदों पर इस दौरान बहुत जोर दिया गया, तथा पारम्परिक रूप से महिलाओं से जुड़ी विशेषताओं की सकारात्मक पहलुओं की पहचान पर जोर दिया गया। कुछ कट्टरपंथी नारीवादियों ने नारीवाद की आलोचना को काफी गंभीरता से लिया और नस्लवाद, वर्ग उत्पीड़न और साम्राज्यवाद के मुद्दों को पितृसत्ता के विश्लेषण में शामिल किया।

महिलाओं और लैंगिक विकास के कार्य से जुड़े मुद्दे को समझने के लिए लिंग आधारित सैद्धांतिक ढांचे के साथ विकास की सम्पूर्ण समझ आवश्यक है। सैद्धांतिक ढांचे मूलतः मौलिक समस्याओं को सुलझाने का आकार लेते हैं, इसलिए लिंग के अध्ययन और नारीवादी अनुसंधान के लिए एक आवश्यक पहलू हैं। विकास के सिद्धांतों के उल्लेख की शुरुआत पश्चिमी देशों से हुई थी और भारतीय परिप्रेक्ष्य में इसका परीक्षण नए सिरे से परिभाषित करने की आवश्यकता है। हालांकि, सभी स्तरों पर हिस्सेदारी धारक पर आलोचना तथा बहस की महत्व ए पूर्ण विधि की शुरुआत करने से पहले हमें मूल सैद्धांतिक ज्ञान की आवश्यकता होनी चाहिव्यक्तिगत और संगठनीय स्तर पर बहुत से गैर-सरकारी संस्थान लिंग समानता के क्षेत्र में बहुत लम्बे समय से काम करते आ रहे हैं। स्थानीय तथा अंतर्राष्ट्रीय महिला संगठनों की सभी विकासशील देशों में लंबे समय तक मौजूदगी रही है।

NOTE

उनकी मौजूदगी पहले विकास से जुड़े कार्यों से है, जिससे अंर्तराष्ट्रीय नारीवाद की लहरों के साथ संघर्ष के विभिन्न कालों का वर्णन करता है। तीसरी दुनिया के नेताओं के साथ पश्चिमी विकास विशेषज्ञों ने यह धारणा बनाई कि पश्चिम की विकास नीतियां तीसरी दुनिया की नाजुक अर्थव्यवस्थाओं को बेहतर भविष्य की ओर ले जाएंगी। कुछ लोगों ने यह सवाल भी उठाया कि क्या इस समृद्धि से सभी वर्गों, जातियों और लिंग के समूहों के लिए समान रूप से विस्तार होगा?

वे समूह महिलाओं की व्यावहारिक, जरूरतों और उनके रणनीतिक हितों के लिए समय-दर-समय प्रयासरत थे। इनकी वास्तविक आवश्यकताएं घर के दैनिक कार्यों जैसे बच्चों तथा स्वयं की देखभाल से जुडी हैं, जबकि सामरिक लिंग हितों का जुड़ाव बदलते हुए लिंग संबंधों से होता है। यह दृष्टिकोण नारीवादियों के जमीनी संगठनात्मक अनुभवों तथा लेखनों से उभरा है और स्पष्ट रूप से सामाजिक समूहों द्वारा व्यक्त किया गया है। लैंगिक अध्ययन लिंग के संबंध में महिलाओं की स्थिति कक्षा और अध्ययन सामग्री की जांच पर केंद्रित होने के साथ-साथ उन पितृसत्तात्मक ढांचे और अवधारणाओं पर भी केंद्रित है, जो पुरुषों के समक्ष महिलाओं की अधीनता को परिभाषित तथा अनुरक्षण करते हैं। लैंगिक अध्ययन का मुख्य केंद्र ना केवल महिलाओं पर है, बल्कि महिलाओं और पुरुषों के बीच सम्बन्धों के विश्लेषण पर भी है। लिंग सम्बन्ध समाज में महिला प्रतिष्ठा और स्थिति का प्रमुख निर्धारक है। यह केवल प्राकृतिक व्यवस्था के अपरिवर्तनीय प्रतिबिंब के रूप में ही नहीं है, बल्कि व्यावहारिक और सामाजिक रूप से निर्मित प्रतिमान के रूप में भी हैं, जिसमें यदि उस दिशा में कार्य किए जाए, तब लिंग के सामाजिक निर्माण को बदला जा सकता है।

उदारवादी नारीवाद को जिसे समानतावादी या मुख्यधारा नारीवाद भी

नोट

कहते हैं, नारीवाद की सर्वाधिक सामान्य शाखा समझा जाता है। यह साधारण वाक्य पर आधारित है कि सभी लोग बराबर बनाए गए हैं और लिंग के कारण अवसर की समानता से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। क्योंकि लैंगिकवाद के उन्मूलन से दोनों स्त्री पुरुष लाभ उठाते हैं, पुरुष पंक्ति में समाहित किए जाते हैं। उदार नारीवाद विवेक, शिक्षा, स्व-अधिगम प्राकृतिक अधिकारों के ज्ञानोदय विश्वासों पर आधारित है जो सभी स्त्री पुरुष को बढ़ाता है। यह जॉन स्टुअर्ट मिल (1869/2002) के 'द सबजेक्शन ऑफ वूमेन' में स्पष्ट रूप से कहा गया कथन है कि जो अब नारी का स्वभाव कहा जाता है यह उत्कृष्ट रूप से बनावटी चीज है कुछ दशा में जबरन उत्पीडन, दूसरों में अस्वभाविक प्रोत्साहन का परिणाम । स्त्रियां बहुलवादी व्यवस्था के अंतर्गत एकसाथ कार्य कर सकती है और अपने घटकों को सकारात्मक असर डालने एवं लाभकारी सामाजिक बदलाव के लिए संगठित कर सकती हैं। मांग पूरी होगी यदि संघटन प्रभावी हो और दबाव निपुणता से प्रबंध किया गया हो (देक्कार्ड, 1983)।

1700 से उदार नारीवाद ने स्त्रियों के नागरिक अधिकारों, शिक्षा, राजनीतिक एवं धार्मिक स्वतंत्रता, व्यक्तिगत पसंद और आत्मनिर्णय पर ध्यान केंद्रित करते हुए उदार राजनीतिक संवाद के अधिकार और कर्तव्य को बढ़ाने के लिए लड़ाई लड़ी है। इसने नागरिक अधिकार कानून में समावेश, शिक्षा तक पहुंच और अवसर की बराबरी अभियान के द्वारा लिंग असमानता को संबोधित किया है। विवेकपूर्ण समझ हर एक के उदार सिद्धांत के लिए निर्धारक विशेषता है। उदारतावाद ने इस प्रकार वंचित लोगों के लिए कानून बनाने, जाति के असमान शक्ति संबंध का संज्ञान, लिंग और स्पर्धा पर ध्यान दिया है जो समाज को बनाती है और समानता के खिलाफ काम करती है।

NOTE

ऐतिहासिक रूप से उदार नारीवाद स्त्रियों के समान अधिकारों के लिए बहस के लिए चिंतित रहा है स्त्रियों के लिए पुरुषों की तरह एकसमान नागरिक अधिकार पाना। समान अधिकार नारीवादियों ने उन कानूनों और परंपरा के खिलाफ लड़ा है जो पुरुषों को अधिकार देती हैं और स्त्रियों को नहीं या जो स्त्रियों की रक्षा के लिए बनाई गई हैं. यह जानते हुए कि महज औपचारिक समानता अपर्याप्त है।

उन लोगों ने स्त्री अधिकारों को कार्यस्थल पर जैसे मातृत्व छुट्टी, वेतन के लिए स्त्रियों के खिलाफ विभेद को गैरकानूनी घोषित करने के लिए कानून पारित करने की भी वकालत की है। स्त्रियां पुरुषों की तरह मनुष्य हैं, उनके पास पुरुषों जैसे समान अपरिहार्य प्राकृतिक अधिकार हैं। स्त्री जाति उसकी ऊंचाई के साथ अप्रासंगिक है, स्त्रियां पूर्ण उपयुक्तता में सक्षम होती है इसलिए पूर्ण मानव अधिकार की हकदार होती है। हालांकि पश्चिमी औद्योगिक समाज में स्त्रियां जाति के आधार पर विभेद की जाती है, यही कारण है कि स्त्रियों पर सामूहिक रूप से बगैर उनके व्यक्तिगत इच्छा, हित, योग्यता और जरूरत के कुछ प्रतिबंध लगाए गए हैं। स्त्रियों को पुरुषों के साथ समान अधिकार से वंचित किया जाता है और सामूहिक रूप से पुरुषों को जो अधिकार मिले हैं उनकी आजादी की अनुमति स्त्रियों को सामूहिक रूप से नहीं दी गई हैं। इसके अतिरिक्त जब पुरुषों का आकलन उनकी व्यक्तिगत खूबियों पर किया जाता है, महिलाओं का आकलन उनके स्त्रीय कौशल के रूप में किया जाता है यही कारण है कि उनके अपने निजी हित के अनुसरण में पुरुषों के समान अधिकारों से वंचित किया जाता है।

समाजशास्त्र में, उदार / सुधारवादी नारीवादियों से सवाल किया गया है कि लिंगों के बीच मतभेद सहज नहीं हैं. लेकिन समाजीकरण का एक परिणाम है, जो 'लिंग-भूमिका अनुकूलन' के रूप में जाना जाता है। पुरुषों की अपेक्षा

नोट

महिलाओं से अलग ढंग से व्यवहार किया जा रहा है और मानव के रूप में अपनी पूरी क्षमता को विकसित करने से महिलाओं को हतोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए। कुछ नारीवादी शोधकर्ता महिलाएं ऐसी भी हैं, जिन्हें अनुसंधान से बाहर किया गया है और उनके साथ भेदभाव और पुरुषों की अपेक्षा अलग ढंग से बर्ताव किया गया है और इसी बात से समाज में महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति का पता चलता है। महिलाओं को बराबर का हक दिलाने के लिए, यह प्रदर्शित करना आवश्यक है कि पुरुष और महिला पूरी तरह से मानव हैं और क्षमताओं में बराबर है। पश्चिमी समाज में पुरुषों और महिलाओं के बीच मतभेद के अलग-अलग प्रकार होते हैं और दोनों लिंगों के साथ सामाजिक अपेक्षाओं से भेदभावपूर्ण कानून होता है।

हालांकि, ना ही एक सुधारवादी स्थिति से सामाजिक अनुसंधान महिलाओं का पता लगाने के अनुभवों और ना ही समाज का पता लगाने के लिए विकसित अवधारणाओं और उपकरणों के उपयोग की चुनौती ने. पुरुषों के दृष्टिकोण को बदला है। क्या प्रमुख मुद्दों पर शोध पर्याप्त रूप से पुरुष की विचारधाराओं को चुनौती देता है? यह महिलाओं के समावेश में तर्क है और इस मुद्दे पर अनुसंधान के लिए नींव है, जोकि अनुसंधान के नमूने का मौजूदा सैद्धांतिक दृष्टिकोण होगा। हालांकि, अनुसंधान में महिलाओं को समान अवसर से इनकार किया जा रहा है और उनके साथ भेदभाव और श्रम का विभाजन किया जा रहा है। इस बात की आवश्यकता है कि लिंग भेद को समझा जाए और ऐसे विचारों को चुनौती दी जाए।

सदियों से, उदार नारीवादियों ने शिक्षा और व्यवसायों, संपत्ति के अधिकार, वोट और अन्य सभी अधिकारों का पुरुषों ने आनंद लिया है। इन क्षेत्रों में अपनी बराबर पहुंच बनाने के लिए अपना अभियान चलाया है। उनके पास समान शिक्षा है और समानता के आधार पर महिलाओं की समानता के

NOTE

लिए अनेक तर्क दिए हैं। महिलाएं तर्कसंगत और सार्वजनिक पदों को प्राप्त करने तथा संपत्ति का प्रबंध करने में पुरुषों के बराबर ही सक्षम हैं। इन तर्कों से, उदार नारीवादियों ने अनिवार्य रूप से यह माना है कि महिलाओं और पुरुषों के बीच मतभेद जैविक हैं तथा निर्धारित या सामाजिक रूप से लैंगिकता में अंतर नहीं होना चाहिए, बल्कि उन्हें मानवता के आधार से देखना चाहिए और समाज को इसके प्रति शिक्षित किया जाना चाहिए। शिक्षा और रोजगार के अवसरों में बराबर संघर्ष करने हेतु महिलाओं को पदों पर रह कर बच्चों की देखभाल भी करनी पड़ती है जिससे महिलाओं को उत्पादन संरचनाओं में दोहरी भूमिका निभाना कुछ कठिन कार्य है, केवल संकट के क्षणों में, उदार लोकतंत्र ने ही इस समस्या पर सार्थक ध्यान दिया है।

उदार नारीवादियों ने लैंगिक असमानता की सीमा का निर्धारण करने के लिए निम्नलिखित रणनीतियों का प्रस्ताव दिया है-

अभिप्रेरण बदलाव के लिए राजनीतिक और कानूनी चैनलों के मौजूदा उपयोग समान आर्थिक अवसर परिवार, स्कूल और बड़े पैमाने पर मीडिया संदेशों में बदलाव।

इस तरह, उदार नारीवादी समाजीकरण के विभिन्न रूपों के बारे में बात करते हैं, जिसमें लिंग भूमिकाएं बराबर हैं। हर व्यक्ति को लैंगिकता की चुनौती देने की कोशिश करनी चाहिए। उदार नारीवादियों के विचार से. आदर्श लिंग व्यवस्था वह है. जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए सबसे उपयुक्त जीवनशैली को चुनता है। उदार नारीवादियों ने समानता के अभ्यास के रूप में इसे आदर्श दिखाने व बढ़ाने का प्रयास किया है।

आलोचना: उदार नारीवाद के क्षेत्र पर आलोचनाएं निम्नलिखित हैं:

नोट

उदार नारीवादी, महिलाओं की समानता तथा संरचनात्मक समस्याओं से निपटने में नाकाम रहे। उदार नारीवादी आलोचनाओं को प्रामाणिक चुनौती देने में विफल रहे। अद्वैतवाद, तर्कसंगत संस्थाओं के रूप में मनुष्य को परिभाषित करता है। मानव का जीवन अपने शरीर और भावनाओं की कीमत पर है, जो जीवन को नियंत्रित करने के लिए जरूरी है। महिलाओं का प्रजनन क्षमता पर नियंत्रण है, इसीलिए संरचनात्मक शक्ति संबंध में उन्हें साथ शोषण और कामुकता को छुपा रहना चाहिए।

उदार नारीवाद के आलोचकों का कहना है कि यह सबसे कमजोर तर्क है कि महिलाओं की कामुकता और प्रजनन शक्ति के अधिकार व्यक्तिगत है।

अपनी प्रगति जाँचे –

1. लैंगिकता का सामाजिक निर्माण से क्या तात्पर्य है?

.....

.....

2.लैंगिकता के सामाजिक निर्माण में परिवार की क्या भूमिका है?

.....

.....

3. विद्यालय लैंगिकता के सामाजिक निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करता है?

.....

.....

9.6 सारांश

NOTE

लैंगिकता विशेष रूप से पुरुषत्व या नारीत्य के पहलू और परिस्थिति को बताने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। उदाहरण के लिए, गुलाबी और नीले रंग पर लैंगिकता की धारणा यह है कि पहला रंग स्त्री के लिए और दूसरा पुरुष के रूप में जाना जाता है। लैंगिकता, महिलाओं और पुरुषों के विभिन्न कार्य के भुगतान से संबंधित है। (आमतौर पर यह भुगतान के काम को विभिन्न प्रकारों को समय पर पूरा करने के लिए दिया जाता है। महिलाएं सुरक्षित एवं कम अवधि के कार्य करती हैं जबकि पुरुष लंबी अवधि के जोखिम भरे भी काम करते हैं, उदाहरण के लिए अस्पताल में महिलाएं तथा उद्योग में पुरुष)। इसी प्रकार कान से संबंधित भुगतान के मामले में पुरुषों और महिलाओं की औसत आय अलग-अलग है। लैंगिकता शब्द को उल्लेख करने का यह अलग तरीका है। लैंगिकता को एक क्रिया के रूप में प्रयोग किया जाता है और इसीलिए लिंग कार्यवाई को अभिव्यक्ति देता है। लिंग का प्रयोग लैगिकरण या लैगिकता के रूप में महिलाओं की सहमति का प्रतिविम्ब बनी हुई है। लैंगिकता पुनः पेश की गई सामाजिक प्रक्रियाओं से महिलाओं और पुरुषों के बीच भेद उत्पादन का एक तरीका है। लैगिकरण और लैंगिकता का प्रयोग उन परिणामों को सूचित करने के लिए किया जाता है, जोकि सामाजिक रूप से निर्माण और दैहिक गतिविधियों को महिलाओं से अधिक पुरुषों को वरीयता देता है।

समाजशास्त्र के अनुशासन की स्थापना करने वाले कुछ विचारकों ने महिलाओं से संबंधित मुद्दों के लिए भाग लेने के लिए लोगों को प्रेरित किया है और यह बौद्धिक, राजनीतिक और सामाजिक उथल पुथल माना गया था. जिसकी लहर नारीवादियों के अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर विरोध आंदोलनों के साथ दिखाई देती थी। इसके बावजूद, इन विचारकों में से ज्यादातर अपनी व्यापक

नोट

बहस से इस बात में एकीकृत थे कि परिवार, मायना और कामुकता के विषय में महिलाओं के मुद्दों से संबंधित तर्क सीमित है। उनके सिद्धांतों के लिए केंद्रीय ढांचे और प्रक्रियाओं को आकार देने के लिए सांस्कृतिक रूप से परिभाषित मर्दानगी का प्रभाव काफी हद तक गैर मान्यता प्राप्त था, जबकि वे तर्क अधिकतर पुरुष प्रधान संरचनाओं के महत्व पर केंद्रित थे। उनके सिद्धांत भी पुरुष प्रधान संरचनाओं के तटस्थ और निहित थे। इस प्रकार, क्या समाजशास्त्र के प्रारंभिक विचारकों के बारे में कहा जा सकता है कि लैंगिक मुद्दों पर विचार की प्रक्रिया परिधीय है कि नहीं? सबसे परे वे कहते हैं कि परोक्ष रूप से उचित लिंग असमानता सिद्धांत तैयार किया गया है।

एक पितृसत्तात्मक परिवार प्रणाली में, परिवार के सदस्य अपने पिता के वंश से पहचाने जाते हैं, जबकि मातृवंशीय परिवार में, पुरुष को आगंतुक और महिला को स्थायी सदस्य माना जाता है। पितृवंशीय परिवार में, बेटा स्थायी सदस्य होता है जबकि बेटी अस्थायी क्योंकि उसे अपने पति के घर में रहने के लिए अपने पिता के घर को छोड़ना पड़ता है। वह अपने पिता के घर कभी-कभी आ जा सकती है।

मातृसत्ता एक सामाजिक सांगठनिक संरचना है, जिसमें मां या फिर सबसे बूढी महिला परिवार की प्रधान होती है। वंश और संबंध का निर्धारण महिला कुल से किया जाता है। किसी महिला या महिलाओं का भी इस पर नियंत्रण या शासन होता है। जहा सामान्य अंग्रेजी में जो परिभाषाएं लागू होती हैं, वहीं मानव विज्ञान की विधाओं और नारीवाद से जुड़ी परिभाषाओं में कुछ संदों में अंतर है।

महिला अध्ययन से लैंगिक अध्ययन अचानक ही नहीं हुआ। यह एक यात्रा है, एक प्रक्रिया है। आज हम लैंगिक अध्ययन को जिस रूप में जानते, समझते या पढ़ते है उसकी नींव दशकों पहले स्त्रीवादी चिंतकों द्वारा ही रखी

NOTE

हुई है। कुछ ऐसे चिंतक भी थे जो स्त्री को तय ढांचे में ही रखना चाहते थे परंतु स्त्रीवादी चिंतकों ने स्त्री की वास्तविक स्थिति को सबके सामने न केवल उजागर किया बल्कि स्त्री को स्वयं अपनी स्थिति सुधारने के लिए प्रेरित भी किया।

अधिकांशतः बचपन से ही लड़के एवं लड़कियों की लिंगाधारित भूमिका निर्धारित कर दी जाती है और फिर अपने जीवन काल में वे उन सदिबद्धता का सामना करते रहते हैं। लड़की के जन्म को ही बुरा माना जाता है। बेटी पैदा होने पर दुख की अभिव्यक्ति की जाती है और भाग्य को कोसा जाता है। दूसरी तरफ लड़के के पैदा होने पर खुशी जाहिर की जाती है और जश्न मनाया जाता है। बेटी के पैदा होने पर मां की भी उपेक्षा की जाती है और उसको अच्छा खान-पान नहीं दिया जाता। ऐसे में उनकी ये निराशा उनकी बेटियों में भी हस्तांतरित होती है। लड़कों को खूब दुलार से पाला-पोसा जाता है और उनका पालन-पोषण भी अच्छे से किया जाता है। दोनों के लिए अलग-अलग तरह के वस्त्र बनाए जाते हैं। यहां तक कि रंगों का चुनाव भी लिंग के हिसाब से किया जाता है। दोनों के खिलौनों में भी बहुत अंतर होता है। लड़कियों को बर्तन, गुड़िया आदि जबकि लड़कों को बंदूकें, गाड़ियां, हवाई जहाज और विडियो रिक गेम जैसे खिलीने दिए जाते है। समाज के प्रमुख अंगों में लैंगिकता, संस्कृति और इनमें संबंधित संस्थाएं प्रमुख है। भारतीय कानून में स्त्रियों के विकास के प्रति अपनी प्रतिवद्धता व्यक्त की है। उनकी बराबरी के लिए अनेक धाराएं तथा उपबन्धों का निर्धारण किया गया है। संविधान में स्त्री-पुरुष में कोई विभेद नहीं किया गया। इस प्रकार कानून ने नियम तो काफी बनाए हुए है। किन्तु उनके पालन में ढील की जाती है। ऐसे में लड़कियों को उनके लिए बनाए गए कानूनों की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। सारांश में कानून के माध्यम से लिग की

नोट

भूमिकाओं में समुचित योगदान दिया जा सकता है।

9.7 शब्दावली

- लिंग: लिंग का अर्थ सामाजिक एवं सांस्कृतिक लिंग से है।
- यौनिकता: यौनिकता से अभिप्राय जैविक लिंग से है।
- लैंगिकता : लैंगिकता सिर्फ एक शारीरिक प्रक्रिया नहीं बल्कि इसके दायरे में राजनीतिक, सामाजिक, कानूनी और धार्मिक संघर्ष भी आते हैं। वैसे तो लैंगिकता में यौनिकता शामिल है, पर इसका दायरा यौनिकता से कहीं अधिक विस्तृत है।
- पितृसत्ता : एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था और विचारधारा जिसके अनुसार पुरुष श्रेष्ठ है।
- नारीवाद : एक ऐसी विचारधारा जो समाज में स्त्रियों की स्थिति एवं उनके साथ होने वाले भेदभाव पर विचार करती है और उनके सशक्तीकरण के लिए प्रयास करती है।
- लैंगिक रूढ़िबद्धता लैंगिक रुदिबद्धता लड़का एवं लड़की की समाज में गढ़ी गई छवियां हैं जो लड़का एवं लड़की को एक विशेष सांचे में ढालती है।
- सशक्तीकरण यह एक अवधारणा है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को विशेषाधिकार एवं किसी कार्य को करने एवं निर्णय लेने की स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाती है।

9.8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

1. लैंगिकता का सामाजिक निर्माण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर: लैंगिकता का सामाजिक निर्माण उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति, मीडिया और सहपाठी समूह व्यक्ति के

NOTE

लैंगिक व्यवहार, भूमिकाओं, पहचान और अपेक्षाओं को प्रभावित करते हैं। यह केवल जैविक अंतर पर आधारित नहीं होता, बल्कि सामाजिक मान्यताओं से भी निर्मित होता है।

2.लैंगिकता के सामाजिक निर्माण में परिवार की क्या भूमिका है?

उत्तर: परिवार बच्चे के प्रारंभिक सामाजिककरण का प्रमुख माध्यम है। परिवार द्वारा दिए गए खिलौने, कार्य-विभाजन, व्यवहार संबंधी अपेक्षाएँ, शिक्षा और करियर से जुड़ी धारणाएँ बच्चों में लैंगिक भूमिकाओं की समझ विकसित करती हैं।

3. विद्यालय लैंगिकता के सामाजिक निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करता है?

उत्तर: विद्यालय पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, शिक्षक के व्यवहार, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों और नेतृत्व के अवसरों के माध्यम से लैंगिक धारणाओं को प्रभावित करता है। समान अवसर और लैंगिक-संवेदनशील शिक्षण सकारात्मक एवं समानतापूर्ण दृष्टिकोण विकसित करता है।

4.मीडिया लैंगिकता के सामाजिक निर्माण को कैसे प्रभावित करता है?

उत्तर: मीडिया फिल्मों, विज्ञापनों, धारावाहिकों और सोशल मीडिया के माध्यम से स्त्री-पुरुष की भूमिकाओं और व्यवहार की छवियाँ प्रस्तुत करता है। रूढ़िवादी चित्रण लैंगिक पूर्वाग्रह को बढ़ा सकता है, जबकि विविध और समानतापूर्ण प्रस्तुति लैंगिक समानता को बढ़ावा देती है।

9.9 सहायक पाठ्य सामग्री – OER

1. Dr. Senllina, Gender Analysis of State Policies: A Case Study of Chhattisgarh.

नोट

2. R. Govinda, Towards Gender Equality in Education: Progress and Challenges in Asia-Pacific Region, National University of Educational Planning and Administration, New Delhi.
3. Bhattacharjee, Nandini (1999), Through the Looking Glass: Gender Socialisation in a Primary School in T.S. Sarswathi (ed). Culture, Socialization and Human Development Theory Research and Applications in India, Sage: New Delhi.
4. Geetha, V. (2007), Gender, Stree: Calcutta.
5. Ghai. Anita (2008) Gender and Inclusive Education at all levels in Ved Prakash & K. Biswal (ed.), Perspectives on Education and Development: Revising Education Commission and After, National University of Educational Planning and Administration, New Delhi.
6. Jeffery. P. and R. Jeffery (1994), Killing My Heart's Desire: Education and Female Autonomy in Rural India. in Nita Kumar (ed.), Women as Subjects: South Asian Histories. New Delhi: Stree in association with the Book Review Literacy Trust: Kolkata, pp 123-171.
7. Ghai Anita (2006), Education in a Globalising Era: Implications for Disable Girls. Social Change, 30(3) pp 161-176.
8. Mehrotra. D.P., India: Sexism and Patriarchy in the

NOTE

Textbooks, Good Girls are submissive and subsidiary, Thursday 22 November 212. South Asia Citizen's Web

9.10 संदर्भ

- NCERT. (2006). Gender, School and Society. New Delhi: NCERT.
- NCERT. (2006). Position Paper: National Focus Group on Gender Issues in Education. New Delhi: NCERT.
- NCTE. (2009). National Curriculum Framework for Teacher Education. New Delhi: National Council for Teacher Education.
- Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: Ministry of Education.
- Connell, R. W. (2002). Gender. Cambridge: Polity Press.
- Butler, Judith. (2006). Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity. New York: Routledge.
- Oakley, Ann. (1972). Sex, Gender and Society. London: Temple Smith.
- Lorber, Judith. (1994). Paradoxes of Gender. New Haven: Yale University Press.
- West, Candace & Zimmerman, Don H. (1987). “Doing Gender.” Gender & Society, 1(2), 125–151.
- Kimmel, Michael S. (2004). The Gendered Society. New York: Oxford University Press.

नोट

9.11 अभ्यास

भाग 1

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)-

प्रश्न 1. समाजशास्त्रीय निर्माण के रूप में लैंगिकता का क्या अर्थ है?

(अ) केवल शारीरिक अंतर

(ब) समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाएँ एवं अपेक्षाएँ

(स) केवल जैविक विशेषताएँ

(द) केवल आर्थिक स्थिति

प्रश्न 2. लैंगिक भेदभाव का प्रमुख आधार क्या है?

(अ) योग्यता

(ब) रुचि

(स) लिंग के आधार पर असमान व्यवहार

(द) शैक्षिक उपलब्धि

प्रश्न 3. लैंगिक भेदभाव को बढ़ावा देने वाला प्रमुख सामाजिक कारक कौन-सा है?

(अ) समान शिक्षा

(ब) रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताएँ

(स) समान अवसर

(द) जागरूकता

NOTE

प्रश्न 4. लैंगिक अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

(अ) केवल महिलाओं का अध्ययन करना

(ब) केवल पुरुषों की सामाजिक भूमिका समझना

(स) लैंगिक संबंधों, असमानताओं और सामाजिक भूमिकाओं का अध्ययन करना

(द) केवल जैविक अंतर का अध्ययन करना

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1.सही उत्तर: (ब) समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाएँ एवं अपेक्षाएँ।

स्पष्टीकरण: लैंगिकता के सामाजिक पक्ष में समाज द्वारा निर्धारित भूमिकाएँ, व्यवहार, मान्यताएँ और अपेक्षाएँ शामिल होती हैं। ये संस्कृति, परिवार, विद्यालय और सामाजिक परिवेश से प्रभावित होती हैं।

2.सही उत्तर: (स) लिंग के आधार पर असमान व्यवहार।

स्पष्टीकरण: जब किसी व्यक्ति के साथ उसके लिंग के आधार पर भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जाता है या उसे समान अवसर नहीं मिलते, तो इसे लैंगिक भेदभाव कहते हैं।

3.सही उत्तर: (ब) रूढ़िवादी सामाजिक मान्यताएँ।

नोट

स्पष्टीकरण: रूढ़िवादी मान्यताएँ लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग भूमिकाएँ निर्धारित कर सकती हैं। इससे शिक्षा, रोजगार और सामाजिक भागीदारी में असमानता उत्पन्न हो सकती है।

4.सही उत्तर: (स) लैंगिक संबंधों, असमानताओं और सामाजिक भूमिकाओं का अध्ययन करना।

स्पष्टीकरण: लैंगिक अध्ययन में समाज में महिलाओं, पुरुषों तथा विभिन्न लैंगिक पहचानों से संबंधित भूमिकाओं, अनुभवों, संबंधों और असमानताओं का अध्ययन किया जाता है। इसका उद्देश्य लैंगिक समानता एवं सामाजिक न्याय को समझना और बढ़ावा देना है।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

1.लिंग व यौनिकता में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

2. लैंगिकता से क्या अभिप्राय है?

3. नारीवाद से आप क्या समझते हैं?

4. लैंगिक पूर्वाग्रह एवं लैंगिक रूढ़िबद्धता के अर्थ स्पष्ट कीजिए।

5. महिला सशक्तीकरण के आशय को स्पष्ट कर इसके विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालिए।

NOTE

इकाई 10
शिक्षक सहपाठी एवं विद्यालयी वातावरण की भूमिका

इकाई की रूपरेखा

10.1- प्रस्तावना
10.2- उद्देश्य
10.3- लैंगिकता एवं कक्षा अभ्यास
10.3.1-छात्रों की क्षमताओं के बारे में शिक्षक की धारणाओं में लैंगिक भूमिका
10.3.2-स्कूली गतिविधियां एवं संस्कृति
10.3.3-कक्षा अभ्यास
10.4- सारांश
10.5- शब्दावली
10.6- अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
10.7- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
10.8- संदर्भ
10.9- अभ्यास प्रश्न

10.1 प्रस्तावना

बालक के व्यक्तित्व, व्यवहार, आत्मविश्वास तथा लिंग-पहचान और लैंगिक भूमिकाओं के विकास में परिवार के साथ-साथ शिक्षक, सहपाठी और विद्यालयी वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। विद्यालय केवल ज्ञान प्रदान करने का स्थान नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का भी प्रमुख केंद्र है। शिक्षक अपने व्यवहार, भाषा और शिक्षण-पद्धति के माध्यम से समानता और सम्मान की भावना विकसित कर सकते हैं। सहपाठी समूह विद्यार्थियों के विचारों, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करता है। इसी प्रकार विद्यालयी वातावरण में पाठ्यक्रम, नियम, गतिविधियाँ, संसाधनों का समान वितरण तथा सभी विद्यार्थियों के प्रति

नोट

समान अवसर लैंगिक समानता को बढ़ावा देते हैं। अतः सकारात्मक और समावेशी विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों में भेदभाव-मुक्त दृष्टिकोण तथा संतुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायक होता है।

10.2उद्देश्य

इस विषय के अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- शिक्षक की भूमिका को समझना तथा यह जानना कि शिक्षक विद्यार्थियों में लैंगिक समानता और सम्मान की भावना कैसे विकसित कर सकते हैं।
- सहपाठियों के प्रभाव को समझना और यह जानना कि peer group विद्यार्थियों की सोच, व्यवहार एवं लैंगिक भूमिकाओं को किस प्रकार प्रभावित करता है।
- विद्यालयी वातावरण की भूमिका का अध्ययन करना, विशेषकर समान अवसर, समावेशन और सुरक्षित वातावरण के संदर्भ में।
- विद्यार्थियों में लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव की पहचान करने की क्षमता विकसित करना।
- शिक्षकों एवं विद्यार्थियों में समानता, सहयोग, सम्मान और संवेदनशीलता की भावना विकसित करना।
- विद्यालय में ऐसा वातावरण विकसित करने के उपायों को समझना, जहाँ बालक और बालिका दोनों को समान अवसर प्राप्त हों।
- विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व, आत्मविश्वास एवं सामाजिक विकास में शिक्षक, सहपाठी और विद्यालयी वातावरण के योगदान को समझना।

10.3 लैंगिकता एवं कक्षा अभ्यास

NOTE

कक्षायी प्रक्रियाएं, विद्यालय का ऐसा अभिन्न अंग है, जिस पर पूरी शिक्षा व्यवस्था की नींव टिकी हुई है। कक्षायी प्रक्रियाएं दिखने में एकदम सहज प्रतीत होती हैं परंतु यदि गहराई से उनका विश्लेषण किया जाए तो किसी भी विषय की कक्षा में ऐसी बहुत सारी बातें होती हैं जिनमें लैंगिक भेदभाव एवं लैंगिक रूढ़िबद्धता निहित होते हैं और साथ ही ये प्रक्रियाएं लैंगिक भूमिकाओं को भी बढ़ावा देती हैं। इन प्रक्रियाओं में पाठ्यपुस्तकों द्वारा शिक्षण, शिक्षक द्वारा करवाई गई विभिन्न गतिविधियां, शिक्षक द्वारा छात्रों से संवाद के लिए प्रयुक्त की गई भाषा, विभिन्न कार्यों में विद्यार्थियों की भागीदारी, मॉनिटर की भूमिका आदि शामिल है। एक शिक्षक को स्वयं सभी लिंगों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। शिक्षक कक्षा में किस प्रकार संतुलन बनाए रख सकते हैं इसके लिए कुछ सुझाव नीचे दिए गए हैं-

लड़के एवं लड़कियों का विभाजन प्रारम्भिक स्तर पर अलग-अलग कक्षाओं में न करें। ऐसा करने से लड़के एवं लड़कियों में सहयोग की एवं साथ-साथ काम करने की भावना नहीं पनप पाती। ऐसे में उनके बीच का लिंग भेद और गहरा सकता है। बेहतर यही होगा कि कम से कम प्राथमिक स्तर तक सह शिक्षा दी जाए जिससे उनमें आपसी सहयोग एवं समानता के मूल्य का विकास किया जा सके।

- लड़के एवं लड़कियों को अलग-अलग न बैठाकर एक साथ बैठने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। रोल नंबर के हिसाब से भी बैठाया जा सकता है।
- कक्षा को छात्रों के लिए आरामदायक स्थान बनाया जाना चाहिए। ब्लैक बोर्ड सबको दिखे बैठने के लिए ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए।

नोट

- कक्षा में दर्शाए जाने वाले सामान या पोस्टर ऐसे न हों जो लैंगिक भेदभाव को दर्शाते हो। सभी विद्यार्थियों द्वारा बनाए गए पोस्टर बिना किसी भेदभाव के लगाए जाने चाहिए। कक्षा में कोई भी गतिविधि करवाते हुए लैंगिकता किसी प्रकार की बाधा नहीं। होनी चाहिए।
- प्रत्येक कक्षा में दो मॉनिटर होने चाहिए-एक लड़का एवं एक लड़की। किसी भी सह शिक्षा की कक्षा में यह आवश्यक है। यदि किसी एक को (सिर्फ लड़का या सिर्फ लड़की) कक्षा का मॉनिटर बनाया जाता है तो दूसरे लिंग के प्रति भेदभाव की संभावना हो सकती है। इसलिए इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए।
- सामूहिक क्रियाकलाप एवं खेलकूद के लिए मिले-जुले समूह बनाए जाए। लड़के एवं लड़कियों के खेलों का बंटवारा न किया जाए। अक्सर देखा गया है लड़कियों को टेनिस और खो-खो जैसे खेल खेलने को कहा जाता है जबकि लड़कों को क्रिकेट, फुटबाल आदि। यह साफ दर्शाता है कि किस प्रकार खेल कूद जैसी साधारण सी दिखने वाली प्रक्रिया में भी लैंगिक भेदभाव छुपा हुआ है।
- लड़कों एवं लड़कियों, दोनों को ही कक्षा में पढ़ने, सुनाने और बोलने के समान अवसर दें जिससे वे अपने विचारों को उन्मुक्त रूप से प्रकट कर सकें। अक्सर देखा गया है कि कक्षा में किसी एक लिंग की सहभागिता अधिक होती है। ऐसे में दूसरा लिंग अलगाव महसूस करने लगता है। शिक्षक को इस बात का खास तौर पर ध्यान रखना चाहिए कि कक्षा में सभी वर्ग, लिंग आदि की सहभागिता समान रूप से हो।
- कक्षा में कम बोलने वाले लड़के-लड़कियों से सवाल पूछे जाएं और उनसे बात की जाए। कई बार कम बोलने वाले लड़के या लड़कियों

NOTE

के पीछे कोई खास वजह हो सकती है। हो सकता है कि उनका किसी प्रकार का शोषण किया जा रहा हो, या कोई अन्य वजह भी हो सकती है जो उनको परेशान कर सकती है। ऐसे में शिक्षक को चाहिए कि वह ऐसे विद्यार्थियों से बात करे और उनकी परेशानी का पता लगाए।

- विद्यालय में आने से पहले ही जो लैंगिक भूमिकाएं लड़के एवं लड़कियां, समाजीकरण की वजह से ग्रहण कर लेते हैं उसमें परिवर्तन लाने का प्रयास करके भेदभाव को दूर करने की कोशिश की जाए। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दा है और इसको परिवर्तित करना इतना सरल नहीं है। कई बार बहुत सी पूर्वधारणाएं विद्यार्थी पहले से ही साथ ले के आते हैं। ऐसे में एक शिक्षक को धैर्यपूर्वक उनकी इन पूर्वधारणाओं को बदलने का प्रयास करना चाहिए।

- लड़कियों को भी आवश्यकता से अधिक संरक्षित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि उससे लडकों के भीतर आक्रोश एवं लड़कियों में आश्रितता पनपती है। कई बार विद्यालय में या कोई शिक्षक लड़कियों को अधिक संरक्षित करने का प्रयास करते हैं ऐसे में यह संभव है कि लड़कों में लैंगिक रुदिबद्धता और पूर्वधारणाएं और अधिक बढ़ जाए। अतः शिक्षक को किसी एक के प्रति भेदभावपूर्ण बर्ताव नहीं करना चाहिए।

- शिक्षकों का आपसी व्यवहार भी विद्यार्थियों को बहुत प्रभावित करता है। कई बार पुरुष शिक्षक और महिला शिक्षक स्वयं गुटों में बंटे होते हैं। उनको स्वयं मिल-जुल कर रहना चाहिए। विद्यार्थियों में शिक्षकों द्वारा किए गए व्यवहार का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। लड़के एवं लड़कियों को एक दूसरे की बात सुनने एवं सम्मान

नोट

करना सिखाया जाना चाहिए।

- विभिन्न कक्षा कार्यों के लिए मिले-जुले समूहों का निर्माण किया जाना चाहिए।
- विद्यार्थियों के साथी समूहों में एक दूसरे के सहयोग एवं साझा करने की योग्यता विकसित करना।
- कक्षा के रोजमर्रा के कार्यों जैसे ब्लैक बोर्ड साफ करना, पानी लाना, नोटिस बोर्ड आदि जैसे कार्य लड़के एवं लड़की दोनों से करवाने चाहिए।
- प्रार्थना के समय विद्यार्थियों को लाइन में लगवाना जैसे कार्य भी दोनों लिंगियों से करवाने चाहिए।
- व्यक्तिगत साफ-सफाई की जांच करने जैसे कार्य एवं गृह कार्य को इकट्ठा करना आदि भी दोनों के द्वारा ही समान रूप से होना चाहिए।
- विद्यार्थियों से किसी भी प्रतियोगता में अपने नेतृत्व का चुनाव स्वयं करने के लिए कहा जा सकता है।
- किसी भी कार्यक्रम से संबंधित महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां भी लड़के एवं लड़की दोनों को ही सौंपनी चाहिए।
- कक्षा में किसी भी शिक्षक को अपनी भाषा का प्रयोग सोच-समझ कर करना चाहिए। उदाहरण के लिए ऐसे वाक्यों का प्रयोग न करें "अबे तू लड़की है क्या जो रो रहा है। इस प्रकार कक्षा में ऐसी बहुत सी सूक्ष्म घटनाएं होती हैं जिनका प्रभाव हमें उस समय तो पता नहीं चलता परंतु वो किसी न किसी विद्यार्थी के जीवन को, उसके मन-मस्तिष्क को प्रभावित जरूर करती है।
- रोजमर्रा की कक्षा में होने वाले कोई दो ऐसे उदाहरण दो जो लैंगिक

NOTE

भेदभाव को दर्शाते हैं।

- किसी भी गतिविधि को मिले-जुले समूह में करवाने के क्या लाभ हो सकते हैं?

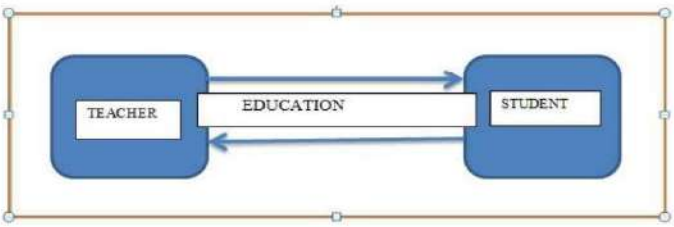
10.3.1-छात्रों की क्षमताओं के बारे में शिक्षक की धारणाओं में लैंगिक भूमिका -

शिक्षक की भूमिका विद्यार्थियों के लिए वह सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराने की है, जिसमें बच्चे अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित कर सकें। जॉन डीवी (1915) इस संदर्भ में कहते हैं, "शिक्षा के अनुक्रम में शिक्षक के हिस्से में प्रमुख काम यह होता है कि वह ऐसा पर्यावरण तैयार करे जिससे अनुक्रियाओं का उद्दीपन हो और शिक्षार्थी को मार्गदर्शन मिले। वह अंतःक्रिया द्वारा विद्यार्थियों को अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है। वह विद्यार्थियों के लिए ऐसा धरातल तैयार करता है जहां बच्चे अपने अनुभव दूसरों के साथ बांट सकें। मुख्यतः लड़कियां स्कूल और कक्षा में निर्णय प्रक्रिया के विवेचन के लिए तैयार हो सकें।

शिक्षाशास्त्र और पाठ्यक्रम परिवर्तन वास्तविक रूप नहीं ले सकता जब तक कि शिक्षक की उसमें सशक्त भूमिका न हो। एनसीएफ परिवर्तन में शैक्षिक कारकों की भूमिका को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में और भी महत्ता प्राप्त है, क्योंकि शिक्षा के द्वारा समाज, संस्कृति, विचार, तकनीकी तथा विज्ञान, ज्ञान, मनोरंजन के साधनों, राष्ट्रीय एकता, आर्थिक गत्यात्मकता, उदार तथा व्यापक धर्म इत्यादि का विकास होता है। अन्य शब्दों में, हम इस प्रकार भी कह सकते हैं कि शिक्षा के द्वारा परिवर्तन के सभी कारक प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। शैक्षिक कारकों के अंतर्गत शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, पाठ्य सहगामी क्रियाएं, शिक्षण विधियां, नवाचार, अनुशासन की प्रणाली, मापन एवं मूल्यांकन, विद्यालय प्रशासन एवं प्रबंधन,

नोट

बालक तथा अध्यापक आते हैं। सम्पूर्ण शिक्षा प्रक्रिया के आधार स्तम्भ शिक्षक हैं। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को प्रमुख मानते हुए एडम्स ने इसे 'द्विमुखी प्रक्रिया' नाम दिया है जिसको निम्नलिखित प्रकार देखा जा सकता है-



जॉन डीवी ने पाठ्यक्रम को महत्वपूर्ण मानते हुए इसमें जोड़कर इसे 'त्रिमुखी प्रक्रिया' माना जो इस प्रकार है—



चित्र 10.3 :- द्विमुखी तथा त्रिमूखी प्रक्रिया

इस प्रक्रिया से इतना तो निश्चित हो जाता है कि परिवर्तन के शैक्षिक कारक में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण है। शिक्षक परिवर्तन में अपनी भूमिका शिक्षण विधियों, पाठ्यक्रम शिक्षण उद्देश्यों तथा पाठ्य सहगामी क्रियाओं आदि के द्वारा सम्पन्न करता है। शिक्षक परिवर्तन अभिकर्ता के रूप में अपनी भूमिका का निर्वहन निम्न प्रकार से करता है-

- शिक्षक अपने प्रभावी व्यक्तित्व तथा उदारता के द्वारा परिवर्तन लाता है।
- शिक्षक पाठ्यक्रम के विषयों और प्रकरणों को समुचित तथा संतुलित ढंग से प्रस्तुत करके शिक्षार्थियों के मन-मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव डालता है, जिससे परिवर्तन आता है।

NOTE

- शिक्षक का धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण परिवर्तन में सहायक बनता है।
- शिक्षक समाज और विद्यालय के मध्य संबंध स्थापित कर परिवर्तन का साधन बनता है।
- शिक्षक लिंग, धर्म, जाति, ऊंच-नीच, गरीब अमीर इत्यादि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं करता है जिसके कारण धीरे-धीरे इन विषयों के प्रति सकारात्मक संदेश और परिवर्तन आता है।
- शिक्षक पाठ्य सहगामी क्रियाओं के आयोजन द्वारा सामाजिक कुरीतियों, समसामयिक मुद्दों आदि पर कार्यक्रमों का आयोजन करके परिवर्तन लाने का कार्य करते हैं।
- शिक्षक विज्ञान तथा तकनीकी के प्रयोग द्वारा परिवर्तन लाने का कार्य सम्पन्न करते हैं।
- शिक्षक शिक्षार्थियों को स्वानुशासन हेतु प्रशिक्षित कर परिवर्तन में भूमिका निभाता है।
- शिक्षक राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय पर्वों, दिवसों का आयोजन करके परिवर्तन लाने में सहायता करते हैं।
- गतिशील तथा क्रिया-केन्द्रित शिक्षण विधियों के प्रयोग द्वारा शिक्षक परिवर्तन हेतु भूमिका तैयार करते हैं।
- शिक्षक अपनी कर्तव्यनिष्ठा तथा ईमानदारी के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावात्मक वातावरण सृजित करते हैं जिससे परिवर्तन को गति प्राप्त होती है।
- शिक्षक लोकतंत्रीय आस्थाओं में आस्था रखने के कारण परिवर्तन का अग्रदूत बनते हैं।
- शिक्षकों द्वारा पक्षपातरहित, त्याग, प्रेम, सहिष्णुता तथा परोपकार के नवीन प्रतिमानों की स्थापना द्वारा परिवर्तन में भूमिका निभाई जाती

नोट

है।

- शिक्षक अपने चरित्र, आदर्श और जीवन मूल्यों के द्वारा शिक्षार्थियों में परिवर्तन की नींव रखता है।
- शिक्षक राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय विषयों का ज्ञाता तथा सामाजिक सरोकारों में रुचि लेकर परिवर्तन की गति को बढ़ाता है।
- शिक्षक को बाल मनोविज्ञान का ज्ञाता होना चाहिए। इस प्रकार वह परिवर्तन की गति को बढ़ाता है।
- शिक्षक को बाल केन्द्रित दृष्टिकोण से परिपूर्ण तथा व्यक्तिगत निर्देशन एवं परामर्श का ज्ञाता होना चाहिए।
- शिक्षक को अपने देश की संस्कृति के साथ-साथ अन्य देशों की संस्कृति के प्रति उदार होना चाहिए, जिससे सांस्कृतिक परिवर्तन में सहायता प्राप्त होगी।
- शिक्षक को विश्व शांति हेतु तत्पर होना चाहिए, जिससे वैश्विक स्तर पर परिवर्तन आएगा।
- शिक्षक को ज्ञान का जिज्ञासु, नवीन ज्ञान को आत्मसात करने, शिक्षार्थियों में जिज्ञासा उत्पन्न करने, सामाजिक सहयोग की प्राप्ति द्वारा परिवर्तन में योगदान दिया जाता है।

बाधक कारक -

शिक्षक परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, परंतु इसमें कुछ बाधक तत्व हैं जो शिक्षक के परिवर्तन लाने के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते हैं। ये बाधक तत्व तथा इनको समाप्त करने हेतु सुझाव निम्नलिखित हैं-

- अशिक्षा : भारतीय समाज में अशिक्षितों की संख्या अत्यधिक है। अतः वे शिक्षक को परिवर्तन की प्रक्रिया में सहयोग प्रदान नहीं कर पाते हैं। अशिक्षा के कारण व्यक्ति परिवर्तन का महत्व नहीं समझते

NOTE

हैं और शिक्षक या जो भी परिवर्तन लाना चाहते हैं, उनको इनका कोई सहयोग प्राप्त नहीं होता है, अपितु विरोध भी यदा-कदा झेलना पडता है।

- रूढ़िबद्ध समाज: हमारा समाज रूढ़िवादी समाज है जहां हम अपने पुराने विचारों, आदर्शों और मान्यताओं से इस प्रकार जकड़े हुए हैं कि नए विचारों, आदर्शों, मूल्यों और मान्यताओं को सरलता से स्थान नहीं प्रदान कर पाते हैं तथा शिक्षकों को ऐसा करने पर दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ता है।

धार्मिक तथा राजनैतिक कारक शिक्षकों के परिवर्तन लाने के कार्य में धार्मिक तथा राजनैतिक अडचनें आती हैं। धर्म तथा राजनीति के द्वारा धार्मिक उन्माद, जाति आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है। ऐसे शिक्षक के प्रयास धरे रह जाते हैं।

- संकीर्ण सोच : हमारे समाज में फैली संकीर्ण सोच के कारण बहुत से लोग अपनी जाति, धर्म, भाषा एवं संस्कृति को श्रेष्ठ मानते हैं और अन्य को हीन समझते हैं। इस कारण विनिमय और अंतःक्रिया का सर्वथा अभाव हो जाता है, जिसके कारण शिक्षक चाहकर भी परिवर्तन के विषय में अपनी प्रभाविता का निर्वहन नहीं कर पाते।
- स्वार्थपरकता : समाज वर्गों, जातियों, संप्रदायों इत्यादि में विभक्त है, जहां इनके अपने-अपने कुछ स्वार्थ होते हैं और इस कारण वे परिवर्तन के प्रति समुचित दृष्टिकोण नहीं रखते हैं और परिवर्तन में बाधा उत्पन्न होती है।
- अंधविश्वास : अंधविश्वासों के परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन प्रभावित होता है। पुत्र विषयी, तकनीकी तथा विज्ञान विषयी, जाति, धर्म विषयी तमाम अंधविश्वास व्याप्त हैं, जिनके कारण जब शिक्षक

नोट

परिवर्तनों से अवगत कराते हैं तो लोग समझ बैठते हैं कि वे समाज तथा बच्चों को पथभ्रष्ट कर रहे हैं। इस प्रकार शिक्षक की भूमिका प्रभावित होती है।

- सांस्कृतिक अलगाव : संस्कृति में पृथकता होती है और भारतीय संस्कृति में बहुलता है, जिसके कारण शिक्षकों को इन बहुल सांस्कृतिक तत्त्वों के मध्य समन्वय और सामंजस्य बिठाने में विरोध का सामना करना पड़ता है।
- इच्छा-शक्ति की कमी : शिक्षक तथा समाज दोनों में ही परिवर्तन के प्रति इच्छा-शक्ति का अभाव है। लोग सब कुछ सरकार के भरोसे छोड़ देते हैं। इच्छा-शक्ति के अभाव में शिक्षक केवल कार्य के घंटे पूर्ण करना मात्र ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझता है, जिससे परिवर्तन में उसकी भूमिका पर प्रभाव पडता है।

अध्यापन या शिक्षा विषयक तथा पाठ्यक्रम-स्तरीय परिवर्तन बिना अध्यापक के संभव नहीं है। अध्यापन समस्त शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सबसे अग्रगामी भूमिका एवं महत्व रखता है। इस प्रक्रिया में एक उत्प्रेरक की भूमिका में होने के बावजूद वह सूचना को संचारित करने वाला एक उपकरण मात्र बन कर रह गया है। सभी शिक्षा नीतियों एवं राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा (2000) में भी इसकी भूमिका को ध्यान में रखते हुए बार-बार दोहराया गया है कि 'पूर्व-शिक्षक प्रशिक्षण के कार्यक्रमों में विभिन्न विषय क्षेत्रों के विषयवस्तु ज्ञान पर बल देना चाहिए। साथ ही स्कूली विषयों के साथ शिक्षण पद्धतियों को सही प्रकार से एकीकृत किया जाए तथा मूल्यांकन' के एक सुदृढ़ अंग को सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। इसमें ऐसे प्रशिक्षण का सुझाव दिया गया है जो कि अध्यापकों को नई पीढ़ी के पैकेज को संभालने हेतु मदद करें। इसलिए जब बच्चों की रूपान्तरणकारी, रचनात्मक

NOTE

तथा अधिगम आवश्यकताओं को पहचान लिया जाता है तब अध्यापक सामान्यतः सर्वप्रमुख स्थान पर नहीं रहता, बल्कि अध्यापक तब केवल ज्ञान को सम्पादन या प्रबंधन के कार्य करने वाला रह पाता है न कि ज्ञान का निर्माण करने वाला।

परिवर्तन का अभिकर्ता माने जाने वाले शिक्षक के सामने अपनी कक्षा एवं विद्यालयों में लैंगिक समानता को स्थापित करना एक बड़ी चुनौती है। जब बच्चा विद्यालय पढ़ने आता है तो वह अपने साथ बहुत सारे विश्वास, आदतें, भूमिकाएं एवं रूढ़िबद्धताएं भी लेकर आता है। बच्चा विद्यालय में बहुत कुछ सीखता है परंतु घर पर उन सभी बातों का दोहराव होता है जो उसने पहले से ही घर में सीखी हुई हैं। ऐसे में शिक्षा में एक अंतर्विरोध पैदा हो जाता है। इसको दूर करना भी शिक्षक का ही कार्य है। कृष्ण कुमार (2014) के अनुसार 'ऐसे शिक्षक विरले होंगे जो समाज द्वारा तय किए गए लड़की के जीवन के उद्देश्य और शिक्षा के उद्देश्य के बीच मौजूद अंतर्विरोध को लेकर सचेत हैं और अपने शैक्षणिक प्रयास से शिक्षा के उद्देश्य का संवर्धन करने में संलग्न हैं।"

दरअसल शिक्षा को परिवर्तन का हथियार मानने में हम बहुत जल्दबाज़ी कर देते हैं। हमें लगता है कि शिक्षा जादू की छड़ी है और शिक्षा में बढ़ोतरी का मतलब है समाज की सभी रूढ़िवादी मान्यताओं की समाप्ति, जबकि ऐसा नहीं है। हमने समाजीकरण के बारे में पढ़ा है और उसकी प्रभावशाली प्रवृत्ति के बारे में भी समझा है। तो मात्र शिक्षा से समाजीकरण के प्रभावों एवं उसके कारण बनी मान्यताओं को इतनी आसानी से खत्म नहीं किया जा सकता। हाल ही में हुए शोध यह बताते हैं कि लैंगिक भेदभाव एवं उससे जुड़े कारक पढ़े-लिखे परिवारों में भी खूब होता है। यहां भी महिलाओं की स्थिति कम पढ़े-लिखे परिवार की महिलाओं जैसी ही है। उदाहरण के

नोट

लिए पढ़े-लिखे परिवारों में दहेज लेने की प्रथा खूब प्रचलित है। कन्या भ्रूण हत्या की दर भी शिक्षित परिवारों में ही अधिक है। कृष्ण कुमार (2014) लिखते हैं कि "शिक्षा के जरिए लड़कियों की सामाजिक नियति बदल देने के इच्छुक लोग प्रायः स्त्री की परिस्थिति को और पराधीनता को गहराई में जाकर समझने का प्रयास नहीं करते। वे जल्दी से अपना लक्ष्य पा लेना चाहते हैं और इस चाह की अभिव्यक्ति नारीवादी सक्रियता को हाल के दशकों में मिली गिनी-चुनी सफलताओं में पाते हैं। ये सफलताएं अवश्य महत्वपूर्ण हैं पर नारी की पराधीनता के लंबे इतिहास को देखते हुए इन सफलताओं पर इतराना एक नादानी होगी

परिवर्तन सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक सभी क्षेत्रों के लिए आवश्यक है। परंतु परिवर्तन समाज के लिए हितकारी एवं सकारात्मक होने चाहिए। जो परिवर्तन समाज में नकारात्मकता फैलाते हैं उनके दुष्परिणाम समाज को झेलने पड़ते हैं। शिक्षक जो भविष्य का निर्माता है यह उसका दायित्व बनता है कि वह सकारात्मक परिवर्तन को सशक्त करने में अपनी भूमिका निभाए। लैंगिकता के दृष्टिकोण से समाज को बदलने में एक शिक्षक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। शिक्षक, जो स्वयं बहुत सारी मान्यताओं एवं रूढ़ियों से ग्रस्त होते हैं उनको अपनी मान्यताओं के खिलाफ जाकर, उनका प्रतिरोध करते हुए अपने विद्यार्थियों को समाज की मान्यताओं एवं बाधाओं का सामना करते हुए चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

अध्यापकों के लिए यह घोषणा करना बहुत सामान्य है जैसे किसी छात्र रवि का व्यक्तित्व बहुत ही नियंत्रक प्रकार का है अर्थात इसका अर्थ यह हुआ कि छात्र बहुत ही विश्वसनीय नेता बन सकता है जबकि नीना बहुत अच्छा खाना बनाती है तो इसका अर्थ यह हुआ कि वह घर की देखभाल

NOTE

बहुत अच्छे तरीके से रख सकती है तथा परिवार को खुश रखने में सहायता कर सकती है। इस प्रकार के वक्तव्य देखने में तो बहुत सीधे-साधे एवं निदर्दोष प्रतीत होते हैं परंतु इनके द्वारा लिंग भेद के बहुत गहरे अर्थ प्रसारित होते हैं। इस प्रकार के वक्तव्यों के द्वारा एक प्रकार से बहुत युवावस्था में ही महिला एवं पुरुष की भूमिका का निर्धारण हो जाता है। हालांकि कुछ स्थितियों में लड़के भी लड़कियों की भांति खाना पका सकते हैं परंतु उन्हें कभी भी गृहिणी की भूमिका नहीं दी जाती है। लिंगभेद से संबंधित संज्ञा का उपयोग सभी प्रकार की सामाजिक संस्थाओं में फैलाया जाता है यहां तक कि शैक्षणिक संस्थान भी इससे अछूता नहीं रह गया है।

एक अध्यापक के लिए यह आवश्यक है कि वह विद्यालय में प्राकृतिक तथा उदासीन रूप से व्यवहार करें तथा उनके द्वारा दिए गए सभी प्रेक्षण लिंगभेद से मुक्त होने चाहिए तथा इसका पर्याप्त ध्यान रखा जाना चाहिए कि वह अपनी किसी भी गतिविधि के द्वारा लिंग भेद की प्रथा का पोषण ना करें। सभी प्रकार की दंतकथाओं में किसी राजकुमार को सुंदर दिखाते हुए वर्णित किया जाता है, तथा वह इतना साहसिक होता है कि किसी दुखी राजकुमारी को किसी कठोर रानी के चंगुल से छुड़ा लेता है। अतः अध्यापक को दंतकथाएं कहते समय बहुत ही सावधान रहना चाहिए तथा उन्हें राजकुमार के साहसिक क्रियाओं को व्यक्त करते हुए बहुत ध्यान रखना चाहिए। इस प्रकार की दंतकथाएं पुरुषवादी चरित्र की बहादुरी को बढ़ावा देने के लिए होती हैं। अध्यापक को स्वयं भी इस बात को स्पष्ट कर लेना चाहिए कि वह सेक्स तथा लिंग के अंतर को भली-भांति समझा ले। उन्हें यह पता होना चाहिए कि सेक्स किसी व्यक्ति की प्राकृतिक विशेषता होती है जबकि लिंग को समाज के द्वारा विकसित किया जाता है तथा लैंगिक भूमिकाओं को सामाजिक व्यवस्था के अंदर ही रहकर बढ़ावा दिया जाता

नोट

है। युवा मस्तिष्क यह नहीं समझ पाता है कि इस प्रकार के भेद सामाजिक व्यवस्था द्वारा ही उत्पन्न होते हैं तथा लिंग से संबंधित प्रथाओं का विद्यालय में अध्यापक के द्वारा, सभी छात्रों के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

अध्यापक को सभी छात्रों को अपने शिक्षण कक्ष में सभी प्रकार की गतिविधियों में सम्मिलित करना चाहिए चाहे वह लड़के हों या लड़कियां हों चाहे वह किसी गणितीय समस्या को हल कर रहे हों या कक्षा में रखे हुए सामान की व्यवस्था कर रहे हों।

10.3.2-स्कूली गतिविधियां एवं संस्कृति-

विद्यालय में आयोजित होने वाली विभिन्न गतिविधियां विद्यार्थियों में न केवल रचनात्मक प्रतिभा का उदय करती हैं बल्कि गुरु-शिष्य संवाद, सौहार्दपूर्ण संबंध कल्पनाशीलता करती है। उजागर विकारा का विद्यार्थी भविष्य के राष्ट्र व समाज का निर्माता है। बेहतर समाज की सरपना के लिए बच्चों का सर्वांगीण विकास आवश्यक है। अध्यापको को विद्यार्थियों को पावन शिक्षा के साथ-साथ नैतिक संस्कारित शिक्षा भी देनी चाहिए। अभिभावकों को चाहिए कि वे अपने बच्चों की दिन पर ध्यान दें तथा उन्हें सामाजिक बुराइयों के प्रति भी जागरूक करें कि वे बुरी संगत में न पड़े पड़े। विद्यार्थियों को अपनी ऊर्जा का सदुपयोग उठाई, खेलकूद, सांस्कृति व अन्य सामाजिक गतिविधियों में रखना चाहिए। स्कूली गतिविधियों में भाग लेने से बच्ची का शारीरिक व मानसिक विकास होता है।

विद्यालय की संस्कृति वहां के परिवेश, विद्यार्थियों योग्यता एवं उनका मूल्यांकन करने की प्रविधियों, उत्सर, जयंतियां अनुशासन, छात्र शिक्षक संबंध एवं उपलब्ध भौतिक संसाधनों द्वारा पहचानी जाती है। इसके द्वारा विद्यालय की अलग पहबान बनती है। जानकर सींचता है। सामूक

NOTE

जागरूकता और जो विद्यालय एक सकारात्मक संस्कृति का विकास करने और उसे कायम रखाने में सक्षम होता है वह जानता है कि सीखने के लिए प्रभावी वातावरण विकसित करने में संस्कृति के कौन-से पहलू महत्वपूर्ण होते है। वह अपने विद्यार्थियों को ये मूल्य जान-बूझकर सोता है। सामूहिक जागरूकता और कार्यवाही के से, विद्यार्थियों के सीखने और उपलब्धि को बढ़ाने के लिए संरकृति का सकारात्मक उपयोग किया जा सकता है। चाहे छोटे कामों के माध्यम से जैसे सार्वजनिक समारोहों में उपलब्धियों से जैसे पाठ्यक्रम के सुधार में योगदान करने के लिए शिवको, विद्यार्थियों और अन्य हितधारकों के लिए प्रजातांत्रिक प्रक्रियाएं विकसित करना।

बालक के सर्वांगीण विकास हेतु निर्दिष्ट पाठ्यक्रम शिक्षा के साथ-साथ वर्ष पर्यंत पाठ्येतर गतिविधिया विद्यालय का एक वैशिष्ट है। विद्यालय का प्रवास रखता है कि हर बालक अपने मानसिक, शारीरिक व आध्यात्मिक विकास हेतु किसी न किसी गतिविधि में अवश्य रूप से भाग ले। पीसे

1. वंदना संगीतमय सस्वर ईश्वर की वंदना विद्यालय की गतिविधियों में शामिल है। इसमें बालक के साथ अध्यापकों की सहभागिता प्रातःकाल से ही एक संस्काच्युका वातावरण कर निर्माण करती है।
2. सारीरिक गतिविधिया विद्यालय में कालकिशारीरिक अभ्यास के रूप से करवाया जाता है, जिसमें वालीबॉल, कबजनी टिन आदि शामिल है।
3. सांस्कृतिक गतिविधियां इनके अंतर्गत विद्यालय में उत्सव एवं जयंतियों का आयोजन किया जाता है। गीत-सगीत, नाटक, नृत्य आदि का अभ्यास कराया जाता है।
4. वैज्ञानिक गतिविधियां वैज्ञानिक गतिविधियों के अंतर्गत पाठयक्रम में निर्दिष्ट प्रायोगिक कार्यों के अतिरिकास विज्ञान मेला, विज्ञान

नोट

प्रदर्शनी बाद-विकार, पत्रचावल एवं गणित से संबंधित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

5. बौद्धिक गतिविधिया विद्यालयों में समय-समय पर बौद्धिक प्रतियोगिता योगिता का विद्यालय उत्तर से राष्ट्रीय आयोजन किया जाता है। जिसमें सुलेख चित्रकला कविता-कहानी लेखन अल्पाक्षरी आदि कराया जाता है।

यह स्पष्ट हो ही चुका है कि लिंग भेद एक सामाजिक कृत्य है जिसका व्यक्तियों आवरण एवं व्यवहार पर सीधा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक समाज में लिंग को लेकर अलग-अलग प्रकार की व्यवस्थाएं हैं। भारत जैसे विविध सांस्कृतिक देश में, समाज में महिलाओं की स्थिति में मजबूती लाने के विकास क्रम में निरंतर संघर्ष की आवश्यकता है। व्यक्तिगत आधार पर आयोजित की गई इस समस्या विविधता पूर्वक ही निकल सकता है। शिक्षा के द्वारा समाज में व्यापारिक संबंध जाल की लोडने तथ्था परिवर्तित करने के लिए सामूहिक प्रवास करने की त्वरित आवश्यकता महसूस की जा रही है।

वर्तमान समय में विद्यालय अबोध बालक से की जाने वाली अपेक्षाओं के कारण महुत उत्म दवार वाले वातावरण में सामाजिक मैक्षणिक कार्य कर रहे हैं। विद्यालय एक बहुत ही संक्रमणीय काल है कि किशोरावस्था में बच्चों के संक्रमण को अनेक विधियों द्वारा व्यवस्थित करता है। कुछ संक्रमण तो बहुत सरलतापूर्वक हो जाते गते है परंतु कुछ संक्रमण बहुत अधिक मानसिक संघर्ष तथा आदरणीय प्रभाव भी डालते है। इनमें से एक एक मानसिक समस्या अवसाद की भी होती है। जबकि विद्यालय का वाता तनावपूर्ण होता है इसमें जैविकीय प्रकार यह भी किसी बच्चे के मनोवैज्ञा वैज्ञानिक होने से में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। किशोरावस्था में

NOTE

हारमोंस समें परिवर्तन होता है है तथा इससे अवसाद की उत्पन्न हो सकता है अथवा आक्रामक व्यवहार भी हो जाता जाता है। इसे संक्रमण काल में लड़के तथा लड़कियों में एक सही हई अवन सक्रमकता स्पष्ट यष्ट रूप से देखी जा सकती है कुछ लड़कियों में बढ़ा हुआ टेस्टोसटेरीन (Testosterone) भी बढ़ते हुए अवसाद मध्यमिक विद्यालयों के बच्यों में स्वयं का मार्गदर्शन करने की कमी भी मार्गदर्शन करने तथा रामरयाओं को उत्पन्न करती है। यह देखा गया है कि अवसाद में सीधा होता है। सायं का मार्गदर्शन करना मी ऐसा उत्पाद है जैधिकीय नहीं है वरण सांस्कृतिक रूप से अर्जित किया हुआ होता है। यह देखा है कि हाई स्कूल की लड़कियों में शारीरिक बनावट के कारण निम्न स्तर का साय मार्गदर्शन पाया जाता है। रहने के कारण मी अवसाद हो जाता है एवं अपर्याप्त शैक्षणिक तथा सामाजिक सहायता के कारण हाई स्कूल बहुत ही चुनौतीपूर्ण हो जाता है। इस प्रकार की किशोरावस्था में लड़की की सामाजिक स्थिति हाई स्कूल से प्रभाचित होना प्रारंभ हो जाती है। हाई स्कूल लडकी तथा लड़के दोनों के लिए ही महत्वपूर्ण संक्रमण होता है क्योंकि इस समय उनका शारीरिक बनावट नहिला एवं पुरुय में परिवर्तित हो रही होती है। इस संक्रमण काल के दौरान जो कि हाई स्कूल में होता है प्रत्येक लिंग शारीरिक अवश्यवताओं की विभिन्न प्रकार से पूर्ति करता है। उनका शरीर उसी प्रकार से परिवर्तित होता है जिस प्रकार के वातावरण में भी रहते हैं। शारीरिक प्रतिक्कि मानसिक स्वस्थ रहने के लिए भी बहुत निकटता से संबंधित होता है तथा किशोरावस्था में इसके हानिकारक प्रभाव भी हो सकते हैं। हाई स्कूल में पड़ने वाला कोई भी छात्र छात्रा इच्छाअनुरूप शारीरिक बनावट की आशा करने का अनुमर करता है। प्रारमिक युवावस्था के दौरान शारीरिक आकर्षण तथा शरीर की बनावट लगभग स्थिर रूम से परिवर्तित होती है परंतु जैसे ही बालक या

नोट

बालिका 18 वर्ष के आस पास पहुंचते हैं तो उनके हाथौन बहुत तेजी से परिवर्तित होते हैं। इस काल बालक-बालिका में अनेक प्रकार की समस्याएं आ जाती है। जैसे कोई लड़की मताली रहना बाहती है तथा इसी प्रकार से लड़का पाता है कि वह मजबूत तथा पुरुवत्य याले शरीर का हो। इस प्रकार से यह सत्य है कि शरीर की भौतिक बनावट लैंगिक नंद को बढ़ाती है तथा इसके द्वारा सौदर्य मानकों की स्थापना भी होती है। विद्यालय काल में शारीरिक दिखावट भी एक प्रमुख निर्णायक भूमिका रखता है जिसके द्वारा अनेक प्रकार की लैंगिक समस्याएं और जटिल हो जाती है।

10.3.3-कक्षा अभ्यास-

शिक्षण कार्य के दौरान कक्षाओं में होने वाले क्रियाकलाप एवं दिनचर्या के द्वारा छात्रों में परस्पर अंतःक्रिया करने का बेहतर (Better Interaction) अवसर प्राप्त होता है। छात्रों के मध्य होने वाली यह दैनिक अंतःक्रिया लैंगिक आधार पर भेदभाव वाली नहीं होनी चाहिए। कक्षाओं में एक सकारात्मक वातावरण उत्पन्न करने का प्रयास करना चाहिए। अनेक शोधकर्ताओं ने वर्तमान शिक्षण व्यवस्था में अनेक खामियों को उजागर भी किया है। इनका विश्वास एवं मानना है कि लडके एवं लडकियों को अलग प्रकार से लिया जाता है इसमें विद्यालय के अध्यापक एवं कर्मचारीगण भी सम्मिलित होते हैं। यह भेदभाव भरा आचरण चेतन अथवा अचेतन दोनों ही स्थितियों में होता रहता है। अकसर अध्यापकगण बिना जाने ही लिंगभेद को छात्र एवं छात्राओं के मध्य विभेदीकरण के माध्यम से कर देते हैं। जैसे कि छात्राओं एवं छात्रों को पृथक-पृथक पंक्तियों में लगा देना। इसका स्पष्ट आशय यह हुआ कि लड़का तथा लड़की को अलग-अलग तरीके से देखा जा रहा है। अध्यापक लड़कियों की तुलना में लड़कों के साथ अधिक संपर्क में होते हैं। इस संपर्क का एक कारण यह भी है कि कक्षा में सही अनुशासन

NOTE

बनाकर रखने के लिए उन्हें लड़कों की अकसर जांच करनी पड़ती है। कुछ शोधकर्ताओं ने यह निष्कर्ष भी प्रस्तुत किया है कि लड़कियों की तुलना में लड़कों का शैक्षणिक परिणाम बेहतर होता है। क्योंकि लड़के ऊंची आवाज में बात करते हैं तथा उनकी आवश्यकता अधिक होती है इस कारण से वे कक्षा में अपनी प्रभुता बनाने में सफल हो जाते है। अभी तक भी लड़कों के द्वारा, गणित विज्ञान एवं अभियांत्रिकी में प्रवेश लिया जा रहा है जो कि लडकियों की संख्या से अधिक है। प्रवेश लेने के यह प्रतिमान जीव विज्ञान, अंग्रेजी एवं विदेशी भाषाओं के क्षेत्र में इसके विपरीत है क्योंकि इन विषयों में लडकियां अधिक प्रवेश लेती हैं। वास्तविकता यह है कि महिलाओं को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों गणित, विज्ञान, अभियांत्रिकी, मेडिकल तथा व्यवसाय के क्षेत्र में नेतृत्व करने की दृष्टि से कम करके आंका जाता है।

विद्यालय की कक्षाओं में अंतःक्रियाएं -

कभी-कभी विद्यालय की कक्षाओं में होने वाली अंतः क्रियाओं के परिणामस्वरूप छात्रों में इस प्रकार की स्थिति उत्पन्न हो जाती है कि वे ऐसा विश्वास करने लगते हैं कि कोई व्यवसाय विशेष किसी एक लिंग के लिए ही होता है। यह विश्वास एवं अवधारणा किसी छात्र के व्यक्तित्व एवं योग्यता पर आधारित नहीं होती है। बल्कि यह विशिष्ट प्रकार के स्तरीकरण के कारण होती है जो किसी एक व्यवसाय विशेष को दी जाती है। जैसे कि लड़कियों का काम खाना बनाना है, और यदि कुछ लड़कों का झुकाव खाने पकाने की कला की तरफ है तो भी वह खाने बनाने वाले शख्स का व्यवसाय चयन नहीं करते हैं। यदि किसी व्यवसाय में तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता होती है तो लड़कियां इस प्रकार के पाठ्यक्रम को लेने से गुरेज करती हैं। यदि किसी लड़की की इच्छा है कि वह हवाई जहाज उड़ाऐ तो भी उन्हें पायलट बनने से हतोत्साहित ही किया जाता है। इस प्रकार के प्रतीक शैक्षणिक निष्पादन

नोट

से संबंधित नहीं होते है। पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि लड़कियों के गणित एवं विज्ञान विषयों में प्राप्त अंकों की संख्या लड़कों से अधिक है। इस प्रकार की शैक्षणिक निष्पादन योग्यता को प्रारंभिक समय में नजर अंदाज ही किया जाता रहा है।

कक्षा में होने वाले पारस्परिक संवाद के कारण छात्रों के व्यावसायिक सही होने एवं उनकी संवेदनात्मकता के ऊपर गलत प्रभाव पड़ सकता है। छात्रों को यह भलीभांति समझ लेना चाहिए कि लिंग भेदभाव के द्वारा उनके द्वारा अर्जित किए जाने वाले रोजगार पर विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा एवं लिंग भेद आधारित गलत अवधारणा के द्वारा वह किसी अच्छे व्यवसाय को खो सकते हैं। वास्तव में किसी व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता मुख्य रूप से किसी व्यक्ति की प्रबंधकीय गुणवत्ता एवं काबिलियत पर निर्भर करती है। स्वयं का आत्मविश्वास तथा अपना व्यक्तिगत विश्वास सही पाठ्यक्रम एवं व्यवसाय को चयन करने में सहायक होता है जबकि सामाजिक तौर पर सही होना या ना होना जो कि लिंग पर आधारित होता है इसका उचित पैमाना नहीं होता है।

यदि विद्यालय की कक्षा में वातावरण बहुत ही सौहार्दपूर्ण है तो यह विशेष प्रकार के प्रभावी मंच के रूप में बन सकता है जिसके द्वारा किसी भी लिंग के छात्र के व्यक्तित्व उसकी उत्पादकता तथा काबिलियत को निखारने का अवसर प्रदान कर सकता है। कभी-कभी विद्यालय की कक्षा में इस प्रकार की बातचीत हो जाती है जिससे कि लड़की को मजबूरन गृहिणी के कार्य को स्वीकार करना पड़ता है तथा वह अपनी व्यावसायिक आकांक्षाओं को छोड़ने पर मजबूर हो जाती है क्योंकि ऐसी मान्यता एवं विश्वास है कि लड़कियां बेहतर गृहिणी हो सकती हैं। अनेक शोधकर्ताओं के अनुसंधान से यह स्पष्ट हो गया है कि विद्यालय की कक्षाओं में होने वाले पारस्परिक वार्तालाप एवं पारस्परिक क्रियाओं के कारण अध्यापकों एवं छात्रों के बीच

NOTE

इस प्रकार की जमीन तैयार होती है जोकि लिंगभेद से अछूती नहीं होती है। अनेक अंतःक्रियाओं में ऐसा भी देखा गया है कि लडकियां सिर्फ लडकियों के ही साथ बात करती हैं तथा वह अपने ही समूह में लड़कों के साथ सहृदयतापूर्वक बातें नहीं कर पाती हैं।

कक्षा में होने वाली अंतःक्रिया का महत्व-

कक्षा में होने वाली विभिन्न प्रकार की अंतःक्रियाओं के द्वारा छात्र शैक्षणिक तथा अशैक्षणिक प्रकृति की प्रक्रियाओं में सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। इसके द्वारा छात्रों की सोचने समझने की शक्ति तथा सीखने के प्रक्रम का विकास होता है। इस प्रक्रिया से छात्रों का पारस्परिक सहयोगात्मक रवैया भी बढ़ता है। कक्षा में होने वाला पारस्परिक संवाद छात्रों एवं अध्यापकों के बीच होता है। छात्र, अध्यापक के मध्य होने वाला अंतःक्रियाकरण महत्वपूर्ण इसलिए भी होता है क्योंकि इसके द्वारा अध्यापक छात्रों को यह सिखाने का प्रयत्न करता है कि उनको अपने बुजुर्गों के साथ किस प्रकार का बर्ताव करना चाहिए एवं उन्हें अपने अध्यापकों से किस प्रकार सीखना चाहिए। अतः अध्यापकों को बहुत सोच-समझकर वार्तालाप करना चाहिए एवं अध्यापक के वार्तालाप अथवा पारस्परिक संपर्क के दौरान कोई भी ऐसी बात नहीं होनी चाहिए जिससे कि लिंग भेदभाव दृष्टिगोचर हो। इसके अलावा कक्षा में छात्र परस्पर बात करते हैं। इस प्रकार की बातचीत के द्वारा छात्र सामूहिकता एवं पारस्परिक सहयोग की भावना को सीखते है। छात्रों के बीच होने वाले पारस्परिक वार्तालाप एवं संपर्क के द्वारा छात्र अपने अंदर संबंधों को बरकरार रखने तथा पैर्यपूर्वक दूसरे की बातें सुनना मी सिखाते हैं।

दोनों ही प्रकार के संवाद प्रक्रम में अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि अध्यापक ही वार्तालाप अथवा संपर्क में होने वाले वातावरण

नोट

में अवश्य ही सुधार सकते हैं। अध्यापक कक्षा में होने वाली गतिविधियों को अनेक प्रकार से प्रोत्साहित सकते हैं जैसे कि किसी एक अभिनय को करना, विचार विमर्श करना, विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन करना इत्यादि। अध्यापक को छात्रओं को इस प्रकार के विषय देने चाहिए जिनसे कि लिंग समानता का माहौल उत्पन्न ना हो सके अध्यापक को यह भी सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि सभी प्रकार की गतिविधियों में दोनों ही लिंग के छात्र सम्मिलित हो सके।

कक्षा में होने वाली अंतःक्रियाओं में अध्यापक की भूमिका -

अध्यापक का लक्ष्य एक व्यवस्थापक के रूप में भी हो सकता है जो छात्रों को पलपर संवाद करने के लिए उत्साहित करता है। अध्यापक कक्षा में इस प्रकार का वातावरण बनाते है जो अध्ययन कार्य के लिए सौहार्दपूर्ण होता है। अध्यापक कक्षा में सकारात्मक वातावरण बनाकर रखने का प्रयत्न करते हैं जिसमें लिंगभेद जैसी किसी बात का खंडन किया जाता है। छात्र अध्यापक को अपना रोल मॉडल समाते हैं। अतः अध्यापक को अपने इसी रोल मॉडल के अनुरूप व्यवहार भी करना चाहिए।

अध्यापक विशेषज्ञा के रूप में भी कार्य करते हैं तथा वे छात्रों को इस प्रकार से मार्गदर्शन देते हैं तथा अपने मार्गदर्शन में हुए लिंग भेदभाव से पृथक लिंग समानता की भावना को प्रोत्साहित करते हैं। कक्षा में अध्यापक यह प्रश्न करते हैं कि सार्थक एवं उन्न गुणवत्ता का विचार विमर्श होना चाहिए। उदाहरण के रूप में ऐसा देखा गया है कि कुछ अध्यापक, लड़कियों द्वारा जवाब दिए जाने को उत्साहित नहीं करते हैं। इस प्रकार से किया गया प्रोत्साहन कक्षा में नकारात्मक माहौल उत्पन्न कराता है। अध्यापकों को कंवल पुस्तक पर आधारित ज्ञान ही नहीं देना चाहिए, वर्ण, जाति, धर्म के बंधनों से ऊपर उठते हुए लड़कियों को भी सभी प्रकार की अंतक्रियाओं में

सम्मिलित करने के लिए उत्साहित करना चाहिए।

NOTE

कक्षा का वातावरण किस प्रकार का होना माहिए जिसमें सम्मान तथा समझने की समझ का विकास हो सके। सभी छात्र एक दूसरे को सहयोग करने की मावना विकास अपने अंदर उठकर छात्रों को लिंग संबंधित परिप्रेक्ष्य स्पष्ट रूप समक्षा देना चाहिए जिससे कि ये सेक्स तथा लिग के मध्य होने वाले अंतर को भली-भांति समझ सकें। छात्रों को अपनी इच्छा के अनुसार एवं अपनी योग्यता आधार पर गतिविधिया करने की स्वतंत्रता प्रदान होनी चाहिए।

भारतवर्ष में विद्यालय एवं कक्षा अनेक ढांचागत आधारों पर एक दूसरे से पृथक होते हैं। कक्षाओं की व्यवस्था तथा इसका पर्यवेक्षण लिग संबंधी बातों पर ध्यान देने के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अनेक शोधकर्ताओं ने अपने शोध कार्य द्वारा यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि वक्षा का वातावरण छात्रों में लिंगभेद समझती समस्याओं एवं रूड़ियों को दूर करने में सहायक हो सकता है। इन शोधकर्ताओं ने यह भी परामर्श दिया है कि हरा प्रक्रिया में अध्यापक का योगदान एवं भूमिका भी बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। इसकी प्रमुख आवश्यकता यह है कि अध्यापक को अपने व्यवसायय? में बहुत ही महत्वाकांक्षी होना चाहिए। यदि कक्षा में सौहार्दपूर्ण वातावरण होगा तो सकारात्मक पर्यवेक्षण के द्वारा बहुत अच्छे संबंध लड़के तथा लड़कियों में बन सकते हैं तथा उनके मविष्य की बहुत कुछ बुनियाद वहां पर रखी जा सकती है।

लड़के एवं लड़कियों में अनुशासन बनाने प्रक्रम -

हाई स्कूल तथा कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने में लड़के तथा लड़कियों के बचपन की व्यावहारिक समस्याओं का नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

नोट

बोस्टन की यूनिवर्सिटी के द्वारा किए गए एक शोध में यह बात समझ आई है। व्यावहारिक समस्याएं वाले बच्चों की पढ़ाई के छूट जाने की संभावना अधिक होती है। इस अध्ययन में यह पाया गया। कि व्यावहारिक समस्याओं वाले बच्चों को जिनमें लड़के तथा लड़कियों दोनों सम्मिलित है अधिक दंड दिया जाता है। इसके अतिरिक्त लडको की कक्षा में आवश्यक हाजरी भी होती है जिसके कारण ही उन्हें इस व्यवहार के कारण दंडित किया जाता है। कुछ अन्य निष्कर्षों के अनुसार प्रारंभिक विद्यालयों में लड़कों के ऊपर स्कूल के सहपाठी छात्रों का नकारात्मक दबाव लड़कियों की अपेक्षा अधिक होता है। यहीं पर हाई स्कूल की पढ़ाई के दौरान उनके अच्छे अंक प्राप्त करने की पुनरावृत्ति तथा निम्न शैक्षणिक महत्वकांक्षाएं होती है।

क्या लिंगों के लिए अलग-अलग अनुशासन विधि होनी चाहिए? अध्यापक को लेकर आश्चर्य करते हैं कि लड़के तथा लड़कियों के लिए अलग-अलग प्रकार का अनुशासन होना बाहिए? इस प्रकार के विषय पर एक सामान्य विचार बना कि यदि कोई एक बच्चा दुर्व्यवहार करता है तो क्या उसे दड मिलना चाहिए। बच्चे के लिंग पर आधारित नहीं होना साहिए वरन उसकी क्रिया के अनुसार होना चाहिए। अकसर यह देखा गया है कि अध्यापक यह कहते है कि लडकियों को ऐसा करना बाहिए तथा लड़कों को ऐसा करना चाहिए तथा दोनों एक जैसा नहीं होना चाहिए। अतः यदि कोई छात्र किसी एक ही गलती को करते हुए पाया जाता है तो यदि बढ़ लड़का है तो उसको प्रथम दंड दिया जाता है और यदि वह लड़की है तो उसके लिए अलग प्रावधान किया जाता है। देखा गया है कि लड़कों को बहुत कठोरता के साथ दंड दिया जाता है जबकि लडकियों के मामले में ऐसा नहीं होता है। कई बार बार ऐसा होता है कि कोई अध्यापक किसी छात्र को तैक्षणिक बक्षेत्र में बेहतर करने के लिए सिर्फ सावधान करके ही छोड़ देते हैं। कई बार इस

NOTE

प्रकार के भेदभावपूर्वक रवैये से एक प्रकार का नकारात्मक वातावरण कक्षा में बन जाता है जिसके लिए दूसरे लिंग के छात्र को उत्तरदायी गाना जाता है तथा इसे लिंग के साथ संबंधित समस्या के देख लिया जाता है। ऐसी स्थिति में अध्यापक को बीच का रास्ता अख्तियार करना चाहिए तथा उसे किसी भी लिंग के छात्र के साथ एक ही प्रकार का अपनाना बाहिए।

विद्यालय को चाहिए कि वह समय-समय पर इस प्रकार के आयोजन करे कि तह गलती करने वाले छात्रों को रागझाने बुझाने का कार्य कर सके जिरारी कि छात्रों में एक सकारात्मक विचारधारा बन सके तथा वे अपनी गलती का एहसास उसमे सुधार कर सकते हैं। इराके लिए अध्यापकों का प्रशिक्षण भी आवश्यक होता है।

क्योंकि छात्र अपना अधिकांश समय विद्यालय में ही व्यतीत करते हैं अतः अध्यापक की भूमिका इस दैनिक कार्य में और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। अध्यापक, छात्रो के रोल मॉडल होते है तथा ये विपरीत लिग के प्रति दृष्टिकोण बनाने में भी बहुत उपयोगी सिद्ध होते है। छात्रों के लिए अध्यापक को कक्षा में इस प्रकार का वातावरण बनाना घाहिए जिससे कि समानता का संदेश प्रसारित हो तथा सभी छात्र एक प्रकार से समझे जाएं। यदि कोई अध्यापक छात्रों के साथ लिंग भेद करते हुए अध्यापन का कार्य करता है तथा लड़का या लड़की देखकर उसकी योग्यता का निर्धारण करता है तो ऐसा अध्यापक शिक्षा, के लिए योग्यता उसके रुझान को हानि पहुंचा सकता है।

विद्यालय का प्रमुख लक्ष्य छात्रों में जन संबंधी शैक्षणिक विज्ञान तथा छात्र की विशेष योग्यता का विकास करना होता है जिससे कि छात्र भविष्य में जाकर आदर्श नागरिक बन सके तथा राष्ट्र के विकास एवं निर्माण में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में समझते हुए योगदान कर सकते हैं। विद्यालय

नोट

को आवश्यक रूप से सभी छात्रों को बिना लिंग भेदभाव किए हुए एक समान अवसर प्रदान करने चाहिए। शिक्षा के माध्यम से छात्र अपना उज्ज्वल भविष्य बना सकते हैं जिसके लिए उन्हें सिर्फ अपने शैक्षणिक विषय सामग्री एवं पाठ्यक्रम से ही वास्ता नहीं होना चाहिए वरन उनको समाजीकरण की कला में भी यक्ष हो जाना बाहिए। अध्यापन करने वाले व्यक्ति का यह उद्देश्य भी हो जाता है कि यह छात्र को विभिन्न प्रकार के सामाजिक संबंधों के बारे में भी सूचित करें जो विद्यालय की पढ़ाई समाप्त करने के बाद जीवन पर्यंत उसके काम आती रहे।

अपनी प्रगति जाँचे –

प्रश्न 1. शिक्षक लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?

.....

.....

प्रश्न 2. सहपाठी विद्यार्थियों के लैंगिक विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

.....

.....

प्रश्न 3. लैंगिक समानता के विकास में विद्यालयी वातावरण की क्या भूमिका है?

.....

.....

10.4 सारांश

NOTE

शिक्षक, सहपाठी एवं विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, सामाजिक व्यवहार, आत्मविश्वास तथा लैंगिक दृष्टिकोण के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। शिक्षक अपने व्यवहार, भाषा, शिक्षण-पद्धति और अवसरों के समान वितरण के माध्यम से विद्यार्थियों में लैंगिक समानता, सम्मान और सहयोग की भावना विकसित कर सकते हैं।

सहपाठी विद्यार्थियों के विचारों, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करते हैं। सकारात्मक सहपाठी समूह सहयोग, समानता और स्वीकार्यता को बढ़ावा देता है, जबकि नकारात्मक समूह लैंगिक रूढ़ियों और भेदभाव को बढ़ावा दे सकता है।

विद्यालयी वातावरण में समान अवसर, सुरक्षित एवं समावेशी वातावरण, भेदभाव-मुक्त नियम, पाठ्यक्रम तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ विद्यार्थियों के स्वस्थ विकास में सहायक होती हैं। इसलिए शिक्षक, सहपाठी और विद्यालय को मिलकर ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी को बिना किसी लैंगिक भेदभाव के सीखने, अभिव्यक्ति और विकास के समान अवसर प्राप्त हों।

10.5 शब्दावली

- **शिक्षक (Teacher)** विद्यार्थियों के ज्ञान, व्यवहार और व्यक्तित्व विकास में मार्गदर्शन करने वाला व्यक्ति।
- **सहपाठी (Peer)** विद्यार्थी के साथ समान कक्षा या आयु-समूह में पढ़ने वाले अन्य विद्यार्थी।
- **विद्यालयी वातावरण (School Environment)** विद्यालय में

नोट

विद्यमान सामाजिक, शैक्षिक, भावनात्मक एवं भौतिक परिस्थितियाँ।

- **लैंगिक समानता (Gender Equality)** सभी लिंगों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान प्रदान करना।
- **लैंगिक संवेदनशीलता (Gender Sensitivity)** लैंगिक भेदभाव और असमानता को समझकर समान एवं सम्मानजनक व्यवहार करना।
- **लैंगिक भूमिका (Gender Role)** समाज द्वारा किसी लिंग से अपेक्षित व्यवहार, कार्य और जिम्मेदारियाँ।
- **लैंगिक रूढ़ि (Gender Stereotype)** किसी लिंग के बारे में बनी सामान्यीकृत और पूर्वनिर्धारित धारणा।
- **समावेशन (Inclusion)** सभी विद्यार्थियों को समान रूप से शिक्षा एवं सहभागिता के अवसर देना।
- **भेदभाव (Discrimination)** लिंग या अन्य आधारों पर किसी व्यक्ति के साथ असमान व्यवहार करना।
- **सहयोग (Cooperation)** एक-दूसरे की सहायता करते हुए किसी कार्य या उद्देश्य को पूरा करना।
- **आत्मविश्वास (Self-confidence)** अपनी क्षमता और योग्यता पर विश्वास रखने की भावना।
- **सामाजिकरण (Socialization)** समाज के मूल्यों, नियमों, व्यवहारों और मान्यताओं को सीखने की प्रक्रिया।
- **सुरक्षित वातावरण (Safe Environment)** ऐसा विद्यालयी माहौल जहाँ विद्यार्थी भय, उत्पीड़न और भेदभाव से मुक्त होकर सीख सकें।
- **समान अवसर (Equal Opportunity)** सभी विद्यार्थियों को सीखने और विकास के लिए समान अवसर उपलब्ध कराना।

NOTE

- **समग्र व्यक्तित्व विकास (Holistic Development)** विद्यार्थी के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक एवं शारीरिक विकास की प्रक्रिया।

10.6 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. शिक्षक लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है?

उत्तर: शिक्षक सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार करके, समान अवसर प्रदान करके तथा लैंगिक रूढ़ियों से मुक्त शिक्षण-पद्धतियों का प्रयोग करके लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है। शिक्षक को कक्षा में बालक-बालिका दोनों की समान सहभागिता सुनिश्चित करनी चाहिए।

प्रश्न 2. सहपाठी विद्यार्थियों के लैंगिक विकास को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

उत्तर: सहपाठी विद्यार्थियों के विचारों, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करते हैं। सकारात्मक सहपाठी समूह सहयोग, सम्मान और समानता की भावना विकसित करता है, जबकि नकारात्मक व्यवहार लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव को बढ़ावा दे सकता है।

प्रश्न 3. लैंगिक समानता के विकास में विद्यालयी वातावरण की क्या भूमिका है?

उत्तर: विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों के दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करता है। सुरक्षित, समावेशी और भेदभाव-मुक्त वातावरण विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करता है तथा उनमें सम्मान, सहयोग, आत्मविश्वास और लैंगिक समानता की भावना विकसित करता है।

नोट

10.7 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन (OER)

- NCERT ePathshala — लैंगिक समानता, शिक्षक शिक्षा और विद्यालयी शिक्षा से संबंधित अध्ययन सामग्री।
- DIKSHA — शिक्षक एवं विद्यार्थी के लिए डिजिटल शिक्षण सामग्री और पाठ्यक्रम संसाधन।
- SWAYAM — शिक्षा, शिक्षक शिक्षा और सामाजिक विषयों से संबंधित ऑनलाइन पाठ्यक्रम।
- UNESCO Digital Learning Resources — समावेशी एवं समानतापूर्ण शिक्षा से संबंधित मुक्त संसाधन।
- UNICEF Learning Resources — बाल अधिकार, समानता, सुरक्षित विद्यालय और समावेशी शिक्षा से संबंधित सामग्री।

10.8 संदर्भ

1. NCERT. (2006). Gender Issues in Education: A Handbook for Teachers. New Delhi: NCERT.
2. NCERT. (2006). Gender, School and Society. New Delhi: NCERT.
3. Bhasin, K. (2000). Understanding Gender. New Delhi: Kali for Women.
4. Sadker, D., & Sadker, M. (1994). Failing at Fairness: How America's Schools Cheat Girls. New York: Scribner.
5. UNESCO. (2019). Behind the Numbers: Ending School

Violence and Bullying. Paris: UNESCO.

6. UNICEF. (2005). Early Marriage: A Harmful Traditional Practice. New York: UNICEF.

NOTE

10.9 अभ्यास

भाग 1

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न (MCQ)-

प्रश्न 1. विद्यार्थियों की क्षमताओं के बारे में शिक्षक की लैंगिक धारणाओं का क्या प्रभाव पड़ सकता है?

(अ) सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिलते हैं।

(ब) विद्यार्थियों के प्रति अपेक्षाओं एवं अवसरों में भेदभाव हो सकता है।

(स) विद्यार्थियों की रुचियों में कोई परिवर्तन नहीं होता।

(द) सभी विद्यार्थियों की उपलब्धि समान हो जाती है।

प्रश्न 2. विद्यालयी गतिविधियों में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने का उचित उपाय कौन-सा है?

(अ) खेलों में केवल लड़कों को भाग लेने देना।

(ब) सांस्कृतिक कार्यक्रमों में लड़कियों को ही भाग लेने देना।

(स) सभी विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार समान अवसर देना।

(द) नेतृत्व की जिम्मेदारी केवल लड़कों को देना।

प्रश्न 3. लैंगिक-संवेदनशील कक्षा अभ्यास का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

(अ) विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा बढ़ाना।

(ब) लड़के और लड़कियों के लिए अलग-अलग नियम बनाना।

नोट

(स) भेदभाव-मुक्त एवं समानतापूर्ण शिक्षण वातावरण बनाना।

(द) केवल मेधावी विद्यार्थियों पर ध्यान देना।

प्रश्न 4. कक्षा में लैंगिक रूढ़ियों को कम करने के लिए शिक्षक को क्या करना चाहिए?

(अ) विद्यार्थियों की क्षमताओं का आकलन लिंग के आधार पर करना।

(ब) सभी विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने के समान अवसर देना।

(स) विषयों को लड़कों और लड़कियों में बाँटना।

(द) पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को अनिवार्य बनाना।

स्पष्टीकरण सहित उत्तर

1. सही उत्तर: (ब) विद्यार्थियों के प्रति अपेक्षाओं एवं अवसरों में भेदभाव हो सकता है।

स्पष्टीकरण: यदि शिक्षक यह मानते हैं कि लड़के गणित में और लड़कियाँ भाषा में अधिक कुशल होती हैं, तो वे अनजाने में विद्यार्थियों को अलग-अलग अवसर दे सकते हैं। इससे विद्यार्थियों के आत्मविश्वास और सीखने की प्रक्रिया पर प्रभाव पड़ सकता है।

2. सही उत्तर: (स) सभी विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुसार समान अवसर देना।

स्पष्टीकरण: खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, विज्ञान गतिविधियों और नेतृत्व के कार्यों में सभी विद्यार्थियों को भाग लेने का अवसर देना चाहिए। इससे सहयोग, समानता और आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलता है।

NOTE

3. सही उत्तर: (स) भेदभाव-मुक्त एवं समानतापूर्ण शिक्षण वातावरण बनाना।

स्पष्टीकरण: लैंगिक-संवेदनशील कक्षा अभ्यास में शिक्षक सभी विद्यार्थियों को समान सम्मान, सहभागिता और सीखने के अवसर प्रदान करते हैं। इसमें भेदभावपूर्ण भाषा और रूढ़िवादी धारणाओं से बचा जाता है।

4. सही उत्तर: (ब) सभी विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने एवं उत्तर देने के समान अवसर देना।

स्पष्टीकरण: शिक्षक को कक्षा चर्चा, समूह-कार्य और गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करनी चाहिए। इससे लैंगिक रूढ़ियाँ कम होती हैं तथा विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है।

ब. लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. शिक्षक लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में किस प्रकार योगदान दे सकता है?

प्रश्न 2. सहपाठी विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं लैंगिक दृष्टिकोण को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

प्रश्न 3. विद्यालयी वातावरण लैंगिक समानता के विकास में किस प्रकार सहायक है?

नोट

इकाई 11
परिवार एवं सामाज का लैंगिक समाजीकरण में योगदान

इकाई की रूपरेखा

11.1- प्रस्तावना
11.2- उद्देश्य
11.3- परिवार की भूमिका एवं लैंगिक भूमिकाओं का निर्माण
11.4- समाज एवं संस्कृति का लैंगिक समाजीकरण पर प्रभाव
11.5- लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव को कम करने में परिवार और समाज की भूमिका
11.6- सारांश
11.7- शब्दावली
11.8- अपनी प्रगति जांचें - संभावित उत्तर
11.9- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
11.10- संदर्भ
11.11- अभ्यास प्रश्न

11.1 प्रस्तावना

लैंगिक समाजीकरण वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक-बालिकाएँ समाज में प्रचलित लैंगिक भूमिकाओं, व्यवहारों, अपेक्षाओं, मूल्यों और मान्यताओं को सीखते हैं। इस प्रक्रिया में परिवार और समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार बच्चे का पहला सामाजिक वातावरण है, जहाँ वह माता-पिता और अन्य सदस्यों के व्यवहार, कार्य-विभाजन तथा अपेक्षाओं से लैंगिक भूमिकाएँ सीखता है। इसके साथ ही समाज, समुदाय, संस्कृति, परंपराएँ और सामाजिक संस्थाएँ भी यह निर्धारित करने में प्रभाव डालती हैं कि बालक और बालिका से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। सकारात्मक एवं समानतापूर्ण वातावरण बच्चों में लैंगिक

समानता, सम्मान और आत्मविश्वास विकसित करने में सहायक होता है।

NOTE

11.2 उद्देश्य

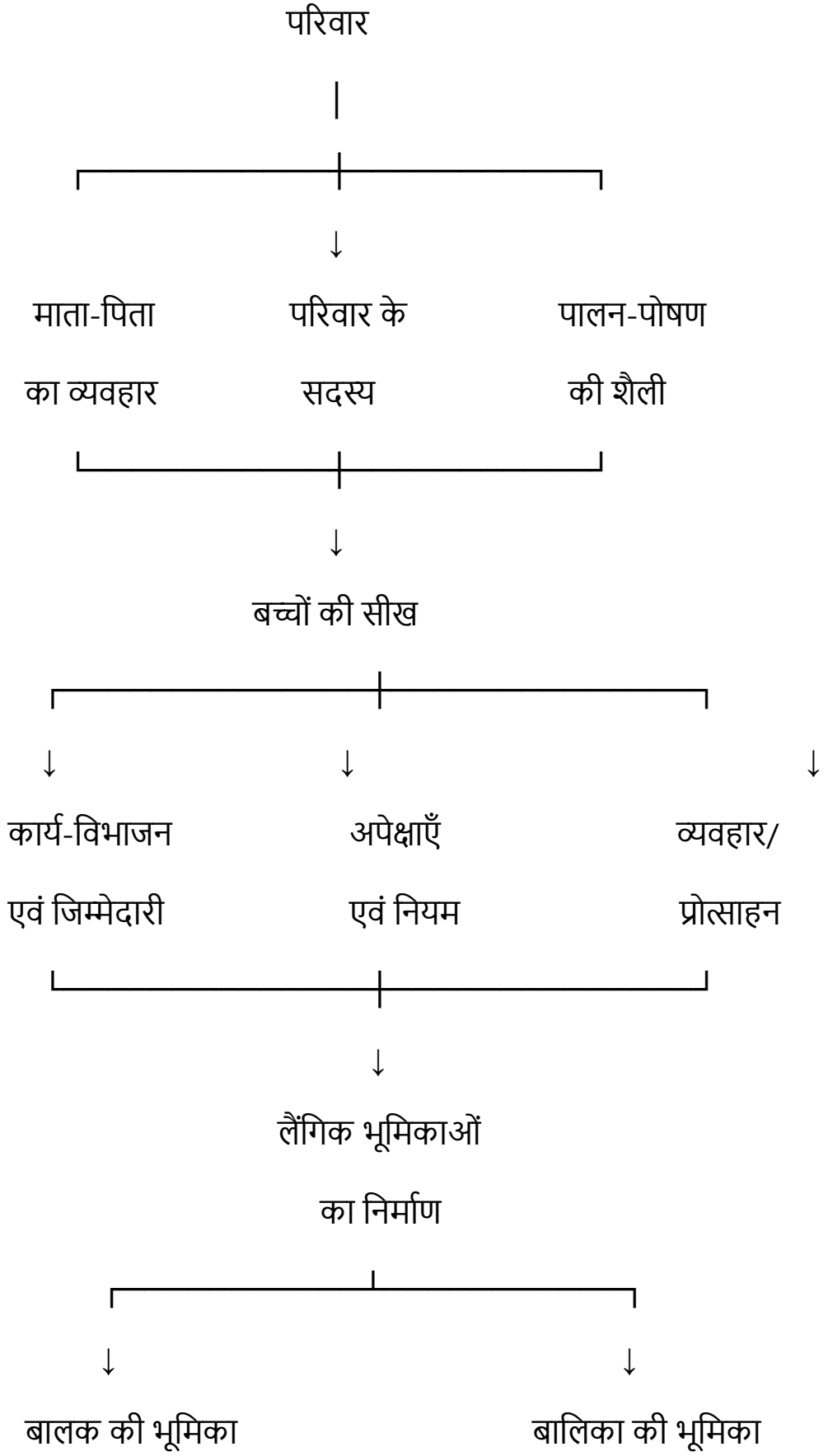
इस विषय के अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- लैंगिक समाजीकरण की अवधारणा को समझना।
- परिवार द्वारा बालक-बालिकाओं के लैंगिक व्यवहार और भूमिकाओं के निर्माण में योगदान को समझना।
- समाज, संस्कृति और परंपराओं द्वारा लैंगिक भूमिकाओं को प्रभावित करने की प्रक्रिया को जानना।
- परिवार एवं समाज में मौजूद लैंगिक रूढ़ियों और भेदभाव की पहचान करना।
- बालक-बालिकाओं के समान विकास में परिवार और समाज की भूमिका को समझना।
- बच्चों में लैंगिक समानता, सम्मान और संवेदनशीलता विकसित करने के उपायों को जानना।

11.3 परिवार की भूमिका एवं लैंगिक भूमिकाओं का निर्माण

परिवार बच्चे का प्रथम सामाजिक वातावरण होता है। बालक-बालिका अपने परिवार के सदस्यों के व्यवहार, विचार, अपेक्षाओं और कार्य-विभाजन को देखकर सामाजिक एवं लैंगिक भूमिकाएँ सीखते हैं। परिवार का वातावरण बच्चों के व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और लैंगिक दृष्टिकोण को प्रभावित करता है।

नोट


परिवार
माता-पिता का व्यवहार
परिवार के सदस्य
पालन-पोषण की शैली
बच्चों की सीख
कार्य-विभाजन एवं जिम्मेदारी
अपेक्षाएँ एवं नियम
व्यवहार/ प्रोत्साहन
लैंगिक भूमिकाओं का निर्माण
बालक की भूमिका
बालिका की भूमिका

NOTE

- स्वतंत्रता
- निर्णय लेना
- नेतृत्व
- देखभाल
- घरेलू कार्य
- सहयोग

↓

लैंगिक समाजीकरण

↓

समानतापूर्ण परिवार का लक्ष्य

↓

समान अवसर + समान सम्मान + समान

जिम्मेदारी एवं स्वतंत्रता

1. पालन-पोषण में परिवार की भूमिका -

माता-पिता बच्चों के साथ किस प्रकार व्यवहार करते हैं, इससे उनकी लैंगिक समझ विकसित होती है। यदि बालक और बालिका को समान अवसर एवं प्रोत्साहन दिया जाए, तो उनमें समानता की भावना विकसित होती है।

2. कार्य-विभाजन -

परिवार में यदि घरेलू कार्यों को केवल महिलाओं या बालिकाओं का कार्य माना जाता है और बाहर के कार्यों को पुरुषों या बालकों से जोड़ा जाता है,

नोट

तो इससे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ मजबूत होती हैं। सभी सदस्यों की समान भागीदारी इन रूढ़ियों को कम कर सकती है।

3. माता-पिता की अपेक्षाएँ-

कई परिवार बालकों से साहसी, स्वतंत्र और निर्णय लेने वाला बनने की अपेक्षा करते हैं, जबकि बालिकाओं से विनम्र, देखभाल करने वाली और घरेलू कार्यों में दक्ष होने की अपेक्षा की जा सकती है। ऐसी अपेक्षाएँ बच्चों की भूमिका और व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

4. व्यवहार एवं अनुकरण -

बच्चे परिवार के सदस्यों को देखकर सीखते हैं। माता-पिता यदि घर के काम, निर्णय और जिम्मेदारियों को समान रूप से साझा करते हैं, तो बच्चे भी समानता और सहयोग का व्यवहार सीखते हैं।

5. शिक्षा एवं अवसर -

परिवार द्वारा बालक और बालिका को शिक्षा, खेल, तकनीक, करियर और निर्णय लेने के समान अवसर देना उनके आत्मविश्वास और क्षमताओं के विकास में सहायक होता है।

6. लैंगिक रूढ़ियों को कम करना-

परिवार को यह समझना आवश्यक है कि खेल, विषय, व्यवसाय, घरेलू कार्य या नेतृत्व किसी एक लिंग तक सीमित नहीं हैं। बच्चों को उनकी रुचि और क्षमता के आधार पर अवसर देना चाहिए।

11.4 समाज एवं संस्कृति का लैंगिक समाजीकरण पर प्रभाव

लैंगिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज में

NOTE

प्रचलित मान्यताओं, मूल्यों, परंपराओं और अपेक्षाओं के आधार पर यह सीखता है कि बालक और बालिका से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। समाज और संस्कृति इस प्रक्रिया को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

1. सामाजिक मान्यताओं का प्रभाव-

समाज में प्रचलित विचार यह निर्धारित कर सकते हैं कि बालक और बालिका के लिए कौन-से व्यवहार उचित माने जाएँ। जैसे बालकों को नेतृत्व और निर्णय लेने के लिए तथा बालिकाओं को देखभाल और सहयोग के लिए अधिक प्रोत्साहित करना।

2. सांस्कृतिक परंपराओं का प्रभाव-

रीति-रिवाज, परंपराएँ और सांस्कृतिक प्रथाएँ बच्चों में लैंगिक भूमिकाओं की समझ विकसित करती हैं। कुछ परंपराएँ पुरुष और महिला के लिए अलग-अलग भूमिकाएँ निर्धारित करती हैं, जिससे पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ मजबूत हो सकती हैं।

3. शिक्षा एवं सामाजिक संस्थाओं का प्रभाव-

विद्यालय, समुदाय और अन्य सामाजिक संस्थाएँ बच्चों के व्यवहार और दृष्टिकोण को प्रभावित करती हैं। यदि इन संस्थाओं में समान अवसर और समान व्यवहार होता है, तो बच्चों में लैंगिक समानता की भावना विकसित होती है।

4. भाषा एवं व्यवहार-

समाज में प्रयुक्त भाषा, कहावतें, संबोधन और दैनिक व्यवहार भी लैंगिक धारणाओं को प्रभावित करते हैं। सकारात्मक और समानतापूर्ण भाषा बच्चों

नोट

में सम्मान एवं समानता की भावना विकसित करती है।

5. सामाजिक अपेक्षाएँ-

समाज अक्सर बालक और बालिका से अलग-अलग व्यवहार की अपेक्षा करता है। उदाहरण के लिए, बालकों से आत्मनिर्भरता और साहस तथा बालिकाओं से विनम्रता और देखभाल की अपेक्षा की जा सकती है। ऐसी अपेक्षाएँ उनके व्यक्तित्व और निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं।

6. मीडिया एवं लोकप्रिय संस्कृति-

टेलीविजन, फिल्मों, विज्ञापनों और सोशल मीडिया में पुरुषों और महिलाओं का चित्रण बच्चों की लैंगिक धारणाओं को प्रभावित कर सकता है। विविध और समान भूमिकाओं का सकारात्मक चित्रण रूढ़ियों को कम करने में सहायक है।

7. लैंगिक समानता पर प्रभाव-

यदि समाज और संस्कृति समानता, स्वतंत्रता और सम्मान को बढ़ावा देते हैं, तो बालक-बालिकाओं को शिक्षा, रोजगार, नेतृत्व और निर्णय लेने के समान अवसर मिलते हैं। इससे लैंगिक भेदभाव और रूढ़ियों को कम किया जा सकता है।

11.5 लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव को कम करने में परिवार एवं समाज की भूमिका

लैंगिक रूढ़ियाँ वे निश्चित धारणाएँ हैं जिनके आधार पर समाज यह मान लेता है कि बालक और बालिकाओं को किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए, कौन-सा कार्य करना चाहिए या कौन-सा व्यवसाय चुनना चाहिए। जब इन धारणाओं के आधार पर किसी व्यक्ति को अवसर, सम्मान या

NOTE

अधिकारों से वंचित किया जाता है, तो इसे लैंगिक भेदभाव कहा जाता है। परिवार और समाज दोनों मिलकर इन रूढ़ियों को मजबूत भी कर सकते हैं और उन्हें कम भी कर सकते हैं। इसलिए लैंगिक समानता के लिए परिवार एवं समाज की सकारात्मक भूमिका आवश्यक है।

1. परिवार की भूमिका -

(क) समान व्यवहार और अवसर-

परिवार को बालक और बालिका के साथ शिक्षा, भोजन, स्वास्थ्य, खेल, मनोरंजन तथा अन्य अवसरों में समान व्यवहार करना चाहिए।

(ख) घरेलू कार्यों में समान भागीदारी-

घर के काम को केवल बालिकाओं या महिलाओं की जिम्मेदारी नहीं माना जाना चाहिए। खाना बनाना, सफाई, खरीदारी और अन्य कार्यों में सभी सदस्यों की भागीदारी होनी चाहिए।

(ग) रूढ़िगत धारणाओं को चुनौती देना-

परिवार को यह धारणा नहीं बनानी चाहिए कि कुछ विषय, खेल या व्यवसाय केवल लड़कों या केवल लड़कियों के लिए हैं। बच्चों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार चुनाव करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

(घ) माता-पिता का सकारात्मक उदाहरण-

बच्चे परिवार के सदस्यों को देखकर सीखते हैं। यदि माता-पिता निर्णय, घरेलू कार्य और जिम्मेदारियाँ मिलकर निभाते हैं, तो बच्चों में समानता और सहयोग की भावना विकसित होती है।

(ङ) संवाद और संवेदनशीलता-

नोट

माता-पिता को बच्चों के साथ लैंगिक समानता, सम्मान और भेदभाव से संबंधित विषयों पर उम्र के अनुरूप खुलकर बातचीत करनी चाहिए।

2. समाज की भूमिका-

(क) समान सामाजिक अवसर-

समाज को शिक्षा, खेल, रोजगार, नेतृत्व और सार्वजनिक जीवन में सभी लिंगों के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने चाहिए।

(ख) सामाजिक रूढ़ियों में परिवर्तन-

समाज में प्रचलित ऐसी मान्यताओं को बदलना आवश्यक है जो पुरुषों और महिलाओं के लिए कठोर एवं असमान भूमिकाएँ निर्धारित करती हैं।

(ग) विद्यालय की भूमिका-

विद्यालय में बालक-बालिकाओं को समान अवसर, समान सहभागिता और समान नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ दी जानी चाहिए। पाठ्यपुस्तकों और शिक्षण गतिविधियों में भी लैंगिक संतुलन होना चाहिए।

(घ) मीडिया की जिम्मेदारी-

मीडिया को महिलाओं और पुरुषों को विविध एवं सम्मानजनक भूमिकाओं में प्रस्तुत करना चाहिए। रूढ़िगत चित्रण के बजाय समानता और सहयोग को बढ़ावा देने वाली सामग्री उपयोगी होती है।

(ङ) समुदाय की सहभागिता-

स्थानीय समुदाय, सामाजिक संस्थाएँ और युवा संगठन लैंगिक समानता के प्रति जागरूकता कार्यक्रम, चर्चाएँ और अभियान आयोजित कर सकते हैं।

3. भेदभाव कम करने के प्रमुख उपाय-

NOTE

क्षेत्र	सकारात्मक पहल
परिवार	समान व्यवहार और समान अवसर
शिक्षा	सभी विद्यार्थियों के लिए समान सहभागिता
खेल	रुचि के अनुसार सभी को अवसर
घरेलू कार्य	जिम्मेदारियों का समान बँटवारा
करियर	क्षमता के आधार पर स्वतंत्र चुनाव
मीडिया	गैर-रूढ़िगत एवं सम्मानजनक प्रस्तुति
समाज	समान अधिकार और सम्मान

अपनी प्रगति जाँचे –

प्रश्न 1. लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण में परिवार की क्या भूमिका है?

.....

.....

प्रश्न 2. समाज एवं संस्कृति लैंगिक समाजीकरण को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

.....

.....

प्रश्न 3. लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव को कम करने में परिवार और समाज की क्या भूमिका है?

.....

नोट

.....

11.6 सारांश

लैंगिक समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से बालक-बालिकाएँ परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति और मीडिया से लैंगिक भूमिकाओं, व्यवहारों तथा सामाजिक अपेक्षाओं को सीखते हैं। परिवार बच्चे का प्रथम सामाजिक वातावरण है, जहाँ माता-पिता का व्यवहार, पालन-पोषण, कार्य-विभाजन और अपेक्षाएँ लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण को प्रभावित करती हैं। समाज एवं संस्कृति भी परंपराओं, सामाजिक मान्यताओं, भाषा, रीति-रिवाजों और संस्थाओं के माध्यम से लैंगिक धारणाओं को आकार देते हैं। यदि परिवार और समाज समान अवसर, समान सम्मान तथा समान जिम्मेदारी को बढ़ावा दें, तो लैंगिक रूढ़ियों और भेदभाव को कम किया जा सकता है। इस प्रकार सकारात्मक लैंगिक समाजीकरण बच्चों के आत्मविश्वास, स्वतंत्रता, समानता और समग्र व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है।

11.7शब्दावली

1. लैंगिक समाजीकरण

समाज में प्रचलित लैंगिक भूमिकाओं एवं व्यवहारों को सीखने की प्रक्रिया

2. लैंगिक भूमिका

किसी लिंग से संबंधित माने जाने वाले सामाजिक व्यवहार एवं जिम्मेदारियाँ

3. लैंगिक रूढ़ि

बालक-बालिका के बारे में बनी स्थिर एवं सामान्यीकृत धारणा

NOTE

4. लैंगिक भेदभाव

लिंग के आधार पर असमान व्यवहार या अवसर प्रदान करना

5. लैंगिक समानता

सभी लिंगों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान मिलना

6. सामाजिक मान्यता

समाज द्वारा स्वीकार किए गए विचार, मूल्य एवं व्यवहार

7. पालन-पोषण

बच्चे के विकास एवं व्यवहार को प्रभावित करने वाली पारिवारिक प्रक्रिया

8. लैंगिक संवेदनशीलता

लैंगिक असमानता एवं भेदभाव को समझने और दूर करने की दृष्टि

11.8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण में परिवार की क्या भूमिका है?

उत्तर: परिवार बालक का प्रथम समाजीकरण अभिकरण है। बालक परिवार के सदस्यों के व्यवहार, भाषा, कार्य-विभाजन और मान्यताओं से लैंगिक भूमिकाएँ सीखता है। यदि परिवार लड़के और लड़कियों को समान अवसर तथा जिम्मेदारियाँ देता है, तो उनमें समानता और सहयोग की भावना विकसित होती है। इससे लैंगिक रूढ़ियाँ कम होती हैं।

नोट

प्रश्न 2. समाज एवं संस्कृति लैंगिक समाजीकरण को किस प्रकार प्रभावित करते हैं?

उत्तर: समाज एवं संस्कृति बच्चों के विचारों, व्यवहार और लैंगिक भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं। रीति-रिवाज, परंपराएँ, लोककथाएँ और सामाजिक मान्यताएँ बच्चों को बताते हैं कि उनसे किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा की जाती है। समानतापूर्ण सांस्कृतिक मूल्य सकारात्मक समाजीकरण को बढ़ावा देते हैं, जबकि रूढ़िवादी मान्यताएँ असमानता बढ़ा सकती हैं।

प्रश्न 3. लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव को कम करने में परिवार और समाज की क्या भूमिका है?

उत्तर: परिवार और समाज लड़के तथा लड़कियों को समान शिक्षा, सम्मान, स्वतंत्रता और अवसर प्रदान करके लैंगिक रूढ़ियों को कम कर सकते हैं। घरेलू कार्यों में समान भागीदारी, भेदभावपूर्ण भाषा से बचाव तथा जागरूकता कार्यक्रम महत्वपूर्ण उपाय हैं। इन प्रयासों से समानता, सहयोग और न्यायपूर्ण सामाजिक वातावरण विकसित किया जा सकता है।

11.9 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन(OER)

11.10 संदर्भ मूल पुस्तकें

- NCERT – Gender, School and Society, नई दिल्ली।
- Bhasin, Kamla – Understanding Gender, Kali for

NOTE

Women, New Delhi.

- Menon, Nivedita – Seeing Like a Feminist, Zubaan, New Delhi.
- Desai, Sonalde & Thakkar, Neera – Women in Indian Society, National Book Trust, New Delhi.
- Sadker, David & Sadker, Myra – Failing at Fairness: How America's Schools Cheat Girls, Scribner.
- UNESCO – Gender Equality and Education से संबंधित शैक्षिक संसाधन।

11.11 अभ्यास

प्रश्न 1. लैंगिक समाजीकरण की शुरुआत मुख्य रूप से किस संस्था से होती है?

A. बाजार

B. परिवार

C. राजनीतिक दल

D. न्यायालय

प्रश्न 2. लैंगिक रूढ़ियों को कम करने का सबसे प्रभावी तरीका कौन-सा है?

A. अलग-अलग अवसर देना

B. पारंपरिक भूमिकाओं को बढ़ावा देना

नोट

C. समान अवसर एवं समान व्यवहार करना

D. बच्चों के चुनाव को सीमित करना

प्रश्न 3. परिवार में लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए क्या आवश्यक है?

A. केवल बालिकाओं से घरेलू कार्य कराना

B. केवल बालकों को निर्णय का अधिकार देना

C. घरेलू कार्यों एवं जिम्मेदारियों में समान भागीदारी

D. बालक-बालिकाओं के लिए अलग नियम बनाना

प्रश्न 4. समाज एवं संस्कृति लैंगिक समाजीकरण को किस माध्यम से प्रभावित करते हैं?

A. सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं द्वारा

B. केवल आर्थिक गतिविधियों द्वारा

C. केवल प्राकृतिक कारकों द्वारा

D. केवल शारीरिक विकास द्वारा

स्पष्टिकरण सहित उत्तर

1.सही उत्तर: (ब) परिवार।

स्पष्टीकरण: परिवार बालक का प्रथम समाजीकरण अभिकरण है। बच्चा परिवार के सदस्यों के व्यवहार, भाषा, विचारों और कार्य-विभाजन को देखकर सामाजिक तथा लैंगिक भूमिकाएँ सीखता है। परिवार का वातावरण उसके दृष्टिकोण और व्यवहार को प्रभावित करता है।

NOTE

2.सही उत्तर: (स) समान अवसर एवं समान व्यवहार करना।

स्पष्टीकरण: लैंगिक रूढ़ियों को कम करने के लिए सभी बच्चों को उनकी रुचि और योग्यता के अनुसार समान अवसर देने चाहिए। शिक्षा, खेलकूद, नेतृत्व और करियर चयन में भेदभाव से बचना आवश्यक है। इससे समानता और आत्मविश्वास को बढ़ावा मिलता है।

3.सही उत्तर: (स) घरेलू कार्यों एवं जिम्मेदारियों में समान भागीदारी।

स्पष्टीकरण: परिवार में घरेलू कार्यों और जिम्मेदारियों को केवल लिंग के आधार पर निर्धारित नहीं करना चाहिए। बालक और बालिका दोनों को घर के कार्यों, निर्णयों और अन्य गतिविधियों में भाग लेने के अवसर मिलने चाहिए। इससे सहयोग, जिम्मेदारी और समानता की भावना विकसित होती है।

4.सही उत्तर: (अ) सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं द्वारा।

स्पष्टीकरण: समाज और संस्कृति बच्चों के व्यवहार, विचारों तथा लैंगिक भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं। परिवार की परंपराएँ, लोककथाएँ, रीति-रिवाज और सामाजिक अपेक्षाएँ बच्चों को विभिन्न भूमिकाओं की समझ प्रदान करती हैं। समानतापूर्ण मान्यताएँ लैंगिक समानता को बढ़ावा देती हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. लैंगिक समाजीकरण से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2. लैंगिक समाजीकरण में परिवार की क्या भूमिका है?

प्रश्न 3. समाज लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण को किस प्रकार प्रभावित करता

नोट

है?

प्रश्न 4. परिवार एवं समाज लैंगिक भेदभाव को कैसे कम कर सकते हैं?

NOTE

इकाई 12
लिंग और सामाजिक संरचना

इकाई की रूपरेखा

12.1- प्रस्तावना
12.2- उद्देश्य
12.3- लिंग और सामाजिक संरचना का महत्व
12.4- लिंग और सामाजिक संरचना की विशेषता
12.5- समाज में लैंगिक भूमिकाओं**,** मान्यताओं और अपेक्षाओं का निर्माण।
12.6- सारांश
12.7- शब्दावली
12.8- अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
12.9- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
12.10- संदर्भ
12.11- अभ्यास प्रश्न

12.1 प्रस्तावना

लिंग (Gender) केवल स्त्री और पुरुष के जैविक अंतर को नहीं दर्शाता, बल्कि यह समाज द्वारा निर्मित भूमिकाओं, व्यवहारों, अपेक्षाओं, अधिकारों और जिम्मेदारियों से भी संबंधित है। प्रत्येक समाज अपनी संस्कृति, परंपराओं, मान्यताओं, परिवार, शिक्षा, धर्म, मीडिया तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से यह निर्धारित करता है कि विभिन्न लिंगों से किस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा की जाती है।

सामाजिक संरचना से आशय समाज में मौजूद विभिन्न संस्थाओं, समूहों, संबंधों, भूमिकाओं और नियमों की व्यवस्थित व्यवस्था से है। परिवार, विद्यालय, समुदाय, धर्म, अर्थव्यवस्था, राजनीति और राज्य सामाजिक संरचना के प्रमुख घटक हैं। इन संस्थाओं में मौजूद नियम और व्यवहार लैंगिक भूमिकाओं तथा अवसरों को प्रभावित करते हैं।

नोट

उदाहरण के लिए, यदि किसी समाज में घरेलू कार्यों को मुख्यतः महिलाओं की जिम्मेदारी और आर्थिक निर्णयों को पुरुषों की जिम्मेदारी माना जाता है, तो ऐसी सामाजिक व्यवस्था लैंगिक भूमिकाओं को मजबूत करती है। इसके विपरीत, जब परिवार, विद्यालय और समाज सभी को समान अवसर, अधिकार और जिम्मेदारी देते हैं, तो लैंगिक समानता को बढ़ावा मिलता है।

इस प्रकार, लिंग और सामाजिक संरचना का संबंध परस्पर प्रभावकारी है। सामाजिक संरचना लैंगिक भूमिकाओं को प्रभावित करती है और लोगों के व्यवहार एवं विचारों में परिवर्तन सामाजिक संरचना को भी बदल सकता है।

12.2 उद्देश्य

लिंग और सामाजिक संरचना के अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- लिंग की अवधारणा को समझना तथा इसे जैविक सेक्स से अलग करके देखना।
- सामाजिक संरचना के प्रमुख घटकों और उनके लैंगिक दृष्टिकोण पर प्रभाव को समझना।
- परिवार, विद्यालय, समुदाय, धर्म, मीडिया और राज्य की लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण में भूमिका को जानना।
- समाज में मौजूद लैंगिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों की पहचान करना।
- लैंगिक असमानता के सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारणों को समझना।
- शिक्षा, रोजगार और सामाजिक जीवन में स्त्री एवं पुरुष के अवसरों में अंतर का अध्ययन करना।

NOTE

- लैंगिक भेदभाव के व्यक्तित्व, आत्मविश्वास और सामाजिक विकास पर प्रभाव को समझना।
- विद्यार्थियों में लैंगिक संवेदनशीलता और समानता की भावना विकसित करना।
- समान अधिकार, समान अवसर और समान भागीदारी की आवश्यकता को समझना।
- एक समतामूलक, समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण के लिए आवश्यक उपायों को जानना।

12.3 लिंग और सामाजिक संरचना का महत्व

1. लैंगिक असमानता को समझने में सहायक-

लिंग और सामाजिक संरचना का अध्ययन यह समझने में सहायता करता है कि समाज में स्त्री और पुरुष के लिए अवसरों, अधिकारों तथा जिम्मेदारियों में अंतर क्यों दिखाई देता है।

2. लैंगिक रूढ़ियों की पहचान-

इससे यह समझने में मदद मिलती है कि "कुछ कार्य केवल पुरुषों के लिए" या "कुछ कार्य केवल महिलाओं के लिए" जैसी धारणाएँ कैसे विकसित होती हैं और उन्हें कैसे बदला जा सकता है।

3. समान अवसर को बढ़ावा-

लिंग आधारित सामाजिक संरचना को समझने से शिक्षा, रोजगार, नेतृत्व और निर्णय लेने के क्षेत्रों में सभी के लिए समान अवसर उपलब्ध कराने की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

4. शिक्षा में समानता-

नोट

विद्यालयों में पाठ्यपुस्तकों, शिक्षण विधियों, खेलों और कक्षा सहभागिता में लैंगिक पक्षपात को पहचानकर अधिक लैंगिक संवेदनशील शिक्षा विकसित की जा सकती है।

5. व्यक्तित्व विकास-

जब बच्चों को उनकी लैंगिक पहचान के आधार पर सीमित न करके उनकी रुचि और क्षमता के अनुसार अवसर दिए जाते हैं, तो उनमें आत्मविश्वास, स्वतंत्र सोच और सकारात्मक आत्म-अवधारणा का विकास होता है।

6. सामाजिक परिवर्तन-

लैंगिक समानता केवल व्यक्तिगत स्तर का विषय नहीं है। परिवार, विद्यालय और समुदाय में समानतापूर्ण व्यवहार सामाजिक संरचना में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

7. लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास-

समानता, स्वतंत्रता, सम्मान और न्याय लोकतांत्रिक समाज के महत्वपूर्ण मूल्य हैं। लैंगिक समानता इन मूल्यों को मजबूत करती है।

12.4 लिंग और सामाजिक संरचना की विशेषताएं

1. सामाजिक रूप से निर्मित-

लैंगिक भूमिकाएँ केवल जैविक आधार पर निर्धारित नहीं होतीं। समाज और संस्कृति इनके निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2. परिवर्तनशील

लैंगिक भूमिकाएँ स्थायी नहीं होतीं। समय, शिक्षा, तकनीक, आर्थिक परिस्थितियों और सामाजिक आंदोलनों के साथ इनमें परिवर्तन आता रहता

है।

NOTE

1. संस्कृति से प्रभावित

विभिन्न समाजों और संस्कृतियों में स्त्री एवं पुरुष की भूमिकाओं के संबंध में अलग-अलग मान्यताएँ हो सकती हैं।

2. सामाजिक संस्थाओं से संबंधित

परिवार, विद्यालय, धर्म, मीडिया, अर्थव्यवस्था और राज्य जैसी संस्थाएँ लैंगिक विचारों एवं भूमिकाओं को प्रभावित करती हैं।

3. शक्ति और अवसरों से जुड़ी

सामाजिक संरचना में लैंगिकता का संबंध संसाधनों, निर्णय लेने की शक्ति, शिक्षा, रोजगार और नेतृत्व के अवसरों से भी होता है।

4. लैंगिक भूमिकाओं का निर्माण करती है

समाज विभिन्न लिंगों से संबंधित कुछ विशेष व्यवहार और जिम्मेदारियों की अपेक्षा करता है। यही अपेक्षाएँ लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण में योगदान देती हैं।

5. रूढ़ियों को प्रभावित करती है

यदि सामाजिक संस्थाएँ बार-बार एक ही प्रकार की लैंगिक भूमिकाओं को प्रस्तुत करती हैं, तो लैंगिक रूढ़ियाँ मजबूत हो सकती हैं।

6. सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है

लिंग परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल और समुदाय में व्यक्ति के संबंधों, सहभागिता और निर्णय लेने की प्रक्रिया को प्रभावित कर सकता है।

7. समानता और असमानता दोनों की संभावना-

सामाजिक संरचना लैंगिक असमानता को बढ़ा सकती है, लेकिन समानता

नोट

आधारित नीतियों और व्यवहारों के माध्यम से यह लैंगिक समानता को भी बढ़ावा दे सकती है।

8. शिक्षा द्वारा परिवर्तन संभव-

शिक्षा बच्चों और युवाओं में आलोचनात्मक सोच, संवेदनशीलता और समानता की भावना विकसित करके लैंगिक रूढ़ियों को चुनौती देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

12.5 समाज में लैंगिक भूमिकाओं,मान्यताओं और अपेक्षाओं का निर्माण

समाज में लैंगिक भूमिकाएँ (Gender Roles) उन व्यवहारों, कार्यों और जिम्मेदारियों को कहते हैं जिन्हें समाज स्त्री, पुरुष या अन्य लैंगिक पहचानों से जोड़ता है। लैंगिक मान्यताएँ वे विचार और विश्वास हैं जिनके आधार पर समाज यह तय करता है कि विभिन्न लिंगों के लिए कौन-सा व्यवहार उचित या अनुचित माना जाए। वहीं लैंगिक अपेक्षाएँ वे सामाजिक आशाएँ हैं कि व्यक्ति अपने लिंग के अनुसार किस प्रकार व्यवहार करे।

इनका निर्माण जन्म से निर्धारित नहीं होता, बल्कि परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति, मीडिया, धर्म, साथियों और सामाजिक संस्थाओं के निरंतर प्रभाव से होता है।

1. परिवार की भूमिका-

परिवार बच्चे का पहला सामाजिक वातावरण है। माता-पिता के व्यवहार, पालन-पोषण और अपेक्षाओं से बच्चों में लैंगिक भूमिकाओं की समझ विकसित होती है।

NOTE

- बालकों को अधिक स्वतंत्रता देना और बालिकाओं को अधिक घरेलू जिम्मेदारियाँ देना।
- बालक-बालिका के लिए अलग-अलग खेल या कार्य निर्धारित करना।
- बच्चों के व्यवहार के लिए अलग-अलग नियम बनाना।
- यदि परिवार दोनों को समान अवसर और जिम्मेदारी देता है, तो लैंगिक समानता की भावना विकसित होती है।

2. विद्यालय की भूमिका-

विद्यालय बच्चों के सामाजिक विकास का महत्वपूर्ण केंद्र है। शिक्षक का व्यवहार, पाठ्यपुस्तकें, खेल तथा सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ लैंगिक धारणाओं को प्रभावित करती हैं।

उदाहरण के लिए, यदि नेतृत्व की जिम्मेदारियाँ केवल बालकों को दी जाएँ, तो बच्चों में यह धारणा बन सकती है कि नेतृत्व पुरुषों का क्षेत्र है। इसके विपरीत, सभी विद्यार्थियों को समान अवसर देने से रूढ़ियाँ कम होती हैं।

3. संस्कृति एवं परंपराओं का प्रभाव-

समाज की संस्कृति, रीति-रिवाज और परंपराएँ भी लैंगिक भूमिकाओं को प्रभावित करती हैं। कुछ सामाजिक परंपराओं में महिलाओं को देखभाल और घरेलू कार्यों से तथा पुरुषों को आर्थिक जिम्मेदारियों से जोड़कर देखा जाता है।

समय के साथ शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन ऐसी धारणाओं में बदलाव ला सकते हैं।

4. मीडिया का प्रभाव-

टेलीविजन, फिल्म, विज्ञापन, इंटरनेट और सोशल मीडिया लैंगिक

नोट

भूमिकाओं को बनाने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

यदि महिलाओं और पुरुषों को बार-बार सीमित पारंपरिक भूमिकाओं में दिखाया जाता है, तो लैंगिक रूढ़ियाँ मजबूत हो सकती हैं। विविध और सकारात्मक भूमिकाओं का चित्रण इन रूढ़ियों को चुनौती दे सकता है।

5. सहपाठी एवं मित्र समूह-

बच्चे अपने मित्रों और सहपाठियों से भी सामाजिक व्यवहार सीखते हैं। समूह में प्रचलित विचार यह प्रभावित कर सकते हैं कि कौन-सा खेल, पहनावा, विषय या व्यवहार "लड़कों" या "लड़कियों" के लिए उपयुक्त माना जाए।

सकारात्मक सहपाठी वातावरण समानता और सम्मान को बढ़ावा देता है।

6. धर्म एवं सामाजिक मान्यताएँ-

धार्मिक विश्वास, सामाजिक परंपराएँ और सामुदायिक मान्यताएँ भी लैंगिक भूमिकाओं को प्रभावित कर सकती हैं। इसलिए समानता, सम्मान और मानव गरिमा पर आधारित व्याख्या एवं व्यवहार महत्वपूर्ण है।

7. आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ-

परिवार की आर्थिक स्थिति, रोजगार के अवसर और सामाजिक वर्ग भी लैंगिक भूमिकाओं को प्रभावित कर सकते हैं। आर्थिक स्वतंत्रता और शिक्षा में समान अवसर पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं में परिवर्तन ला सकते हैं।

8. भाषा और दैनिक व्यवहार-

भाषा, कहावतें, संबोधन और दैनिक बातचीत भी बच्चों की लैंगिक समझ को प्रभावित करती हैं। बार-बार किसी विशेष गुण को केवल एक

लिंग से जोड़ना रूढ़ियों को मजबूत कर सकता है।

NOTE

9. सामाजिक अपेक्षाएँ-

समाज अक्सर बालकों और बालिकाओं से अलग-अलग अपेक्षाएँ करता है। जैसे बालकों से आत्मनिर्भरता और नेतृत्व तथा बालिकाओं से विनम्रता और देखभाल की अपेक्षा करना। ऐसी अपेक्षाएँ उनके आत्मविश्वास, रुचियों और भविष्य के निर्णयों को प्रभावित कर सकती हैं।

10 . परिवर्तन और लैंगिक समानता-

लैंगिक भूमिकाएँ स्थायी नहीं हैं। शिक्षा, जागरूकता, समान अवसर, सकारात्मक अभिभावकत्व और संवेदनशील विद्यालयी वातावरण के माध्यम से लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव को कम किया जा सकता है।

संक्षिप्त प्रवाह-चित्र

परिवार + विद्यालय + संस्कृति + मीडिया + सहपाठी + सामाजिक संस्थाएँ

↓

लैंगिक मान्यताओं एवं अपेक्षाओं का निर्माण

↓

लैंगिक भूमिकाओं का विकास

↓

व्यवहार एवं सामाजिक संबंधों पर प्रभाव

↓

समानतापूर्ण वातावरण → रूढ़ियों में कमी → लैंगिक समानता

नोट

अपनी प्रगति जाँचे –

प्रश्न 1. लिंग और सामाजिक संरचना के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

प्रश्न 2. लिंग और सामाजिक संरचना की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

.....

.....

प्रश्न 3. समाज में लैंगिक भूमिकाओं, मान्यताओं और अपेक्षाओं का निर्माण कैसे होता है?

.....

.....

12.6 सारांश

लिंग और सामाजिक संरचना का संबंध समाज में स्त्री, पुरुष तथा अन्य लैंगिक पहचानों से जुड़ी भूमिकाओं, अधिकारों, अवसरों और जिम्मेदारियों से है। परिवार, विद्यालय, संस्कृति, धर्म, मीडिया, समुदाय और राज्य जैसी सामाजिक संस्थाएँ लैंगिक भूमिकाओं एवं मान्यताओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सामाजिक संरचना के माध्यम से कई बार लैंगिक रूढ़ियाँ और असमानताएँ भी विकसित होती हैं। शिक्षा, जागरूकता, समान अवसर और लैंगिक संवेदनशील दृष्टिकोण के द्वारा इन असमानताओं को कम किया जा सकता है। लैंगिक समानता का उद्देश्य सभी व्यक्तियों को

समान सम्मान, अधिकार, अवसर और सहभागिता प्रदान करना है।

NOTE

12.7 शब्दावली

1.लिंग (Gender)- समाज द्वारा निर्मित लैंगिक भूमिकाएँ, व्यवहार एवं अपेक्षाएँ

2.सामाजिक संरचना- समाज की संस्थाओं, समूहों, संबंधों एवं भूमिकाओं की व्यवस्थित व्यवस्था

3.लैंगिक भूमिका- किसी लिंग से संबंधित मानी जाने वाली सामाजिक भूमिका एवं जिम्मेदारी

4.लैंगिक रूढ़ि-किसी लिंग के बारे में बनी स्थिर एवं सामान्यीकृत धारणा

5.लैंगिक भेदभाव-लिंग के आधार पर असमान व्यवहार या अवसर

6.लैंगिक समानता-सभी लिंगों को समान अधिकार एवं अवसर प्रदान करना

7.लैंगिक समाजीकरण- समाज से लैंगिक व्यवहार, भूमिकाएँ और मान्यताएँ सीखने की प्रक्रिया

8.लैंगिक संवेदनशीलता- लैंगिक असमानता एवं भेदभाव को समझने और दूर करने की दृष्टि

नोट

12.8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. लिंग और सामाजिक संरचना के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लिंग और सामाजिक संरचना का अध्ययन समाज में स्त्री-पुरुष तथा अन्य लैंगिक पहचानों की स्थिति को समझने में सहायक होता है। इससे परिवार, शिक्षा, रोजगार और राजनीति में व्याप्त लैंगिक असमानताओं की पहचान की जा सकती है। यह अध्ययन समान अधिकार, अवसर, सम्मान और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रश्न 2. लिंग और सामाजिक संरचना की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर: लिंग और सामाजिक संरचना की प्रमुख विशेषताएँ सामाजिक मान्यताओं, परंपराओं, मूल्यों तथा संस्थाओं से संबंधित हैं। लैंगिक भूमिकाएँ समाज और संस्कृति के अनुसार विकसित होती हैं तथा समय के साथ बदल सकती हैं। परिवार, विद्यालय, धर्म, मीडिया और समुदाय इन भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं। सामाजिक संरचना लैंगिक संबंधों और अवसरों को भी निर्धारित करती है।

प्रश्न 3. समाज में लैंगिक भूमिकाओं, मान्यताओं और अपेक्षाओं का निर्माण कैसे होता है?

उत्तर: समाज में लैंगिक भूमिकाओं, मान्यताओं और अपेक्षाओं का निर्माण परिवार, विद्यालय, संस्कृति, परंपराओं और मीडिया के माध्यम से होता है। बालक-बालिकाएँ बचपन से ही सामाजिक व्यवहार और जिम्मेदारियाँ सीखते हैं। कई बार रूढ़िवादी धारणाएँ असमानता को बढ़ाती हैं। समान

शिक्षा, सकारात्मक दृष्टिकोण और समान अवसरों द्वारा इन धारणाओं में परिवर्तन लाया जा सकता है।

NOTE

12.9 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन(OER)

- NCERT ई-पाठशाला – लैंगिक समानता, शिक्षा और समाज से संबंधित ई-सामग्री।
- DIKSHA – लैंगिक संवेदनशीलता एवं समावेशी शिक्षा से संबंधित शिक्षण संसाधन।
- UNESCO Open Educational Resources – Gender Equality और Education से संबंधित मुक्त संसाधन।
- UNICEF Learning Resources – बाल अधिकार, लैंगिक समानता और सामाजिक विकास संबंधी सामग्री।
- National Digital Library of India (NDLI) – Gender Studies, Women's Education और सामाजिक विकास से संबंधित ई-पुस्तकें एवं सामग्री।

12.10 संदर्भ

- Bhasin, Kamla. Understanding Gender. Kali for Women, New Delhi.
- Menon, Nivedita. Seeing Like a Feminist. Zubaan, New Delhi.
- NCERT. Gender, School and Society. National Council of Educational Research and Training, New Delhi.
- Desai, Neera & Thakkar, Usha. Women in Indian

नोट

Society. National Book Trust, New Delhi.

- Rege, Sharmila. Sociology of Gender: The Indian Context. Sage Publications.
- Oakley, Ann. Sex, Gender and Society. Harper& Row.

12.11 अभ्यास

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. सामाजिक संरचना में लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण में किसकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है?

A. केवल जैविक कारकों की

B. परिवार और सामाजिक संस्थाओं की

C. केवल प्राकृतिक पर्यावरण की

D. केवल व्यक्तिगत रुचि की

प्रश्न 2. लैंगिक समानता का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

A. अलग-अलग अधिकार देना

B. केवल पुरुषों को अवसर देना

C. सभी को समान अधिकार और अवसर देना

D. लैंगिक भूमिकाओं को कठोर बनाना

प्रश्न 3. निम्न में से कौन-सा लैंगिक रूढ़ि का उदाहरण है?

A. सभी को समान अवसर देना

B. घरेलू कार्य सभी द्वारा करना

NOTE

C. यह मानना कि नेतृत्व केवल पुरुषों के लिए है

D. सभी विद्यार्थियों को खेल में भाग लेने देना

स्पष्टिकरण सहित उत्तर

1. सही उत्तर: B. परिवार और सामाजिक संस्थाओं की

स्पष्टीकरण: परिवार, विद्यालय, समाज, संस्कृति और मीडिया लैंगिक भूमिकाओं के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से बालक-बालिकाएँ सामाजिक अपेक्षाओं, व्यवहारों और जिम्मेदारियों को सीखते हैं।

2. सही उत्तर: C. सभी को समान अधिकार और अवसर देना

स्पष्टीकरण: लैंगिक समानता का उद्देश्य सभी व्यक्तियों को बिना किसी लैंगिक भेदभाव के शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य, निर्णय लेने और विकास के समान अवसर तथा अधिकार प्रदान करना है।

3. उत्तर: C. यह मानना कि नेतृत्व केवल पुरुषों के लिए है

स्पष्टीकरण: लैंगिक रूढ़ि किसी लिंग के व्यक्तियों के बारे में बनी एक सामान्य और निश्चित धारणा है। यह मानना कि नेतृत्व केवल पुरुष कर सकते हैं, एक लैंगिक रूढ़ि है, क्योंकि नेतृत्व करने की क्षमता किसी एक लिंग तक सीमित नहीं होती

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. लिंग और सामाजिक संरचना में क्या संबंध है?

प्रश्न 2. सामाजिक संरचना लैंगिक असमानता को किस प्रकार प्रभावित

नोट

करती है?

प्रश्न 3. लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में शिक्षा की क्या भूमिका है?

NOTE

इकाई 13
लैंगिक समानता सशक्तिकरण एवं सामाजिक परिवर्तन

इकाई की रूपरेखा

13.1- प्रस्तावना
13.2- उद्देश्य
13.3- लैंगिक समानता की अवधारणा एवं आवश्यकता
13.3.1- समान अधिकार**,** समान अवसर**,** समान सम्मान एवं सामाजिक न्याय।
13.4- लैंगिक सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता
13.4.1-शिक्षा**,** आर्थिक स्वतंत्रता**,** निर्णय लेने की क्षमता**,**
13.5- नेतृत्व एवं आत्मविश्वास का विकास।
13.6- सारांश
13.7- शब्दावली
13.8- अपनी प्रगति जांचें **-** संभावित उत्तर
13.9- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
13.10- संदर्भ
13.11- अभ्यास प्रश्न

13.1 प्रस्तावना

लैंगिक समानता का अर्थ है कि सभी व्यक्तियों को उनके लिंग के आधार पर किसी प्रकार के भेदभाव के बिना समान अधिकार, अवसर, सम्मान और सहभागिता प्राप्त हो। लैंगिक सशक्तिकरण का तात्पर्य व्यक्ति, विशेषकर महिलाओं और वंचित समूहों, को शिक्षा, संसाधनों, निर्णय लेने और सामाजिक जीवन में प्रभावी भागीदारी के लिए सक्षम बनाना है। जब समानता और सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलता है, तो परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल और समुदाय की पारंपरिक असमान संरचनाओं में सकारात्मक परिवर्तन आता है। इस प्रकार लैंगिक समानता और सशक्तिकरण सामाजिक परिवर्तन के महत्वपूर्ण आधार हैं।

नोट

13.2 उद्देश्य

- लैंगिक समानता की अवधारणा को समझना।
- लैंगिक सशक्तिकरण के अर्थ एवं महत्व को जानना।
- लैंगिक भेदभाव और असमानता के कारणों की पहचान करना
- शिक्षा की लैंगिक समानता एवं सशक्तिकरण में भूमिका को समझना।
- महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक सहभागिता के महत्व को समझना।
- लैंगिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को कम करने के उपायों को जानना।
- समानता, सम्मान और सामाजिक न्याय के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।
- लैंगिक समानता के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को समझना।

13.3 लैंगिक समानता की अवधारणा एवं आवश्यकता

लैंगिक समानता (Gender Equality) का अर्थ है कि सभी व्यक्तियों को उनके लिंग के आधार पर भेदभाव किए बिना समान अधिकार, अवसर, सम्मान और सहभागिता प्राप्त हो। लैंगिक समानता का उद्देश्य केवल महिलाओं की स्थिति में सुधार करना नहीं है, बल्कि समाज के सभी व्यक्तियों को अपनी क्षमता और रुचि के अनुसार जीवन जीने के समान अवसर प्रदान करना है।

समाज में लंबे समय से कुछ कार्यों, जिम्मेदारियों और व्यवहारों को विशेष रूप से पुरुषों या महिलाओं से जोड़ा जाता रहा है। ऐसी सामाजिक धारणाएँ कई बार शिक्षा, रोजगार, निर्णय-निर्माण और सामाजिक सहभागिता में

असमानता उत्पन्न करती हैं। लैंगिक समानता इन रूढ़िगत धारणाओं को कम करके न्यायपूर्ण एवं समतामूलक समाज के निर्माण पर बल देती है।

NOTE

1. लैंगिक समानता की अवधारणा -

(क) समान अधिकार

सभी व्यक्तियों को शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा, संपत्ति, रोजगार और सामाजिक जीवन में समान अधिकार प्राप्त होने चाहिए।

(ख) समान अवसर-

लिंग के आधार पर अवसरों को सीमित नहीं किया जाना चाहिए। शिक्षा, खेल, विज्ञान, तकनीक, कला, नेतृत्व और रोजगार के क्षेत्रों में व्यक्ति को उसकी रुचि एवं योग्यता के आधार पर अवसर मिलना चाहिए।

(ग) समान सम्मान-

परिवार और समाज में प्रत्येक व्यक्ति के विचारों, निर्णयों और व्यक्तित्व का समान सम्मान किया जाना लैंगिक समानता का महत्वपूर्ण आधार है।

(घ) समान सहभागिता-

परिवार, विद्यालय, कार्यस्थल और सामाजिक संस्थाओं में सभी की सहभागिता सुनिश्चित होनी चाहिए। निर्णय लेने की प्रक्रिया में भी सभी को अपनी बात रखने का अवसर मिलना चाहिए।

(ङ) लैंगिक रूढ़ियों से मुक्ति-

"यह काम केवल पुरुषों का है" या "यह काम केवल महिलाओं का है" जैसी रूढ़िगत धारणाओं को कम करना लैंगिक समानता का महत्वपूर्ण पक्ष है।

(च) समान जिम्मेदारी-

नोट

घर और समाज की जिम्मेदारियाँ केवल किसी एक लिंग की नहीं होनी चाहिए। घरेलू कार्य, बच्चों की देखभाल और अन्य सामाजिक जिम्मेदारियों में सहयोग और साझेदारी आवश्यक है।

2. लैंगिक समानता की आवश्यकता -

1. लैंगिक भेदभाव को कम करना-

लैंगिक समानता शिक्षा, रोजगार, संसाधनों और सामाजिक अवसरों में होने वाले भेदभाव को कम करने में सहायता करती है।

2. शिक्षा के समान अवसर-

बालक-बालिकाओं को समान शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलने से उनकी ज्ञान एवं कौशल संबंधी क्षमताओं का विकास होता है।

3. व्यक्तित्व विकास-

समान अवसर मिलने पर व्यक्ति अपनी रुचि, क्षमता और प्रतिभा के अनुसार विकास कर सकता है। इससे आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और सकारात्मक आत्म-अवधारणा को बढ़ावा मिलता है।

4. आर्थिक विकास-

जब सभी व्यक्तियों को शिक्षा, कौशल और रोजगार के समान अवसर मिलते हैं, तो समाज की मानव संसाधन क्षमता का बेहतर उपयोग होता है और आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है।

5. सामाजिक न्याय-

लैंगिक समानता सामाजिक न्याय का महत्वपूर्ण आधार है। यह अधिकारों और अवसरों में अनावश्यक असमानता को कम करने में सहायक होती है।

NOTE

6. परिवार में समानता-

समानता आधारित परिवार में निर्णय, घरेलू कार्य और जिम्मेदारियाँ सहयोग एवं साझेदारी के आधार पर निभाई जाती हैं। इससे स्वस्थ पारिवारिक संबंध विकसित होते हैं।

7. लैंगिक रूढ़ियों में कमी-

समानता की सोच बच्चों को यह समझने में सहायता करती है कि विषय, खेल, व्यवसाय या नेतृत्व किसी एक लिंग तक सीमित नहीं हैं।

8. सामाजिक सहभागिता में वृद्धि-

सभी व्यक्तियों को सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक और नेतृत्व संबंधी गतिविधियों में समान अवसर मिलने से समाज में व्यापक सहभागिता सुनिश्चित होती है।

9. लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करना-

समानता, स्वतंत्रता, सम्मान और न्याय लोकतांत्रिक समाज के महत्वपूर्ण मूल्य हैं। लैंगिक समानता इन मूल्यों को मजबूत करती है।

10. समतामूलक समाज का निर्माण-

लैंगिक समानता समाज में भेदभाव और पूर्वाग्रह को कम करके ऐसा वातावरण बनाने में सहायता करती है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान और विकास के समान अवसर मिल सकें।

13.3.1 - समान अधिकार, समान अवसर, समान सम्मान एवं सामाजिक न्याय।

लैंगिक समानता का आधार समान अधिकार, समान अवसर, समान

नोट

सम्मान और सामाजिक न्याय है। इन चारों के माध्यम से यह सुनिश्चित किया जाता है कि किसी व्यक्ति के साथ उसके लिंग के आधार पर भेदभाव न हो।

1. समान अधिकार-

समान अधिकार का अर्थ है कि सभी व्यक्तियों को कानून और समाज के स्तर पर समान अधिकार प्राप्त हों। किसी व्यक्ति के अधिकारों को केवल उसके लिंग के आधार पर सीमित नहीं किया जाना चाहिए।

उदाहरण:

- शिक्षा प्राप्त करने का समान अधिकार।
- अपनी बात रखने और निर्णय लेने का अधिकार।
- रोजगार एवं आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार।
- कानून के समक्ष समानता और सुरक्षा का अधिकार।
- महत्व: समान अधिकार व्यक्ति में सुरक्षा, स्वतंत्रता और आत्मविश्वास की भावना विकसित करते हैं।

2. समान अवसर-

समान अवसर का अर्थ है कि सभी व्यक्तियों को अपनी योग्यता, रुचि और क्षमता विकसित करने के लिए समान अवसर उपलब्ध हों।

उदाहरण:

- बालक और बालिका दोनों को शिक्षा के समान अवसर देना।
- सभी विद्यार्थियों को खेल, विज्ञान, तकनीक, कला एवं नेतृत्व गतिविधियों में भाग लेने का अवसर देना।
- करियर चुनने में लिंग के आधार पर प्रतिबंध न लगाना।
- महत्व: समान अवसर व्यक्ति की प्रतिभा के विकास और सामाजिक

प्रगति को बढ़ावा देते हैं।

NOTE

3. समान सम्मान-

समान सम्मान का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति की गरिमा, विचारों, भावनाओं और क्षमताओं का समान रूप से सम्मान किया जाए।

उदाहरण:

- परिवार में सभी सदस्यों की राय को महत्व देना।
- विद्यालय में बालक-बालिकाओं के साथ सम्मानजनक व्यवहार करना।
- किसी व्यक्ति को उसके लिंग के कारण कम सक्षम या कम महत्वपूर्ण न समझना।
- महत्व: समान सम्मान से आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और स्वस्थ सामाजिक संबंधों का विकास होता है।

4. सामाजिक न्याय-

सामाजिक न्याय का अर्थ है कि समाज में सभी व्यक्तियों को उनके अधिकारों, अवसरों और संसाधनों तक न्यायपूर्ण पहुँच प्राप्त हो तथा किसी के साथ लिंग, सामाजिक स्थिति या अन्य आधार पर अनुचित भेदभाव न किया जाए।

उदाहरण:

- शिक्षा और रोजगार में भेदभाव को कम करना।
- वंचित समूहों को आवश्यक सहायता और अवसर प्रदान करना।
- कार्यस्थल एवं शैक्षणिक संस्थानों में सुरक्षित और समान वातावरण बनाना।

नोट

- महत्व: सामाजिक न्याय असमानताओं को कम करके समाज में समानता, समावेशन और मानव गरिमा को मजबूत करता है।

संक्षिप्त रूप में -

समान अधिकार → अधिकारों में समानता

समान अवसर → विकास के अवसरों में समानता

समान सम्मान → गरिमा एवं व्यवहार में समानता

सामाजिक न्याय → संसाधनों एवं अवसरों का न्यायपूर्ण वितरण

13.4 लैंगिक सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता

लैंगिक सशक्तिकरण का अर्थ है कि प्रत्येक व्यक्ति, विशेषकर महिलाओं और लड़कियों को समान अधिकार, अवसर, संसाधन, शिक्षा तथा निर्णय लेने की स्वतंत्रता प्राप्त हो। सशक्तिकरण व्यक्ति को अपनी क्षमता पहचानने, अपने जीवन से जुड़े निर्णय लेने और सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के योग्य बनाता है।

आत्मनिर्भरता का अर्थ है व्यक्ति का ज्ञान, कौशल, संसाधनों और आत्मविश्वास के आधार पर अपने जीवन के निर्णय लेने तथा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम होना। लैंगिक सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

NOTE



चित्र 13.4 : - लैंगिक सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता

लैंगिक सशक्तिकरण के प्रमुख आयाम -

(1) शैक्षिक सशक्तिकरण-

सभी को समान एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलना। शिक्षा व्यक्ति में ज्ञान, आत्मविश्वास और निर्णय क्षमता विकसित करती है।

(2) आर्थिक सशक्तिकरण-

कौशल विकास, रोजगार, व्यवसाय और आर्थिक संसाधनों तक समान पहुँच के माध्यम से आर्थिक रूप से सक्षम बनाना।

(3) सामाजिक सशक्तिकरण-

परिवार और समाज में अपनी बात रखने, सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने तथा सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर प्राप्त होना।

(4) निर्णय लेने की क्षमता-

शिक्षा, करियर, वित्त, परिवार तथा व्यक्तिगत जीवन से जुड़े निर्णयों में

नोट

अपनी राय रखने और निर्णय लेने की स्वतंत्रता।

(5) राजनीतिक एवं नागरिक भागीदारी-

स्थानीय निकायों तथा अन्य लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व के अवसर प्राप्त होना।

2. आत्मनिर्भरता का लैंगिक सशक्तिकरण से संबंध-

शिक्षा → कौशल विकास → आत्मविश्वास → आर्थिक क्षमता → निर्णय लेने की क्षमता → आत्मनिर्भरता → सशक्तिकरण

जब व्यक्ति को शिक्षा और कौशल प्राप्त होते हैं, तो उसमें आत्मविश्वास बढ़ता है। आर्थिक एवं सामाजिक अवसर मिलने से वह दूसरों पर अनावश्यक निर्भरता कम करके अपने जीवन से संबंधित निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होता है।

3. लैंगिक सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता की आवश्यकता-

- लैंगिक भेदभाव को कम करना।
- शिक्षा और रोजगार में समान अवसर उपलब्ध कराना।
- आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता विकसित करना।
- आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देना।
- निर्णय लेने की क्षमता विकसित करना।
- रूढ़िवादी लैंगिक भूमिकाओं को कम करना।
- परिवार और समाज में समान भागीदारी सुनिश्चित करना।
- सामाजिक न्याय और समानता को मजबूत करना।

5. शिक्षा की भूमिका-

शिक्षा लैंगिक सशक्तिकरण का महत्वपूर्ण माध्यम है। विद्यालय एवं

NOTE

उच्च शिक्षा संस्थान विद्यार्थियों में समानता, आत्मविश्वास, आलोचनात्मक सोच, कौशल और नेतृत्व क्षमता विकसित कर सकते हैं। लड़के और लड़कियों को विषय चयन, खेल, तकनीक, नेतृत्व तथा करियर के समान अवसर देने से आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है।

13.4.1 -शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, निर्णय लेने की क्षमता

लैंगिक सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता के लिए शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता और निर्णय लेने की क्षमता तीन महत्वपूर्ण आधार हैं। ये तीनों एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं।

1. शिक्षा-

शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, आत्मविश्वास और अपने अधिकारों की समझ प्रदान करती है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने लिए सही विकल्पों का चयन करने तथा सामाजिक रूढ़ियों और भेदभाव को समझने में सक्षम होता है।

शिक्षा का महत्व—

- ज्ञान और जागरूकता का विकास।
- आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान में वृद्धि।
- रोजगार एवं करियर के अवसरों में वृद्धि।
- अपने अधिकारों और कर्तव्यों की जानकारी।
- लैंगिक रूढ़ियों एवं भेदभाव को चुनौती देने की क्षमता।
- स्वतंत्र एवं तार्किक सोच का विकास।

2. आर्थिक स्वतंत्रता

आर्थिक स्वतंत्रता का अर्थ है व्यक्ति का आय, रोजगार, कौशल और आर्थिक

नोट

संसाधनों तक उचित पहुँच के माध्यम से आर्थिक रूप से सक्षम होना। आर्थिक रूप से सक्षम व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और भविष्य से जुड़े निर्णय अधिक स्वतंत्रता से ले सकता है।

आर्थिक स्वतंत्रता का महत्व—

- रोजगार एवं आय के अवसर प्राप्त होना।
- आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता बढ़ना।
- आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास में वृद्धि।
- परिवार में आर्थिक योगदान और सहभागिता।
- बचत एवं वित्तीय नियोजन की क्षमता।
- आर्थिक निर्भरता से उत्पन्न असमानताओं को कम करना।

3. निर्णय लेने की क्षमता-

निर्णय लेने की क्षमता का अर्थ है व्यक्ति का विभिन्न विकल्पों का विश्लेषण करके अपने जीवन से संबंधित उचित निर्णय स्वयं लेने में सक्षम होना। इसमें शिक्षा, करियर, आर्थिक मामलों, परिवार तथा सामाजिक जीवन से जुड़े निर्णय शामिल हो सकते हैं।

निर्णय लेने की क्षमता के प्रमुख आधार—

- सही जानकारी प्राप्त करना।
- विकल्पों का विश्लेषण करना।
- अपनी रुचि एवं क्षमता को समझना।
- परिणामों के बारे में विचार करना।
- आत्मविश्वास के साथ अपनी राय रखना।
- आवश्यकतानुसार परिवार एवं विशेषज्ञों से सलाह लेना।

तीनों का आपसी संबंध -

शिक्षा → ज्ञान एवं कौशल → रोजगार/आर्थिक स्वतंत्रता → आत्मविश्वास → निर्णय लेने की क्षमता → आत्मनिर्भरता → लैंगिक सशक्तिकरण

NOTE

13.5 नेतृत्व एवं आत्मविश्वास का विकास

नेतृत्व का अर्थ है किसी समूह या समाज को उचित दिशा देने, दूसरों के साथ सहयोग करने तथा किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रभावी ढंग से कार्य करने की क्षमता।

आत्मविश्वास का अर्थ है अपनी योग्यता, क्षमता और निर्णयों पर विश्वास रखना। लैंगिक सशक्तिकरण के संदर्भ में नेतृत्व एवं आत्मविश्वास व्यक्ति को अपनी बात रखने, निर्णय लेने और सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी के लिए सक्षम बनाते हैं।

2. नेतृत्व विकास के प्रमुख आधार -

शिक्षा एवं ज्ञान – ज्ञान व्यक्ति में समस्या समझने और समाधान खोजने की क्षमता विकसित करता है।

निर्णय लेने का अवसर – छोटे-बड़े निर्णयों में सहभागिता नेतृत्व क्षमता बढ़ाती है।

संचार कौशल – स्पष्ट रूप से अपनी बात रखना प्रभावी नेतृत्व के लिए आवश्यक है।

समूह गतिविधियाँ – समूह चर्चा, परियोजना कार्य और टीम गतिविधियों से नेतृत्व का अभ्यास होता है।

जिम्मेदारी देना – विद्यार्थियों को विभिन्न जिम्मेदारियाँ देने से नेतृत्व क्षमता विकसित होती है।

नोट

समान अवसर – लड़के और लड़कियों को नेतृत्व के समान अवसर मिलने चाहिए।

3. आत्मविश्वास के विकास के उपाय-

- अपनी क्षमताओं और रुचियों को पहचानना।
- सकारात्मक सोच विकसित करना।
- छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करके उन्हें पूरा करना।
- अपनी बात स्पष्ट एवं सम्मानपूर्वक रखना।
- असफलता को सीखने के अवसर के रूप में स्वीकार करना।
- परिवार और शिक्षकों से सकारात्मक प्रोत्साहन प्राप्त करना।
- भेदभाव एवं लैंगिक रूढ़ियों से मुक्त वातावरण में सीखना।

4. शिक्षा की भूमिका-

विद्यालय आत्मविश्वास और नेतृत्व विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। वाद-विवाद, भाषण, समूह-कार्य, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, परियोजना कार्य और छात्र-नेतृत्व वाली गतिविधियों में समान भागीदारी के अवसर देकर विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता विकसित की जा सकती है।

5. लैंगिक सशक्तिकरण से संबंध-

- समान अवसर → सहभागिता → कौशल विकास → आत्मविश्वास → नेतृत्व क्षमता → निर्णय लेने की क्षमता → आत्मनिर्भरता → लैंगिक सशक्तिकरण
-

अपनी प्रगति जाँचे -

NOTE

प्रश्न 1. लैंगिक समानता की अवधारणा एवं आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

प्रश्न 2. लैंगिक सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता में शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता की भूमिका बताइए।

.....

.....

प्रश्न 3. लैंगिक समानता के विकास में नेतृत्व एवं आत्मविश्वास का क्या महत्त्व है?

.....

.....

13.6 सारांश

लैंगिक समानता सभी व्यक्तियों के लिए समान अधिकार, अवसर और सम्मान सुनिश्चित करने पर आधारित है। सशक्तिकरण व्यक्ति को अपने जीवन से संबंधित निर्णय लेने, संसाधनों तक पहुँच प्राप्त करने और सामाजिक जीवन में सक्रिय भागीदारी करने की क्षमता प्रदान करता है। शिक्षा, आर्थिक आत्मनिर्भरता, जागरूकता, कानून और सामाजिक सहभागिता लैंगिक सशक्तिकरण के प्रमुख साधन हैं। लैंगिक भेदभाव एवं रूढ़ियों को कम करके समाज में समानता और न्याय को बढ़ावा दिया जा

नोट

सकता है। जब महिलाएँ और अन्य सभी लैंगिक समूह शिक्षा, रोजगार, नेतृत्व और निर्णय-निर्माण में समान रूप से भाग लेते हैं, तो सामाजिक संरचना में सकारात्मक परिवर्तन आता है।

13.7 शब्दावली

1. लैंगिक समानता

सभी लिंगों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान मिलना

2. सशक्तिकरण

व्यक्ति की क्षमता, आत्मविश्वास और निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि

3. सामाजिक परिवर्तन

समाज की संरचना, विचारों, मूल्यों और व्यवहारों में होने वाला परिवर्तन

4. लैंगिक भेदभाव

लिंग के आधार पर असमान व्यवहार या अवसर प्रदान करना

5. लैंगिक रूढ़ि

किसी लिंग के बारे में बनी स्थिर एवं सामान्यीकृत धारणा

6. आत्मनिर्भरता

अपने निर्णयों और आवश्यकताओं के लिए सक्षम होना

7. समान अवसर

सभी को विकास एवं सहभागिता के लिए समान अवसर प्राप्त होना

8. सामाजिक न्याय

समाज में अधिकारों, अवसरों और संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण

13. 8 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

NOTE

प्रश्न 1. लैंगिक समानता की अवधारणा एवं आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: लैंगिक समानता का अर्थ है सभी लिंगों के व्यक्तियों को समान अधिकार, अवसर और सम्मान प्रदान करना। यह समाज में भेदभाव को समाप्त करने तथा सामाजिक न्याय स्थापित करने के लिए आवश्यक है। इससे सभी व्यक्तियों को शिक्षा, रोजगार और विकास के समान अवसर मिलते हैं तथा एक समतामूलक समाज का निर्माण होता है।

प्रश्न 2. लैंगिक सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता में शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता की भूमिका बताइए।

उत्तर: शिक्षा व्यक्तियों को जागरूक बनाती है तथा अपने अधिकारों को समझने में सहायता करती है। आर्थिक स्वतंत्रता उन्हें दूसरों पर निर्भर हुए बिना अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने योग्य बनाती है। शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्रता से निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है, आत्मविश्वास विकसित होता है तथा व्यक्ति आत्मनिर्भर बनता है।

प्रश्न 3. लैंगिक समानता के विकास में नेतृत्व एवं आत्मविश्वास का क्या महत्त्व है?

उत्तर: नेतृत्व एवं आत्मविश्वास लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आत्मविश्वास से व्यक्ति अपने विचारों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत कर सकता है तथा अधिकारों के प्रति जागरूक रहता है। नेतृत्व

नोट

क्षमता से निर्णय लेने, समस्याओं का समाधान करने और सामाजिक परिवर्तन लाने में सहायता मिलती है।

13.9 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन(OER)

- NCERT ई-पाठशाला — लैंगिक समानता, शिक्षा और सामाजिक विकास से संबंधित अध्ययन सामग्री।
- DIKSHA — समावेशी शिक्षा एवं लैंगिक संवेदनशीलता से संबंधित डिजिटल संसाधन।
- UNESCO — Gender Equality एवं Education से संबंधित मुक्त शैक्षिक सामग्री।
- UNICEF — लैंगिक समानता, बाल अधिकार और सशक्तिकरण से संबंधित संसाधन।
- National Digital Library of India (NDLI) — Gender Studies, Women's Education और सामाजिक परिवर्तन से संबंधित ई-पुस्तकें एवं अध्ययन सामग्री।

13.10 संदर्भ

- Bhasin, Kamla. Understanding Gender. Kali for Women, New Delhi.
- Menon, Nivedita. Seeing Like a Feminist. Zubaan, New Delhi.
- Oakley, Ann. Sex, Gender and Society. Harper & Row.
- Desai, Neera & Thakkar, Usha. Women in Indian Society. National Book Trust, New Delhi.
- Rege, Sharmila. Writing Caste/Writing Gender:

Narrating Dalit Women's Testimonios. Zubaan.

- NCERT. Gender, School and Society. National Council of Educational Research and Training, New Delhi.

NOTE

13.11अभ्यास

प्रश्न 1. लैंगिक समानता का मुख्य उद्देश्य क्या है?

A. केवल महिलाओं को अवसर देना

B. केवल पुरुषों को अवसर देना

C. सभी को समान अधिकार और अवसर देना

D. लैंगिक भूमिकाओं को निश्चित करना

प्रश्न 2. निम्न में से कौन-सा लैंगिक सशक्तिकरण का प्रमुख माध्यम है?

A. शिक्षा

B. भेदभाव

C. रूढ़िवादिता

D. अवसरों की कमी

प्रश्न 3. लैंगिक भेदभाव को कम करने में क्या सहायक है?

A. रूढ़िगत सोच

B. समान अवसर और जागरूकता

C. असमान व्यवहार

D. अवसरों पर प्रतिबंध

नोट

प्रश्न 4. लैंगिक समानता सामाजिक परिवर्तन में किस प्रकार योगदान देती है?

A. असमानता बढ़ाकर

B. सहभागिता और समान अवसर बढ़ाकर

C. सामाजिक भूमिकाओं को सीमित करके

D. भेदभाव को बढ़ावा देकर

स्पष्टिकरण सहित उत्तर

1. सही उत्तर: C. सभी को समान अधिकार और अवसर देना

स्पष्टीकरण: लैंगिक समानता का उद्देश्य सभी व्यक्तियों को बिना किसी लैंगिक भेदभाव के समान अधिकार, अवसर और सम्मान प्रदान करना है।

2.सही उत्तर: A. शिक्षा

स्पष्टीकरण: शिक्षा व्यक्तियों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाती है तथा आत्मनिर्भरता, निर्णय लेने की क्षमता और आत्मविश्वास विकसित करने में सहायता करती है।

3.सही उत्तर: B. समान अवसर और जागरूकता

स्पष्टीकरण: समान अवसर और जागरूकता से लैंगिक रूढ़ियों तथा भेदभावपूर्ण व्यवहार को कम करने में सहायता मिलती है। इससे समाज में समानता और सम्मान की भावना विकसित होती है।

4. सही उत्तर: B. सहभागिता और समान अवसर बढ़ाकर

NOTE

स्पष्टीकरण: लैंगिक समानता से सभी व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षिक गतिविधियों में सहभागिता बढ़ती है। इससे सामाजिक न्याय, समानता और समावेशी विकास को प्रोत्साहन मिलता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1 -लैंगिक समानता से क्या अभिप्राय है?

प्रश्न 2. लैंगिक सशक्तिकरण में शिक्षा की क्या भूमिका है?

प्रश्न 3. लैंगिक भेदभाव सामाजिक परिवर्तन में बाधा क्यों है?

प्रश्न 4. लैंगिक समानता सामाजिक परिवर्तन को कैसे बढ़ावा देती है?

नोट

इकाई 14
समावेशी एवं समान अवसर आधारित विद्यालयी

इकाई की रूपरेखा

14.1- प्रस्तावना
14.2- उद्देश्य
14.3-भेदभाव रहित विद्यालयी वातावरण ।
14.4-स्वच्छ एवं सुरक्षित शौचालय तथा आवश्यक आधारभूत सुविधाएँ।
14.5- सारांश
14.6- शब्दावली
14.7- अपनी प्रगति जांचें - संभावित उत्तर
14.8- सहायक पाठ्य सामग्री मुक्त शैक्षिक संसाधन **(OER)**
14.9- संदर्भ
14.10 अभ्यास

14.1 प्रस्तावना

समावेशी एवं समान अवसर आधारित विद्यालयी वातावरण वह वातावरण है जिसमें प्रत्येक विद्यार्थी को लिंग, जाति, धर्म, भाषा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, दिव्यांगता या अन्य व्यक्तिगत भिन्नताओं के बावजूद शिक्षा प्राप्त करने, सीखने और विद्यालयी गतिविधियों में भाग लेने के समान अवसर मिलते हैं। ऐसा वातावरण विद्यार्थियों में समानता, सम्मान, सहयोग, आत्मविश्वास और सामाजिक न्याय की भावना विकसित करता है। शिक्षक का निष्पक्ष व्यवहार, भेदभाव रहित शिक्षण, सुरक्षित वातावरण तथा संसाधनों की समान उपलब्धता समावेशी विद्यालय की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई के प्रमुख उद्देश्य हैं—

- विद्यार्थियों में समानता एवं समावेशन की भावना विकसित करना।

NOTE

- विद्यालय में होने वाले लैंगिक एवं सामाजिक भेदभाव को पहचानना और कम करना।
- सभी विद्यार्थियों को शिक्षा एवं विद्यालयी गतिविधियों में समान अवसर प्रदान करना।
- शिक्षक एवं सहपाठियों में सम्मान, सहयोग और संवेदनशीलता विकसित करना।
- सुरक्षित, सहयोगात्मक और भेदभाव-मुक्त विद्यालयी वातावरण का निर्माण करना।
- विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, सहभागिता एवं नेतृत्व क्षमता को बढ़ावा देना।

14.3 भेदभाव रहित विद्यालयी वातावरण

1. अर्थ एवं अवधारणा -

भेदभाव रहित विद्यालयी वातावरण से आशय ऐसे विद्यालयी वातावरण से है जहाँ प्रत्येक विद्यार्थी के साथ उसकी लिंग, जाति, धर्म, भाषा, सामाजिक-आर्थिक स्थिति, दिव्यांगता, क्षेत्र या व्यक्तिगत पृष्ठभूमि के आधार पर किसी प्रकार का अनुचित या असमान व्यवहार न किया जाए। प्रत्येक विद्यार्थी को सीखने, भाग लेने, अपनी बात रखने और अपनी क्षमताओं को विकसित करने के लिए समान अवसर प्राप्त हों।

यह वातावरण समानता, सम्मान, न्याय, स्वतंत्रता और सहयोग के मूल्यों पर आधारित होता है।

2. भेदभाव रहित वातावरण की प्रमुख विशेषताएँ -

1. समान व्यवहार -

नोट

शिक्षक सभी विद्यार्थियों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करता है। बालक और बालिका को समान महत्व एवं अवसर दिए जाते हैं।

2. समान शैक्षिक अवसर -

प्रवेश, कक्षा में सहभागिता, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा अन्य गतिविधियों में सभी विद्यार्थियों को समान अवसर मिलते हैं।

3. लैंगिक रूढ़ियों से मुक्ति -

विद्यालय में यह धारणा नहीं बनाई जाती कि कुछ विषय, खेल या कार्य केवल बालकों या केवल बालिकाओं के लिए हैं। विद्यार्थियों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार अवसर दिया जाता है।

4. सुरक्षित एवं सम्मानजनक वातावरण-

विद्यालय में डर, अपमान, बदमाशी, उत्पीड़न और किसी भी प्रकार के भेदभाव के लिए स्थान नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों को अपनी समस्याएँ व्यक्त करने के लिए सुरक्षित वातावरण मिलना चाहिए।

5. विविधता का सम्मान -

अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक, भाषायी और आर्थिक पृष्ठभूमि से आने वाले विद्यार्थियों की विविधता को समस्या न मानकर विद्यालय की विशेषता के रूप में स्वीकार किया जाता है।

6. समान संसाधन एवं सुविधाएँ-

कक्षा-कक्ष, पुस्तकालय, खेल सामग्री, प्रयोगशाला, डिजिटल संसाधन और अन्य सुविधाओं तक विद्यार्थियों की समान पहुँच सुनिश्चित की जाती है।

NOTE

3. शिक्षक की भूमिका -

भेदभाव रहित वातावरण बनाने में शिक्षक की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है—

- विद्यार्थियों के साथ निष्पक्ष और समान व्यवहार करना।
- किसी विद्यार्थी को उसकी लैंगिक या सामाजिक पहचान के आधार पर कम सक्षम न समझना।
- प्रश्न पूछने और उत्तर देने के समान अवसर देना।
- समूह कार्यों में सभी विद्यार्थियों की सहभागिता सुनिश्चित करना।
- पाठ्यपुस्तकों एवं उदाहरणों में सकारात्मक और विविध प्रतिनिधित्व को बढ़ावा देना।
- लैंगिक रूढ़ियों एवं पूर्वाग्रहों पर विद्यार्थियों के साथ चर्चा करना।
- भेदभाव या बुलिंग की स्थिति में उचित हस्तक्षेप करना।

4. सहपाठियों की भूमिका-

सहपाठी भी विद्यालयी वातावरण को प्रभावित करते हैं। विद्यार्थियों में एक-दूसरे के प्रति सम्मान, सहयोग, सहानुभूति और स्वीकार्यता विकसित की जानी चाहिए। किसी विद्यार्थी का मजाक उड़ाना, उसे समूह से अलग करना या उसकी सामाजिक/व्यक्तिगत पृष्ठभूमि के कारण उसे कम समझना रोकना आवश्यक है।

विद्यालय प्रशासन की भूमिका-

विद्यालय प्रशासन को ऐसी नीतियाँ एवं व्यवस्थाएँ बनानी चाहिए जो सभी विद्यार्थियों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करें। शिकायतों के लिए उचित व्यवस्था, सुरक्षित परिसर, समान संसाधन, संवेदनशील शिक्षक-प्रशिक्षण और समावेशी गतिविधियाँ इस दिशा में उपयोगी हैं।

6. भेदभाव रहित वातावरण के लाभ-

नोट

- विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है।
- कक्षा में सहभागिता बढ़ती है।
- सीखने के बेहतर अवसर मिलते हैं।
- लैंगिक एवं सामाजिक रूढ़ियाँ कम होती हैं।
- विद्यार्थियों में सहयोग एवं सहिष्णुता विकसित होती है।
- विद्यालय में समानता और सामाजिक न्याय की भावना मजबूत होती है।
- विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा मिलता है।

14.4 स्वच्छ एवं सुरक्षित शौचालय तथा आवश्यक आधारभूत सुविधाएं

विद्यालय में स्वच्छ, सुरक्षित और पर्याप्त शौचालय तथा अन्य आधारभूत सुविधाएँ विद्यार्थियों के स्वास्थ्य, सुरक्षा, गरिमा और नियमित उपस्थिति के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। विशेष रूप से बालिकाओं के लिए सुरक्षित एवं स्वच्छ शौचालय उनकी विद्यालय में निरंतरता और सहज सहभागिता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विद्यालयी सुविधाएँ ऐसी होनी चाहिए कि सभी विद्यार्थी बिना किसी भेदभाव के उनका उपयोग कर सकें।

1. स्वच्छ एवं सुरक्षित शौचालय की विशेषताएँ -

1. पर्याप्त संख्या में शौचालय -

विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या के अनुरूप पर्याप्त शौचालय उपलब्ध होने चाहिए, ताकि भीड़ और असुविधा न हो।

2. बालक एवं बालिकाओं के लिए उपयुक्त व्यवस्था-

बालक और बालिकाओं के लिए आवश्यकतानुसार अलग एवं सुरक्षित

शौचालय होने चाहिए। विद्यार्थियों की निजता और गरिमा का ध्यान रखा जाना चाहिए।

NOTE

3. नियमित सफाई -

शौचालयों की नियमित सफाई और उचित रख-रखाव आवश्यक है। फर्श, सीट, दरवाजे और हाथ धोने के स्थान स्वच्छ रखे जाने चाहिए।

4. पानी की उपलब्धता-

शौचालयों में पर्याप्त एवं सुरक्षित पानी उपलब्ध होना चाहिए। हाथ धोने के लिए पानी और साबुन की व्यवस्था भी आवश्यक है।

5. उचित प्रकाश एवं वेंटिलेशन-

शौचालयों में पर्याप्त रोशनी और हवा की व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे उनका उपयोग सुरक्षित एवं आरामदायक हो।

6. दरवाजे एवं निजता-

दरवाजे ठीक स्थिति में हों और उनमें उचित कुंडी/लॉक की व्यवस्था हो, ताकि विद्यार्थियों की निजता बनी रहे।

7. मासिक धर्म स्वच्छता की सुविधाएँ-

बालिकाओं के लिए मासिक धर्म के दौरान आवश्यक स्वच्छता सामग्री, पानी, निपटान की उचित व्यवस्था और संवेदनशील सहयोग उपलब्ध होना चाहिए।

2. आवश्यक आधारभूत सुविधाएँ-

विद्यालय में केवल शौचालय ही नहीं, बल्कि अन्य आवश्यक सुविधाएँ भी होनी चाहिए—

- स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था।

नोट

- पर्याप्त एवं सुरक्षित कक्षा-कक्ष।
- पर्याप्त प्रकाश और वेंटिलेशन।
- स्वच्छ एवं सुरक्षित फर्नीचर।
- पुस्तकालय और प्रयोगशाला जैसी शैक्षिक सुविधाएँ।
- खेल एवं शारीरिक गतिविधियों के लिए खेल मैदान/सामग्री।
- आवश्यकतानुसार डिजिटल एवं ।CT सुविधाएँ।
- विद्यार्थियों के लिए सुरक्षित आवागमन एवं परिसर व्यवस्था।
- दिव्यांग विद्यार्थियों के लिए रैम्प, सुगम मार्ग एवं उपयुक्त शौचालय।
- प्राथमिक उपचार के लिए स्वास्थ्य एवं प्राथमिक चिकित्सा सुविधा।
- विद्यालय परिसर में पर्याप्त सुरक्षा एवं स्वच्छता व्यवस्था।

3. लैंगिक समानता के संदर्भ में महत्व -

स्वच्छ एवं सुरक्षित सुविधाएँ लैंगिक समानता को भी बढ़ावा देती हैं। यदि बालिकाओं को सुरक्षित शौचालय, पानी और स्वच्छता संबंधी सुविधाएँ मिलती हैं, तो वे विद्यालय में अधिक सहजता से उपस्थित रह सकती हैं और विद्यालयी गतिविधियों में सक्रिय भाग ले सकती हैं। इसी प्रकार, सभी विद्यार्थियों के लिए समान सुविधाएँ उपलब्ध कराने से भेदभाव और असमानता को कम करने में सहायता मिलती है।

4. विद्यालय में सुविधाओं के रख-रखाव की जिम्मेदारी -

इस व्यवस्था में विद्यालय प्रशासन, शिक्षक, विद्यार्थी, अभिभावक और स्थानीय समुदाय सभी की भूमिका होती है। विद्यालय प्रशासन सफाई और रख-रखाव की व्यवस्था करे, शिक्षक विद्यार्थियों में स्वच्छता की आदत विकसित करें और विद्यार्थी उपलब्ध सुविधाओं का जिम्मेदारी से उपयोग करें।

NOTE

6. प्रमुख लाभ -

स्वच्छ एवं सुरक्षित आधारभूत सुविधाओं से—

- विद्यार्थियों के स्वास्थ्य और स्वच्छता में सुधार होता है।
- विद्यालय में नियमित उपस्थिति को बढ़ावा मिलता है।
- विद्यार्थियों में सुरक्षा एवं आत्मविश्वास की भावना विकसित होती है।
- बालिकाओं की विद्यालयी सहभागिता एवं निरंतरता को सहयोग मिलता है।
- दिव्यांग एवं अन्य विद्यार्थियों के लिए समावेशी वातावरण बनता है।
- विद्यालय में गरिमा, समानता और स्वस्थ जीवनशैली की भावना विकसित होती है।

अपनी प्रगति जाँचे –

प्रश्न 1. भेदभाव रहित विद्यालयी वातावरण के प्रमुख उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

प्रश्न 2. विद्यालय में स्वच्छ एवं सुरक्षित शौचालयों का क्या महत्त्व है?

.....

.....

प्रश्न 3. विद्यालय में आवश्यक आधारभूत सुविधाओं की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

नोट

.....

.....

14.5 सारांश

समावेशी एवं समान अवसर आधारित विद्यालयी वातावरण का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को बिना किसी भेदभाव के शिक्षा और विकास के अवसर प्रदान करना है। इसमें बालक-बालिका सहित सभी विद्यार्थियों के साथ समान व्यवहार, संसाधनों की समान पहुँच, सुरक्षित वातावरण तथा शिक्षण-अधिगम में सक्रिय सहभागिता पर बल दिया जाता है। शिक्षक लैंगिक रूढ़ियों और पूर्वाग्रहों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सहपाठियों में सहयोग और सम्मान की भावना तथा विद्यालय की समानतापूर्ण नीतियाँ समावेशन को मजबूत करती हैं। इस प्रकार समावेशी विद्यालय विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व विकास और सामाजिक न्याय का आधार बनता है।

14.6 शब्दावली

- **समावेशन (Inclusion)**

सभी विद्यार्थियों को शिक्षा की मुख्यधारा में समान रूप से शामिल करना।

- **समान अवसर (Equal Opportunity)**

सभी को आगे बढ़ने के लिए समान अवसर प्रदान करना।

- **लैंगिक समानता**

सभी लिंगों को समान अधिकार एवं अवसर देना।

- **भेदभाव**

किसी व्यक्ति के साथ अनुचित या असमान व्यवहार करना।

NOTE

- **लैंगिक संवेदनशीलता**

लैंगिक भेदभाव और असमानता के प्रति जागरूक एवं संवेदनशील होना।

- **सहभागिता**

विद्यालयी गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना।

- **समावेशी शिक्षा**

विविध आवश्यकताओं वाले सभी विद्यार्थियों को साथ लेकर शिक्षा देना।

14.7 अपनी प्रगति जांचें – संभावित उत्तर

प्रश्न 1. भेदभाव रहित विद्यालयी वातावरण के प्रमुख उद्देश्यों को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: भेदभाव रहित विद्यालयी वातावरण का प्रमुख उद्देश्य सभी विद्यार्थियों को समान अवसर, सम्मान और शिक्षा प्रदान करना है। इसमें जाति, धर्म, लिंग, भाषा तथा आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता। ऐसा वातावरण विद्यार्थियों में सहयोग, समानता, आत्मविश्वास और सामाजिक न्याय की भावना विकसित करता है।

प्रश्न 2. विद्यालय में स्वच्छ एवं सुरक्षित शौचालयों का क्या महत्त्व है?

उत्तर: विद्यालय में स्वच्छ एवं सुरक्षित शौचालय विद्यार्थियों के स्वास्थ्य, स्वच्छता और गरिमा के लिए आवश्यक हैं। इनसे संक्रमण और बीमारियों का खतरा कम होता है। बालक-बालिकाओं के लिए अलग एवं सुरक्षित शौचालय होने से उनकी सुविधा और सुरक्षा सुनिश्चित होती है। इससे विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति तथा पढ़ाई में सहभागिता बढ़ती है।

नोट

प्रश्न 3. विद्यालय में आवश्यक आधारभूत सुविधाओं की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: विद्यालय में स्वच्छ पेयजल, पर्याप्त कक्षाएँ, बिजली, पुस्तकालय, खेल सामग्री, फर्नीचर तथा सुरक्षित शौचालय जैसी आधारभूत सुविधाएँ आवश्यक हैं। ये सुविधाएँ विद्यार्थियों के लिए अनुकूल शिक्षण वातावरण तैयार करती हैं। इनके माध्यम से स्वास्थ्य, स्वच्छता और

14.8 सहायक पाठ्य सामग्री – मुक्त शैक्षिक संसाधन(OER)

- DIKSHA – विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक प्रशिक्षण की डिजिटल सामग्री।
- SWAYAM – ऑनलाइन पाठ्यक्रम एवं शैक्षिक सामग्री।
- NCERT – पाठ्यपुस्तकें, शिक्षक मार्गदर्शिकाएँ एवं शैक्षिक संसाधन।
- ePathshala – डिजिटल पाठ्यपुस्तकें एवं शैक्षिक सामग्री।
- UNESCO Open Educational Resources – समावेशी शिक्षा एवं समानता से संबंधित वैश्विक संसाधन।

14.9 संदर्भ

- NCERT – Gender, School and Society, नई दिल्ली।
- NCERT – National Curriculum Framework for School Education (NCF-SE), नई दिल्ली।
- भारत सरकार – National Education Policy (NEP) 2020।
- Batra, P. – Gender and Education, नई दिल्ली।
- Sadker, D. & Sadker, M. – Failing at Fairness: How

America's Schools Cheat Girls l

- UNESCO – Education and Gender Equality l

NOTE

14.10 अभ्यास

बहुविकल्पीय प्रश्न

प्रश्न 1. समावेशी विद्यालयी वातावरण का मुख्य उद्देश्य क्या है?

A. केवल मेधावी विद्यार्थियों को अवसर देना

B. सभी विद्यार्थियों को समान अवसर देना

C. केवल बालकों को अधिक अवसर देना

D. विद्यार्थियों में प्रतियोगिता बढ़ाना

प्रश्न 2. लैंगिक-संवेदनशील शिक्षक का व्यवहार कैसा होना चाहिए?

A. बालकों को अधिक अवसर देना

B. बालिकाओं को केवल सांस्कृतिक गतिविधियों में शामिल करना

C. सभी विद्यार्थियों के साथ समान एवं निष्पक्ष व्यवहार करना

D. विद्यार्थियों को अलग-अलग पढ़ाना

प्रश्न 3. समान अवसर आधारित विद्यालय में किसे बढ़ावा दिया जाता है?

A. भेदभाव

B. रूढ़िवादिता

C. समान सहभागिता

नोट

D. असमानता

स्पष्टिकरण सहित उत्तर

1.सही उत्तर: (C) सभी को समान अधिकार और अवसर देना।

स्पष्टीकरण: लैंगिक समानता का मुख्य उद्देश्य सभी व्यक्तियों को बिना किसी लैंगिक भेदभाव के समान अधिकार, अवसर और सम्मान प्रदान करना है। इससे सामाजिक न्याय स्थापित होता है तथा शिक्षा, रोजगार और विकास के क्षेत्र में सभी की समान भागीदारी सुनिश्चित होती है।

2.सही उत्तर: (A) शिक्षा।

स्पष्टीकरण: शिक्षा लैंगिक सशक्तिकरण का प्रमुख माध्यम है। यह व्यक्तियों को अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों के प्रति जागरूक बनाती है। शिक्षा से आत्मविश्वास, निर्णय लेने की क्षमता और आर्थिक आत्मनिर्भरता का विकास होता है, जिससे व्यक्ति समाज में सम्मानपूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है।

3.सही उत्तर: (B) समान अवसर और जागरूकता।

स्पष्टीकरण: समान अवसर और जागरूकता लैंगिक भेदभाव को कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इनके माध्यम से समाज में प्रचलित रूढ़िवादी धारणाओं को बदला जा सकता है। इससे सभी व्यक्तियों को शिक्षा, रोजगार और सामाजिक गतिविधियों में समान भागीदारी का अवसर मिलता है।

4.सही उत्तर: (B) सहभागिता और समान अवसर बढ़ाकर।

NOTE

स्पष्टीकरण: लैंगिक समानता समाज के सभी व्यक्तियों को विकास की प्रक्रिया में भाग लेने के समान अवसर प्रदान करती है। इससे निर्णय लेने में सहभागिता बढ़ती है तथा सामाजिक न्याय, समानता और सहयोग की भावना विकसित होती है। परिणामस्वरूप समाज में सकारात्मक परिवर्तन और समावेशी विकास को बढ़ावा मिलता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न 1. समावेशी विद्यालयी वातावरण से क्या तात्पर्य है?

प्रश्न 2. विद्यालय में समान अवसर प्रदान करना क्यों आवश्यक है?

प्रश्न 3. समावेशी विद्यालयी वातावरण बनाने में शिक्षक की क्या भूमिका है?

नोट

R. C.V. RAMAN UNIVERSITY

Chhattisgarh, Bilaspur AN AISECT GROUP UNIVERSITY

CTE | BCI | Member of : AIU | Joint Committee : (UGC | DEB | AICTE) | Recognized by : UGC | A NAAC Accredited University

. रमन विश्वविद्यालय (छत्तीसगढ़)

. प्रतिक्रिया प्रपत्र (फीडबैक फॉर्म)

SLM FEEDBACK FORM

: _____

: _____

: _____

: _____

इयों का अध्ययन करते समय, आपको पाठ के कुछ हिस्सों को समझने में कठिनाई हो सकती है। हम पाठ्यक्रम को बेहतर आपकी कठिनाइयों और सुझावों को जानना चाहते हैं। इसलिए, हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप इस ब्लॉक से संबंधित ावली को भरकर हमें भेजें। यदि आपको दिया गया स्थान अपर्याप्त लगता है, तो कृपया एक अलग शीट का उपयोग करें।

isectcontent@aisect.org / ऑनलाइन फॉर्म भरने के लिए QR को स्कैन करें :

प्रश्नावली

: _____

:

अध्ययन करने के लिये आपको कितने घटों की आश्यकता थी? :

लॉक को पढ़ने के आधार पर निम्नलिखित मदों पर अपनी प्रतिक्रिया दें:

यव	उत्कृष्ट	बहुत अच्छा	अच्छा	खराब	विशिष्ट उदाहरण दें (यदि खराब हो)
ालिकाएं, आदि)					
ष्टता					
ें प्रश्न					
- OER					

:

***

नोट